मेरा तिरंगा जीवन

लेखक की पुस्तक I Led Three Lives का अनुवाद

हर्बर्ट ए० फिलब्रिक

नई दिल्ली
आधुनिक साहित्य प्रकाशन

मूल्य एक रुपया चार आने

प्रकाशक
आधुनिक साहित्य प्रकाशन,
पोस्ट बॉक्स नं० ६६४, नई दिल्ली

मुद्रक
श्री गोपीनाथ सेठ, नवीन प्रेस, दिल्ली

: १ :

मेरी तीनरुखी ज़िन्दगी

बोस्टन की बात है; सन् १६४० की वसन्त ऋतु के अन्तिम दिन थे। घूम-फिरकर बिक्री करने वाले एक सेल्समैन ने अपने रोज़ाना चक्कर के दौरान में माल के नमूनों से लदा हुआ अपना चमड़े का थैला एक हाथ से दूसरे हाथ में पकड़ा और वाटर स्ट्रीट में सातवें नम्बर के मकान की ओर कदम बढ़ाए। रास्ते की एक दुकान के शीशे की खिड़की में उसने अपना चेहरा देखा, मानो एक नवपरिचित व्यक्ति का मुआयना कर रहा हो। शीशे में जिस व्यक्ति की झलक दिखाई पड़ी, वह था हर्ब फ़िलब्रिक, २६ बरस की उम्र का ज़िन्दगी को निबाहने के लिए कमाई के संघर्ष में तल्लीन एक साधारण अमरीकन नवयुवक।

लेकिन अपनी सेल्समैनी के आवरण के नीचे मैं अक्सर दुनिया के बारे में सोचा करता था। कहा जा सकता है कि मुझमें अपने लिए और दूसरे लोगों के लिए एक विशेष सचेतता जागरूक थी। मुझे अपने धन्धे से खासी कमाई होती थी, मेरी दिलचस्पी भी इसमें थी, लेकिन मैंने इसे किसी योजना अथवा सोच-विचार के परिणामस्वरूप नहीं वरन् भाग्यवश ही अपना लिया था। जिन धन्धों को अपनाने की बात मैं आरम्भ में सोचा करता था, उससे इस सेल्समैनी का दूर का भी सम्बन्ध नहीं था। सिविल इञ्जीनियर

से वकालत और वहाँ से चिट्ठी-पत्री के जरिये बिक्री का आयोजन करने वाली संस्था का सम्बन्ध न के बराबर था, लेकिन मेरी प्रगति इस क्रम के अनुसार हुई ।

हाई स्कूल के दिनों में मैंने सिविल इञ्जिनीयर बनने का इरादा किया था । कॉलेज की पढ़ाई के खर्च के लिए पैसे जुटाने के लिए मैं छोटे-छोटे काम भी करता था; अखबार व पत्रिकाएँ बेचने के लिए घूमता था । भाग्य ने मेरा साथ नहीं दिया । जिन तीन बैंकों में मैंने अपनी मेहनत से जुटाई पूँजी जमा कर रखी थी, उनमें से मन्दी के कारण दो बैंक बन्द हो गए । अब कॉलेज में पढ़ने के लिए साथ-साथ कमाना भी जरूरी हो गया । मैं बोस्टन की नॉर्थ ईस्टर्न यूनिवर्सिटी के लिन्कन टेकिनकल इंस्टिट्यूट में शाम की पढ़ाई के लिए भरती हो गया । दिन-भर धन्धा, और रात को पढ़ाई । हफ़्ते में पाँच रात पढ़ाई, तीन रात क्लास के कमरों में और दो रात घर के काम में, लगातार चार बरस तक जारी रही ।

पढ़ाई का खर्च पूरा करने के लिए जो काम भी मिलता, मैं ले लेता । सबसे पहले साबुन बेचने का काम मेरे हाथ आया ।

नल आदि की मरम्मत की दुकान में भी मैंने काम किया । मकानों की भीतरी सजावट का इन्तजाम करने वाली एक संस्था में सहायक होने के नाते मैंने दीवारों पर रोगन किया, फूलदार कागज चिपकाए, फर्शों को रगड़ा, चमकाया । एक बड़े इमारती धन्धे में, मैं नौ सेर के वजन की हथौड़ी कड़ी धूप में चलता रहता था; शायद इसी धन्धे में, मैं सिविल इञ्जिनीयर बनने के अपने सपने के बहुत करीब आ पाया । मैंने मोटर-ड्राइवरी की; पैसे जोड़-जोड़कर अपने लिए मोटर खरीदी और फिर अधिक मुनाफ़े के लिए मोटर और ड्राइवर, दोनों को भाड़े के लिए उठाता रहा ।

पढ़ाई के दायरे के बाहर सोमरविल के गिरजाघर में मेरी सक्रिय दिलचस्पी केन्द्रित थी । फ़िलब्रिक-परिवार में इसका गहरा प्रभाव था । रविवार का दिन गिरजाघर में साढ़े दस बजे की प्रार्थनाओं से शुरू होता था; दोपहर को धार्मिक शिक्षा दी जाती थी । दुपहर बाद चार बजे किशोरों व वयस्कों

की सभा जमती थी; शाम को सात बजे की प्रार्थना के साथ दिन बीत जाता था। युवकों की सभा की कार्यवाहियों में दिल-बहला व. वसोद्देश्य कार्यक्रम दोनों प्रकार की सक्रियताएँ शामिल थीं, और मैं इनमें बढ़-चढ़कर भाग लिया करता था। इस सभा ने गिरजाघर के संगीत-दल, नाट्य-मण्डली और दो-हफ़्तावारी पत्र 'टैटलर' का संयोजन किया हुआ था और इसी पत्र में काम करते हुए मैंने प्रचार, बिक्री और इश्तहारबाज़ी में अपनी दिलचस्पी से परिचय पाया।

इस दिलचस्पी में विकास होने के कारण १६३४ में मुझे एक प्रचार-संस्था (एडवर्टाइज़िंग एजेन्सी) में कम मिला। आखिरकार १६३८ में रातों की पढ़ाई की चक्की से मैं सिविल इञ्जिनीयर की शिक्षा लेकर छूटा। इस क्षेत्र में नौकरी पाने के उद्देश्य से अब मैंने बोस्टन में चक्कर लगाने शुरू किए। लेकिन कोई नौकरी नहीं मिली।

मैंने फिर प्रचार-कार्य की ओर मुख मोड़ा। अब मैं गहरी लगन के साथ इस विषय के अध्ययन में जुट गया; हार्वर्ड में और बोस्टन की एडवर्टाइज़िंग क्लब में इश्तहारबाज़ी और सेल्समैनी के पाठ पढ़ने लगा। अपनी कमाई में से मैं जो कुछ बच पाता, बचाता रहा।

सोमरविल के गिरजाघर की युवक सभा में एक लड़की भी हिस्सा लेती थी, उसका नाम था ईवा लुस्कॉम्ब। शुरू में गिरजाघर की नाट्य-मण्डली के काम-काज में हम दोनों एक साथ दिलचस्पी लेते रहे। यह दिलचस्पी पक्की दोस्ती में परिणत हो गई। ३ सितम्बर १६३६ को, शीत काल के एक धुँधले, उमस-भरे दिन में हमारा विवाह हो गया। विवाहोपरान्त हमने न्यू इंग्लैण्ड की थोड़े दिनों के लिए सैर की।

तब, सन् १६४० के बीत रहे वसन्त के दिन मैं पचीस बरस का नौजवान था। मेरा गृहस्थ सुखप्रद था। मैं डाक द्वारा बिक्री व प्रचार-कार्य में संलग्न, अपने चारों ओर की दुनिया के प्रति सजग और इसकी कमियों व खामियों का संवेदनशील परिचय लिये हुए था। हाथ में ब्रीफ-केस लिये हुए मैं वाटर स्ट्रीट में बढ़ रहा था और रोजमर्रा की पूछ-ताछ के लिए सातवें नम्बर

के मकान में घुस गया।

बरामदों में बढ़ते हुए मैं दरवाज़ों पर लिखे हुए नामों को पढ़ने लगा, सम्भावित ग्राहकों को जैसे सूँघकर ही पहचान लेना चाहता था। एक दरवाज़े पर लिखा था—'मैसाचुसेट्स नवयुवक संघ'। मैं रुका; थाप दी; दरवाज़ा खुला; कमरा छोटा था और इसमें एक ही खिड़की थी। मेज़ पर और दीवार के साथ-साथ ज़मीन पर छोटी-मोटी किताबों और पैम्फ़्लेटों के ढेर लगे हुए थे। कमरे में केवल एक लड़की ही थी।

"मेरा नाम हर्बर्ट फ़िल्ब्रिक है, और मैं कैम्ब्रिज की होल्म्ज़ डायरेक्ट मेल सर्विस का प्रतिनिधि हूँ।"

"मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूँ?" उसकी उम्र कम ही थी, लगभग पच्चीस बरस के होगी। गहरी काली आँखों और घनी भवों वाला मुँह आकर्षक और सुन्दर था; यद्यपि उसने किसी प्रकार के प्रसाधन का उपयोग नहीं किया हुआ था। वह सादे कपड़े पहने थी और मैंने देखा कि उसके पाँव के जूते भी उपयोगिता की दृष्टि से ही पहने गए थे—वे पाँव के ठीक माप के और चपटी अड्डी के थे।

कमरे में मैंने फिर से नजर दौड़ाई। इसमें डेस्क और मेज़ें भरी हुई थीं, जिन पर प्रचारात्मक साहित्य का ढेर पड़ा हुआ था। दीवार पर चिपकाए गए पोस्टरों से इस प्रकार का परिचय मिल जाता था। बिखरे हुए पैम्फलेटों में कुछ के नाम इस प्रकार थे—"अज्ञात सैनिक न बने रहो।", "अमरीकन बढ़ नहीं रहे।" तीसरे का नाम था—"हस्तक्षेप के विरुद्ध तर्क।" एक छोटे बच्चे की तस्वीर के नीचे लिखा था—"लड़ाई के दौरान में इसकी हत्या होगी।"

हिचकिचाते हुए मैंने कहना शुरू किया—"मेरा धन्धा डाक द्वारा बिक्री करने का है, लेकिन स्पष्ट है कि मैं गलत स्थान पर आ पहुँचा हूँ।" मैंने एक पैम्फ़्लेट उठाया और उसके पन्ने पलटे। लड़की हँस दी। पैम्फ़्लेट को देखते हुए मैंने कहा—"यह तो दिलचस्प जान पड़ता है। मैं शान्ति का समर्थक हूँ। किसी नये युद्ध का होना भयंकर बात होगी—और फिर,

उसका उद्देश्य क्या होगा?" यह प्रश्न पूछते हुए मैं किसी विशेष उत्तर की अपेक्षा नहीं कर रहा था।

मैं जानता था कि देश-भर में शान्ति-सम्बन्धी प्रचार के लिए कितनी ही शक्तिशाली संस्थाएँ काम कर रहीं थीं। अनुमान था कि इस प्रचार में प्रतिवर्ष लगभग ५ करोड़ रुपया खर्च किया जाता है। मैंने 'विमेन्स इण्टरनेश्नल लीग फॉर पीस एण्ड फ्रीडम,' 'क्रिश्चियन एण्डेवर सोसायटी' के शान्ति-विषयक काम के बारे में, 'कार्नेगी एण्डोमेंट फॉर इण्टरनेशनल पीस,' 'एपवर्थ लीग' और 'वर्ल्ड पीसवेज' के सचित्र पोस्टरों के बारे में सुन रखा था; ये सब संस्थाएँ हमारे देश को युद्ध से अछूता रखने के उद्देश्य से जनता के मतामत को प्रभावित करने के लिए विकट संघर्ष में जुटी हुई थीं। मैं इन संस्थाओं में विश्वास रखता था और यह जानकर प्रसन्न था कि मैं अपने विचारों में अकेला नहीं हूँ। इन संस्थाओं के सदस्यों की संख्या ७० लाख से १ करोड़ तक पहुँच चुकी थी। जनमत को परखकर यह जाना जा चुका था कि कि ९३ प्रतिशत लोग जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा के और यूरोप में अपनी फौजों को लड़ने के लिए भेजने के पक्ष में नहीं थे।

"आपकी संस्था करती क्या है?" मैंने पूछा।

कृष्णकेशी मेरी यह साथिन, जिसने अपना नाम मिसेज नेथानियल मिल्ज़ बतलाया, अपनी संस्था के बारे में बातचीत करने को उत्सुक जान पड़ी।

"हमारी संस्था का नाम 'मैसाचुसेट्स नवयुवक-संघ' है। हम कितनी ही विभिन्न संस्थाओं के लिए सक्रिय रहते हैं। शान्ति में हमारी गहरी दिलचस्पी है, विशेषकर इन दिनों," उसने फीकी मुस्कान के साथ कहा, "परन्तु शान्ति ही हमारा एकमात्र ध्येय नहीं है। हम प्रगतिशील जनसमूहों के कामकाज को एक सूत्र में बाँधने की कोशिश करते हैं, और नवयुवकों के सब प्रगतिवादी आन्दोलनों का समर्थन करते हैं।"

"उदाहरण के लिए?"

"उदाहरण के लिए नौजवानों के लिए नौकरियों, शिक्षण-संस्थाओं

और सरकारी नौकरियों की जानकारी, आदि। नौजवानों की सहायता के लिए हम वाद-विवाद और विभिन्न कार्यवाहियों का संगठन करते हैं।" एकाएक जैसे उसकी आवाज अग्नि-शिखा-सी प्रज्वलित जान पड़ने लगी, "हमारा विश्वास है कि हम नवयुवकों को पुरानी पीढ़ी द्वारा हमारी समस्याओं के खोजे गए समाधानों की प्रतीक्षा न करते हुए, इकट्ठे होकर खुद ही इन पर विचार-विनिमय करना चाहिए।"

मैंने हामी भरी, यह बिना सोचे हुए कि ये 'समस्याएँ' क्या हैं। इसकी जरूरत न जान पड़ी। गिरजाघर-सम्बन्धी अपने अनुभवों से मुझे मालूम था कि नवयुवकों की ऐसी सभा-समितियाँ चरित्र, आत्म-विश्वास और दृढ़ता के निर्माण में किस कद्र सहायक होती थीं।

"आप रहते कहाँ हैं?" अनायास ही मिसेज मिल्ज ने पूछा।

"हम, अर्थात् मैं और मेरी पत्नी, अब कैंब्रिज में रह रहे हैं।"

"ओह, कैंब्रिज में," उसने निर्लिप्त भाव से कहा, जैसे कि उसके मन में एक क्षण के लिए कोई विचार जगकर बुझ गया हो। मैं एक मेज के सहारे टिका हुआ था; मिसेज मिल्ज एक कुर्सी पर बैठ गईं। "नवयुवकों की कई संस्थाएँ इस रियासत में हमारी संस्था के माध्यम से मिल-जुल करके काम-काज कर रही हैं," उसने कहा, "वाई० एम० सी० ए०, वाई० डब्ल्यू० सी० ए०, धार्मिक संस्थाएँ···" वह रुकी, जैसे इस इन्तजार में हो कि मैं भी कुछ कहूँ।

"वास्तव में" उसने अपने सिर को झटकाते हुए, मानो कि एक नये विचार का प्रयोग करना था कहा, "हम कैंब्रिज में, जहाँ आप रहते हैं, कुछ ऐसे लोगों को जानते हैं जिन्होंने पहले ही वहाँ पर एक नवयुवक-संघ को संगठित करने की सम्भावनाओं में दिलचस्पी दरशाई है। यदि आपकी इधर रुचि हो तो मैं आपका उनसे सम्पर्क स्थापित कर सकती हूँ।"

मैंने उसे अपनी रुचि का आश्वासन दिया। लगभग आधा घण्टा हम बातचीत करते रहे, जिसके दौरान में कैंब्रिज के नवयुवक संघ का जन्म मिसेज मिल्ज की चुस्त, गहरी, काली आँखों के पीछे से हुआ और इस

संस्था का मेरे मस्तिष्क में सफलता पूर्वक विकास और विस्तार हुआ। उसने मुझे नये-नये विचार, नये-नये नाम सुझाए, कहा कि मैं हार्वर्ड में टोनी ग्रोज से मिलूँ जिसका व्यक्तित्व गहरा प्रभावशाली है और जो मेरी सहायता के लिए एकदम उपयुक्त है। मिसेज मिल्ज़ ने बतलाया कि उनके पति श्री नैटमिल्ज मैसाचुसेट्स नवयुक संघ के प्रधान हैं, और यदि मैंने सच ही इस ओर में प्रयत्नशील और सक्रिय रहना चाहा तो वह अपनी भरसक सहायता देने के लिए मुझसे अवश्य मिलेंगे। मैंने कृतज्ञता जतलाई। अपना टेलीफ़ोन नम्बर देकर मैं वहाँ से विदा हुआ।

उस दिन मिसेज़ मिल्ज़ का दफ़्तर छोड़कर जब मैं बाहर निकला तो मेरे चमड़े के थैले में बिक्री की चीज़ों के नमूनों के साथ नवयुवक-संघ-सम्बन्धी भरकम प्रचार-पत्र रगड़ खा रहे थे और मेरे कदम नौ वर्ष लम्बे मेरे जीवन के उस पथ की ओर अग्रसर हो चुके थे जिस पर चलते हुए मैंने तीनरुखी जिन्दगी बिताई।

लेकिन उस वक्त इस बात का एहसास नहीं था,—तब मेरा मन खुशी से हल्का हो रहा था।

मेरी खुशी का कारण यह था कि मैं एक दिलचस्प और महत्त्वपूर्ण ध्येय के लिए चुना गया था। कैंब्रिज के नवयुवक-संघ को संगठित करने और चलाने की जिम्मेदारी भाग्यवश ही मेरे कन्धों पर आ पड़ी थी। मिसेज मिल्ज़ के कमरे में घुसने से पहले मेरा उनसे परिचय नहीं था। जब मैं बाहर आया तो एक बृहत्तर उद्देश्य और एक नये क्षितिज की अनुभूति साथ लेकर आया। मेरे मन में था कि मिसेज मिल्ज़ ने मेरी तारीफ़ निरर्थक शब्दों से नहीं बल्कि अपनी गहरी रुचि के कार्य का उत्तरदायित्व मुझ पर डालकर की है। उन्होंने मुझे यह आश्वासन भी दिया कि उनके पति, जो राज्यवर्ती संगठन के प्रधान हैं, मेरी ओर सहायता का हाथ बढ़ायँगे। मुझे मालूम था कि मुझे सहायता की आवश्यकता होगी, लेकिन अपने पर किये गए विश्वास को निबाहने का निश्चय भी मैंने कर लिया था।

गिरजाघर और व्यापारिक क्षेत्र में मिलने वाले दूसरे नवयुवकों की

तरह मैंने भी यह अनुभव किया कि मैं किसी ऐसे तेज प्रवाह में बह रहा हूँ जिसे कोई बाधा रोक नहीं सकती। फिर भी, नये विश्व-व्यापी युद्ध की आशंका इतनी भयावह थी कि उसे रोकने के लिए हर कदम उठाना ठीक जान पड़ता था। शान्ति बनी रहने की सम्भावना बहुत कम थी, लेकिन जब तक कुछ भी समय बाकी था, शान्ति के लिए प्रयत्नशील रहना उचित जान पड़ता था। चारों ओर युद्ध के समर्थन और विरोध में नारे लगाए जा रहे थे और मुझे स्पष्ट था कि मैं शान्ति का ही समर्थक हूँ। हिटलर की आक्रमणात्मक कार्यवाहियों के प्रति मुझे घनी नफ़रत थी और मैं रूस-जर्मनी के समझौते से घृणा करता था। मेरा विश्वास था कि हमें ब्रिटेन की यथाशक्य सहायता करनी चाहिए। परन्तु उससे पहले मैं अमरीका को इस कद्र सशक्त बनाने के पक्ष में था कि यह देश वक्त पड़ने पर शान्ति की रक्षा करने में समर्थ हो, और करे।

जैसे-जैसे युद्ध नज़दीक आता गया, देश में एक बड़ी बहस-सी छिड़ गई। कुछ व्यक्ति इसमें हिस्सा लेने से इन्कार कर रहे थे परन्तु मैं ऐसे व्यक्तियों में से था जो अपनी अभिव्यक्ति का कोई माध्यम खोज निकालना चाहते हैं। मिसेज़ मिल्ज़ ने मुझे अपने विचारों को व्यक्त करने का तरीका बतलाया। उन्होंने मुझे विस्तारपूर्वक समझाया कि किस प्रकार नवयुवक-संघों की श्रृङ्खलाएँ सारे देश में एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं, और सबसे ऊपरी सतह पर 'अमेरिकन यूथ कांग्रेस' से सम्बन्धित हैं। मिसेज़ मिल्ज़ ने बताया कि किस प्रकार अपने ही क्षेत्र में कैम्ब्रिज का एक नवयुवक-संघ, दर्जनों दूसरी संस्थाओं के कार्यालय में आन्तर-सम्बन्ध स्थापित करते हुए, सब तरह के लोगों तक पहुँच सकता है, उन्हें मिलकर काम करने की प्रेरणा दे सकता है और इस प्रकार सामाजिक भलाई के लिए एक सशक्त प्रभाव बन सकता है। हम दूसरों को अपनी बात सुनने के लिए मजबूर कर सकते हैं, और अवश्य मजबूर करेंगे।

नवयुवक-संघ के संगठन में मेरे सामने ऐसी कठिनाइयाँ पेश आईं जो पहले कभी न आई थीं। एक विशेष प्रयोजन से बैप्टिस्ट चर्च के अपने

घनिष्ठ मित्रों को एकसूत्र में बाँधना दूसरी बात थी। लेकिन बिना किसी भी पृष्ठभूमि के, एक ऐसे शहर में जहाँ मेरा परिचय न के बराबर था, सामाजिक तौर पर संगठन का एक ऐसे शहर में प्रयत्न करना एक नया ही अनुभव था।

शायद मैं अपने प्रयत्नों से ऊब जाता, लेकिन प्रायः हरेक कठिनाई के वक्त मैंने पाया कि मेरी राह को सुगम कर दिया गया है। मिसेज मिल्ज ने कैम्ब्रिज के ऐसे युवक-अग्रणियों के नाम देकर मेरे काम की शुरुआत सहल कर दी थी जो मुझे सहायता दे सकते थे। हर कदम पर सहायता देकर अगले कदम तक पहुँचाने वाला मुझे सहायक मिलता रहा। एक व्यक्ति दूसरे का नाम-पता दे देता था; यह दूसरा व्यक्ति कितने ही दूसरों के नाम-धाम बताता था। अब यह देखकर हैरानी होती है कि जिन लोगों का मुझे इस प्रकार परिचय मिला, वे कैम्ब्रिज नवयुवक-संघ के संक्षिप्त और हेय इतिहास के मुख्य पात्र निकले।

ऐसे व्यक्तियों में एक थी टोनी ग्रोज। अपने इस काम के प्रायः शुरू के ही दिनों में मिस ग्रोज से मैं उसके हार्वर्ड स्टूडेण्ट्स यूनियन के दफ्तर में मिला। टोनी सहृदय और आकर्षक, तथा मांसल शरीर की लड़की थी; उसकी श्वेत चमड़ी पर एक हलके श्यामल रंग की परत चढ़ी हुई थी; उसके लम्बे सुनहरी बाल जूड़े में बँधे न रहकर खुले रहते थे। जान पड़ता था कि वह अद्भुत स्वास्थ्य और चापल्य की मूर्ति हो—एक बहिर्मुखी लड़की जिसकी प्रवृत्तियाँ घर से बाहर निर्दिष्ट होने पर ही उद्भासित होती हैं,—एक ऐसी लड़की जिसे गरमी की छुट्टियों में 'पिकनिक' जाने पर यूथ होस्टलों में, जो कालेज के छत्रों में उन दिनों सर्वप्रिय हो रहे थे, आप मिलने की चाह रखते हैं।

टोनी ने दिल से मेरा स्वागत किया। मुझे यह नहीं मालूम कि इसका कारण मिसेज मिल्ज के नाम का लिया जाना था, अथवा क्या मिसेज मिल्ज ने उसे मेरे बारे में पहले ही लिख दिया था? कुछ भी हो, कैम्ब्रिज नवयुवक-संघ के प्रस्ताव का उसने जोर-शोर से स्वागत किया। उसने कहा

कि कालेजों में और समाज में युवकों की दूसरी संस्थाओं की युद्ध, नौकरी, जातीय भेद-भाव, फौजीभरती, राष्ट्रीय बचाव के साधनों की शिक्षा और दूसरे ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार-धारा व सक्रियता को सही रास्तों पर लगाने के लिए ठीक ऐसे ही नवयुवक-संघ की परम आवश्यकता थी। उसने अपनी संस्था के पूरे सहयोग का मुझे वचन दिया, और यह आश्वासन दिया कि जब नवयुवक-संघ की बैठक होगी, स्टूडेण्ट्स यूनियन के प्रतिनिधि उसमें हिस्सा लेंगे। उसने बताया कि उसकी संस्था केवल हार्वर्ड के विद्यार्थियों का ही नहीं, परन्तु बोस्टन के लड़कियों के कालेजों के छात्रों का भी, जिनमें रैडक्लिफ़ और सिम्मन्स शामिल हैं, प्रतिनिधित्व करती है।

बाद में मैंने देखा कि उसके दफ़्तर में हमारे संघ की जो बैठकें होती रहीं, टोनी उनमें गहरी दिलचस्पी लेती रही। उसने कैम्ब्रिज क्षेत्र से दूसरे कितने ही नवयुवकों के नाम व पते दिये जिन पर उसे निश्चय था कि मैं विश्वास कर सकता हूँ। मुझे याद होता है कि उनमें से कई आए, थोड़ी देर के लिए हमारे बीच रुके, और बाद में मेरी दृष्टि से से ओझल हो गए।

कुछ दूसरे अन्त तक टिके भी रहे। एक ऐसी ही थी एलिस सोलोमोंट, जो तब और अब भी, वाई० डब्ल्यू० सी० ए० की एक अच्छी नेत्री थी, और बड़ी कठिनाइयों के कड़े दिनों में मेरा दाहिना, मजबूत हाथ बन के रही। दो सोलोमन भाई थे, आर्थर और सिडनी, जिनके प्रति मैं एक ऐसे ढंग से विशेषतया कृतज्ञ बन गया, जिसका उन्हें खयाल भी न हो सकता था। इन दोनों, और स्टेनले बीचर द्वारा, मेरे भाग्य का लेखा अंकित होता रहा।

लेकिन संघ-विषयक मेरे सारे सम्बन्ध मिसेज मिल्ज अथवा उसके साथियों द्वारा नहीं बनाये गए थे। मेरे अपने दोस्तों के दायरे में मुझे मेरे शुरू के प्रयास में काफी समर्थन मिला, और मैंने स्वयं ही बहुत से सदस्य बनाये। एक ऐसे सदस्य का नाम गॉर्डन केस था, जो स्कूल में मेरा सहपाठी था और मेथाडिस्ट चर्च के युवकों का नेतृत्व करता था। मैंने बाद में जाना कि उसके मेरे प्रति गहरे लगाव ने मुझसे नाता तोड़ लेना उसके लिए असम्भव

बना दिया था। उसकी नजरों में मैं चाहे कितना ही हेय दीखा हूँ, लेकिन जो-कुछ उसने देखा, उसका पूर्णरूपेण वह विश्वास नहीं कर सका।

नैट मिल्ज़ भी मुझसे मिलने के लिए कुछ ही दिनों बाद आया। हमारे घर में टेलीफ़ोन नहीं था। उसने दफ़्तर में फोन किया और हार्वर्ड स्क्वेयर में एक रेस्तराँ में खाने का न्यौता दिया। मैंने उसे भी उसकी पत्नी की तरह ही आकर्षक पाया, यद्यपि उसमें अपनी पत्नी-जैसी व्यवहार-सरलता न थी। उसके रवैये में आत्म-चेतनायुक्त कठोरता-सी थी, परन्तु यह आत्म-चेतना उसकी बातचीत में बाधा न बन पाती थी। आवाज़ को कोमल ढंग से लम्बा करके वह आसानी से बातें करता था और इससे उसके सचेत और सुशिक्षित मन को अभिव्यक्ति मिलती थी। अपने छितराते, अनियन्त्रित बालों को अपने माथे पर से बाएँ हाथ से हटाते रहने की उसे आदत थी।

इस वक्त तक मैं अपने कार्यक्रम की कठिनाइयों की थाह पा चुका था; इसी कारण इस व्यक्ति से मिलकर मुझको प्रसन्नता हुई जिससे इन्हें सुलझाने के उपायों पर सोच-विचार कर सकना सम्भव था। संगठन-कार्य नैट मिल्ज़ की विशेषता थी। वह जानता था कि यंत्र का चालन कैसे किया जाना चाहिए, और उसकी सब पेचीदगियों और ज़रूरतों से वाक़िफ़ था।

अपने सुसंस्कृत स्वर-विशेष में उसने मुझसे कहा—"पहली आवश्यकता इस बात की है कि एक स्थानापन्न संगठन-समिति बनाई जाय। मेरे विचार में इस समिति में लगभग १२ व्यक्ति रखना ठीक होगा, और वे सही प्रतिनिधित्व भी कर सकेंगे। हमें कुछ अभिभावक भी जुटाने पड़ेंगे, और मैं इस संयोजक-समिति के लिए कुछ नाम भी बता सकूँगा।"

"उनका काम क्या होगा?" मैंने पूछा।

"एक तो वह अपना व्यक्तिगत समर्थन हमें देंगे, और शायद उन संस्थाओं का समर्थन भी; जिनके कि वह प्रतिनिधि हैं। लेकिन वह तुम्हारे लिए अथवा तुम्हारी संगठन-समिति के नवयुवक सदस्यों के लिए, जिन्हें कि समाज नहीं जानता, परिचालकों का काम भी करेंगे। वह हमारी संस्था

में एक स्थायित्व लाएँगे, जो कि परम आवश्यक है विशेषकर कभी चन्दा इकट्ठा करने के लिए; इसकी जरूरत भी तुम्हें अपना काम बढ़ाने के लिए पड़ेगी ही। तुम्हारी नीतियों का सुविचारित दिग्दर्शन भी वह कर सकेंगे। अपने संगठन-कार्य के प्रत्येक स्तर पर, चाहे वह स्थानीय हो, प्रादेशिक अथवा राष्ट्रीय—हम हमेशा विख्यात अभिभावकों को साथ लेने की कोशिश करते हैं।"

इसके बाद टोनी ग्रोज के दफ़्तर में कुछ बैठकें लगातार हुईं और मैं इनका स्थानापन्न प्रधान चुना गया। इन बैठकों में हिस्सा लेने वाले अधिकतर निरर्थक सिद्ध हुए। इस प्रकार के काम-काज में हमेशा ऐसा ही देखा गया है कि ऐसे व्यक्ति-समूहों में से सक्रिय कार्यकर्ताओं का अन्नतः एक दल उभर आता है। यहाँ भी ऐसा हुआ। शुरुआत की इन बैठकों में आर्थर और सिडनी सोलोमन और स्टैनले बीचर का प्रभाव स्पष्ट होने लगा। सिड सोलोमन अपने भाई के मुकाबले में विशेष प्रतिभाशील व्यक्तित्व का था। आर्थर था छोटे जिस्म का, तेजी से काम करने वाला था, उसकी आँखों में गहराई थी, जिनमें विचार स्फुल्लिंगों की तरह चमकते थे और जो अपने चारों ओर सब-कुछ देख लेने के लिए निरन्तर चंचल रहती थीं। उसका व्यक्तित्व कोमल था, कूटनीतिज्ञ का व्यक्तित्व। दूसरी तरफ़ सिड, लम्बे-चौड़े शरीर का, धीमे सोचने वाला, लेकिन कठोर, परिश्रमी कार्यकर्ता था; जो अपने भाई द्वारा सुझाई गई बातों के लिए राह बनाता चलता था। इन दोनों और स्टैन बीचर से, जो हाड-मांस का मजबूत लेकिन मन्दबुद्धि था, कोई भी ऐसा काम बाकी न था जिसे मैं पूरा न करवा सकता था। ये लोग बहुत से ऐसे काम भी कर देते थे जिन्हें करने की मैं बात भी न सोचता था। मैं उन्हें 'तीन तिलंगों' की तरह मानने लगा, उनकी बहादुरी के कामों के लिए नहीं, परन्तु उनकी परस्पर मतैक्यता के लिए और उन ढंग के लिए जिससे उनके व्यक्तित्व एक ही ध्येयय के लिए एक-दूसरे को प्रभावित करते थे। मेरे सारे कार्य के प्रायः शुरू से ही वे उत्प्रेरक बन गए।

नवम्बर में हमने कैंब्रिज की सौ से अधिक संस्थाओं को पूरे संघ की पहली बैठक के लिए निमन्त्रण भेजे। मेरे तीन साथियों ने मेरे हस्ताक्षरों के लिए जिस तीन पृष्ठ के लम्बे पत्र को तैयार किया, उसमें उन सब समस्याओं की ओर इशारा था जिन्हें हम अपने कार्य-क्षेत्र के भीतर समझते थे। निस्संदेह मुख्य समस्या युद्ध की थी। हमने इस बात पर ज़ोर दिया कि अभी हाल के चुनाव में प्रेज़िडेंट रूज़वेल्ट को दिये गए वोट उसके शान्ति के वायदों को दिये गए वोट थे, और हमने इस सम्भावना को दरशाने की कोशिश की कि अब शान्ति के बजाय प्रेज़िडेंट देश को युद्ध की दिशा की ओर बढ़ा रहे थे।

इस पत्र में जबरन फौजी भरती के प्रश्न पर विचार किया गया था और फौज में भरती किये गए व्यक्तियों के लिए सामाजिक रूप से कुछ करने का प्रस्ताव रखा गया था, इनकी विदाई के लिए उत्सवों के आयोजन हों, फौजी अड्डों में इनसे नियमित पत्र-व्यवहार रखा जाय ताकि ये देश की गतिविधि और रवैये से वाकिफ़ रहें, इनकी सहायता के लिए उचित क़ानून आदि बनाने की व्यवस्था हो। इस पत्र में दो-एक ऐसी बातें भी भी थीं जिनसे मैं असहमत था, और मैंने अपने विचार प्रकट भी किये।

जैसा कि मुझे याद पड़ता है, एक बात—जिसका पत्र में प्रस्ताव रखा गया था—यह थी कि फौजियों को अधिक छुट्टियां दी जायँ। मेरा यकीन था कि यदि लोग युद्ध को जा रहे हैं तो उन्हें अधिक छुट्टियों की नहीं, वरन् अधिक अभ्यास और शिक्षा की ज़रूरत है। खैर, यह बात बहुत बड़ी न थी, पत्र छप चुका था, और मैंने इसे वितरित करना ही उचित समझा।

दो सप्ताह बाद भेजे गए दूसरे पत्र में संघ की पहली बैठक की तारीख ६ सितम्बर १९४० निश्चित की गई। हमें पहले पत्र के प्रत्युत्तर स्वरूप सहयोग का काफ़ी आश्वासन मिला था। स्थानीय अभिभावकों की सूची में बड़े-बड़े नाम थे; इनमें हार्वर्ड के प्रोफ़ेसर कर्टले माथर; हार्वर्ड के सेंट मेरी और सेंट माइकेल गिरजाघर के रेवरेण्ड एफ़ हेस्टिंग्ज स्मिथ, उन बार

एसोशिएट्स के अर्नेस्ट कॉलिन्स, डॉक्टर एल्बर्ट डिफ़नबाश, रोलेण्ड फोर्ब्स, रेवरेण्ड वाल्टर जर्ग मिस ओडिल स्वीनी और डॉक्टर हॉवर्ड ह्विटकॉम्ब, ये सभी बोस्टन के नागरिक समाज में जाने-माने व्यक्ति थे।

तीस से अधिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने प्रारम्भिक बैठक में भाग लिया; भाग लेने वालों की संख्या की दृष्टि से हमने इसमें अपनी बड़ी सफलता मानी। कैंब्रिज में टेकनिकल शिक्षा के कार्यक्रम पर आर्थर सोलोमन ने अपनी रिपोर्ट पढ़ी और इस विषय पर वाद-विवाद का सूत्रपात किया। अपने मुख्य भाषण के लिए नैट मिल्ज़ उपस्थित न हो सका; लेकिन उसके स्थान पर मिसेज़ मिल्ज़ आईं। भाषण के बाद हमने खुले सोच-विचार के लिए दूसरे महत्त्वपूर्ण सवालों की ओर इशारा किया; जैसे जबरन फौजी भरती, फौजी और नागरिक जीवन में जातीय भेद-भाव, इत्यादि।

हमने बैठक की कार्य-विधि का खाका, जो पहले ही तैयार कर लिया था, उसकी कृपा से चुनाव आदि का काम शीघ्र ही समाप्त हो गया। मुझे याद नहीं पड़ता कि प्रधान पद के लिए मेरा नाम सोलोमन भाइयों में से एक ने अथवा स्टैन बीचर ने प्रस्तुत किया, लेकिन यह प्रस्ताव स्वीकार हुआ और मैं प्रधान चुन लिया गया। मन्त्री व खज़ांची के पद के लिए एलिस सोलोमोंट चुनी गई। 'तिलगों' की कड़ी मेहनतों का नतीजा भी निकला; मेरे व एलिस के साथ काम करने के लिए वह कार्यकारिणी (केबिनट) के सदस्य चुन लिए गए। यह निश्चय हुआ कि संघ की बैठकें हर मास के पहले शुक्रवार को हुआ करें और कार्यकारिणी एक रविवार को छोड़कर हर दूसरे रविवार को मेरे स्थान पर इकट्ठी हुआ करे।

हमने तुरन्त ही जोशोखरोश से युवकोपयोगी सब प्रकार की कार्यवाहियों में हिस्सा लेना शुरू किया; साथ ही कठिनाइयों में भी उलझने लगे। इन कठिनाइयों का पहला अनुभव यान्त्रिक शिक्षा के प्रश्न पर हुआ, जिसमें कि आर्ट सोलोमन विशेष दिलचस्पी लेता था। संगठन के आरम्भ के दिनों में समय-समय पर विभिन्न समस्याओं पर मेरे नाम से पत्रक आदि लिखे जाते थे, मेरी स्वीकृति के लिये मुझे दिए जाते थे और खास-खास व्यक्तियों

श्रौर संस्थाश्रों को भेजे जाते थे। अब एक ऐसा पत्रक बाँटा गया जिसमें कि मेरी पूरी उपेक्षा की गई।

इस पत्र का मुख्य विषय फेडरल पूँजी की सहायता से पूरी होने वाली नैशनल यूथ एडमिनिस्ट्रेशन की कार्य-अनुभव (वर्क एक्सपीरियेंस) से सम्बन्धित योजना थी। यह महसूस किया जा रहा था कि कैंब्रिज की स्कूल-कमेटी सार्वजनिक धन के रहते हुए भी नौजवानों को खाली समय में नौकरी दिलाने के कार्य में सहायक न होकर इस योजना से लाभ न उठा रही थी। मुझे एक दिन मालूम पड़ा कि अध्यक्ष की हैसियत से मेरे नाम का प्रयोग करके कैंब्रिज यूथ कौंसिल ने शहर में एक हजार से अधिक पत्रक बँटवाए, जिनमें कहा गया था कि मेयर के पास सार्वजनिक रूप से प्रार्थना-पत्र भेजा जाय श्रौर नैशनल यूथ एडमिनिस्ट्रेशन के विभिन्न कार्य-कलापों पर विचार करने के लिए एक सार्वजनिक जलसा किया जाय।

मुझे इस बात से बहुत दुःख हुआ कि मेरे हस्ताक्षरों से मेरी अनुमति के बिना इस प्रकार के पत्रक बांटे गए। जो लोग ऐसा कर रहे थे, उनमें किसी भी प्रकार की नैतिक दुविधा का अभाव इससे स्पष्ट होता था। सदस्यों ने जो अधिकार मुझे सौंपे थे, श्रौर जिनके प्रति मैं अपनी प्रत्येक कार्यवाही के लिए उत्तरदायी था, ऐसी घटना उन अधिकारों के बलात् हरण के समान जान पड़ती थी। इसके साथ ही मैं कार्य-अनुवाद की योजना के कुछ लाभों से भी परिचित था, श्रौर मेरा अनुभव इस बात का साथी था कि नौजवानों को शिक्षा के बाद वास्तविक अनुभव के लिए श्रांशिक नौकरी मिलनी चाहिए। अपनी कार्यकारिणी के सदस्यों की इसके विरुद्ध सक्रियता श्रौर उत्साह के कारण को मैं समझ न सका। इस श्रान्दोलन का परिणाम यह हुआ कि स्कूल-कमेटी ने कैंब्रिज में नौकरियों के सूचीकरण के लिए नेशनल यूथ एडमिनिट्रेशन का एक कर्म-अनुभव-क्षेत्र खोल दिया। यूथ कौंसिल की यह पहली स्पष्ट जीत थी श्रौर अन्ततः इस जीत तक पहुँचने के लिए जिन साधनों का इस्तेमाल किया गया था, उन्हें दरगुजर करने के लिए मैं तैयार हो गया।

लेकिन इस घटना ने मुझे डावाँडोल कर दिया। मैंने निश्चय किया कि मैं अब से अधिक सतर्क रहूँगा। मेरे कितने ही घनिष्ठ मित्र, कैंब्रिज के मान्य, विश्वस्त नागरिक मेरा और तरुण संघ का समर्थन कर रहे थे। मेरा उत्तरदायित्व सर्वप्रथम उनके प्रति था। संघ के प्रधान की हैसियत से मैंने निश्चय किया कि इसकी नीति और सक्रियताओं का निर्देशन उचित स्थान पर ही, अन्ततः सदस्यों के हाथों में ही, रहना चाहिए।

लेकिन कार्यकारिणी की एक बैठक ने ही यह सिद्ध कर दिया कि यह कार्य कितना कठिन होने जा रहा था।

इस बैठक में एलिस सोलोमोंट उपस्थित न हो सकी थीं। केवल दोनों सोलोमन बन्धु, स्टैन बीचर और अध्यक्ष की कुर्सी पर मैं हाजिर था। इस बैठक में मुख्य विचारणीय प्रश्न प्रस्तुत राजनीतिक चर्चा से सम्बन्ध रखता था; साथी देशों को फौजी सहायता के प्रश्न पर अमेरिका की यूथ कांग्रेस के सम्मुख हमने तरुण-संघ की स्थिति स्पष्ट करनी थी। वह समस्या तो कब की मिट चुकी है। परन्तु इसका मुझ पर और दूसरे तीन साथियों से मेरे सम्बन्ध पर देर तक असर बना रहा। तब मैं यह नहीं जानता था कि यह असर इतना स्थायी होगा।

जब यह प्रश्न हम चारों के सामने पेश हुआ तो सोलोमन बन्धुओं और बीचर ने अपनी-अपनी स्थिति का स्पष्टीकरण किया। उन तीनों का एक ही विचार था और वे तीनों मेरे मत से पूर्णतः विभिन्न मत रखते थे। ब्रिटेन को किसी प्रकार की फौजी सहायता देने के प्रत्येक कार्यक्रम को उन्होंने रद्द कर दिया। मेरे विचार दूसरे ही थे। मैं समझता था कि ब्रिटेन व उसके साथियों को सहायता देना अत्यावश्यक है।

"देखिए," मैंने कहा, और इस वक्त कार्य-अभ्यास-विषयक फाक की बात मेरे मन में थी, "मैं समझ सकता हूँ कि आप किस प्रकार सोच रहे हैं, और सम्मति का मान करने के आप अधिकारी भी हैं। परन्तु आप को स्मरण होगा कि दस रोज हुए तरुण संघ की एक बैठक हुई थी, और उसमें सदस्यों के अधिकांश की सम्मति..........."

"तुम पागल हो," जान पड़ता था कि स्टैन बीचर इस वक्त अपनी आक्रमणात्मक गतिविधि को अपनाने को तैयार था लेकिन मैं भी इसका मुकाबला करने को उद्यत था। मैं उसे जवाब देने के लिए खड़ा हो गया।

"संघ के प्रधान होने के नाते मैं मजबूर हूँ कि········"

"बैठ जाओ," बीचर आगे झुका और अपने इस आदेश के साथ ही उसने मुझे एक हल्का लेकिन मजबूत धक्का दिया, जिससे मैं अपने पैरों पर खड़ा न रह सका और कुरसी पर जा गिरा। "देखो," इससे पहले कि मैं सँभल सकूँ, उसने कहा—"अमेरिकन यूथ कांग्रेस के नेशनल बोर्ड ने इस बारे में कदम उटाने का निश्चय किया हुआ है। अब उस निश्चय से सौ प्रतिशत स्वीकृति जाहिर करने के अलावा कोई चारा नहीं है।"

"तुम प्रश्न को व्यर्थ ही उलझा रहे हो," मैंने कहा, "हम यूथ-कांग्रेस के साथ वैधानिक दृष्टि से बँधे हुए नहीं हैं।"

"हम इसमें अपने प्रतिनिधि भेजते हैं या नहीं?"

"हाँ, प्रतिनिधि भेजने का प्रस्ताव हमने स्वीकार किया है, परन्तु इस का अर्थ यह नहीं हुआ कि हम वही करें जिसका फ़ैसला वहाँ होता है। और फिर, यह जनतन्त्रात्मक तरीका नहीं है। हमारे सदस्य कुछ निर्णय करते हैं, हम दूसरा निर्णय करते हैं। हम कैसे······?"

"स्पष्ट है कि," आर्ट सोलोमन ने दखल देते हुए कहा, "हम जन-तन्त्रात्मक तरीकों में यकीन करते हैं।" उसकी आँखें तेज़ी से हममें से प्रत्येक पर, एक-दूसरे के बाद चमकीं। वह कुछ घबराहट से बोल रहा था, लेकिन जाहिर था कि उसकी बोली में समझौते की ख्वाहिश थी। मैं भी इस बात को काबू से बाहर न होने देना चाहता था। सोचा, शायद आर्ट इस गुत्थी को सुलझा पाए।

"प्रायः सभी बातों में हम निश्चय ही सदस्यों के मतानुसार काम करते हैं," उसने कहा, "मैं समझता हूँ कि अब भी वैसा ही कर सकते हैं। जैसा कि सब जानते हैं, पिछली बैठक में कितने ही प्रतिनिधि उपस्थित नहीं थे। और फिर, समस्या पर पूरा विचार करने के लिए उनके पास

समय का भी अभाव रहा। मुझे निश्चय है कि यदि वह सब पहलुओं को देख पाते और उनका विश्लेषण कर पाते तो वह उसी नतीजे पर पहुँचते जिस पर कि हम पहुँच रहे हैं।"

मेरे मन में इस वक्त प्रस्तुत समस्या चक्कर नहीं काट रही थी। किसी प्रकार का भी बहस-मुबाहसा मेरे विचारों को बदल सकने में असमर्थ होता। मैं तो इस बात से अप्रतिभ हो रहा था कि इन लोगों के विचार-विवाद के दौरान में मेरी स्थिति कितनी व्यर्थ-सी थी। उनके मन प्रस्तुत प्रश्न पर उतने ही दृढ़ निश्चय थे जितना कि मेरा, और स्पष्ट था कि हमारी स्थिति खाई के दो किनारों पर खड़े विपक्षियों के समान है। इसका हल तो उनसे मिल-जुलकर व बातचीत करके नहीं खोजा जा सकता। लेकिन जो बात मुझे सबसे अधिक धक्का पहुँचा रही थी, वह संघ की बैठक में नियमित तौर-तरीके के प्रति उनका अवज्ञापूर्ण दृष्टिकोण था।

सिड अभी भी मुस्करा रहा था और कह रहा था, "आखिरकार नेशनल बोर्ड की बैठक इसी वक्त वाशिंगटन में हो ही रही है। उन्होंने वर्तमान परिस्थिति का गहरा अध्ययन किया है और हमसे अपेक्षातर वह बेहतर जानते हैं कि दुनिया में क्या हो रहा है। ठीक निर्णयों को करने के लिए उनसे बेहतर स्थिति में कौन है ? वह तो राजनीति के चरम केन्द्र में ही बैठे हैं। इसके अलावा एक बात और। मैसेचुसेट्स यूथ कौंसिल, जो हमारी अभिभावक संस्था है, इस बात को स्वीकार कर चुकी है। हम एक विभिन्न निर्णय पर कैसे पहुँच सकते हैं ? आधुनिक प्रवृत्तियों की दौड़ में, हर्ब, तुम पीछे छूटते जा रहे हो, और कुछ नहीं।"

उसके तर्क-वितर्क की कड़ी ने मेरे दिमाग के एक कोने में रोशनी-सी चमकाई। इसे क्या कहते हैं, सोच-विचार के इस तरीके को ? कम्युनिस्टों के पास इसके लिए एक शब्द है……लोकतन्त्रीय केन्द्रीकरण (डेमोक्रेटिक सेंट्रलिज़्म)! सर्वोच्च स्तर पर नीति का निर्धारण करने वाले किसी प्रश्न पर एक विशेष विचार-धारा (लाइन) प्रवाहित कर देते हैं और उसे विभिन्न प्रवाहिणियों द्वारा आम जनता तक प्रसारित करते हैं। जनता इसे स्वीकार

कर लेती है और इस पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगाकर इसे लौटाती है। नीति-निर्धारण करने वाले तब इसे "जनता की इच्छा" के नाम से पुकारते हैं। लोकतन्त्रीय केन्द्रीकरण—हाँ, ठीक यही। साम्यवादी मानों में लोकतन्त्र!

मेरा मन जैसे अनायास ही निर्भ्रम हो गया हो, स्पष्ट और इस सब प्रच्छन्न तर्क-वितर्क के प्रति महान् ग्लानि से परिपूर्ण। मेरे सब संदेहों और प्रश्नों का जैसे हल मिल गया। चतुराई से फैलाये हुए जाल में मैं स्वयं ही आ फँसा था।

कैम्ब्रिज तरुण-संघ के संस्थापकों में से एक, इसका पहला अध्यक्ष मैं—वास्तव में संघ स्वयं ही—पर्दे के पीछे से अपनी योजनाओं और कार्य-क्रमों का संचालन करने वाले कुछ लोगों के लिए एक 'मोर्चे' के सिवाय और कुछ अर्थ न रखते थे।

घोर निराशा में मैं बैठक से उठकर गया। यदि वहाँ एलिस सोलोमोंट आई होती, तब भी मैं तीन से दो वोटों से हार जाता। हमारी बाजी हारी हुई थी। इस सबसे बच निकलने का कोई आसान रास्ता जरूर था, लेकिन मुझे इस वक्त सूझ नहीं रहा था। मैं यही सोचता था कि मुझे कुछ-न-कुछ अवश्य करना चाहिए। यह सौभाग्य की बात है कि वक्त की तेजी में मैं कुछ कर नहीं बैठा। मैं समस्या पर मन-ही-मन देर तक विचार करता रहा। मैंने इसे अपने तक ही सीमित रखा। शायद, इस प्रश्न पर किसी से बातचीत करने में मुझे कुछ शरम भी महसूस होती, मैंने ईवा से भी इस बारे में बातचीत नहीं की। इन दिनों वह नये बच्चे को लेकर मशगूल थी और जो लोग हमारे घर आया-जाया करते थे, उनकी कोई विशेष परवाह नहीं करती थी। ऐसा जान पड़ता था कि वह संघ के ही पक्ष में नहीं है।

मैं जानता था कि मेरे बहुत-से दोस्त, जो मेरी प्रेरणा पर संघ में आए थे और इसे अपना समर्थन दे रहे थे, यह जानकर कितने दुखी होंगे कि संघ के अध्यक्ष को किस प्रकार अंकुश में रखा जा रहा था। क्या मैं उन तक यह बातें पहुँचा दूँ? इसका अर्थ तरुण संघ को, और मेरे अब तक के

सब काम को मलियामेट कर देना ही होता। क्या मैं प्रस्तुत प्रश्न पर खुले बहस-मुबाहसे का सूत्रपात करूँ? लेकिन मैं सार्वजनिक रूप में अपने विरोधों का प्रदर्शन भी पसन्द नहीं करता था। मैं स्तीफ़ा दे सकता था। बीचर ने सभा में इस ओर स्पष्ट इशारा कर ही दिया था। लेकिन केवल स्तीफ़ा देना ही समस्या का कोई हल नहीं था। संघ के काम को बीचर और सोलोमन किसी प्रकार चलाते ही रहेंगे, शायद मोर्चे के किसी अनजान, दूसरे व्यक्ति की सहायता से; और मुझे बदनामी ही हाथ आयगी।

मैं मन-ही-मन रात-दिन इस समस्या पर विचार करता, तरुण-संघ के विकास के हर पहलू पर निगाह दौड़ाता और इस वक्त जो तीन व्यक्ति मेरे विरोधी बन रहे थे उनसे अपने सम्बन्ध की बात पर ग़ौर करता।

मुझे नींद आना दूभर हो गया। मुझे सूझा कि मैं बोस्टन पुलिस में रिपोर्ट कर सकता हूँ, लेकिन डर था कि वे मुझे पागल मानकर वह मेरी बातों पर ध्यान न देंगे। आखिरकार, कोई कानून तो तोड़ा जा नहीं रहा था। तब मुझे खयाल आया कि सितम्बर मास में अमेरिकन लीजन का जो राष्ट्रीय सम्मेलन बोस्टन में हुआ था, वहाँ जे० एडगर हूवर ने विदेशी 'वादों' पर आक्रमण किया था और चेतावनी दी थी कि विदेशी ताकतों के दूत अमेरिका में सक्रिय थे। उन्होंने इस विषय में किसी प्रकार के भावोन्माद के विरुद्ध सलाह देते हुए हरेक को सलाह दी थी कि देश की सुरक्षा के प्रति खतरा पैदा करने वाली किसी भी बात का यदि किसी को पता हो तो वह एफ़० बी० आई (फेडेरल ब्यूरो आफ़ इन्वेस्टिगेशन) के विशेषज्ञ अन्वेषकों द्वारा इसकी छानबीन के लिए इसकी रिपोर्ट करे।

बिछौने के सिरहाने के पास रखे हुए बिजली के लैम्प को मैंने जगाया और टेलीफ़ोन की किताब के पन्ने उलटे। मैंने 'एफ़' अक्षर के नीचे के नामों को देखा। वहाँ पता नहीं मिला। शायद यह 'फेडरल' के नीचे हो। मैंने पन्ने पलटे। 'फेडरल',…'फेडरेटिड'। नहीं। मैंने किताब के अन्तिम कवर को देखा। 'अमेरिकन सरकार' मोटे अक्षरों में छपा था। 'न्याय विभाग'… अब मैं ठीक राह पर था। "फेडरल ब्यूरो आफ इन्वेस्टिगेशन, १०

पी० ओ० एस० क्यू०...लिबर्टी ११५५" ।

ईवा ने करवट ली। "सब कुछ ठीक है न ?" उसने अलस भाव से पूछा।

"नहीं" । मैंने पते पर फिर से नज़र दौड़ाई, १०, पोस्ट आफिस स्क्वेयर, और किताब को बन्द कर दिया । "सब कुछ ठीक है," मैंने बत्ती बुझा दी और सो गया।

बोस्टन के ओल्ड स्टेट हाउस में जब मैं गाड़ी से बाहर निकलकर आया, तो क्षुब्ध हवा बह रही थी । मैं सीधा पोस्ट आफ़िस स्क्वायर की तरफ़ बढ़ा; इस सरदी में मेरी रफ़्तार तेज़ थी, लेकिन अपने में मेरे कदम घिसट रहे थे ।

पोस्ट आफ़िस से बाज़ार के पार के बड़े दफ़्तर की इमारत का प्रकोष्ठ-गृह काफ़ी गरम था । दरवाज़े के भीतर लगे बड़े पर्यवेक्षक-बोर्ड पर मैंने फेडरल बोर्ड आफ़ इन्वेस्टिगेशन के कमरे का नम्बर देखा, कमरा नम्बर १०१४ । लिफ़्ट चलाने वाले को मैंने दसवीं मंज़िल पर चलने को कहा ।

एक छोटी मेज़ के पीछे औपचारिका बैठी थी। उसने मुस्कराकर पूछा—"मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ !" एकाएक मुझे जान पड़ा कि उत्तर में कहने को मेरे पास कुछ भी नहीं था।

"मैं समझता हूँ कि मैं इस दफ़्तर के किसी एजेंट से मिलना चाहता हूँ," मैंने हकलाते हुए कहा । मुझे यह भी मालूम न था कि इस आकार के दफ़्तर के कोई बाहर काम करने वाले 'एजेंट' भी थे या नहीं, लेकिन जब लड़की ने किसी प्रकार की हैरानी न दिखलाई तो मैं आश्वस्त हुआ।

"किसी विशेष व्यक्ति को ?" मैंने उत्तर में सिर हिलकर इन्कार किया।

"आपका नाम ।"

"हर्बर्ट ए० फिल्ब्रिक ।"

"मिस्टर फिल्ब्रिक, आप रहते कहाँ हैं !"

"कैम्ब्रिज में ।"

"आप बैठिए, मैं एक मिनट में किसी से आपकी मुलाकात का इन्तज़ाम

किये देती हूँ।"

मैंने उसे धन्यवाद दिया और दरवाजे के पास की एक कुरसी पर बैठ गया। सोचने लगा कि एजेंट से क्या कहूँगा। लेकिन क्या इसी कमरे में बैठकर उससे बातें करनी होंगी? मैं शुरू कैसे करूँगा? "मि० फिलब्रिक, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?" एजेंट पूछेगा और फिर जवाब के लिए मेरे सामने खड़ा रहेगा। क्या मैं उससे कहूँ कि मैं उससे एकान्त में बात करना चाहता हूँ? जब वह लड़की दफ़्तर के अन्दर से लौटी तो जैसे कुछ देर के लिए मेरे होशो-हवास ही गुम गए। उसके पीछे एक व्यक्ति आया था। उसके मुख पर एक अस्पष्ट मुस्कराहट थी और उसने मुझे इशारे से अन्दर बुलाया।

कितने ही गलियारों के बीच और छोटे-छोटे दफ़्तरों के आगे से होकर हम गुजरे। फिर एक कमरे में घुसे और उस व्यक्ति ने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया। एक कुरसी पर बैठने के लिए मुझसे कहा। उसने अपना परिचय नहीं दिया था।

"तो आप कैंब्रिज में रहते हैं?" उसने पूछा, और उसके इस सवाल पर मेरी तबियत ठीक हुई।

"हाँ, लगभग एक बरस से मैं और मेरी बीवी वहाँ रहने लगे हैं।"

उसने मुझे ग़ौर से देखना शुरू किया, मेज पर रखे मेरे बैग को, काम-काज के मेरे कपड़ों को।

"मि० फिलब्रिक, हम आपके लिए क्या कर सकते हैं? अपनी बात कृपा करके संक्षेप में कह जाइए। क्या इसका ताल्लुक आपके अपने धन्धे से है?"

"मेरे विचार में यह व्यक्तिगत मामला है। लेकिन शायद इसका सम्बन्ध सार्वजनिक हितों से भी हो। मुझे आपके सलाह-मशविरे की जरूरत है।"

उसके मुख पर फीकी-सी मुस्कराहट फिर फैली, "सलाह देना हमारा काम नहीं है। लेकिन आप बात कहिए तो। आपका कहना है कि इसका सार्वजनिक हितों से सम्बन्ध है?"

"मैं नौजवानों की एक संस्था का, जिसका नाम 'कैंब्रिज तरुण-संघ' है, प्रधान हूँ।" मैंने आरम्भ किया। उसने सिर हिला के इशारा किया कि मैं कहता चलूँ। "यह संस्था विभिन्न कार्यक्षेत्रों में जुटे ऐसे नौजवानों का समूह है जो आज की राजनीति में दिलचस्पी लेते हैं। एक तरह का अध्ययन-केन्द्र इसे कहा जा सकता है। मैं इसका प्रधान अवश्य हूँ, लेकिन इसकी तह में क्या हो रहा है, यह मुझे नहीं मालूम।"

मैंने इसकी नीति की रूपरेखा का वर्णन किया, इसकी सदस्यता के बारे में कहा और इसके नेताओं और अभिभावकों के नाम बताए। मैंने देखा कि एजेंट की दिलचस्पी बढ़ रही थी और वह एक छिपाये हुए पुर्ज़े पर कुछ लिखता जा रहा था। बीच-बीच में वह छोटे लेकिन महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछकर या किसी नाम को दुहराने के लिए कहकर बाधा देता था।

मैंने विस्तारपूर्वक बतलाना शुरू किया कि संघ के विषय में मेरी दिल-चस्पी का आरम्भ कैसे हुआ, इसकी नींव कैसे पड़ी, और दूसरों ने इसमें क्या-क्या मदद की। उसकी उत्प्रेरणा से मुझसे कोई बात छूटी नहीं। जैसे-जैसे मैं कहता गया, मेरा जोश एजेण्ट द्वारा इस कथा के हर पहलू में रुचि दरशाने के कारण उत्साह पाकर बढ़ता गया। अब वह मेरी बातों को गम्भीरतापूर्वक सुन रहा था। मैंने उसे बताया कि इस संघ में मैं किस प्रकार स्वत्वहीन, नामधारी अध्यक्ष की तरह रह गया, किस प्रकार मेरे नाम पर सार्वजनिक घोषणाएँ मेरी अनुमति के बिना और मेरी और सदस्यों की सच्ची मान्यताओं के विरुद्ध प्रचारित कर दी जाती थीं। अन्त में मैंने उसे स्टैन बीचर और आर्ट व सिड सोलोमन से हुए अपने संघर्ष की बात भी कह दी जिससे हमारे बीच के सम्बन्ध समाप्त-प्राय हो रहे थे।

"इसमें आखिर हम कर ही क्या सकते हैं?" मेरे कह चुकने के बाद एक लम्बी चुप्पी को तोड़ते हुए उसने पूछा, "क्या किसी फेडरल क़ानून को तोड़ा गया है जिससे एफ० बी० आई० का सम्बन्ध हो?"

"नहीं, मेरी समझ में तो ऐसी कोई बात नहीं हुई।"

उसके माथे पर तनाव आया, "आपको सन्देह है कि आपकी संस्था

कम्युनिस्टों के हाथों में चली गई है, क्या ऐसा है ? इसका कोई सबूत आपके पास है ?"

"नहीं, कोई कागज़ी सबूत तो मेरे पास नहीं है। मेरा खयाल था कि दूसरे लोग भी ऐसी परिस्थितियों में शायद फँसे होंगे। मैं सोच रहा था कि मैं स्तीफ़ा दे दूँ अथवा सारी बात ... लोगों के सामने रख दूँ।"

"क्या बात इतनी बढ़ गई है कि इन लोगों से सब प्रकार का सम्पर्क टूट गया है ? क्या परिस्थिति में संघर्ष की भावना बहुत बढ़ गई है ?"

"नहीं, नहीं," मैंने उसके प्रश्न की थाह पाने की कोशिश करते हुए कहा। "ऐसा नहीं है कि इसे सँभाला ही नहीं जा सकता।"

"वैसे मोटे रूप में," उसने अपनी मन्शा को स्पष्ट न करते हुए कहा, "मिस्टर फिलब्रिक, ऐसी स्थिति नहीं है कि हम दखल दे सकें। जब आप-जैसे नागरिक ऐसी बातों में अपनी जागरूकता दिखाते हैं, तो हमें खुशी होती है। लेकिन जब तक कोई विशेष घटना न घटे हम हस्तक्षेप नहीं कर सकते। हमें गलत न समझिएगा। हम कोई बात भी सुनने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। आप जब चाहें, यहाँ आएँ, और हमारी सहायता सदैव आप को मिल सकती है। लेकिन हम क़ानून के ही साधन हैं, और हम हर बात क़ानूनी स्तर पर ही कर सकते हैं।"

"मैं समझ रहा हूँ।" मैंने अपना हैट और बैग उठाया। मेरी समस्या का कोई हल नहीं मिला था और मेरे प्रश्नों के कोई उत्तर नहीं दिये गए थे। लेकिन मेरी सब बातें विस्तारपूर्वक ध्यान से सुनी गई थीं। "धन्यवाद," मैंने कहा—"शायद मैं फिर आऊँ।" एजेण्ट मुझे छोड़ने के लिए मुख्य द्वार तक आया। मैं उसका नाम पूछना भूल गया।

एजेंट से इस मुलाकात के बाद तो मैं और भरमा गया। कैम्ब्रिज तरुण-संघ की भीतरी बातों से मैं इतना बौखला गया कि मैं संघ को छोड़ देना चाहता था और स्तीफ़े की बात सोचने लगा। इसके बावजूद मुझे इस बात का भी विचार होता था कि मैं सदस्यों की खातिर संघ में ही बना रहूँ और इसे अपनी पकड़ में रखूँ; जरूरत पड़ने पर जनवरी की बैठक

मैं संघ के अन्तर्विरोध को खुले में ले आऊँ; शायद कुछ लाभ हो सके। इससे अपने दोस्तों का, जिनके प्रति मैं अपने को उत्तरदायी अनुभव करता था, विश्वास निबाह पाऊँगा। मैंने निश्चय किया कि गॉर्डन केस से सब बातें खुलासा कर लूँ। मैंने इस बात का भी निश्चय किया कि इस बारे में मैं नैट मिल्ज़ से, जो हमारी अभिभावक संस्था मैसेचुसेट्स तरुण-संघ के प्रधान की हैसियत से उसका मुख्य व्यक्ति था, कोई बात न छेड़ूँगा। मैं इस बात को न भूल सकता था कि मेरे द्वारा कैम्ब्रिज की संस्था के निर्माण में मुख्यतया वह और उसकी स्त्री ही जिम्मेदार थे।

इससे पहले कि मैं गॉर्डन केस से कोई बात कर पाता, मेरे दफ़्तर में एक दिन एक अप्रत्याशित अतिथि आया। मैंने बाहर के कमरे में आकर एक प्रसन्नमुख, आकर्षक मुद्रा के व्यक्ति को, जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था, पाया।

"मेरा नाम हेरल्ड लीयरी है," उसने कहा। गुप्त ढंग से उसने मुझे अपने चम का बटुआ खोलकर दिखाया, जिस पर उसके एफ० बी० आई० की सदस्यता का प्रमाण-पत्र और मोटे अक्षरों में उसका नाम लिखा था।

"जी हाँ, ठीक है।" मैंने उत्सुकता से कहा।

"आप किसी समस्या के बारे में हमसे मिलने आए थे। मैं आपसे बात करना चाहूँगा।" मैंने चारों ओर निरर्थक-सी दृष्टि दौड़ाई और उसे बताया कि दफ़्तर में ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ हम गुप्त रूप में बातें कर सकें।

"कोई जल्दी नहीं है," उसने कहा, "क्या मैं कल आपके घर से आप को लेने आऊँ? तब हम बातें कर सकेंगे।"

"प्रातः आठ बजे," मैंने उत्तर दिया। उसने स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया। "मेमोरियल ड्राइव और मेगेज़ीन स्ट्रीट पर आठ बजे।" कागज़ पर नोट करके पते को उसने जेब में ठूँस लिया। हमने हाथ मिलाए। लीयरी ने कहा कि अच्छा होगा कि यदि इस बारे में मैं मौन साधे रखूँ कि एफ० बी० आई० की ओर से मुझसे मिलने के लिए कोई आया था। मैंने

कहा कि मेरी ओर से आश्वस्त रहा जा सकता है।

अगले दिन मैं निश्चित समय से दस मिनट पहले ही निर्धारित स्थान पर पहुँच गया, इस खयाल से कि शायद लियरी समय से पूर्व ही पहुँचा हो। सड़क के मोड़ पर गरमाने के लिए मैं टहलता रहा, समय देखने के लिए बार-बार जेब से अपने पिता की पुरानी घड़ी निकालता रहा। इसी की सहायता से मैं हमेशा वक्त पर सब काम कर सकता था। आठ बजने में अभी १५ सेकण्ड बाकी थे जब कि एक मोटर सड़क के प्रवाह से हटी और सड़क के मोड़ की ओर आ रुकी। ठीक वक्त, मैंने सोचा, एफ० बी० आई० के लोग इस प्रकार ठीक वक्त के पाबन्द हैं। मैं उचककर मोटर में चढ़ गया; लीयर ने गाड़ी की रफ़्तार बढ़ाई।

"हम कुछ देर के लिए यहाँ बातें कर सकते हैं। इसके बाद मैं आपको दफ़्तर में छोड़ आऊँगा। आज सुबह तो काफ़ी ठण्ड है।" उसने बात-चीत का रुख एकाएक काम की बात की ओर मोड़ दिया, "अपने दफ़्तर में आपके आने के बारे में मैंने एक स्मारक-पत्र पढ़ा है। इसके बारे में आपने अभी कोई कदम उठाया है?"

"नहीं, मैं कुछ अधिक व्यस्त रहा हूँ। और फिर, मैं यह भी तो नहीं जानता कि मैं करूँ क्या?"

"आप विवाहित हैं न,?" मैंने 'हाँ' में सिर हिलाया। "क्या आप की पत्नी को इसके बारे में कुछ पता है?" अपनी जगह पर मेरी ओर प्रायः घूमे हुए वह मुझे ध्यानपूर्वक देख रहा था।

"आपके दफ़्तर के एजेण्ट के सिवाय मैंने किसी दूसरे से इस बारे में बात नहीं की।"

उसने कुछ कहना शुरू किया, लेकिन तुरन्त अपने को रोका, जैसे अपने मन को बदला हो। मैं उसकी हर भावभंगी को परख रहा था, हर शब्द को सुनने को तैयार, और मुझे निश्चय था कि लियरी मुझे कुछ बताने को ही यहाँ लाया है। अब तक उसने कुछ कहा नहीं था।

"मेरी पत्नी इस संस्था को पसन्द नहीं करती," मैंने चुप्पी को भंग

करते हुए कहा, "न संस्था को, न इसमें काम करने वाले आदमियों को। हममें इस विषय पर अरसे से कोई बातचीत नहीं हुई।"

"आपकी पत्नी को इस बारे में किस प्रकार की आपत्ति है। मेरा मतलब है संस्था के कार्यकर्ताओं के प्रति!"

"उसके एक मित्र ने उसे कहा है कि मैं कम्युनिस्टों के एक दल के साथ घूमता रहता हूँ। सिर्फ यही नहीं। उनमें से कुछ कभी-कभी मेरे घर पर भी आते हैं। और वह उन्हें जरा भी पसन्द नहीं करती।"

"हुँ।"

"निस्सन्देह, वह ठीक कहती है।"'

"आपको निश्चय है कि वह कम्युनिस्ट है ?" लियरी ने पूछा।

"नहीं, मैं इसे सिद्ध तो नहीं कर सकता, और न उन्होंने इसे स्वयं माना ही है।"

"यदि आपकी दिलचस्पी इस बात की थाह लेने की हो," लियरी ने कहा, "तो क्या आप इस दल में टिके नहीं रह सकते ? दल का नाम क्या है ?"

"कैम्ब्रिज तरुण-संघ।"

"ठीक आप उनके इतना निकट होइए कि यह जान सकें कि उनके उद्देश्य क्या हैं।" मैंने लियरी के दृष्टिकोण को समझने की कोशिश की, लेकिन उससे कुछ स्पष्ट रूप से पूछा नहीं। इसमें एफ० बी० आई० की क्या दिलचस्पी थी, इस सम्बन्ध में उसने कुछ कहा नहीं था। लेकिन यदि उनकी कोई दिलचस्पी न होती तो इस ठण्डी सुबह को वह मुझसे बात करने के लिए बाहर क्यों निकलता।

"आप काम पर कितने बजे पहुँच जाते हैं ?" लियरी ने प्रश्न किया।

अपनी जेब से मैंने घड़ी निकाली। "अब तो हमें चलना ही चाहिए, मुझे माफ कीजिएगा।" उसने मोटर गाड़ी चला दी।

मैंने यह भी सोचा कि यदि लियरी को इस मामले में दिलचस्पी है तो वह इसे खुलकर व्यक्त नहीं कर रहा है। जो प्रश्न भी उसने पूछे थे, वह

साधारण प्रश्न थे। वह किसी विशेष बात की अथवा सम्बन्धित लोगों की परवाह नहीं कर रहा था। यदि उसे दूसरा मौका मिले तो वह असली बात स्पष्टता से कहे।

"आप क्या कहते हैं, मुझे क्या करना चाहिए?" मैंने पूछा।

"मिस्टर फिलब्रिक, यह समस्या आपकी व्यक्तिगत समस्या है। हम इसमें प्रत्यक्ष दिलचस्पी नहीं ले सकते। मैं केवल यही जानना चाहता था कि कोई जानने लायक बात छूट तो नहीं गई है।"

मेरा दिल बैठने लगा और मुझे घोर निराशा का अनुभव हुआ। इसके बावजूद मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं था कि यह मुलाकात निष्प्रयोजन थी।

"मेरी सम्मति में," उसने कहना जारी रखा—"मेरी व्यक्तिगत सम्मति में आपको इस दल के साथ बनाए रखनी चाहिए। आपके कितने दोस्त इसमें उलझे हुए हैं, यह सोचिए। आप उन्हें तो धोखा नहीं देना चाहते। लेकिन इससे भी बड़ी बात यह है कि आप अपने सिद्धान्तों का बलिदान नहीं करना चाहते। यदि आप स्तीफ़ा दे देते हैं तो आप स्वयं ही इस दल को उन लोगों के हाथों में सौंप देते हैं। वास्तव में, मेरे विचार में वह लोग भी ठीक यही चाहते हैं। वह चाहते हैं कि आप स्तीफ़ा दे दें।"

"आप मुझे अगली इमारत के पास छोड़ दें। मेरा दफ़्तर वहाँ नजदीक ही नुक्कड़ पर है।"

"मैं आपसे मिलता रहूँगा," उसने कहा। ठीक, लियरी बात का क्रम यहीं तोड़ने नहीं जा रहा था, "इस बीच आप मेरा फोन नम्बर नोट कर लें। यदि कभी मेरी सहायता की जरूरत हो, तो मुझे अवश्य याद कीजिएगा।" उसने मोटर रोकी और मेरी ओर मुड़ा। "मेरे विचार में आपको अपनी समस्या किसी से स्पष्ट शब्दों में नहीं कहनी चाहिए। लेकिन इसका फैसला आपको खुद करना है। एक बात निश्चित है; आप किसी से यह न कहें कि आप हम लोगों से मिल चुके हैं। इससे कोई फ़ायदा तो होगा नहीं, अलबत्ता नुकसान पहुँच सकता है। मैं इतना ही कहूँगा कि आप अपनी

आँखें खोलकर रखें। सम्भव है कि आप किसी महत्त्वपूर्ण बात का पता चला लें। कोई भी महत्त्वपूर्ण खबर, जिसके लिए आप सोचें कि हमें पता होना चाहिए, हम तक पहुँचा दें।"

अगले दिनों में तरुण संघ के मामले में मैंने बीचर और सोलोमन बन्धुओं को पहले से अधिक आजादी का उपभोग करने दिया और वे संस्था को अप्रत्यक्ष सक्रियता के वेग में बहा ले गए। कभी-कभी मैं उनकी नीतियों के प्रति विरोध जतला देता था, लेकिन इस विरोध को कटु सीमा तक नहीं पहुँचने देता था। मैंने शीघ्र ही जान लिया कि अधिकांश सदस्यों को इन कार्यवाहियों के प्रति प्रायः अन्धकार में ही रखा जाता है, और शतरंज के मोहरों की तरह वक्त पर खेलने के लिए तब तक वहीं पड़े रहते जब तक कि मेरा मौन जारी रहता। यद्यपि मैंने दल में अपनी दिलचस्पी का बहाना बनाए रखा, लेकिन मैं अब कुछ करता-धरता न था। मैं किन्हीं भी नये लोगों को न मिलता था, विभिन्न कार्यवाहियों के लिए अपने दोस्तों का सहयोग न माँगता था और कार्य के प्रति अपनी उदासीनता के लिए व्यस्तता का बहाना गढ़ देता था। तरुण-संघ में रुचि क्षीण होती गई और धीरे-धीरे बैटकों में हिस्सा लेने वाले सार्वजनिक सदस्यों की संख्या पहले से कहीं कम हो गई।

मैं अपने को एक षड्यन्त्रकारी के समान मानने लगा। कई ऐसी चिन्ताजनक घड़ियाँ आती थीं जब मेरे घनिष्टतम मित्र, ऐसे मित्र—जिन पर मैं विश्वास कर सकता था—ऐलिस सोलोमोन और गौर्डन केस—संघ के नाम पर होने वाली कुछ बातों का विरोध करते थे। मैं ऐसे समयों पर उनके प्रश्नों को जान-बूझकर टाल जाता था और विश्वस्त रूप में कुछ बताए बिना उन्हें सन्तुष्ट करने की चेष्टा करता था। भेद की बात मैंने अपने तक ही सीमित रखी।

मेरा मुख्य उद्देश्य इस बात की साक्षी को इकट्ठा करना था कि संघ के कौन-कौन-से सदस्य कम्युनिस्ट थे। इस दृष्टि से मैंने अपनी स्थिति में एक ही महत्त्व का परिवर्तन किया। मैंने एक बार भी प्रत्यक्ष रूप में अपने को कम्युनिस्ट-विरोधी नहीं जतलाया। परिणाम यह हुआ कि सोलोमन बन्धु

और बीन्चर स्पष्टतया मेरी ओर आकर्षित हुए। हममें कई प्रश्नों पर मत-भेद होता था। मैं अपने नये रंग को एकाएक प्रकट नहीं कर सकता था। वे अपनी विचार-धारा में बड़ी कोशिशों से मुझे 'दीक्षित' करने में व्यस्त रहने लगे और बहुत-सा कम्युनिस्ट व कम्युनिस्ट-पोषित मोर्चों से सम्बन्धित साहित्य पढ़ने के लिए मुझे देने लगे। मैं इस सबको ध्यान से पढ़ता था। जब मैं इस साहित्य को घर में ले जाने लगा तो ईवा क्रुद्ध हुई और उसने घृणा और उपेक्षा का भाव दरशाया। उसने इस साहित्य को एक नज़र देखने से भी इन्कार किया।

वसन्त के शुरू के दिनों में कभी-कभी कोई-कोई खबर मैं फेडरल ब्यूरो आफ़ इन्वेस्टिगेशन में हेरल्ड लियरटी को पहुँचाता रहा। इन खबरों को मैं पत्रों की सूरत में भेजता था और उसे अपनी और कैम्ब्रिज तरुण-संघ की कार्यवाहियों से अवगत रखता था। पहली मुलाकात की तरह हेरल्ड और मुझमें दूसरी मुलाकातें भी हुईं। ये सब मुलाकातें उसके कहने पर ही हुईं। जो खबरें मैं उस तक पहुँचाता था, उनके बारे में वह चर्चा नहीं चलाता था। केवल एक बार, वह भी घुमा-फिराकर, उसने अपने विचारों की एक झलक मुझ तक पहुँचने दी। यह बात भी एक चेतावनी की तरह ही कही गई।

"फिलब्रिक," उसने कहा—"मुझे विश्वास है कि कुछ लोग आपमें जो नेतृत्व की शक्ति है, उसे बखूबी पहचानते हैं। वह जानते हैं कि आप कितने बुद्धिमान् हैं। वे यह सोचते हैं कि वे आपको अपना साधन बना सकते हैं। यदि ऐसी ही बात है तो वह आपके सामने नये प्रस्ताव भी रखेंगे, आपसे मेल-जोल बढायँगे।"

"किस प्रकार का प्रस्ताव ?"

"कोई विशेष नहीं," उसने अपने कन्धों को अज्ञानसूचक ढंग से हिलाया लेकिन मुझे स्पष्ट था कि वह किसी बात को जान-बूझकर मुझसे नहीं कह रहा है। "वक्त-बवक्त वह आपसे मदद माँग सकते हैं, अपनी योजनाओं में सम्मिलित होने के लिए कह सकते हैं, अपने लिए कुछ काम करने का प्रस्ताव

रख सकते हैं।"

"आपका अभिप्राय कम्युनिस्टों से है ?"

"खैर, मैं निश्चित रूप से ऐसा तो नहीं कह सकता। लेकिन आपके पास वे पहुँचेंगे अवश्य। मेरा मतलब है कि यदि ऐसा हो तो अपने भीतरी, असली भावों की परवाह न करते हुए, आप कभी उन्हें इन्कार न करें। साथ-ही-साथ, उन्हें 'हाँ' करने में भी दुविधा दिखलाएँ। कूदकर ऐसे मौके को हाथ में लेने का यत्न न करें। उनसे कहें कि आपको सोचने का अवसर मिलना चाहिए। आप समझ रहे हैं न।"

मैं ठीक से समझा तो न था, लेकिन स्वीकृतिपूर्वक सिर हिलाया।

"अब," उसने कहा, "जो मैं कहने जा रहा हूँ, वह महत्त्वपूर्ण है। यदि इस प्रकार का कोई अवसर आए तो तत्काल मुझे सूचना दीजिए। उसी दम। तब हम फिर इस विषय में बातचीत करेंगे।"

बातचीत के इस रुख ने मुझे काफ़ी आश्चर्य में डाल दिया था; मैंने उत्तर में इतना ही कहा—"अच्छा हेरल्ड, ऐसा ही होगा।" यह पहला मौका था जब उसने मुझे कोई स्पष्ट आदेश दिए थे, इस चेतावनी के अलावा कि मैं उससे मिलने-जुलने के भेद को छिपाए रखूँ। अब यह पूछने की जरूरत नहीं रही कि क्या मैं कभी-कभी उससे मिलकर खबरें देता रहूँ ? मैं देख रहा था कि एफ० बी० आई० के इन प्रतिनिधियों से मनमानी नहीं की जा सकती। उनके साथ तो उनकी चाल से ही चला जा सकता है; राह दिखाना भी उन्हीं का काम है। स्पष्ट रूप से मैं यह भी नहीं समझ रहा था कि लियरी का असली प्रश्न क्या है ? लेकिन जब मैं पहली बार एफ०बी० आई० के दफ़्तर जाकर एक एजेंट से मिला था, उसके शब्द मुझे बखूबी याद थे—"हम कानून के ही साधन हैं, और हम बात कानूनी स्तर पर ही कर सकते हैं।" इस बीच इसके अर्थ थे, हम उन पर नजर रखते हुए असली घड़ी की इन्तजार करें।

इन सरदी और वसन्त के दिनों में, तरुण-संघ ने बोस्टन के क्षेत्र में शक्ति-विषयक प्रचार पर ही जोर दिया, और युद्ध के विरुद्ध सभाओं के आयोजन

में सहायक होता रहा। युद्ध की लपेट में आने के खतरे से बचने के लिए हमने हजारों सार्वजनिक प्रार्थना-पत्र तैयार करवाए। अर्थात्, युद्ध के विरोध में हम स्वाभाविक मानवीय भावनाओं को उभारते व उनका प्रयोग करते थे।

इस विषय में साप्ताहिक 'वर्कर' (सण्डे वर्कर) जिस प्रचार-धारा को प्रवाहित करता था, उस पर मैं विशेष ध्यान दिया करता था, और इस प्रचार-धारा से घनिष्ठतर परिचय पाने के लिए 'डेली वर्कर' के अंकों को भी प्रतिदिन खरीदता था। अब मुझे इस बात का निश्चय हो गया था कि मेरे हस्तक्षेप के अभाव में कम्युनिस्ट पार्टी ही कैम्ब्रिज तरुण संघ की नीतियों का निर्धारण करती है। फिर भी मैं उनके साथ कायम रहा। जहाँ सम्भव होता, उपेक्षा बरतकर मैं उनकी कोशिशों को नुकसान पहुँचाने की ताक में रहता था लेकिन इसके बावजूद उनके इतना निकट बना रहता कि उनके कम्युनिस्टों से सम्पर्क की कोई साक्षी मुझे मिल सके। इस साक्षी की खोज में बहुत दिन नहीं लगे।

रविवार २२ जून १६४१ को साप्ताहिक 'वर्कर' रोज़ की तरह छपा, और उसकी एक प्रति 'जॉय' मेरे यहाँ पहुँचा गई। इसके कालमों में रोज-मर्रा की नीति का पोषण ही था। एक सम्पादकीय टिप्पणी में रूस और जर्मनी के बीच विचार-भेद की अफ़वाहों को 'युद्ध-पिपासुओं की जय' कह-कर पुकारा गया था लेकिन तब इस ओर मैंने विशेष ध्यान नहीं। शेष सारे पत्र में युद्ध के विरुद्ध, रूजवेल्ट के विरुद्ध, राष्ट्रीय सुरक्षा की योजनाओं के विरुद्ध, ब्रिटेन को सहायता देने के विरुद्ध और हड़तालों के पक्ष में प्रचार भरा हुआ था।

लेकिन उसी शाम को रेडियो पर यह दुखदायी खबर प्रसारित की गई कि हिटलर ने अपनी सेनाओं का रुख अब तक के अपने मित्र जोसफ़ स्टालिन के देश के विरुद्ध मोड़ दिया है। कैम्ब्रिज तरुण संघ के अपने साथियों से मुझे उस दिन और उसके बाद लगातार कुछ दिन तक कोई संवाद नहीं मिला। अगले डिन मैं 'डेली वर्कर' की प्रति न खरीद सका। अखबार बेचने वाले ने कहा कि अब तक पत्र आया ही नहीं है। मैंने मन

में सोचा कि शायद उनको नई नीति का संकेत नहीं मिला है। मंगलवार, २४ जून को 'डेली वर्कर' की प्रति आखिर जाकर मुझे बुधवार, २५ जून को ही मिल सकी।

नाजियों के विरुद्ध रूस के संघर्ष का समर्थन करो। पत्र का दनदनाता शीर्षक यह था 'युद्ध-विरोधी दल का नया नारा'। अब भी इसका अर्थ युद्ध के विरुद्ध लड़ाई से था। मुख्य सम्पादकीय लेख अखाड़े के पहलवान की तरह कभी पीछे हटते, और कभी आगे बढ़ते हुए ताल ठोक रहा था। इसका कहना था—"जर्मनी के फासिज़्म और इसके अनुगामी देशों द्वारा शान्ति, आज़ादी और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के सबसे बड़े समर्थक देश पर—समाजवाद के देश पर सशस्त्र हमला एक अपराधपूर्ण, अकारण हमला है।"

गिरगिट अब रंग बदल रही थी।

"जर्मनी के फासिस्त शासकों का यह हमला खुद जर्मनी की जनता पर हमला है। इसी तरह यह हमला अमेरिका के और सारे संसार के लोगों पर किये गए हमले के समान है।"

इंग्लैण्ड और अमेरिका अब भी 'साम्राज्यवादी' राष्ट्र थे, लेकिन तर्क बदला जा रहा था। अमेरिका की जनता "श्रमिक दल, मेहनती किसान नीग्रो जनता, मध्यवर्गीय लोग"—सोवियत के हेतु को, 'डेली वर्कर' के अनुसार, अपना हेतु बना रहे थे। "हिटलरवाद के विरुद्ध सोवियत देश की लड़ाई में पूरा समर्थन और सहयोग, हर रंग के उन सब प्रतिगामियों के विरुद्ध जो सोवियत के विरुद्ध हिटलर की चढ़ाई में किसी प्रकार की सहायता भी पहुँचा रहे हैं। सब राष्ट्रों की आज़ादी पर आधारित एक जनवादी शान्ति की स्थापना के लिए!" ये नये नारे पत्र द्वारा लगाये गए थे।

इस सबसे मुझे आन्तरिक ग्लानि हुई। इसके साथ ही इसमें व्यंग्य का एक पुट भी था, जो 'वर्कर' के पृष्ठों को ध्यान से पढ़ने से अधिक स्पष्ट हो जाता था। तर्क-धारा का इस प्रकार एकाएक बदला जाना पार्टी के महत्त्वपूर्ण साथियों के लिए भी बहुत ही आकस्मिक था। इसी सांघातिक रविवार को

एक विशेष लेखमाला का प्रकाशन शुरू हुआ, जिसमें 'युद्ध-प्रचारकों' का साधन बन रहे हॉलीवुड के सिनेमा-उद्योग की भर्त्सना की गई थी। लेकिन इस नीति-परिवर्तन के बाद के अंक में लेखमाला का दूसरा लेख प्रत्यक्ष रूप में संक्षिप्त करके 'अन्तिम लेख' गिनाया जाकर प्रकाशित किया गया। काट-छाँट के बावजूद भी इससे कम्युनिस्टों की झेंप नहीं मिट सकी।

पार्टी की सन्देशवाहिका जॉय जब अगले रविवार को 'वर्कर' की मेरी प्रति लेकर आई तो उसकी आँखों में पानी भर आया था। "कितनी आफ़त की खबर है," उसने कहा, "मेरा और हमारे परिवार का तो इस खबर को सुनकर रोना ही फूट पड़ा।"

"हाँ—आफ़त की बात तो है ही, और ग्लानि की भी," मैंने उससे अखबार लेते हुए और उन्हें कुरसी पर फेंकते हुए उत्तर दिया। मैं भी खिन्न दिखाई दे रहा था, लेकिन मूलतः किन्हीं दूसरे कारणों से। इस देश में कम्युनिस्ट पार्टी की नीति में ऐसी आमूल रद्दो-बदल शायद बहुत-से लोगों के लिए अलग-अलग माने रखती थी। पार्टी के मानवीय आवरण को फाड़-कर देखने के लिए मैं इसे बहुत महत्त्व का मान रहा था। निश्चय ही युद्ध की ज्वाला के दूसरे देशों तक फैलने की खबर बुरी खबर थी। परन्तु सही सोचने वाले अमरीकनों के लिए युद्ध की खबर ३ सितम्बर १६३६ से लेकर आज तक लगातार बुरी खबर रही थी। आज का दिन ही पहली बार दुखी होने का खास दिन नहीं था—हाँ, कम्युनिस्ट पार्टी के लिए बात दूसरी थी।

मेरी यह कम्युनिस्ट दोस्त मेरे सामने आँखों में आँसू भरे खड़ी थी। मैंने घृणा से मुँह मोड़ लिया। लेकिन उसने मेरे क्रोध का ग़लत अर्थ लगाया।

"मेरे खयाल में उसने हिटलर का कभी भी विश्वास नहीं किया था," जॉय ने कहा; "स्टालिन ने उससे सन्धि करके इस हमले के लिए केवल कुछ समय पा लिया था। वह जानता था कि हमला जरूर होगा।"

ठीक, मैंने सोचा, नीति की यही नई धारा है। "आत्मरक्षा! हम इसे पहले से ही जानते थे!" मैं जॉय की तरफ़ देख भी नहीं सकता था। इस घड़ी किसी भी उद्देश्य से 'सहविचारी' बनने की मुझमें इच्छा न रही थी। मुझे

निश्चय था कि यदि मैंने अपना मुख कुछ भी खोला तो मैं अवश्य कुछ अनुचित, असंगत, चुभती हुई बात कह बैठूँगा, इसलिए मैं चुप्पी साधे रहा। पार्टी के लिए अपना दिन का काम निबटाने के लिए जॉय चली गई।

दूसरे कमरे में मैंने ईवा को रोष से फुफकारते हुए सुना। जॉय के जाने के बाद वह आई और मुझे सान्त्वना देने लगी।

"हर्ब, तुम ऐसे लोगों के साथ क्यों बेवकूफी में पड़े हो? तुम उनकी बातें क्यों सुनते हो? एक बार मैंने उसल ड़की को निकालने के लिए भड़भड़ाकर द्वार बन्द कर दिया था। और यह बकवास!" अपनी मुट्ठियाँ फहराते हुए कुरसी पर पड़े 'वर्कर' की ओर उसने हाथ से इशारा करते हुए कहा।

"ईवा", मैंने उसकी ओर देखते हुए उसके कन्धों को पकड़कर कहा, "मुझ पर विश्वास रखना, मैं जानता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ। मैं जो कुछ कर रहा हूँ, ठीक ही कर रहा हूँ।"

मेरी पकड़ से अपने को छुड़ाते हुए उसने कहा—"तुम क्या कर रहे हो? क्या तुम इन····इन कम्युनिस्टों के फेर में पड़े हो? बिल कहता है कि ये सब कम्युनिस्ट हैं। हम तो कम्युनिस्ट नहीं हैं न, हर्ब?—हम तो भद्र लोग हैं।"

"मैं इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि मैं उलझ रहा हूँ ईवा," मैंने उत्तर दिया, "लेकिन मेहरबानी करके एक बात समझे रहना। इस बात का पक्का यकीन रखना कि मैं कम्युनिस्ट नहीं हूँ। इनसे अपना पल्ला छुड़ाकर मुझे बहुत खुशी होगी; जानता हूँ कि तुम्हें भी खुशी होगी। लेकिन मुझे यह करना ही है। जनता के नाम की लाख दुहाई देने के बावजूद स्पष्ट है कि इनमें ईसाइयों की-सी दया-ममता नहीं है, व्यक्ति के प्रति सच्चा आदर नहीं है; उसकी ईमानदारी के लिए सम्मान नहीं है। लेकिन मुझे तो इन्हीं भावनाओं के लिए संघर्ष करना है। इस वक्त इन लोगों से मेल-जोल बढ़ाकर ही मैं ऐसा कर सकता हूँ,—यह लोग क्या करते हैं, इसका पता चलाकर।"

"लेकिन किस तरह? तुम किस प्रकार इसे सम्भव करोगे?"

"मैं....मैं नहीं जानता।" मुझे लियरी की चेतावनी याद हो आई और मैंने ईवा से आँख चुराई। "शायद मैं तुम्हें बता नहीं सकता, ईवा। शायद....वक्त आने पर मैं कुछ कर ही सकूँ। तुमने तो मुझ पर कभी सन्देह नहीं किया न, ईवा?"

"कभी नहीं।"

"तो कृपा करके अब भी इस विश्वास को अटूट रखो।"

उसने उत्तर में मुस्करा दिया। "मैंने तुम पर हमेशा यकीन किया है, हर्ब, तुम्हें यह अच्छी तरह मालूम है। मुझे यह भी मालूम है कि यदि तुम किसी बात को टीक समझते हो तो उससे मैं अथवा कोई भी दूसरा किसी दशा में डिगा नहीं सकता।" वह कुछ देर तक रुकी, "लेकिन मैं आशा करती हूँ कि जो-कुछ भी तुम कर रहे हो, उस पर तुम खूब सोच-विचार चुके हो।"

इसके विषय में तो मैं निश्चिन्त हो चुका था।

हिटलर की रूस के विरुद्ध अचानक चढ़ाई ऐसी प्रलयंकारी दुर्घटना थी जिसने उन कम्युनिस्टों को, जिनके बीच मैं काम कर रहा था, प्रत्यक्ष कर दिया। जब आक्रमण हुआ तब अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी उस लट्टू की तरह लुढ़क कर रह गई जिसकी गति समाप्त हो चुकी हो और जो क्रेमलिन की युद्ध-सम्बन्धी नीति की रस्सी की खींच की अपेक्षा में निठल्ला पड़ा हो। आवश्यकता थी कि रस्सी को नये सिरे से लट्टू पर चढाया जाय। इस सबसे मेरे लिए केवल एक निगाह भर देख लेने से यह बताना आसान हो गया कि मेरे परिचितों में से कौन-कौन कम्युनिस्ट पार्टी की नीति के अनुगामी हैं। तरुण संघ में मेरे कई दोस्तों ने इस भयंकर गड़बड़ के दिनों में भी अपनी विचार-स्वतन्त्रता बनाए रखी। पृथक्तावादियों ने अपनी नीति में एकाएक परिवर्तन नहीं कर लिया, और रूस पर आक्रमण के पहले जो हस्तक्षेपवादी थे, वह अब भी हस्तक्षेपवादी रहे।

परन्तु जून १९४१ और पर्ल हार्बर पर जापानियों द्वारा हमले के बीच महज बातें सुनने की और उन्हें तोलने की जरूरत थी। मेरे लिए अपने साथियों में से उनकी संख्या का जानना आँखें खोलने के बराबर था, जो हिटलर के पूर्व की ओर बढ़ने से पहले युद्ध-विरोधी थे और रूस पर हमले के तुरन्त बाद पैंतरा बदलकर एकाएक युद्ध के पक्के हिमायती बन गए। यह स्वीकार करना बहुत दुःख की बात थी कि उनकी मुख्य दिलचस्पी अमेरिका के जन-कल्याण में न होकर रूस के जन-कल्याण में और ऐसी मान्यताओं और विश्वासों में थी जिनका निर्देश 'डेली वर्कर' व पार्टी के दूसरे मुखपत्रों में होता था।

"जनता", 'वर्कर' के कालम पुकार रहे थे, "इस बात की अब माँग करती है कि यूरोप को मदद दी जाय।" इसमें पूरी सचाई नहीं थी। एक औसत अमेरिकन पार्टी की तरह बदलती हुई विचार-धाराओं को इस प्रकार मानने को तैयार नहीं था। पार्ल हार्बर की घटना के समय तक पृथक्तावादियों और शान्ति के समर्थकों का एक बड़ा दल देश पर काफ़ी प्रभाव बनाए रहा। तरुण-संघों के क्षेत्र में यह बात अधिक सचाई से लागू होती थी जहाँ कम्युनिस्टों ने युद्ध-विरोधी मोरचा तैयार करने में कड़ी मेहनत की थी। कैम्ब्रिज तरुण-संघ-जैसी संस्थाएँ, जो केवल युद्ध-विरोधी नारों पर ही जीवित थी, एक रात में ही ढह गईं, क्योंकि उनके कम्युनिस्ट समर्थक और गुप्त कार्यवाहक यह क्षेत्र छोड़कर खिसक गए। वाशिंगटन में व्हाइट हाउस के चारों ओर शान्ति-समर्थकों द्वारा फ्रेडरिक वान्डरबिल्ट फील्ड के नेतृत्व में जो पिकेटिंग होता था, वह बन्द हो गया; इन लोगों ने अपने झंडे उखाड़े और वहाँ से रफूचक्कर हो गए।

पतझड़ तक यह स्पष्ट दीख रहा था कि कम्युनिस्टों को अपनी ताकत व नीति का पुनरायोजन करना पड़ेगा और विभिन्न मोरचों द्वारा 'जनता' से अपने सम्बन्धों का सूत्र फिर से जोड़ना पड़ेगा। लेकिन इस आन्दोलन का नारा और ध्येय अब नया ही था—"युद्ध का समर्थन करो, साथी देशों को मदद पहुँचाओ, बन्दूकें अधिक और मक्खन कम पैदा करो, रूस को सहायता

दों।" तरुण संघों को, जो सदैव कम्युनिस्ट ताकत व प्रभाव की कसौटी कहते हैं, इस पुनरायोजन के आन्दोलन में बहुत महत्त्व दिया गया।

तदनुसार अक्तूबर १६४१ में बोस्टन प्रदेश के नवयुवक नेताओं को बोस्टन के होटल टूरें में एक सार्वजनिक जलसे में आने के लिए आमन्त्रित किया गया। मैसेचुसेट्स यूथ कौंसिल और इससे सम्बन्धित संस्थाओं के सब समर्थकों को यह निमन्त्रण भेजा गया। इन निमन्त्रण-पत्रों के साथ अधिकांश लोगों को जलसे में आने के लिए व्यक्तिगत रूप से भी कहा गया।

आर्थर सोलोमन, जो उन लोगों में से था जिन्होंने बड़ी मुस्तैदी से इस अदला-बदली को अपना लिया था, मेरे पास आया और उसने मुझसे अनुरोध किया कि मैं कैम्ब्रिज तरुण-संघ के प्रतिनिधि के रूप में इस जलसे में शामिल होऊँ। कुछ टालमटोल के बाद मैंने शामिल होना स्वीकार कर लिया। डाक द्वारा इसकी खबर मैंने तुरन्त ही हेरल्ड लियरी को पहुँचा दी, और उसे यह भी सूचना दी कि एक बड़ा आयोजन हो रहा है और इसकी कार्यवाही की विस्तृत खबर मैं समय पर पहुँचा दूँगा।

मनाकर ईवा को भी मैं साथ ले गया, यद्यपि उसे इसमें बहुत हिच-किचाहट थी। जलसा टूरें के बड़े सार्वजनिक हॉल में हुआ और इसमें अमेरिका के नवयुवकों की विभिन्न संस्थाओं के १०० से अधिक नेता शामिल हुए। कमरे के अगले हिस्से में ईवा और मैं आर्ट सोलोमन के साथ बैठे। कैम्ब्रिज के दूसरे प्रतिनिधियों के लिए मैंने कमरे में चारों ओर देखा, लेकिन केवल एक व्यक्ति को ही पहचान सका—अपने पुराने सहपाठी गॉर्डन केस को, जिसने कमरे के दूसरे कोने से बिना किसी भाव-प्रदर्शन के परिचय-सूचक सिर हिलाया।

जलसे की कार्यवाही को सैम एब्लो ने शुरू किया। इस व्यक्ति से मेरा पिछली संघीय कार्यवाहियों के कारण थोड़ा परिचय था। उसके बाल बारीक छँटे हुए थे और शरीर मजबूत बनावट का था। हाल के अगले हिस्सों में अध्यक्षों के बीच एक खाली मेज के सामने खड़ा होकर उसने सभा के उद्देश्य का वर्णन किया—बोस्टन के नवयुवक को राष्ट्र के सुरक्षा-आयोजन के

समर्थन में एकत्रित करना और नाज़ी आक्रमण के विरुद्ध युद्ध के पक्ष में नवयुवकों की भावनाओं को तैयार करना।

क्रमशः उसके भाषण में आवेश आ रहा था। उसने सभा के सामने एक प्रस्ताव रखा जिसमें इस सम्मेलन का उल्लेख किया गया था; फिर इसे स्वीकार करने के समर्थन में तर्क पेश किये। सैम को इस सम्मेलन में उपस्थित व्यक्तियों की सामूहिक भावना से निश्चित ही परिचय नहीं था। क्योंकि कमरे में कम्युनिस्ट और कम्युनिस्ट-विरोधी, शान्ति-समर्थक, युद्ध के हिमायती, पृथक्तावादी और हस्तक्षेपवादी, सब प्रकार के लोग जमा थे।

परन्तु भीड़ को भड़काने में ऐबलो सिद्धहस्त प्रवक्ता था। उसकी आवाज़ में तेजी आती गई और उसके रोष के लय में वृद्धि आ गई। उसने कहा कि मित्र-देशों को और रूस को तुरन्त सहायता पहुँचानी चाहिए और सुरक्षा के साधनों के उत्पादन में वृद्धि होनी चाहिए। फौज की संख्या में बढ़ती, एतलांतिक चार्टर की स्वीकृति और हिटलर के विरुद्ध लोहा लेने वाली ताकतों को मदद पहुँचाने के उद्देश्य से विशेषकर न्यूट्रैलिटी ऐक्ट के निरसन के लिए उसने जोर दिया।

उसके भाषण में प्रायः ऐसा कुछ भी नहीं था। जिससे मेरी असहमति थी। मैं अब भी दिल से शान्ति का समर्थक था, लेकिन मैं बहुत पहले इस नतीजे पर पहुँच चुका था कि लड़ाई से बचने का सर्वोत्तम उपाय, विशेषतया अमेरिका के लिए, यही था कि इंग्लैण्ड और उसके मित्र देशों को यथाशक्ति सहायता पहुँचाई जाय और ज़रूरत हो तो नाज़ियों से सशस्त्र मुकाबिला भी किया जाय। परन्तु जैसे सैम का भाषण आगे बढ़ रहा था, वह 'डेली वर्कर' में छपे हुए कालमों का बोलता हुआ रिकार्ड-मात्र जान पड़ रहा था। मुझे स्पष्ट था कि वह कठपुतली-भर है, और इससे मेरा क्रोध बढ़ रहा था। कुछ मास ही पहले सैम के मुख से ठीक इससे विरोधी विचारों का प्रवाह इसी प्रकार झरता था, वह युद्ध की और उसके उद्देश्यों की ऐसे ही जोश-खरोश से भर्त्सना करता था। यह सब शान्ति से सह लेना मेरे लिए दूभर हो रहा था।

'डेली वर्कर' के लेख भी मुझे कण्ठस्थ हो रहे थे—मैं उन नीतियों से परिचित था जो जून के आक्रमण के पहले और बाद में इस पत्र द्वारा प्रचारित की जा रही थीं। सैम का कटु भाषण मेरी ईमानदारी की भावना को कोंच रहा था। हाल के भीतर बैठे कम्युनिस्टों को चिकोटी काटने की, उन्हें उसी नशे की प्याली पिलाने की, जिसे वे अब तक पीने के आदी थे और जिसे अब वह भूलने की कोशिशें कर रहे थे, मेरे अन्दर भारी उमंग पैदा हुई।

मैंने ईवा के हाथ को दबाया। सैम एबलो के भाषण से ऊबकर उसने मुख मोड़ा और मेरे स्पर्श का प्रत्युत्तर मेरे हाथ को दबाकर दिया, "दिल में ढाढस बाँध के रखना," मैंने उसके कानों में फुसफुसाया, "मैंने कुछ करने की ठान ली है।"

सैम ने अपने भाषण को युद्धपक्षी प्रस्ताव के समर्थन की अपील करके समाप्त किया। चारों ओर तालियाँ पीटी गईं। खड़ा होकर मैंने सभा के अध्यक्ष का ध्यान आकर्षित करने के लिए हाथ से इशारा किया और बोलने की अनुमति चाही।

"हर वक्ता महाशय अपना और उस संस्था का नाम अवश्य बोलें जिस का वह प्रतिनिधित्व करते हैं।" मेरी ओर इशारा करते हुए अध्यक्ष ने मुझे भाषण की स्वीकृति दी।

"हर्बर्ट फिलब्रिक, कैम्ब्रिज तरुण-संघ के प्रतिनिधि।"

इसके बाद मैंने अपने जी की भड़ास निकालनी आरम्भ की। तीन मिनट तक मैंने सैम एबलो, आर्ट सोलोमन और 'डेली-वर्कर' द्वारा भुलाए गए सभी तर्कों का विस्तृत बखान किया। मैंने "वाल स्ट्रीट के उन एकाधिकारियों का, जो देश को युद्ध की ओर खींच रहे थे" भण्डा-फोड किया। "साम्राज्यवादी" ब्रिटेन, फ्रांस और हालैण्ड से किसी भी प्रकार के सहयोग का मैंने जोर-शोर से विरोध किया। उन अस्त्र-शस्त्र के उत्पादकों और उद्योगपतियों की मैंने भयंकर भर्त्सना की, जिन्हें "हर दशा में लाभ-ही-लाभ होता है और दुनिया को युद्ध की आग में झोंक कर किसी प्रकार की क्षति भी

नहीं होती।" लोगों को उत्तेजित करने के लिए जिस तर्क का प्रयोग भी कर सकता था, मैंने किया।

सभा-गृह में एक भेदभरी चुप्पी छा गई, जैसी कि तूफान के बरसने से पहले छाया करती है। इस चुप्पी में मेरी आवाज़ देर तक गूँजती रही। ईवा ने मेरे कोट को खींचकर मुझे रुकने के लिए इशारा किया, लेकिन मैंने अपने वक्तव्य को जारी रखा।

"इसे मत भूलिए," मैंने कहा कि 'स्वरक्षा' के नारे को आक्रमणात्मक युद्धों को आड़ के लिए बरता जा सकता है। रूजवेल्ट द्वारा अंकित आयोजन, जिनमें आक्रमणात्मक हथियारों पर विशेष जोर दिया जा रहा है, इस बात का स्पष्ट द्योतक है कि प्रेजिडेण्ट देश को युद्ध की राह पर धकेल रहे हैं। नाजी प्रथमाक्रमण से हमारे देश के बहुत छोटे अंश को वास्तविक खतरा है—पूँजी के बड़े-बड़े मालिकों को, बड़े-बड़े व्यवसायियों को, जिनकी जायदादों, मण्डियों, पैसे आदि को भय पैदा हो गया है।" मेरे ये शब्द मेरे गले में घुट रहे थे। लेकिन मैं अपने अभिप्राय पर अडिग रहा और प्रधान की कुरसी के आस-पास मेरे भाषण से बढ़ रही चिन्ता के फलस्वरूप हो रही कानाफूसी को सन्तोष से भाँपता रहा।

"यदि हमारा देश युद्ध में कूदेगा तो यह कदम इन हितों की रक्षा के लिए होगा; अमेरिका की जनता और हमारे जीवन-यापन के परम्परागत तौर-तरीकों की रक्षा के लिए नहीं। अमेरिकी जनता के पास इस युद्ध में जूझने का कोई भी कारण नहीं है। हमें इससे बचकर रहना है तो क्या इतिहास और साधारण तर्क युद्ध-रत पक्ष-विपक्षियों को किसी प्रकार की सहायता पहुँचाने के विरुद्ध हमें चेतावनी नहीं देता ? युद्ध से हमारे लिए अत्यावश्यक सामाजिक सुधारों का नाश हो जायगा जैसे कि फ्रांस में हो गया था....मजदूर-संघ टूट जायँगे, न्यूनातिन्यून तनख्वाहों का निर्देश न करने वाले कानून ढीले पड़ जायँगे, काम करने के घंटों में वृद्धि हो जायगी, सामाजिक सुरक्षा भंग हो जायगी और भाषण व अखबारी स्वतन्त्रता को उठाकर ताक पर रख दिया जायगा। अमेरिका के फौजी संगठन में वृद्धि

तानाशाही के ढाँचे की ओर इशारा कर रही है। हम नाज़ीवाद से घृणा करते हैं, यह स्वाभाविक ही है। लेकिन हमें इस बात का ध्यान रखना है कि हमारी इस घृणा को प्रजातन्त्रीय बुनियादों के कमज़ोर करने के प्रचार का साधन और हमें निरर्थक युद्ध के गढ़े में गिरा देने का ज़रिया न बना लिया जाय।"

जब मैं एकाएक बैठ गया तो जैसे तूफ़ान टूट पड़ा। आर्ट सोलोमन मेरी ओर हैरानी से टकटकी लगाए था; प्रत्युत्तर में मैं चेहरे पर एक फीकी मुस्कराहट ले आया। कमरे के हर हिस्से में भाषण करने के लिए उत्सुक लोग खड़े होकर प्रधान की अनुमति चाहने लगे। अध्यक्ष ने शान्ति कायम रखने के लिए कहा। ईवा कमरे से चल निकलने के लिए दरवाज़ों की तरफ़ देखने लगी। इस भीड़ के कुछ अभद्र लोग इस बात की ओर भी इशारा कर रहे थे कि वह मुझे होटल से उठाकर बाहर फेंक देने के पक्ष में थे। लेकिन मैं अपने अगले कदम का निश्चय भी कर चुका था। मैं इन क्रोधाविष्ट लोगों के आगे सिद्ध कर दूँगा कि मैं अपने व्यक्तिगत विचारों को बहुमत के सामने झुकाने के लिए तैयार हूँ। लेकिन इसके लिए मैं अपना वक्त खुद चुनूँगा और ठीक समय की प्रतीक्षा करूँगा।

सभा में तो जैसे दंगा ही मच गया, जिसका केन्द्र स्वयं मैं था। एक के बाद दूसरे वक्ता ने मेरे तर्क की धज्जियाँ उड़ाईं। कुछेक ने मेरे समर्थन में, मेरे विचारों की उग्रता में नरमी लाने की कोशिश करते हुए, लेकिन अन्ततः शान्ति के अनुमोदन में ही, बोलने की कोशिश की। इन लोगों को हल्ला करके बैठा दिया गया। सभा के कार्यवाहक, जो मेरी नज़रों में कम्युनिस्ट थे, एक स्वर से बोल रहे थे और वे सभा को अपनी पटरी पर शीघ्र ही ले आए। लगभग एक घंटे तक भाषणों का ताँता बँधा रहा।

अन्त में किसी ने सुझाव रखा कि सैम एबलो द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव को स्वीकार किया जाय और इस बहस को बन्द कर दिया जाय। मेरी योजना की पूर्ति के लिए, यही उपयुक्त क्षण था।

मैं फिर उठ खड़ा हुआ और मैंने बोलने की अनुमति माँगी। आर्थर

का चेहरा पीला पड़ गया और उसने मेरी आस्तीन खींचकर मुझे बैठाने की कोशिश की। कुछ दूसरे लोग मुझे धमकाने की मुद्रा में अपनी कुर्सियों से उचकने लगे। मैंने गला फाड़कर चिल्लाना शुरू किया—"सभापति महोदय!" इस पर वह मेरी उपेक्षा न कर सके और मुझे भाषण की अनुमति दी। कमरे में एक वेदना भरी कराह-सी उठी। कुछेक ने मेरी बेइज्जती में कुछ शब्द भी कहे, लेकिन आखिर चुप्पी छा गई।

"सभापति महोदय!" मैंने मिसरी से मीठे स्वर में कहा, "डॉर्चेस्टर के प्रतिनिधि द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव को मैं ताईद करता हूँ।" सब ओर आश्चर्यभरा मौन छा गया और मैं उन्हें अपने इस अनायास परिवर्तन को समझने की कोशिश में हैरान छोड़कर, और यह सोचते हुए कि कहीं मैं स्वयं तो हद नहीं लाँघ गया, बैठ गया। इसके बाद जैसे एकाएक रोशनी जगमगा उठी। ऑर्थर सोलोमन अपनी जगह से कूदकर आया और उसने मुझसे हाथ मिलाया। मेरी ओर ताक रहे मुखों पर मुस्कराहट खिल आई। किसी ने बढ़कर मेरी पीठ थपथपाई। "हम जानते थे कि तुम समझ जाओगे।" उसने कहा। सारी घटना विनोद की तरंगों में जैसे बह गई।

लेकिन हरेक के साथ ऐसा नहीं हुआ। मैंने गॉर्डन केस की ओर देखा। वह अपनी कुरसी पर आगे बढ़कर बैठा हुआ मेरी ओर निराशाभरी नज़रों से देख रहा था। मेरी आँखें झुक गईं। प्रस्ताव पर मत लिये गए। मैंने स्वीकृति के पक्ष में हाथ उठाया। प्रस्ताव के विरोध में कोई भी न था, यद्यपि मैंने देखा कि एक बहुत बड़ी संख्या ने किसी ओर भी मत न दिया। प्रधान ने प्रस्ताव के सर्वसम्मति से स्वीकृत होने की घोषणा की और सभा बरखास्त हुई।

कम्युनिस्ट शायद मेरी इस नई करवट की इन्तजार में थे, जो मैंने होटल टूरें में पार्टी के अनुशासन को स्वीकार करके ली थी। इसके बाद मुझमें और मेरी कार्यवाहियों के प्रति उनकी दिलचस्पी में जैसे बाढ़ आ गई। इस सबकी सूचना मैं हेरल्ड लियरी को दे रहा था। "ठीक, ठीक", लियरी इतना ही कहता था, "तुम ठीक राह पर हो।"

अब साँझ के वक्त ज़्यादा तादाद में अपरिचित लोग मेरे घर आने लगे। उन्होंने मुझ पर प्रायः हर विषय की पुस्तिकाओं की बौछार करनी शुरू की; इनमें से बहुत पर स्पष्ट शब्दों में अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी की मोहर छपी होती थी। मैंने देखा कि अतिथि के रूप में मेरे पास कई पति-पत्नियों के जोड़े आया करते थे। अनगिनत नये लोगों से मेरी जान-पहचान करवाई गई, इस परिचय में उनके पार्टी में प्रयुक्त होने वाले नामों का प्रयोग किया जाता था—मार्गट, जॉन, नैन्सी, रे—और मैं सोचा करता था कि यही उनके वास्तविक नाम हैं या आवरण के लिए उपनाम-मात्र। उनमें से कई लोग यह बात छिपाने का प्रयत्न न करते थे कि वह यंग कम्युनिस्ट लीग के, जो कम्युनिस्ट पार्टी का तरुण-विभाग था, सदस्य और सक्रिय कार्यकर्ता हैं।

मेरे स्थान पर वह बहुधा शाम की पार्टियाँ आयोजित कर लेते थे जिनमें बाहर के चार या पाँच व्यक्ति रहा करते थे। ईवा अधिकतर इन में हिस्सा न लेती थी और इस समय मित्रों से मिलने या सिनेमा देखने चली जाती थी। मेरे अतिथि कभी-कभी उसके बारे में पूछते थे लेकिन मैं उचित बहाने बना दिया करता था।

शुरू के दिनों में कई बार मुझसे होटल टूरें की सभा में मेरे "ट्राटस्की वादी" विचलन के बारे में प्रश्न पूछे गए, लेकिन उसे समझने की कोशिशें बीच में ही छोड़ दी जाती थीं। शायद वह उस घटना के अन्तिम भाग से ही सन्तुष्ट थे। अक्सर मैं पार्टी के नीति-सम्बन्धी वाद-विवाद में अपनी विचार-स्वतन्त्रता दिखलाने के लिए हिस्सा लिया करता था। मुझसे कितने ही आन्दोलनों में भाग लेने के लिए कहा जाने लगा। यह आन्दोलन प्रायः प्रार्थना-पत्रों पर सार्वजनिक रूप से हस्ताक्षर लेने का रूप लिया करते थे जो कि कम्युनिस्टों का एक मनपसन्द तरीका था। इनमें से कई आन्दोलनों से पार्टी का नेतृत्व छिपाकर रखा जाता था। वह हमेशा तरह-तरह के शब्द-जाल का इस्तेमाल किया करते थे,······की बोस्टन कमेटी,······का नागरिक संघ,······की नेशनल कांग्रेस आदि-आदि।

जान-बूझकर मैंने उनके कई निमन्त्रण स्वीकार नहीं किये। मेरी मन्शा उनके काम-काज में इतना धँस जाने की नहीं थी कि मैं अपने धन्धे और बढ़ रहे परिवार के लिए कुछ कर न पाऊँ। लेकिन ऑर्थर सोलोमन ने, जो मेरे घर में सबसे अधिक बार आया करता था, मेरे सामने एक ऐसी योजना रखी जिसकी ओर मेरा ध्यान आकृष्ट हुआ। उसने बोस्टन में एक नई तरुण-संस्था का आयोजन करने वाली संयोजन-समिति में मुझसे काम करने को कहा।

"यह संस्था करेगी क्या?" मैंने बड़ी होशियारी बरतते हुए और कैम्ब्रिज तरुण-संघ के पिछले अनुभवों को याद करते हुए पूछा।

"हर्ब, तुम्हारे लिए यह संस्था बिलकुल ठीक रहेगी। पहले तो इसका नारा 'युद्ध को जीतो' रहेगा। बोस्टन के नौजवानों को युद्ध में शीघ्र विजय पाने के लिए अपना सम्पूर्ण समर्थन देने की प्रेरणा करनी होगी। जैसा कि तुम्हें मालूम है शहर में नौजवानों की संस्थाओं की कमी नहीं है। बोस्टन में इनकी संख्या हजारों में है। हमें इन सभाओं में सामंजस्य स्थापित करने वाली एक समिति की आवश्यकता है जो देश की बड़ी सामयिक जरूरतों की ओर सबका ध्यान खींच सके और उन जरूरतों को हल करने की कोशिशें कर सके।"

"जिन संस्थाओं को साथ लेकर हमने काम करना है, उन्हें आप बोस्टन कौंसिल ऑफ़ सोशल एजेंसीज के सम्पर्क से पहले ही जानते हैं। आप कितने दिन तक उनके साथ थे, पाँच साल क्या?"

"हाँ," मैंने जवाब दिया, "मैं पाँच साल तक उनके साथ था। मैं उनमें बहुतों को अच्छी तरह जानता हूँ।"

"मैं यही कह रहा हूँ। आप इसमें महत्त्वपूर्ण सहायता दे सकते हैं।"

"उस कमेटी के मुख्य उद्देश्य क्या रहेंगे?" मैंने पूछा।

"ओह! भ्रंशोद्धार, रक्त-दान के लिए अभियान, प्रतिरक्षा ऋण पत्रों की बिक्री, फ़ौजियों के मनोरंजन के लिए साधन जुटाना आदि। आप जानते ही हैं।"

"मैं जो कुछ भी कर सकता हूँ, करूँगा आर्ट," मैंने स्वीकार करते हुए कहा, "लेकिन मैं अपनी हिम्मत से ज़्यादा काम में हाथ नहीं डालना चाहता।"

इस प्रकार मैं 'विजय के लिए बोस्टन तरुण-संघ' (बोस्टन यूथ फॉर विक्टरी कौंसिल) में प्रविष्ट हुआ। यह ऐसा दल था जिसके मूल प्रवर्त्तकों से मैं अनभिज्ञ था। आर्थर ने जो नियमावली मुझे दी, उससे यह पता नहीं चलता था कि इस कार्यक्रम का उद्भव यंग कम्युनिस्ट लीग में हुआ, अथवा यह संघ वास्तव में ही वैध, गैर-कम्युनिस्ट संस्था थी जिसके निर्माण के बाद कम्युनिस्ट लोग इसमें घुस आए थे। फिर भी, दो कारणों से इसमें शामिल होना मैंने मान लिया। एक तो मैं यह देखना चाहता था कि यह संस्था कर क्या रही है, और दूसरे मेरा विचार था कि यह जानने में एफ० बी० आई० की दिलचस्पी भी रहेगी। और फिर, 'विजय के लिए तरुण संघ' का यदि उद्देश्य युद्ध को जीतने में मदद करना ही था और यदि इसे वैध ढंग से अमेरिका के हितों को ध्यान में रखते हुए कार्य-रत रहना था तो मैं अवश्य इसको सहायता पहुँचाना चाहता था और साथ-ही-साथ इसके अन्दर रहकर कम्युनिस्ट-प्रभाव और नियन्त्रण का विरोध भी करना चाहता था।

परिस्थितियों ने ऐसी करवट ली कि मेरा काम आसान हो गया। यंग कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों को, जो 'विजय के लिए तरुण संघ' के कार्य-क्रमों पर अपना नियन्त्रण जमाने की जी-जान से चेष्टा कर रहे थे, नौजवान, आदर्शवादी गैर-कम्युनिस्टों के, जिनका नेतृत्व नौजवानों के साथ काम करने वाले चालाक और अनुभवी लोग कर रहे थे, भरपूर, पुरजोश समर्थन का आश्वासन मिला।

'युद्ध में विजय' के नारे पर २५० से अधिक तरुण संस्थाओं ने साथ दिया और अच्छे-भले लोगों की देख-रेख में कम्युनिस्टों का इस संस्था में प्रवेश बहुत सफल नहीं हो सका। एक दूसरा कारण जो उनके विरोध में काम कर रहा था, पर्ल हार्बर की घटना के बाद अमेरिका का युद्ध में सरकारी

तौर पर हिस्सा लेना था। इससे सब प्रकार के पृथकतावादी एकबारगी ही प्रभावहीन हो गए और सब देशवासियों की प्रायः एक आवाज़ ही हो गई। जान पड़ता था कि फिलहाल तो कम्युनिस्टों के पास कोई अलग, नई चाल शेष नहीं रही थी और इससे 'विजय के लिए तरुण संघ' के कार्यक्रम पर पूरी तरह से अपनी धाक कभी न जमा सके।

लेकिन उनकी असफलता के और कारण भी थे। नगर के सामाजिक कार्यकर्ता इस बात पर ज़ोर देते थे कि 'युद्ध के प्रति हर किसी महत्त्वपूर्ण कार्यवाही का नागरिक-सुरक्षा के अधिकारियों की कार्यवाहियों से सामंजस्य व उनकी स्वीकृति का होना आवश्यक है। ऐसे विषय, जिनमें प्रचार के उद्देश्य से कम्युनिस्टों की गहरी दिलचस्पी थी, छान-बीन के बाद रद्द कर दिये जाते थे। 'विजय के लिए तरुण संघ' से जो अनुभव प्राप्त हुआ वह यह था कि वैध- कार्यवाहियों में कम्युनिस्टों के प्रभाव पर अंकुश रखा जा सकता है और उनके गुप्त-प्रवेश को अधिकांश सदस्यों के संस्था और इसकी कार्यवाहियों के प्रति सजग रहने से असफल किया जा सकता है। 'विजय के लिए तरुण संघ' में भी ऐसा ही हुआ; यहाँ यंग कम्युनिस्ट लीग ने इस दल को अपने वश में करने की सिरतोड़ कोशिश की और असफल होने पर बहुत निराशा और रोष मनाया। सहायता के प्रदर्शन और असफलता पर निराश दीखने के अलावा मैंने उनकी उद्देश्य-पूर्ति के लिए और कुछ नहीं किया।

मार्च, १९४२, में मुझे यह भान होने लगा कि मेरा परिवार मेरे व्यापार-साधनों की तुलना में ज़्यादा तेज़ी से बढ़ रहा है, विशेषतया तब जब कि ईवा ने बताया कि आगामी पतझड़ में एक और लड़का होने वाला है। (हम आप-ही-आप मना रहे थे कि इस बार अवश्य लड़का ही होगा)।

मैंने शीघ्र ही अच्छी नौकरी के लिए तलाश शुरू की। बोस्टन की एडवर्टाइज़िंग क्लब के अपने सम्पर्कों द्वारा मुझे मालूम हुआ कि बोस्टन की एम० एण्ड पी० थियेटर्स कम्पनी की न्यू इंग्लैण्ड स्थित पैरामौंट थियेटर्स

डिवीजन में एक जगह खाली थी। एक मुलाकात में ही मेरा काम बन गया। मुझे इस दल का सहायक एडवर्टाइजिंग डायरेक्टर नियुक्त कर लिया गया। यह काम अप्रैल में आरम्भ होना था।

आर्थर सोलोमन इन दिनों अपनी आदत के मुताबिक मेरे पास आया और हमने उसे कॉफ़ी पीने के लिए निमन्त्रित किया। उसे यह समाचार सुनाया। मैंने इस समाचार को उस तक पहुँचाने में खास मज़ा लिया, क्योंकि मेरा विचार था कि इससे मेरे, उसके और उसके कम्युनिस्ट साथियों के बीच के नाते-रिश्ते टूट जायँगे। मैं न केवल अपना दफ़्तर ही कैम्ब्रिज से बाहर ले जाने वाला था, मेरी इच्छा अपना घर भी किसी दूसरी जगह पर बसाने की थी। कैम्ब्रिज की यंग कम्युनिस्ट लीग अब मुझसे फ़ायदा न उठा सकेगी, और इसकी मुझे प्रसन्नता थी।

आर्थर को इस समाचार से हैरानी तो हुई लेकिन उसने निराशा के कोई भाव प्रकट नहीं किये। "यह किस प्रकार की नौकरी है?" उसने पूछा।

"मैं हैरी ओनिंग के सहायक के रूप में काम करूँगा। न्यू इंग्लैण्ड के मनोरंजन-जगत् के पत्र-प्रतिनिधियों में वह अग्रणी है। देश के इस हिस्से के सौ से अधिक थियेटरों के प्रचार और विज्ञापन का उत्तरदायित्व उस पर है।"

"भई वाह!" आर्थर ने प्रसन्न होकर कहा—"यह तो खूब अच्छा हुआ।" मैंने न सोचा था कि इस समाचार से उसमें मेरे समान ही उत्साह पैदा हो जायगा। उसने मुझ पर प्रश्नों की बौछार लगा दी, मुझे जवाब देने में भी दिक्कत हो रही थी। आपका दफ़्तर कहाँ रहेगा? आप इस काम को आरम्भ कब कर रहे हैं? आपकी नौकरी कब शुरू होगी? इस ओर उसकी उत्सुकता की थाह न थी।

"इतनी अच्छी नौकरी आपको मिल कैसे गई?"

"खासकर एडवर्टाइजिंग क्लब के अपने दोस्तों की सहायता से," मैंने उत्तर दिया।

"बोस्टन की एडवर्टाइज़िंग क्लब !" आर्थर ने जैसे अपने स्थान से उछलते हुए कहा। "क्या आप उस क्लब के सदस्य हैं ?"

"हाँ। लेकिन मैं नहीं जानता था कि इसमें आपकी दिलचस्पी होगी।"

"क्यों नहीं ? यह तो कमाल की बात है। एडवर्टाइज़िंग क्लब ? और आप उसके सदस्य हैं।"

बड़ी रात तक वह प्रश्न पूछता रहा। ईवा ने उबासी भरी और वह सोने के लिए चली गई। आखिरकार मैं भी आर्थर को दरवाज़े की ओर ले जाने में सफल हुआ।

"अच्छा," मैंने कहा, "कैम्ब्रिज की इन कार्यवाहियों से पिण्ड छूटने पर मुझे खुशी होगी। अब मैं कुछ आराम करूँगा, अपने काम में अधिक ध्यान दूँगा और अपने परिवार से अधिक सामीप्य पैदा करूँगा। सार्वजनिक काम ठीक होते हैं लेकिन इनमें बहुत अधिक समय खर्च हो जाता है। इनसे कुछ दिनों के लिए बचे रहने में मुझे खुशी होगी।"

आर्थर की तेज़ आँखों ने होशियारी से मेरा निरीक्षण किया। "आप इनसे हमेशा के लिए नहीं बच सकते, हब," उसने कहा। "लोगों की सेवा में आपको आनन्द आता है। संगठन करना, प्रबन्ध करना, प्रेरणा और उत्साह देना, ये बातें आपके स्वभाव के अन्तरंग हैं। आप इनको नहीं छोड़ सकते।" मैं जवाब में हंस पड़ा, और उसे दरवाज़े तक छोड़ आया।

अगली शाम को हमारे घर के दरवाज़े पर खटखटाहट हुई। आर्थर था, और किसी भीतरी घबराहट से वह चंचल हो रहा था। चेहरे पर बेचैनी साफ़ प्रकट हो रही थी। मैंने उसे अन्दर बुला लिया।

"हम अकेले में कहीं बात कर सकते हैं, अथवा कहीं बाहर चलें ?" उसने पूछा।

"ईवा कहीं बाहर गई हुई है," मैंने उत्तर दिया। "बात क्या है ?"

वह कमरे में टहलकदमी करने लगा, उसकी आँखें अस्थिर भाव से

इधर-उधर भटक रहीं थीं। "मैं एक मिनट ही ठहर सकता हूँ," उसने कहा। "हर्ब, अब तक तुम समझ चुके होगे कि मैं कम्युनिस्ट हूँ। तुम्हें यंग कम्युनिस्ट लीग के बारे में भी कुछ जानना जरूरी है।"

अब भेद खुल रहा था। मुझे हैल लियरी की चेतावनी भी याद हो आई कि मुझे भी कभी निमन्त्रित किया जायगा। मैं मुस्कराया।

"इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है, आर्ट! मैं सोचता था कि पूछ-ताछ करके किसी प्रकार का दखल देने का मैं अधिकारी नहीं हूँ। मेरे दिल में यह जरूर था कि तुम मुझे कब बताओगे। मुझे खुशी है कि तुम ने स्वयं बात की।"

"हमारी इच्छा है कि आप हमारे साथ काम करें," उसने कहा। "इसमें कोई फ़र्क नहीं पड़ता, आपके कैम्ब्रिज से बाहर जाने से। लीग का संगठन यहाँ अच्छा है और आप इसके प्रायः प्रत्येक सदस्य को जानते हैं। आप जहाँ चाहें, रह सकते हैं। सचाई तो यह है कि इसी में बेहतरी है। यदि किसी नये समुदाय-समाज में आप जायँगे, तो उन्हें कभी भी मालूम न होगा और आप यहाँ की लीग के सदस्य बने रहेंगे और अच्छा काम कर सकेंगे। हर्ब, हमें आप की आवश्यकता है। आप एक बड़ी जरूरत को पूरा कर सकते हैं।"

इस बार मेरे संकोच में अभिनय न था। "तुम मेरे विचारों से परिचित ही हो। मैंने पिछली रात भी अपना रुख स्पष्ट किया था। मैं स्वतन्त्र जिन्दगी बिताना चाहता हूँ, कम-से-कम कुछ दिनों के लिए।"

"हर्ब, आप जानते ही हैं कि आजकल हम सबको त्याग और बलिदान करना पड़ता है। हम युद्ध में हैं। यह आवश्यक है कि बागडोर नौजवानों के हाथों में हो। हम जिन्दगी की धार को अपने से बचकर नहीं बह जाने दे सकते।"

यदि इस प्रश्न का निर्णय अपने हाथों में होता तो मैं उसे इसी वक्त अपना फैसला सुना देता। लेकिन हैल लियरी के शब्द मेरे कानों में गूँज रहे थे और एफ० बी० आई० के लम्बे धैर्य का रहस्य मेरी समझ में

आने लगा था।

"इस पर सोचने के लिए तुम्हें कुछ समय देना पड़ेगा, आर्ट ! मैं अनिश्चय में हूँ। बहुत सी बातों पर ग़ौर करना होगा।" इस बात पर मैं अडिग रहा, यद्यपि अपनी स्वीकृति तुरन्त देने पर उसने बहुत ज़ोर दिया। मैंने उसे निश्चय दिलाया कि मैं शीघ्र ही उससे मिलूँगा।

अगली सुबह अपने काम पर जाते हुए एक टेलीफ़ोन-बूथ से मैंने हेरल्ड लियरी से बातें कीं।

"आपके लिए खबर है। मुझे निमन्त्रण मिल रहा है।"

"क्या ऐसा ? आपने क्या जवाब दिया.......?"

"कि मैं सोच लूँ, फिर बताऊँगा।"

"हार्वर्ड स्ट्रीट और मैसेचुसेट्स एवेन्यू के नाके पर शाम को सात बजे मिलना।"

मिलने के स्थान पर हैल अपनी अविशिष्ट मोटर में ठीक वक्त पर पहुँच गया।

"हुआ क्या ?" इससे पहले कि मैं मोटर का दरवाज़ा बन्द कर पाता, उसने पूछा।

उसने मोटर को वहीं रोक रखा और मेरे उत्तर की प्रतीक्षा की।

"मुझसे कहा गया है कि मैं यंग कम्युनिस्ट लीग में सम्मिलित हो जाऊँ।" हैल के चेहरे के भावों पर कोई फर्क न आया। मानो उसे इसी की आशा थी।

"आपने क्या उत्तर दिया ?"

"जैसा आपने सुझाया था। आपने कहा था कि कुछ देर के लिए टाल जाना। यह कल रात की ही बात है। मुझे अपना उत्तर उन्हें शीघ्र ही देना है।"

"आपने अपने उत्तर के बारे में निश्चय कर लिया है क्या ?"

"मैं यह तो जानता हूँ कि इसमें मेरी वास्तविक इच्छा क्या है।"

"इससे पहले कि आप मुझे बताएँ," हैल बीच ही में बोल उठा,

"मुझे यह कह लेने दीजिए कि आपको किसी फ़ैसले पर पहुँचने में मैं किसी किस्म की मदद नहीं दे सकता। फैसला कतई आपका अपना होना चाहिए। यदि आप 'नहीं' कहना चाहते हैं, तो ठीक, 'नहीं' ही कहना चाहिए। लेकिन का जवाब 'हां' में हो तो बहुत सी बातें हैं जिन्हें जान लेना आपके लिए जरूरी है। मैं आपको बता सकता हूँ कि इसके क्या-क्या नतीजे हो सकते हैं।

"ब्यूरो चाहेगा कि आप इन लोगों के साथ काम करते रहें। हम आपके काम से परिचित हैं। हमारे खयाल में आपमें ऐसी बातों के लिए सब जरूरी उपाधान मौजूद हैं। यंग कम्युनिस्ट लीग में कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता के लिए लोगों को तैयार किया जाता है। जैसे कि आशा की जा सकती है, आप भी एक से दूसरी तक पहुँच जायँगे। हमें विश्वास है कि इन संस्थाओं के बारे में खबरें पाना—सच्ची और असली, भीतरी खबरें—अमेरिकन जनता के लिए और उनके भविष्य के लिए बहुत महत्त्व-पूर्ण है। आप तो थोड़ा-कुछ जानते हैं कि वह क्या कर रही है। आप इस स्थिति में हैं कि और भी बहुत-कुछ जान सकें।"

अन्तिम निर्णय तक पहुँच पाना सरल नहीं था, यद्यपि मेरे अन्दर इस-का भास था कि निर्णय क्या होगा। "हैल, जो कुछ तुम कह रहे हो, मुझे इसमे रत्ती-भर शक नहीं। मैं अब तक जो कुछ देख-जान चुका हूँ, वही मुझे विश्वस्त करने के लिए पर्याप्त है। बात यह है कि जासूस बनने का खयाल, चाहे एफ० बी० आई० के लिए ही जासूस होना हो, मुझे पसन्द नहीं है। मैं इस प्रकार का व्यक्ति नहीं हूँ।"

हैल ने मेरी आपत्ति को अनसुना कर दिया। "मैं आपकी भावना को समझ सकता हूँ," उसने कहा। "परन्तु इस काम को किसीको तो करना ही पड़ेगा क्योंकि सारा भेद जानने का, और वक्त में भेद जानने का, केवल एक यही रास्ता है। अनुसन्धान के साधारण तरीके, जहाँ अपराध से ताल्लुक हो, आवश्यक और महत्त्व के होते हैं लेकिन सचाई अपराध हो चुकने के बाद ही मालूम पड़ती है। भीतरी जासूस अपराध का सुराग

अपराध के घटने से पहले दे देता है। जहाँ हमें सन्देह हो कि समाज व राष्ट्र के विरुद्ध किए जाने वाले अपराधों की तैयारी हो रही हैं, हमें ऐसा ही तरीका बरतना जरूरी है।

"यदि मेरा उत्तर 'न' में हो, तो क्या यह मेरी कायरता का परिचायक होगा ?" मैंने पूछा।

हैल ने बीच में टोका। "जवाब देने से पहले मुझे अपनी बात खत्म कर लेने दो।"

"आप एक महत्वपूर्ण काम करेंगे, यह सही है। लेकिन इसके करने में आपसे बड़े बलिदान की अपेक्षा है। आपको बदले में क्या मिलेगा ? कुछ भी नहीं। शायद कुछ न मिलने से भी ज्यादा खतरनाक। हम चाहेंगे कि आप पार्टी में जितना अधिक-से-अधिक सम्भव हो, धंस जायँ, अपने गृहस्थ-जीवन के बड़े अंश का और अपने कितने ही दोस्तों तक का त्याग कर दें।

"फिलब्रिक, मैं आपसे स्पष्टतया सब-कुछ कह रहा हूँ क्योंकि न कहना मैं ठीक नहीं समझता। इसमें खतरा तो साफ़ रहेगा ही, जान तक का खतरा। यदि आपको एफ० बी० आई० के जासूस के रूप में पहचान लिया जाय तो आपको कष्ट सहना पड़ सकता है। यदि आपकी कम्युनिस्ट पार्टी की सार्वजनिक रूप से जाँच की जाय तो आपकी नौकरी छूट सकती है। ऐसी दशा में आपके पक्ष में एफ०बी०आई० किसी प्रकार का हस्तक्षेप कर सकती है, इसकी आप आशा नहीं कर सकते। शायद यह कभी भी न जाना जायगा कि आपने हमारे साथ कभी सहयोग किया था। आपको निश्चित ही कभी इस बारे में कुछ नहीं कहना है। यदि आप कभी कम्युनिस्टों के साथ काम-काज करते पकड़े जायँ तो आपको हमसे किसी भी प्रकार की सहायता की आशा नहीं रखनी है। हम तो ऐसा दिखाएँगे कि हमने आपको कभी जाना भी नहीं। आपको सदा केवल अपने पर ही भरोसा रखना है।

"यदि आप काम करना मंजूर कर लें, तो आपकी पत्नी को भी न मालूम होना चाहिए कि आप क्या कर रहे हैं। किसी को भी न मालूम

होना चाहिए। ब्यूरो के अधिकांश एजेण्टों को भी पता नहीं होगा। आप केवल एक सांकेतिक संख्याक से ही जाने जायँगे। आपको कभी हमारे दफ्तर में अथवा उसके नजदीक भी न आना चाहिए तथा हमसे बात करते हुए नहीं देखा जाना चाहिए। आपकी इस विषय में सब हरकतें गुप्त रखी जायँगी। आप हमें नियमित रूप से खबरें, पार्टी के बारे में दूसरे तथ्य, इसके सदस्य, इसकी कार्यवाहियों के बारे में रिपोर्टें नियमित रूप से भेजते रहेंगे। केवल समाचार ही। इसमें यदि कोई खर्च करना पड़े, तो हम देंगे। हाँ, आप अपनी नौकरी पर नियमित रूप से काम करते रहेंगे।"

इतना कहकर वह रुका, और मैं मोटर के शीशे के अगले पर्दों से पार टकटकी लगाए रहा।

"मैं जानता हूँ कि आप एकाएक किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सकते। न मैं चाहता ही हूँ कि किसी क्षणिक आवेग में कोई फैसला कर लें। लेकिन आप जितना जल्दी सम्भव हो, अपने फैसले की खबर मुझ तक पहुँचा दें। हो सके तो कल ही। लीग को ज्यादा दिन इन्तजार में रखना उचित नहीं।"

लियरी ने मोटर को बढ़ाया और मेरे घर तक कोई बातचीत नहीं की। मुझे दरवाजे पर न छोड़ वह नाके पर घूम गया।

"मैं आपसे फिर मिलूँगा," मैंने कहा। "नमस्ते।"

जब मैं मोटर से निकला तो मैं जानता था कि मेरा फैसला क्या होगा। अगली सुबह मैं एक सिगार-स्टोर पर रुका और टेलिफोन-बूथ में घुस गया। मैंने ब्यूरो में टेलिफोन किया और लियरी को बुलाने के लिए कहा।

"मेरा निर्णय ब्यूरो के सहयोग में काम करने का है।" मैंने कहा। कुछ देर चुप्पी रही, और तब लियरी ने भावनारहित स्वर में कहा—"ठीक। उनसे 'हाँ' कह दीजिए। फिर सरलतापूर्वक कार्यरत हो जाइए। मैं आप-के सम्पर्क में रहूँगा। मैं यह न चाहूँगा कि आप किसी दूसरी किस्म का सौदा करें।" बात के भेदपूर्ण परिवर्तन को पहचानकर, मैंने फोन बन्द कर दिया।

दुकान में कुछ देर रुककर मैंने सिगरेट खरीदीं। शेष पैसे उठाते हुए मेरे हाथ अनायास ही काँप रहे थे। कैसे अहमक हो तुम, मैंने खुद से कहा, और मैंने अपने काँपते हुए हाथों को वश में करने की भरसक कोशिश की।

मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मैं इसमें सफल हुआ। अब मैं गुप्त सरकारी जासूस बन चुका था।

लगभग दस आने का प्रवेश-शुल्क देकर मैं यंग कम्युनिस्ट लीग का सदस्य बन गया। इतनी थोड़ी रकम खर्च कर मेरे लिए बाद में कम्युनिस्ट बनने का और साथ ही सरकारी जासूस बनने का रास्ता खुल गया। पैसों के हिसाब से तो खर्च बहुत कम हुआ लेकिन दूसरे हिसाब से मुझे इसका भारी दाम चुकाना पड़ा।

मेरी आत्मा 'जासूस' शब्द के विरोध में हरदम मुझे कोंचा करती थी। पार्टी के सदस्यों के साथ मुझे कठोर कदम में जूझे रहना पड़ता था, कम्युनिस्ट सिद्धान्तों और नीतियों में मुझे पूरे तौर पर दीक्षित होना पड़ा—इनसे घृणा के अलावा मैं प्रायः ऊबा भी रहता था। मेरी गृहस्थी बिखर गई, अपने धन्धे में मैं चूकने लगा। बेचैनी बनी रहने लगी। गरमियों के लम्बे दिन मेरी तैयारी में बीते।

मैं कभी कम्युनिस्ट नहीं था लेकिन जब मेरा ब्यूरो से पहला सम्पर्क हुआ, उस समय मैं कट्टर कम्युनिस्ट-विरोधी भी नहीं था। सचाई तो यह है कि उन दिनों के आम लोगों की तरह कम्युनिज़्म के बारे में, और उसके छिपे हुए उद्देश्यों और साधनों के बारे में मेरी जानकारी इतनी सीमित थी कि मैं इस आन्दोलन को एक भयंकर खतरे की जगह अड़ंगा-मात्र ही मानता था। मैं स्वभावतः उनके सिद्धान्तों को पचाने में असमर्थ था, और जो कुछ मुझे बताया गया, उसे ही किसी प्रकार कण्ठाग्र करके मैं उन्हें यह यकीन करा सका कि मुझे लीग का सदस्य बना लिया जाना चाहिए। यह

आश्चर्य की बात है कि मैं अपनी मूल भावनाओं को सदस्य बन जाने के बाद इस खूबी से प्रच्छन्न रखने में सफल रहा।

उनके साथ काम-काज के शुरू के दिनों में यद्यपि मैं कम्युनिज़्म को राजनीतिक विज्ञान अथवा सामाजिक दर्शनशास्त्र के रूप में न समझ सका, मैंने उनकी विद्रोहात्मक हरकतों के बारे में जो कुछ देखा, उसने उनका विरोध करने के लिए अपनी जिन्दगी के अधिक-से-अधिक हिस्से को उत्सर्ग करने के मेरे निश्चय को दृढ़तर कर दिया। जिस जाने-बूझे धोखे और ग़लतबयानियों का ईमानदार लोगों को अपना शिकार बनाने के लिए और सच्ची इन्सानियत को भ्रष्ट करने के लिए वह सहारा लेते थे, उससे मेरी नैतिकता की भावना को कड़ा धक्का पहुँचा। जासूसी के विरुद्ध अपनी ग्लानि के भावों को मैंने इस तर्क से समझा-बुझा लिया कि अपने देश में कम्युनिस्टों के हथकंडों को रोशनी में लाने के लिए, और मज़दूर-संघों, व्यावसायिक दलों और व्यापार व सरकारी क्षेत्रों में इनके अनधिकार प्रवेश से लड़ने के लिए ही मैं इनके बारे में रिपोर्टें कर रहा हूँ।

मुझमें यह जानने की इच्छा जगी कि सम्भव हो तो पता चलाया जाय कि क्यों एक राजनीतिक संस्था जो सामाजिक सम्बन्धों में बेहतरी लाने का और सार्वजनिक भलाई के उद्देश्यों का दावा करती है, जो ताल ठोंक कर कहती है कि मजबूत वैधानिक शासन के ढांचे में रहते हुए ही यह अपनी इच्छाएँ जनता पर लादना चाहती है, अपनी हरकतों और कार्यवाहियों को इस कदर धोखे और लुकाछिपी की ओट में जारी रखना जरूरी समझती है। कम्युनिज़्म में इस प्रकार छिपाकर रखने को क्या है और यह षड्यन्त्रकारियों से बरताव क्यों? अपने प्रभाव को गोपनीय ढंग से बरतने के लिए विभिन्न 'मोरचों' को जमाने पर इतनी शक्ति का क्यों अपव्यय किया जाता है? यदि जनता की इच्छा ही कम्युनिज़्म की कसौटी है, तो क्यों दूसरे राजनीतिक दलों के समान यह दल भी शक्ति के मूल-स्रोत का स्पष्ट सम्बोधन नहीं करता? अथवा क्या सचाई यह है कि कम्युनिस्ट जनता की इच्छा का ही दमन करना चाहते हैं, और यदि हाँ, तो किस अधिकार से, किस

जरिये से ?

जब अपने निमन्त्रण का उत्तर पाने के लिए आर्थर सोलोमन मेरे घर पर आया तो उसने मेरी जिज्ञासा के मूल का बखान कर दिया। मुझे कुरेदकर उससे बात बाहर निकालनी न पड़ी। इससे पहले कि मैं इस सम्बन्ध में कुछ पूछूँ, उसने कहा—

"स्वाभाविक है कि आपकी सदस्यता के बारे में सार्वजनिक रूप में कुछ न मालूम पड़ेगा। इससे आपको आशंकित होने की ज़रूरत नहीं।"

मेरे लिए आशंका के तो कई कारण थे लेकिन आर्थर उनकी ओर से अनभिज्ञ था। अपने ही कारणों से मैं इस बात से प्रसन्न था कि मेरा कम्युनिज़्म कई परतों में छिपा रहेगा, लेकिन इसके साथ ही मैं उसकी बात को समझने में असमर्थ रहा। क्या हमारी राजनीतिक सक्रियताएँ किसी ओर से भय पर आश्रित हैं ? मैं न्यू इंग्लैण्ड की नागरिक सभाओं की परम्परा में पला था जहाँ पर हर कोई अपनी बात सबके सामने कहता है और किसी से भय नहीं खाता।

"कागज़ी लेखे से आपका हमसे सम्बन्ध नहीं जाना जा सकेगा," आर्ट ने कहा, "लीग के दफ़्तर में आपके नाम की कोई फ़ाइल नहीं खुलेगी। सदस्यता ज्ञापक कोई कार्ड नहीं बनाए जाते। आपके पड़ोसियों और व्यापार-बन्धुओं को यह न पता लगना चाहिए कि आप कम्युनिस्ट हैं। आपका जीवन पहले की भांति साधारण रूप से चलते रहना चाहिए।"

मैंने अपने अन्दर एक व्यंग्यपूर्ण मुसकराहट लाते हुए कहा—"झूठी जिन्दगी बसर करो, दुतरफ़ी झूठी जिन्दगी !"

"निस्सन्देह," आर्ट कह रहा था (उसकी ओर मैंने देखा—नाटा, चंचल, चलता हुआ दिमाग, मुस्तैद..........मैंने सोचा कि इस वक्त वह किसी रोमांचकारी उपन्यास का विदूषक जान पड़ता था) "निस्सन्देह, लीग का सदस्य होने के नाते ही आप कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य नहीं बन गए। इसे आप समझ रहे हैं न ? लीग तो कतई तौर पर नौजवानों की एक

स्वतन्त्र संस्था है। परन्तु इसका कार्य-क्षेत्र एक अध्ययन-केन्द्र अथवा किसी सामाजिक गुटबन्दी से बड़ा है। सर्वहारा वर्ग के आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए यह शिक्षा पाने का स्थान है।

"कम्युनिस्ट पार्टी का इस पर कोई बस नहीं है," उसने झूठ बोलते हुए कहा और वह जानता था कि मैं यह जानता हूँ। "आप देखेंगे कि लीग अन्तर-विषयक, अन्तर-जातीय रूप का, नौजवानों का राष्ट्रीय स्तर पर एक दल है जो न केवल अमेरिका की बल्कि दुनिया-भर की जनता की जिन्दगी में बेहतरी के लिए संघर्षरत है।

"शुरू में आप आठ या नौ सदस्यों की छोटी गोष्ठी के साथ मिलकर काम करेंगे। लगन से पढ़ने-लिखने की जरूरत होगी। जिन सदस्यों को आप मिलेंगे वह विशिष्ट क्षेत्रों के प्रतिनिधि होंगे—मजदूर, विद्यार्थी, व्यापारी, बुद्धिजीवी। इस दल में विभिन्न जातियों के नुमायन्दे होंगे—यहूदी, गैर-यहूदी, नीग्रो। आपको यह जानकर कि उनमें से कुछ लोग क्या हैं, शायद हैरानी होगी।"

इस बातचीत का पूरा खुलासा, अपने प्रभावों के लेखे सहित, मैंने हैरल्ड लियरी को पहुँचा दिया और अगले पग की प्रतीक्षा में बैठ रहा। कुछ दिनों बाद मुझे दफ़्तर में टेलीफ़ोन पर किसी ने बुलाया जहाँ कि मैं थियेटर में नई नौकरी पर जाने के लिए पुराने काम को संभलवा रहा था।

"हल्लो फिलब्रिक! मैं मिस ग्रोस बोल रही हूँ। टोनी।"

"अरे हाँ! कैसी हो?" कैम्ब्रिज तरुण-संघ के दिनों से मैंने आज तक न उसे देखा था, न उससे मिला था।

"तुम तो बिलकुल अपरिचित समान हो गए हो," उसने कहा।

"मैं—मैं अधिक सक्रिय नहीं रहा। शायद हम अपने काम को ठीक प्रकार चला नहीं पाए। मेरा मतलब संघ के काम से है। शायद मैं ही कार्य के उपयुक्त नहीं था।"

"ओह, उसके बारे में चिन्ता न करो। लेकिन इस वक्त मेरे हाथों में एक अधूरा किया हुआ काम है मैं बात करना चाहती हूँ। क्या हम

कहीं एक साथ खाना खा सकेंगे ?"

"ज़रूर, ज़रूर। मुझे इसमें खुशी होगी।"

कैम्ब्रिज के वाल्डोर्फ रेस्तरां में हार्वर्ड कॉलेज के चौराहे के पार और इमारतों के उसी समूह में जहाँ टोनी की स्टूडेन्ट्स यूनियन का दफ़्तर था, हम मिले। हमने जोश से एक-दूसरे का स्वागत किया। उसकी चमड़ी का रंग अब भी भूरा था; वह प्रसन्नचित्त और आकर्षक थी। उसका चित्र 'अमेरिकन कॉलजों की प्रतिनिधि तरुणी' के शीर्षक से पत्रिकाओं के मुख-पृष्ठ पर छापा जा सकता था। कैफेटेरिया के सेवाफलक से हमने अपनी थालियों में खाद्य जुटाया और दोस्ताना ढंग से बातचीत करते हुए एक मेज़ की ओर चले गए। उसने कागज़ का दस्तर अपनी गोद में बिछा लिया। मैं किसी विशेष बातचीत की शुरुआत की इन्तज़ार उसकी ओर से कर रहा था; किस विषय की, यह मुझे ठीक मालूम न था।

"मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तुम लीग के सदस्य बन गए हो"—उसने भारी आवाज़ में कहा।

मैंने एक तीखी निगाह उस पर डाली। वह एकटक मेरी ओर देख रही थी, मुसकराते हुए। मैंने अपनी आँखों से चश्मा उतारकर हाथों में ले लिया, और तभी महसूस किया कि आदतन यह हरकत मैं तभी करता हूँ जब मैं अपने को व्यक्त कर देने वाली भाव-भंगिमा को छिपाना चाहता हूँ। कैम्ब्रिज तरुण संघ से और उसका अपने स्वार्थ से दुरुपयोग करने वाले साथियों से टोनी के घने सम्बन्ध की बात को मैं जानता था और इसलिए मेरा देर का सन्देह था कि वह कम्युनिस्ट होगी। लेकिन इस सन्देह की कोई साक्षी न थी। बातचीत एकाएक रुक गई। तो 'अधूरे' काम से इसी ओर इशारा था ? यह विचारकर कि जासूस की हैसियत से मेरे लिए आवश्यक है कि आशंका पैदा करने वाली सब हरकतों से, जो कि अपने उद्देश्य को स्वयं ही विफल कर देती है, मुझे बचकर रहना चाहिए, मैंने फिर आँखों पर चश्मा चढ़ा लिया। एकाएक मुझे भूख न रही थी, और मैं अपने भोजन से टेलाटेली करता रहा। शायद मेरी अर्थहीन दृष्टि के उत्तर में, उसने फिर

कहा—"मुझे मालूम है कि आपकी सदस्यता की बात सबको बताई न जायगी।"

"सदस्यता के लिए निमन्त्रण पाकर मैंने अपने को गौरवान्वित अनुभव किया है," मैंने अपने विक्षिप्त स्वर को फिर से बाँधते हुए कहा था। "यह ठीक ही हुआ।"

"मैं जानता हूँ," उसने कहा।

"मुझे नहीं मालूम था कि तुम भी........" मैंने हिम्मत बटोरते हुए होशियारी से कहा।

उत्तर में उसने अपनी मनमोहिनी मुसकराहट फैला दी। "लीग बड़ी मजबूत संस्था है। तुम यह जानकर हैरान होगे कि कौन-कौन व्यक्ति इसके सदस्य हैं।" यही आर्ट ने कहा था। हमारी बातचीत कुछ देर के लिए रुक गई क्योंकि एक व्यक्ति हमारी मेज के पास से गुजर रहा था। टोनी ने बिना किसी दिलचस्पी के उसकी ओर देखा। "क्या आपने सोचा है कि आप लीग में आकर क्या पाने की आशा रखते हैं?"

"मैं इसके उद्देश्य और इसके सिद्धान्तों में विश्वास रखता हूँ," मैंने अप्रासंगिक उत्तर देते हुए कहा। टोनी ने मेरे उत्तर की बात को पकड़ते हुए कहा—

"अभी तो तुम इनके बारे में पूरी तरह से कुछ जानते भी नहीं।" उस के व्यवहार का ढंग अभी भी मैत्रीपूर्ण था लेकिन अब उसमें स्पष्टोक्ति की थोड़ी पुट थी, और उसकी आँखें मुझमें धँस रही थीं। "किन विषयों में आपकी खास रुचि है? लीग के तुरन्त करने योग्य कार्यक्रम का क्या कोई सुझाव आप दे रहे हैं? मुझे मालूम है कि आपने नौजवानों में कई तरह का काम किया है।"

उसने मुझ पर प्रश्नों की बौछार लगा दी, जवाबों के लिए रुके बिना, किसी न्यायालयिक अन्वेषक की तरह—मेरे राजनीति-सम्बन्धी विचारों के बारे में, मेरी निजी जिन्दगी के बारे में भी कुछ प्रश्नों का उत्तर देने में मुझे तब तक झिझक हुई जब तक मैंने इस बात का अहसास न कर लिया कि बहुतों का

उत्तर तो वह पहले ही जानती है। मुझे इस प्रकार महसूस हुआ कि वह जान-बूझकर मेरी किसी बात को पकड़ने का प्रयास कर रही है। सत्य से बाहर पांव रखना इस स्थिति में खतरनाक होगा।

मेरे माता-पिता क्या करते थे, और कहाँ रहते थे। ओह! वे अच्छे-खासे श्रमी व्यक्ति थे। किसी मजदूर-संघ में थे तुम्हारे पिता? आपकी स्त्री, लीग के प्रति उसके भाव कैसे हैं? मार्क्सवाद में आपका अध्ययन कहाँ तक है और उसके किस पहलू को आप महत्त्व देना चाहेंगे। मैंने हर प्रश्न का, जहाँ तक बन पड़ा सरल उत्तर दिया। जहाँ जरूरत पड़ी, उचित ब्याज का सहारा लिया, और ईवा की अरुचि के लिए बच्चों और गृहस्थी में व्यस्तता का बखान किया।

"शान्तिवाद में तुम्हारी दिलचस्पी रही है। क्या तुम अब किसी न्यायोचित युद्ध में विश्वास करते हो?"

मार्क्सवाद की विचारधारा से पूरा परिचय न होने से मुझे उत्तर देने में कठिनाई हुई। लेकिन शीघ्र ही अपनी बात का आधार खोजते हुए मैंने कहा—"निस्सन्देह मैं आज के इस युद्ध में विश्वास रखता हूँ। एक बार यदि हमें युद्ध की चुनौती मिले तो एक ही रास्ता रह जाता है, और वह है इसे थोड़े-से-थोड़े समय में जीत लेना। शान्तिवाद तभी तक ठीक है जब तक युद्ध की घोषणा नहीं होती, और इस बार तो हम पर हमला किया गया है। लेकिन सामान्यतः मैं युद्ध के साधन को पुराना, आज की परिस्थितियों के अयोग्य साधन मानता हूँ और सोचता हूँ कि आज के सभ्य कहलाने वाले जगत् को अपने झगड़े निपटाने के लिए शान्ति के तरीके खोज लेने में समर्थ होना चाहिए। मेरे विचार में युद्ध में किसी भी पक्ष की विजय नहीं होती।"

इस प्रश्न पर टोनी ने वादविवाद में न पड़कर केवल 'हुं' कहा, मानो मन-ही-मन मेरे उत्तर को वह याद कर रही हो। बाद में, मैंने जब ब्यूरो को अपनी रिपोर्ट भेजी तो एफ०बी०आई० से अपने सम्बन्धों को लेकर पहली बार मुझे बेचैनी हुई। जहाँ जासूस होंगे, मेरे मन में एक धुंधला, अस्पष्ट

विचार तैर रहा था, वहाँ इन जासूसों पर जासूसी करते हुए दूसरे जासूस भी होते होंगे। टोनी ग्रोस द्वारा मेरी पूछताछ बहुत कड़ी और मेरे मन की शान्ति के लिए बहुत क्षतिकारक सिद्ध हो रही थी।

लीग की मेरी गोष्ठी की पहली बैठक २१३ बैंक्स स्ट्रीट में मेरे घर पर अप्रैल १९४२ में हुई। आर्ट सोलोमन आया, और जॉय, जो लड़की 'सन्डे वर्कर' की प्रतियाँ मुझे पहुँचाया करती थी। परिचय के लिए पार्टी द्वारा निर्धारित नामों का प्रयोग हुआ—"बी····डॉटी····आल्पा····देव····बेटी···· यह हर्ब हैं।"

"क्या सिड भी आएँगे?" मैंने आर्ट से दरियाफ्त किया। उसने कहा कि वह नहीं आएगा क्योंकि उसका सम्बन्ध एक दूसरी गोष्ठी से है, और यहाँ अधिकतर नये प्रवेश होने वाले ही हैं। मैं टोनी के आने की प्रतीक्षा कर रहा था, लेकिन वह नहीं आई।

कम्युनिस्ट साहित्य का बड़ा गट्ठर लाया गया और पुस्तकों को हमारे दीवानखाने की अल्मारी के ऊपर सजाकर रख दिया गया। एक छोटे-से सुन्दर भाषण में हमसे इस साहित्य की अधिक-से-अधिक मात्रा खरीदने को कहा गया। कीमतें लगभग एक आने से डेढ़ रुपये तक थीं। कुछ पैंफलेटों पर कम्युनिस्ट पार्टी का नाम था, और कुछ दूसरों पर अन्य प्रकाशकों का।

बैठक की बागडोर आर्थर ने अपने हाथों में ले ली, इसका रुख सामाजिक शिष्टता के हल के वार्तालाप से गम्भीरता की ओर मोड़ दिया और घोषणा की कि आज शाम को 'उचित तथा अनुचित युद्ध' की समस्या पर विचार किया जायगा। मैंने अनुभव किया कि मेरे मुँह पर लाली छा गई है। एक लड़की को विवाद को आरम्भ करने के लिए कहा गया और उसने अपने बैग में से लिखित कागज निकाले।

मुझे मालूम पड़ा कि टोनी से यह कहकर कि युद्धों का तरीका बीते युगों का पुराना तरीका है, और अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को शान्तिपूर्वक निपटाने के ढंग खोजने चाहिएँ, मार्क्सवाद की दृष्टि से अपने विचारों में मैंने एक सख्त

गलती दिखलाई थी। मार्क्सवाद के दर्शन के अनुसार युद्धों का होना जरूरी है। युद्ध दो प्रकार के होते हैं, उस लड़की ने बतलाया, 'उचित' और 'अनुचित' युद्ध। कम्युनिज़्म केवल दूसरे देशों को जीतने के लिए, साम्राज्यवादी युद्धों के विरुद्ध है, और कम्युनिस्टों की यह कोशिश होनी चाहिए कि इन युद्धों को भी घरेलू युद्धों में बदल दें। इस कम उम्र की प्रवक्ता ने कहा कि कम्युनिस्ट उन 'उचित' युद्धों का विरोध नहीं करते जो जनता को स्वतन्त्र करने के लिए अथवा उन्हें विदेशी हमलों से बचाने के लिए लड़े जाते हैं। ऐसे युद्धों को प्रोत्साहन देना चाहिए, इन्हें समर्थन मिलना चाहिए।

वादविवाद में उठे एक प्रश्न का उत्तर देने के दौरान में गोष्ठी में एक 'पाठ्य-पुस्तिका' रखी गई जिसका नाम था—"अपने दुश्मन—जापान—को पहचानिए।" मैं इस प्रतीक्षा में था कि यह कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से प्रकाशित की गई होगी लेकिन मुझे यह देखकर कुछ हैरानी और उत्सुकता-सी हुई कि यह इंस्टिट्यूट आफ़ पैसिफिक रिलेशन्स, १२६ ई०, ५२वाँ स्ट्रीट, न्यूयार्क, के नाम से छपी थी। इस संस्था का उपयोग नये कम्युनिस्टों की शिक्षा में क्यों हो रहा था, मेरे मन में यह प्रश्न उठा।

इस बात का ध्यान किए बिना कि युद्ध के कितने प्रकार और स्वरूप होते हैं, मैं ईसाई-धर्म के सिद्धान्तों के अनुसार युद्ध को समाज के एक साधन के रूप में मानने के लिए तैयार न था। लीग के सदस्यों द्वारा इसकी विभिन्नताओं को स्वीकार करने में मुझे कठिनाई थी। लेकिन इस समस्या से मेरा इतना सम्बन्ध न था जितना इस बात से कि इसी विषय को मेरी कम्युनिस्ट दीक्षा में सबसे पहले चुना जाय। कुछ दिन पहले ही टोनी ग्रोस ने इस प्रश्न को मेरे सामने उठाया था और गुप्त रूप में मेरी भावनाओं से परिचय किया था।

"परन्तु क्या कम्युनिस्ट पार्टी कभी शान्ति की समर्थक नहीं होती?" मैंने कुछ अरसे पहले के उनके शान्ति-समर्थन की ओर इशारा करते हुए पूछा।

"नहीं," दल के एक सदस्य ने उत्तर दिया। "मार्क्सवाद शान्ति के सिद्धान्तों की भर्त्सना करता है। इनमें कहीं समन्वय सम्भव नहीं।"

लीग की नज़रों में जब मेरी दीक्षा काफी आगे बढ़ गई तो मुझे कम्युनिस्ट प्रकृति की सेवा का पहला अवसर दिया गया—पार्टी के लिए जनता के पास पहुँचने का। मेरे शुरू के कामों में कम्युनिस्टों का पुराना हथियार, प्रार्थनापत्र पर हस्ताक्षर इकट्ठे करना था। यह प्रार्थना पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अर्ल बौडर, जिसे पासपोर्ट-सम्बन्धी धोखे पर जेल की सज़ा हुई थी, के छुटकारे के लिए थी।

हमने प्रार्थना-पत्र पर हस्ताक्षर करवाने के लिए कैम्ब्रिज को छान मारा। मैं व्यापारियों के पास घूमा, घरों के दरवाजे खटखटाए, बाजारों के नाकों पर खड़े होकर लोगों से हस्ताक्षर लिये। हम इस तर्क का सहारा लेते थे कि बौडर को एक ऐसे अभियोग में फांसा गया है जिसका पहले कभी इस्तेमाल नहीं किया गया और इससे हमें आश्चर्यजनक सहयोग मिलता। अकेले कैम्ब्रिज में ही तीस हजार लोगों ने अपने हस्ताक्षर दिए जो कि वहां की कुल आबादी का एक-चौथाई भाग है। इससे अच्छा नतीजा निकलने में सहायता मिली। 'राष्ट्रीय-एकता को बनाए रखने के लिए' प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट ने १६ मई १६४२ को बौडर को छोड़ने का आदेश दिया।

इस सारे काम के दिनों में मैंने अनुभव किया कि लीग की ओर से कड़ी निगरानी से मैं कभी मुक्त नहीं था। गलत मौके पर कोई गलत बात न कह बैठने के लिए मुझे सदा चौकन्ना रहना पड़ता था। हर शब्द को मुँह से निकालने के पहले तोलने का मुझे अभ्यास हो गया। प्रत्येक अवसर, चाहे वह कितना ही साधारण हो, खतरनाक धोखाधड़ी सिद्ध हो सकता था।

कैम्ब्रिज में एक नौजवानों के दल की एक सभा हो रही भी। जैसा कि मुझे मालूम पड़ा, यह दल गैर-कम्युनिस्टों का और इसमें एक लड़की, जो जॉय की बहन थी और जिसे मैं मार्गट के नाम से ही जानता था, मेरे सम्पर्क में आई। जॉय यहाँ उपस्थित न थी और मैं नहीं जानता था कि मार्गट में अपनी बहन की तरह कम्युनिज़्म के लिए उत्साह है या नहीं। इन दोनों के सम्बन्ध ने मुझे सतर्क कर दिया यद्यपि मार्गट और कम्युनिस्ट आन्दोलन में मैं किसी प्रकार के सम्बन्ध-सूत्र की थाह न पा सका।

सभा में जो वाद-विवाद चल रहा था वह निरर्थक और बेमानी था; परन्तु इसके दौरान में, जब कि मैं बोल रहा था, कम्युनिज़्म की ओर किसी कारण संकेत हुआ।

"ये बेईमान कम्युनिस्ट," अचानक ही मार्गट ने इतनी ऊँची आवाज़ से कहा कि सब सुन सकें। कमरे में कोई समर्थन-सूचक स्वर में हँसा, लेकिन मेरे मन में खतरे का घंटा बज उठा। क्या यह सम्भव है कि मार्गट कम्युनिस्ट-विरोधी है और अपनी बहन के इस ओर के सम्बन्धों से घृणा करती है? अथवा, मैंने सोचा, क्या यह सम्भव है कि यह भी लीग अथवा पार्टी की सदस्य है और यह जानती है कि मैं भी सदस्य बन चुका हूँ? क्या यह हो सकता है कि यह मेरी दुरंगी चाल का शक कर रही हो और उसे स्पष्ट करने पर मुझे मजबूर कर रही हो? यदि ऐसा है तो मैंने सोचा कि उसकी यह हरकत बचकाना है। परन्तु यह संस्था तो गैर-कम्युनिस्ट है और इसमें उपस्थित लोगों में से कुछ तो कट्टर कम्युनिस्ट-विरोधी हैं। मुझे खयाल हुआ कि किसी ओर भी पग बढ़ाने में मेरे लिए खतरा है।

"मुझे विश्वास है," बहुत थोड़ी देर के विराम के बाद मैंने जितनी खुशी से सम्भव था, कहा—"कि कम्युनिज़्म के प्रश्न का हमारी आज की समस्या से कोई सम्बन्ध नहीं है। उचित है कि हम प्रस्तुत समस्या की सीमा से बाहर न जायँ।"

मार्गट के साथ के इस प्रसंग ने मुझे अधिक चौकन्ना कर दिया। मुझे यह समझ में आने लगा कि कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों में अपने को सरकारी जासूसों से बचाने की जागरूक भावना सदा वर्तमान रहती है। यह ऐसी स्थिति थी जिसे कि दूसरे सदस्यों से मैं अधिक समझने में समर्थ था। और फिर मेरे नये साथियों ने मुझे यह सिद्धान्त बखूबी समझा दिया था कि कम्युनिस्ट पार्टी को "मजदूर पेशा जनता के अग्रणियों" का प्रतिनिधित्व करना है, ये लोग इने-गिने विशेष चुने हुए व्यक्ति ही हो सकते हैं। कमज़ोर, सिद्धान्त में अपरिपक्व, केवल सहानुभूति रखने वाले, अवसरवादी और पन्थ से विचलित होने वालों को, उन्होंने मुझे बतलाया कि, हमेशा

चुन-चुनकर निकाल देना चाहिए, अथवा ऐसे कार्यों में डाल देना चाहिए जहाँ से वह हानि न पहुँचा सकें। इतनी दूर इनके साथ बढ़ आने पर अब पार्टी से निकाले जाने की मेरी इच्छा न थी। मैं सोचता था कि मार्गट की इस प्रकार की दस्तन्दाजी इस परिष्करण की क्रिया का एक भाग हो सकती है।

गुप्त पूछ-ताछ से पता लगा कि मार्गट का पूरा नाम मार्गट क्लार्क है और वह कुछ समय से हार्वर्ड स्क्वायर में कम्युनिस्टों द्वारा अनुशासित पुस्तकों की दुकान चलाती रही है। कैम्ब्रिज की एक कम्युनिस्ट-गोष्ठी में भी वह जाया करती है। जब मेरे सन्देहों की सम्पुष्टि हुई और मुझे यकीन हो गया कि मुझे फाँसने के लिए ही यह झाँसा तैयार किया गया था तो मैं अपनी खामख्याली में अविश्वास करने लगा और हर कदम पर कम्युनिस्टों को अपने ऊपर जासूसी करते हुए देखने लगा।

मैं पार्टी के लिए फिर से सक्रिय काम करने लगा। पहली बार मुझे यंग कम्युनिस्ट लीग के कैम्ब्रिज-स्थित मुख्य दफ़्तर में ७५ मेगेज़ीन स्ट्रीट में आने का आदेश दिया गया, जो कि मेरे घर से अगले नाके पर ही था। मुझे कहा गया कि वह जगह लैरी और टोनी लॉक की है। इन नामों को मैंने पहले कहीं नहीं सुना था। जब अपना काम समझने के लिए मैं इस जगह पर पहुँचा तो हार्वर्ड की मेरी परिचित सुन्दरी टोनी ग्रोज़ ने दरवाज़ा खोला। उसने मेरा अभिवादन किया और अपने इस आश्चर्य को ही छिपाने की कोशिश में कहा कि टोनी ही श्रीमती लॉक थी—यदि यही उसका असली नाम था। मुझे यह नहीं पता था कि उन्हें विवाह किये हुए कितना अरसा हुआ है और न मैंने इस प्रश्न को ही उठाया। टोनी व्यस्त थी और शीघ्र ही चली गई।

मैंने इस जगह के चारों ओर देखा। एक कमरे में दो टाइपराइटर की मेज़ें, एक फाइल रखने की अलमारी रखे थे, और लीग के कार्य-रत कुछ सदस्य बैठे थे। चिट्ठी-पत्री लिखने वाले काग़ज़ों और लिफ़ाफ़ों का मेज़ पर ढेर लगा था और इन पर विभिन्न संस्थाओं के पते छपे हुए थे। इन

संस्थाओं में बहुत-सी संस्थाएँ जाने पहचाने गैर-कम्युनिस्टों की थीं। किसी का ध्यान आकर्षित किये बिना मैंने यह देखने की कोशिश की कि इन चिट्ठी-पत्री के कागजों में शायद कहीं कैम्ब्रिज तरुण-संघ के कागज भी पड़े हों। क्या सम्भव है कि यह दफ़्तर अथवा कोई दूसरा ऐसा ही दफ़्तर सोलोमन और स्टैन बीचर द्वारा कैम्ब्रिज तरुण-संघ के लिए प्रकाशित मसालों का उद्भव-स्थान हो?

मेरा इन विचारों में लीग के एक सदस्य ने रशियन वार रिलीफ़ कमेटी की बोस्टन-शाखा के शीर्षक वाले कागज पर लिखा हुआ एक पत्र देकर बाधा डाली। पत्र के बाईं ओर कागज की लम्बाई-भर में कमेटी के नेताओं और अभिभावकों की सूची छपी हुई थी। उनमें से अधिकांश, जैसा कि अनुमान किया जा सकता था, स्थानीय और राष्ट्रीय सुविख्यात नाम थे। मुझे याद है कि स्वर्गीय डॉक्टर सर्ज कौसेविट्स्की इसके अवैतनिक अध्यक्ष थे। डॉक्टर ह्यूज कैबट स्थानीय प्रधान थे। मैं निजी अनुभव से जानता था कि कम्युनिस्ट पार्टी के दृष्टिकोण से 'अध्यक्ष' शायद सबसे अधिक महत्त्व के अधिकारी नहीं थे। किन्हीं परिचित कम्युनिस्ट-सम्बन्धों की खोज में मैं सारी सूची को पढ़ गया लेकिन कोई नाम परिचित न लगा।

"भविष्य में मैं कैम्ब्रिज की अपेक्षा बोस्टन में ज़्यादा काम करने की सोच रहा हूँ। शायद रशियन वार रिलीफ के लिए मेरे करने लायक कोई काम हो। इस सम्बन्ध में किस व्यक्ति से मिलना उपयोगी होगा?" मैंने पूछा।

मुझसे कहा गया कि १२३ न्यूबरी स्ट्रीट के बोस्टन कमेटी की प्रधान मंत्री मिसेज जार्ज फैक्सन से मैं मिलूँ। मुझे एक परिचय-पत्र भी दिया गया। यह और भी अधिक हैरानी की बात थी कि रशियन वार रिलीफ़ के चिट्ठियों के कागज पर न्यूबरी स्ट्रीट के पते को कमेटी का मुख्य दफ़्तर कहा गया था, और फिर भी यहाँ यंग कम्युनिस्ट लीग के दफ़्तर में इसके इतने कागज पड़े हुए थे जैसे कि खतो-किताबत का बड़ा हिस्सा यहीं से होता हो।

परिचय-पत्र में लिखा था कि पत्रवाहक रशियन वार रिलीफ़ के

ऑपचारिक संरक्षक के रूप में काम करेंगे। एक नया मोरचा-यंग कम्युनिस्ट लीग के कारखाने में गढ़ा हुआ। इस भेद-भरे रहस्य में और भी वृद्धि करने वाले पत्र के नीचे के मेरे पुराने दोस्त और मैसेच्यूसेट्स यूथ कौंसिल के शिक्षक 'एलिस मिल्ज' के हस्ताक्षर थे।

मुझे एक दानपात्र देकर कैम्ब्रिज की रशियनवार रिलीफ़ कमेटी के चन्दा इकट्ठा करने वालों के साथ मिलकर काम करने को भेजा गया। हम एक मकान से दूसरे मकान में, हर दुकान, होटल, रेस्तराँ और घर में चन्दे के लिए जाते थे। किसी भी शाम अथवा छुट्टी के दिन जब मैं इस काम में लगता था तो यंग कम्युनिस्ट लीग के दफ़्तर में पाँच से दस डालर तक जमा करके दे ही आता था।

रशियन वार रिलीफ़-सम्बन्धी आन्दोलन में आर्ट सोलोमन का एम एण्ड पी० थियेटर्स में मेरे सहायक एडवर्टाइज़िंग के पद पाने पर जो उत्साह दीखा था, उस पर प्रकाश पड़ा। लीग के एक नायक ने मेरे सामने प्रस्ताव रखा कि मैं अपने मालिकों से यह अनुमति ले लूँ कि युद्ध में सहायता देने वाले सहयोगियों को कैम्ब्रिज के सेंट्रल स्कायर थियेटर के प्रकोष्ठ में बैठने की इजाजत दे दी जाय। मैंने बिना किसी प्रकार का प्रश्न पूछे यह काम कर दिया, और इस प्रकार पैसे इकट्ठे करने की कोशिशों में खासी मदद पहुँचाई। स्पष्ट है कि हर चीज से लाभ उठाया जा सकता है।

दिये जाने वाले हर काम को मैं खूब मुस्तैदी से निबाहता था, केवल 'डेली वर्कर' की बिक्री को छोड़कर जो काम सब नये लीगियों को करना पड़ता था। अखबार की जो प्रतियाँ मुझे दी जाती थीं उन्हें मैं कूड़े के पहले ढेर में फेंक देता था और बाद में उनके पैसे ब्यूरो से मिलने वाले खर्चे में से चुका देता था।

मेरे अध्यवसाय का शीघ्र ही अच्छा परिणाम हुआ। मुझे यंग कम्युनिस्ट लीग की रियासती सभा में उपस्थित होने का आदेश मिला जो कि वैस्टन, मैसेच्यूसेट्स के कैण्डलग्रीन नाम के स्थान पर एक तरुण सदन में एक सुहावने दिन को हुई। सुबह के भोजन के अलावा सामूहिक खेलों का

आयोजन था और दोपहर बाद राजनीतिक बैठकें हुईं। बैठकों में किन्हीं विशेष समस्याओं पर विचार नहीं किया गया—वे दिन कम्युनिस्टों की निष्क्रियता के दिन थे लेकिन बहुत से पुराने दोस्त मुझे मिले और कई नये दोस्त भी बने।

मैं जॉय क्लार्क से मिला, जो लड़ाई का सामान तैयार करने वाले एक कारखाने में काम कर रहा था। टोनी ग्रोस अथवा लॉक वहाँ थी। फौजी वर्दी में सिड सोलोमन वहाँ था और था नाथानियल मिल्ज़, जिसने "युद्ध को जीतो" नाम का लिखा हुआ अपना नाटक पेश किया। मैं यंग कम्युनिस्ट लीग के रियासती अध्यक्ष एलिस गॉर्डन से मिला, और "कामरेड बॉब" नाम के एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति से मिला, जिसका पूरा परिचय पाने में असमर्थ रहा।

सिड ने बताया कि आर्थर आजकल फौज में है और उसने अफसरी की शिक्षा पाने की कोशिश की परन्तु विफल रहा। वहाँ बैठे हुए लोगों में से एक ने कहा कि शायद यह किसी 'गन्दी हरकत' का नतीजा हो तब सिड ने कहा, "ओह, शायद उसका नाम उनकी किसी सूची में मौजूद है।" मेरे मन में इससे अशान्ति होने लगी।

"कुछ बेईमान ट्रॉट्स्कीवादी, भाड़े के पिट्ठू हममें हैं," सिड ने कहा, "हमें उनसे वही व्यवहार करना चाहिए जो ट्राट्स्की से किया गया था।" इस अनुस्मारक से कि पार्टी का अनुशासन कभी कठोर दण्ड में भी व्यक्त हो सकता है, मेरी बेचैनी अधिक बढ़ गई।

हमेशा की तरह, इस बैठक का विस्तृत समाचार उसी रात को घर लौटने के बाद मैंने ब्यूरो को पहुँचा दिया। एफ० बी० आई० को रिपोर्टें भेजने की समस्या ही इस भेद की कड़ी का कमजोर हिस्सा थी जिसके अनुसार मेरे जासूस होने का राज़ छिपा रहना जरूरी था। पार्टी-सम्बन्धी मेरी कारवा-हियों में कम्युनिस्टों के अधिकारियों की प्रेरणा पर ही बिलकुल सामान्य ढंग से तरक्की होने दी गई। सब आदेश और प्रस्ताव उन्हींकी ओर से आते थे। ब्यूरो ने किसी विशेष स्थिति अथवा पद को पा लेने की कोशिश करने

का कभी निर्देश नहीं दिया। कम्युनिस्टों द्वारा बनाई हुई काम की योजनाओं में एफ० बी० आई० अनुमति दे देता था, लेकिन लियरी कभी यह नहीं चाहता था कि मैं कभी अधिक उत्सुक दीख पड़ूँ। खुद इससे ही मेरी रक्षा होती थी। लेकिन उन्हें रिपोर्ट वग़ैरह भेजने की समस्या मुझे तब तक चिन्तित करती रही जब तक मुझे इसका अन्दरूनी तौर-तरीका समझ में न आया। ब्यूरो भेद खुलने के विरुद्ध बहुत सारी सावधानियाँ बरतता था। यह सब कैसे होता था, यह बात तो गुप्त रहेगी। लेकिन सारा तरीका विस्तार के साथ सोचा गया था, दूसरों को धोखे में डालने के लिए बार-बार बदल दिया जाता था और इसकी मजबूती परखने के लिए समय-समय पर तरह-तरह की परीक्षाएँ ली जाती थीं।

एफ० बी० आई० का सूचक होने के शुरू के दिनों में मेरी रिपोर्टें लम्बी, मेरे विचारों के रंग में रँगी, सार की ओर संकेत करती हुई और अस्पष्ट होती थीं। हैल ने मुझे इन्हें ठीक करने की राह बताई। "हमें तो केवल तथ्य चाहिएँ," उसने कहा, "उनसे क्या अर्थ निकलते हैं, यह नहीं। इस भूलभुलैया में इतनी राहें हैं कि अकेला व्यक्ति इनका पार न पा सकेगा। इसकी चिन्ता हम पर छोड़ दीजिए। आप केवल तथ्यों की रिपोर्ट करते जाइए, और इसका ध्यान रखिए कि कोई बात छूट न जाय।"

इन रिपोर्टों के ही अंग के रूप में आवश्यक रूप में अपने हाथ आने वाली बहुत-सी छपी हुई पत्र-पत्रिकाओं, पैंफ़्लेटों को भी मैं सँभालकर रखता था। एक दिन अधिक गरमी के दिन देर दुपहर बाद घर को लौटा तो मैंने दीवानखाने को पुनः बहुत गरम पाया। कमरे में धुएँ की कुछ बदबू भी फैल रही थी। मैं आग की तलाश में, ईवा को पुकारता हुआ भागा। वह घर में नहीं थी। मैंने सारा घर छान डाला लेकिन कहीं आग का नामो-निशान न पा सका।

अन्त में मेरी नज़र दीवानखाने के बीचों-बीच वाली छोटी लकड़ी की अंगीठी पर गई। इस के लोहे के परदे को मैंने छूआ। यह अभी तक गरम था। अंगीठी के ढकने को चिमटे से उठाकर जब मैंने देखा तो उस में कागज के जलने से राख का अम्बार लगा हुआ था। अपनी मेज पर देखने

से पता चला कि मेरे प्रायः सभी कागज वहाँ से ग़ायब थे।

जब ईवा लौटी तो मैंने यह किस्सा सुनाया।

"मैंने ही इन कागज़ों को जलाया है," उसने सामान्य आवाज़ में कहा।

"ऐसा क्यों किया?" मैंने क्रुद्ध स्वर में कहा, "मुझे इनकी जरूरत थी।"

"हर्ब, मैं इस कूड़े-कबाड़ को घर में नहीं आने दूँगी। यदि तुम्हें इसी राह पर चलना है तो ठीक, लेकिन मुझे समझ में नहीं आता कि इस कूड़े को घर में लाने की क्या जरूरत है। मेरी माँ ने इन्हें देखा था और हममें इस विषय में बातें भी हुईं। माँ तुम्हारे लिए चिन्ता से घुली जा रही हैं। मैं उन्हें क्या जवाब दूँ? मुझे तुम्हारी स्थिति का सही पता भी नहीं है; और जो कुछ मालूम है, उससे मुझे अचम्भा होता है।"

ठीक ही तो है। ईवा अपनी माँ को अथवा अपने मित्रों को बता ही क्या सकती है! मैं ही ईवा को क्या बताता हूँ! यह समस्या मैंने हैल के सामने रखी। कागज जलाने की घटना पर वह खूब हँसा, लेकिन मैंने उसे बताया कि सवाल इतना गम्भीर है कि हँसी से नहीं टाला जा सकता।

"हमें ईवा को कुछ बताना जरूरी है," मैंने कहा, "उसे तरह-तरह के शक हो रहे हैं और यदि वह मेरे बारे में कुछ डरने भी लगी हो तो हैरानी नहीं। और फिर, पार्टी के साथियों में मेरे नाम पर बट्टा लग रहा है। वह पूछते हैं कि ईवा इन कामों में मेरा हाथ क्यों नहीं बँटाती। वह इस बात को पसन्द नहीं करते।"

हैल मेरी बात सुनकर कुछ देर सोचता रहा। "इससे समस्या का दूसरा रुख स्पष्ट हो रहा है। मैं आशा कर रहा था कि ईवा को कुछ बताने की जरूरत न पड़ेगी। कम-से-कम मैं यह चाह रहा था कि उसे बिना कुछ बताए जितनी देर चलाई जा सके, चलाई जाय। आपके खयाल में जानने पर उसका रवैया क्या होगा?"

"ईवा! ओह, वह समझ जायगी, सब-कुछ ठीक समझ जायगी।

इसमें किसी प्रकार का अन्देशा नहीं।"

"तो ठीक है, आप उसे समझा दीजिए। साधारण शब्दों में कह सकते हैं कि आप क्यों और कैसे शासन के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। लेकिन आपकी सास अथवा किसी दूसरे को इसकी कानो-कान खबर न हो, और अपनी स्त्री से भी यह कहना न भूलिए कि वह भूल से भी इस बारे में किसी से कुछ न कहे। भेद को सुरक्षित रखना आपके ही हित में है।"

ईवा से बात करने के ठीक समय की मैंने कुछ चिन्ता से इन्तजार की। यह स्वाभाविक ही था, क्योंकि मुझे मालूम न था कि इस दूर-प्रभावी योजना के विषय में, एक ऐसे उपधन्धे के बारे में जिसकी उसे किंचिन्मात्र भी खबर न थी, उसकी प्रतिक्रिया क्या होगी। ईवा की दिलचस्पी मुख्यतया घर में ही सीमित थी, न कि बाहर की दुनिया में। मैं जानता था कि मैं ज़िन्दगी में किस हद तक दुरंगी, बल्कि तिरंगी चाल चल रहा हूँ, इससे वह बेखबर थी। बच्चों के सो जाने के बाद, घर का काम-काज खत्म होने पर जब हम अकेले थे तो मैंने प्रसंग छेड़ दिया।

"ईवा, तुम इतने दिन हैरान रही हो कि लीग से सम्बन्धित विभिन्न संस्थाओं में मैं कर क्या रहा हूँ। मैंने तुम्हें बताया था न कि मैं कम्युनिज़्म और कम्युनिस्टों के विरुद्ध जिस तरीके से लड़ा जा सकता है, लड़ रहा हूँ?"

ईवा ने एक निराश दृष्टि मुझ पर फेंकी। वह इस प्रसंग को बढ़ाना नहीं चाहती थी।

"मैं इसलिए ऐसा कर रहा हूँ, क्योंकि हमारी सरकार मुझसे यह चाहती है। मैं शासन के एक विभाग के लिए काम कर रहा हूँ, उन्हें हर बात से सूचित रखता हूँ, नियमित रिपोर्टें भेजता हूँ। वह सारे कागज आदि जो तुमने कुछ दिन बीते जला दिए थे........"

"एक विभाग के लिए? क्या एफ० बी० आई० के लिए?"

"मैं उनके ही आदेश से ऐसा कर रहा हूँ, यह बात नहीं है। मैंने स्वेच्छा से ही इसे अपनाया है, लेकिन कम्युनिस्टों के विरुद्ध लड़ने का इससे बेहतर दूसरा तरीका न था।"

ईवा साथ की कुरसी पर लुढ़क गई। "खैर, तब तो दूसरी बात है। इसका तो कोई अर्थ भी है। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि असल बात यह है। तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?"

"सम्भव नहीं था ईवा, मैंने वादा किया हुआ था कि मैं किसी को न बताऊँगा।"

"परन्तु यह भेद क्या इतना गोपनीय है कि अपने ही परिवार को नहीं बताया जा सकता?"

"जितने लोग कम जानें, पता चलने का उतना ही अन्देशा कम रहता है।"

"हूँ, क्या इसमें खतरा भी बहुत है?"

"खतरे की मुझे चिन्ता नहीं है," मैं हँसा, "मैं अपनी देख-भाल कर सकता हूँ। लेकिन इस बात को गुप्त रखने की हर चेष्टा हमें करनी होगी।"

"क्यों? कैसे?"

अनजाने में ही मेरे इस रहस्य का फूट जाना आसान है। अपने घर के अथवा धन्धे से ताल्लुक रखने वाले दोस्तों में हमें उसी तरह का व्यवहार करते चलना है जैसा अब तक करते रहे हैं। जब मेरे दूसरी किस्म के दोस्त घर पर आएँ—तुम्हें मालूम ही है कि वह कौन हैं—तो एक कम्युनिस्ट की भाँति ही बात करने की और बरतने की मुझसे आशा करना। भय केवल इसी बात का है कि कहीं किसी को सूराग न मिले। बुरा न मानना, लेकिन इस बारे में किसी से भी नहीं कहना, अपनी माँ से भी नहीं। यदि घटनावश इसका पता खुद ही चल जाय, तो दूसरी बात है, लेकिन तब तक तो हमें चाहिए कि भेद छिपाए रखें और जो होता है, होने दें।"

बोस्टन के वेकफील नाम के बाहरी इलाके में हम जाने वाले थे। यह वही स्थान था जहाँ जाकर मैं सोचा करता था कि मैं इस जंजाल से पीछा छुड़ा सकूँगा और सामान्य जिन्दगी बसर कर सकूँगा। लेकिन यंग कम्युनिस्ट लीग के नेताओं का मैं ठीक अनुमान न लगा पाया था।

गृह-परिवर्तन के अवसर पर लॉक निवास में, जहाँ कि मैगजीन स्ट्रीट

पर लीग का मुख्य दफ्तर था, एक विशेष बैठक में मुझे बुलाया गया। लैरी और टोनी लॉक, एलिस गॉर्डन और डॉटी फ्लीशमान नाम की लीग की एक कार्यकर्त्री इस सभा में उपस्थित थे। इस बैठक का उद्देश्य मेरे लिए निश्चित आदेश निकालने का था।

"आपके लिए विशेष कार्य है", एलिस गॉर्डन ने जो कि रियासती लीग का अध्यक्ष था, कहा, "वेकफील का समाज महत्त्व का है लेकिन इसमें कुछ मौलिक कार्य करने की आवश्यकता है। हम चाहते हैं कि आप जितनी जल्दी हो सके और जितनी अच्छी तरह हो सके, कस्बे में बस जायँ। लोगों से पहचान पैदा करें और सामान्य जीवन बिताएँ।"

मुझे बताया गया कि मेरा उद्देश्य वहाँ की मृतप्राय कम्युनिस्ट गोष्ठी की फिर से स्थापना करना है। पार्टी का केन्द्र-बिन्दु कायम करना है। संक्षेप में, बाहरी प्रदेश के क्षेत्र में पार्टी के सदस्य आदि बनाने का दायित्व मुझ पर डाला गया। मुझे इससे धक्का पहुँचा। मैं तो अभी तक पार्टी का सदस्य भी नहीं था, केवल इसके नौजवानों वाले विभाग में यंग कम्युनिस्ट-लीग, में शामिल हुआ था। लेकिन इन नये आदेशों से तो जान पड़ा कि जैसे पार्टी-सम्बन्धी कड़े कर्तव्यों के मेरे दिन खत्म हो गए। हैल लियरी का अनुमान ठीक ही था। पार्टी ने मेरे बारे में योजनाएँ बना रखी थीं। वह पहले कैसे जान गया? लॉक-परिवार के इस कमरे में बैठे हुए चारों व्यक्तियों के मुखों को मैंने पढ़ने की कोशिश की, लेकिन वे सब भावहीन मुद्रा धारण किये हुए थे।

मुझे दो ऐसे व्यक्तियों के नाम बताये गए जो वेकफील्ड की कम्युनिस्ट-गोष्ठी के पुनर्गठन में मेरी सहायता करने के लिए मेरे पास आयँगे, कामरेड फ्रैंक कोल्लियर और गस जांसन। मुझे आज्ञा दी गई कि अपने घर में मैं शीघ्र से-शीघ्र वेकफील्ड के कम्युनिस्टों की बैठक बुलाऊँ। इसका यह अर्थ हुआ कि सच्चे कम्युनिस्ट होने की पहली परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो गया हूँ, और अब मेरे कन्धों पर नये और बृहत्तर उत्तरदायित्व डाले जा रहे हैं। पार्टी का सदस्य बनने से पहले ही मुझसे पार्टी की एक गोष्ठी का आयोजन

करने के लिए कहा जा रहा है।

"राजनीतिक सम्बन्धों की स्थापना के बारे में आपकी राय क्या है?" मैंने पूछा।

परामर्शदाताओं ने कहा कि इस विषय में उन्होंने सोच-विचार किया है। मेरा परिवार सदा से रिपब्लिकन पार्टी का समर्थक रहा है। वेकफील्ड का क्षेत्र राजनीतिक उद्देश्य से गलत तरीकों से बनाया गया जिला है और इस पर रिपब्लिकनों का प्रभुत्व रहा है। इस कस्बे में डेमोक्रेटों की कोई शाखा काम नहीं करती रही।

"यही ठीक होगा कि आप रिपब्लिकनों में अपना नाम लिखा लें। आप जो कुछ कहा-सुनी करेंगे, रिपब्लिक होने के नाते उसमें अधिक मान्यता रहा करेगी।"

बैप्टिस्ट चर्च के बारे में अपनी दिलचस्पी और कार्यवाहियों के बारे में भी मैंने दरियाफ्त किया, लेकिन डरते हुए कि वे मेरे लिए कहीं चर्च से अलग रहने का आदेश न जारी कर दें।

"चर्च में हर कोशिश से प्रभाव जमाने की कोशिश कीजिएगा—" एलिस गॉर्डन ने कहा, "जनता से, वह जहाँ कहीं भी हो, सम्पर्क के अवसरों को कभी हाथ से न जाने दीजिए। हर अच्छा कम्युनिस्ट जनता का नेतृत्व करता है। यदि आप मजदूर-पेशा होते तो आप मजदूर-संघों और उनकी दूसरी संस्थाओं में शामिल होते। आपके जीवन की पृष्ठभूमि में चर्च से सम्बन्धित बहुत लोगों का घना सम्पर्क रहा है। कम्युनिस्ट होने के नाते अपने को उनसे दूर नहीं कर लेना है। वरन् इस सम्बन्धों को घनिष्ठतर बनाना उचित है।

"कोई और बात?"

"कुछ नहीं। हमसे नियमित सम्पर्क बनाये रखिए। हमें अपनी सफलताओं के बारे में लिखते रहिए। जब आप बड़ी सभा का आयोजन कर सकें तो हम किसी विशेष वक्ता को जिला-दफ्तर से भेज देंगे।"

इस प्रकार मैंने देखा कि निवास में भौगोलिक अन्तर भी मेरे इनसे

सम्बन्धों को ढीला न कर पाया। परिवार सहित मैं वेकफील्ड को चला गया, मुँह पर झूठी नकाब डाले और छाती में भारी दिल छिपाए। लेकिन एफ० बी० आई० और हैल लियरी के लिए ये सब बातें खुशी का कारण बनीं।

"गस जांसन!" जब मैंने हैल के सामने यह नाम लिया तो उसने आश्चर्य-सूचक स्वर में कहा। वह धीरे-धीरे मुँह में सीटी बजा रहा था।

फिलब्रिक-परिवार आदर और शिष्टता का आदर्श माना जा रहा था। अपनी कार्य-व्यस्तता में मैं सुबह की गाड़ी पकड़ता और नये काव्य में अच्छी तरह टिक जाने तक परिवार के साथ ही शाम बिताने के लिए फुरती से घर लौट आता। मैं भला, जागरूक नागरिक का नमूना था, एक आदरयोग्य व्यापारी, जिसे शहरी कार्यवाहियों में दिलचस्पी थी, चर्च का पक्का हिमायती।

पतझड़ के शुरू होने तक, ईवा और मैं नौजवान बैप्टिस्ट लोगों की अपने घर में खातिरदारी करने लगे थे। लेकिन हमारे आँगन का बड़ा बूढ़ा पेड़ अंधियारी रातों के भेद पर परदा डाले हुए था। देर रात बीत जाने पर नये और अपरिचित लोग इसकी झुकी शाखाओं के नीचे से गुजरते और पार्कर हाउस की पुरानी सीढ़ियों पर हल्के कदम रखते हुए चढ़ जाते—पार्कर हाउस आजकल कम्युनिस्ट षड्यन्त्र का नया अड्डा बन रहा था।

वेकफील्ड में कम्युनिस्ट पार्टी की शाखा की पुनर्स्थापना कठिन-साध्य और कष्टप्रद उत्तरदायित्व साबित हुई। मेरा दिल इसमें नहीं था, केवल ब्यूरो की प्रेरणा ही मुझे परिचालित कर रही थी। वेकफील्ड का रिपब्लिक-पक्षी वातावरण कम्युनिस्ट-कार्यवाहियों के अनुकूल नहीं था, और कम्युनिस्ट मोर्चों पर उन सुस्ती और निष्क्रियता के दिनों में, जब बौडरवाद स्वयं युद्ध में सहायता पहुँचाने वाले पाँच सवारों में था, कोई ऐसे सनसनीखेज मामले नहीं मिलते थे जिनके आधार पर संगठन का आयोजन हो सके। संगठित हो जाने के बाद भी कम्युनिस्ट-गोष्ठी करेगी क्या, इसका ठिकाना नहीं था।

नये घर में बसने के शीघ्र ही बाद कामरेड जांसन और कॉलियर ने दर्शन दिए। उन्हें इस बारे में बोस्टन ज़िले से आदेश मिल चुका था। पहली ही भेंट में मैंने जान लिया कि पार्टी के बीजारोपण के लिए भूमि तैयार करने में मुझे सहायता देने के लिए इन दो को ही क्यों मनोनीत किया गया था। अपने व्यक्तित्व और चाल-ढाल में वे दोनों एक-दूसरे से बिलकुल विभिन्न थे।

गस जांसन, जिस का नाम सुनकर हैल लियरी आश्चर्यान्वित हो गया था, भारी आवाज़ का भरकम शरीर और आडम्बरी व्यक्तित्व का स्वीडिश जाति का आदमी था, जिसकी आवाज़ में सस्ती शराब पीने के कारण और भी अस्पष्टता आ जाती थी। कभी-कभी उसका व्यवहार भी प्यारा लगता था, परन्तु मुख्यतया वह मूर्ख था; हल्के हथकण्डों के प्रयोग को तैयार रहने वाले किस्म का बोल्शेविक!

गस का धन्धा आम मज़दूरी का था, जिसे हर किसी काम के लिए बुलाया जा सकता है। लेकिन काम-धन्धे की उपेक्षा करके उसे उन्माद की सीमा तक कम्युनिज़्म का नशा चढ़ा रहता था। वह किसी भी काम के लिए हमेशा प्रस्तुत रहता था, विशेषकर किसी आन्दोलन के दिनों; और पार्टी की ऐसी कार्यवाहियों में बहुत दिलचस्पी लेता था जहाँ पर पुलिस के साथ दंगे की सम्भावना हो।

उसकी निजी जिन्दगी के बारे में मैं इतना ही जानता था कि वह और उसकी पत्नी हमेशा झगड़ते रहते थे। "गस जांसन की पत्नी से बचकर रहना," जैक ग्रीन के मुझे होशियार करते हुए कहा; वह उन दिनों बोस्टन की पार्टी के क्षेत्र की सुरक्षा के लिए उत्तरदायी था, "वह बड़ी कमीनी और चुग़लखोर है।"

कॉलियर किताबों का कीड़ा, दुबला-पतला, क्रोधी और अस्वस्थ दीख पड़ता था। वह शराब तो शायद ही कभी पीता था, लेकिन सिगरेट लगातार एक के बाद दूसरी पीता रहता था। उसके चेहरे की हड्डियाँ उभरी हुई थीं और उस पर राख की मुर्दनी छाई रहती थी। साहित्य की फ्रैंक को

खूब समझ थी। उसके निजी पुस्तकालय में मार्क्सवाद के विषय पर जितनी किताबें जमा थीं, उतनी किसी व्यक्तिगत संग्रह में मैंने आज तक नहीं देखीं। उसकी आँखों में चमक थी और सन्देह भी; और पूँजीवाद के विरुद्ध गहरी भीतरी घृणा से वह रह-रहकर ललक उठती थी।

वेकफ़ील्ड में पार्टी के किसी मज़बूत आन्दोलन के बारे में इन दोनों कामरेडों की आशाजनक राय न थी, परन्तु दोनों में दृढ़निश्चय का अभाव न था। मैं यह भी सोचता था वह गोपनीयता पर आवश्यकता से अधिक बल दिया करते थे।

इस सम्बन्ध में मैंने दूसरे साधनों से पूछ-ताछ की और इसका कारण भी जान गया। दो वर्ष पहले, वेकफ़ील्ड में कम्युनिस्टों की पकड़-धकड़ ज़ोर से शुरू हुई थी जिसके पीछे श्रीमती जांसन की प्रेरणा थी। यह बात काफ़ी हास्यास्पद मालूम पड़ती है। यह पत्नी जी उतने ही ज़ोर-शोर से कम्युनिस्ट-विरोधी थीं जितने उत्साह से कि गस कम्युनिस्ट था। सुना जाता था कि घरेलू झगड़ों के दौरान में पत्नी ने पति से पार्टी को छोड़ देने के लिए कहा था, और चेतावनी दी थी कि अन्यथा वह उत्पात मचायगी। इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है कि गस ने उससे क्या कहा होगा, लेकिन गस उसकी शक्ति का अनुमान सही न लगा पाया था।

श्रीमती गस जासन सीधे पुलिस की चौकी पर गई और वहाँ जाकर भण्डा फोड़ दिया। उन्होंने वेकफ़ील्ड की पार्टी के अग्रणियों के नाम बताए और, और वहाँ के पब्लिक स्कूल के दो अध्यापकों और पादरियों की कलई खोली। अमेरिकन लीजन ने मुस्तैदी से इन पर धावा बोल दिया। जिन लोगों का नाम श्रीमती जांसन ने बताया था, उनके घरों को घेर के मशालें लेकर जलूस निकाले गए। उनका अपमान किया गया और धमकियाँ दी गईं। कुछ लोग तो शहर छोड़कर भाग गए। पार्टी-गोष्ठी भंग हो गई। मैल्डन की शाखा से यहाँ की गोष्ठी के बचे-खुचे लोगों को मिलाने की हल्की कोशिश की गई, लेकिन यह दो समूह बहुत दूर दूर रहते थे। पार्टी की बैठकें, कार्यवाहियाँ, चन्दा जमा करने आदि के सब काम वेकफील्ड में

एकदम रुक गए।

इस भयावह पृष्ठभूमि में कॉलियर, जांसन और मैं पार्टी की गोष्ठी को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से जुट गए। हमारे पास लगभग १४ व्यक्तियों की एक सूची थी जिनका अब भी पार्टी की सदस्यता में नाम गिना जाता था। फ्रैंक और गस उनमें से अधिकांश से परिचित थे, और उनसे पुनः सम्पर्क स्थापित करने का काम उन्होंने अपने ऊपर ले लिया। मुझसे पीछे रहने को ही कहा गया ताकि पड़ोसियों का शक-शुबह न जाग जाय।

पहली सभा मेरे घर पर ही बुलाई गई। संगठन के शुरू के दिनों की प्रेरणा और उत्तेजना देने वाली सभाओं की तरह ही यह सभा भी गस जांसन के भाषण से प्रारम्भ हुई; जिन सदस्यों से पिछला चन्दा न वसूल हुआ था, वह जमा किया गया। कॉलियर और जांसन इस बैठक की बात को गुप्त रखने में बहुत सतर्क थे। यह आठ बजे रात के लिए बुलाई गई थी।

सभा शुरू होने के आधा घण्टा पहले मेरे घर के दरवाजे पर थप-थपाहट हुई और एक छाया मेरी बैठक के अंधेरे में घुल-मिल गई। कुछ मिनट बाद; एक दूसरी, फिर तीसरी। दो-एक तो पिछले दरवाजे से घुसकर आए। एक वक्त पर एक से अधिक व्यक्ति मेरे घर पर नहीं पहुँचा। दरवाजे के बाहर मोटरें जमा नहीं हुईं; यदि इनमें से कोई मोटरों पर आए भी होंगे तो उन्हें काफ़ी दूर छोड़ आए होंगे। गस साइकिल पर चढ़कर आया जो उसकी सवारी का साधारण साधन था। ८ बजे तक बैठक में लगभग एक दर्जन व्यक्ति जमा हो चुके थे। इस मौन को एक शब्द बोलकर भी भंग नहीं किया गया। एक ही परिवार के कई व्यक्ति उपस्थित थे जो सब अलग-अलग पहुँचे थे और मिलकर एक साथ बैठे हुए थे। वेकफील्ड के विभिन्न भागों से लोग इकट्ठे हुए थे, कुछ तो ग़रीबों की बस्ती से, वेकफील्ड में ऐसी बस्तियाँ भी थीं। कुछ इसकी साफ़-स्वच्छ अमीराना बस्तियों से आए थे।

बैठक में कुछ रंग नहीं जमा; मुख्य भाषण गस का हुआ जो अपनी आवाज को और पार्टी के प्रति अपने उत्साह को काफी नियन्त्रण में रखे रहे। चन्दा जमा किया गया, और भविष्य में बैठकों के लिए इन्तजाम किया

गया जिनमें उपस्थित होने का प्रायः सभीने वायदा किया। ईवा सारा समय एक बड़ी कुरसी पर लुढ़की पड़ी रही, और बेचैनी में अपनी उंगलियों पर एक धागा लपेटती और खोलती रही। जब सभा खत्म हुई, तो सदस्यों के लौटने का ढंग आने के क्रम से उलटा कर दिया गया। सात-सात मिनट की अवधि के बाद एक-एक करके वह घर से बाहर रात के अंधियारे में खिसकते हुए तेज़ रफ़्तार से बढ़ते रहे।

"हमें यहाँ वेकफील्ड में तो विशेष रूप से सतर्क रहना है," उनमें से एक ने दरवाज़े की चौखट पर रुकते हुए कहा, "पुलिस के जासूस सब जगह फैले हुए हैं।"

ये सतर्कताएँ पड़ोसियों द्वारा इस गोष्ठी का पता लगाए जाने के विरुद्ध पर्याप्त थीं। मैं खुद भी अपनी सुरक्षा के लिए प्रयत्नशील था। सभा के बाद मैं जीने पर चढ़ा, ऊपर जाकर दूसरी सँकरी सीढ़ियों पर बढ़ता हुआ, बाहर की शहतीरियों पर कदम रखकर एक ऐसे कमरे में पहुँचा जहाँ लकड़ी की भारी अलमारी रखी हुई थी। मैंने इस अलमारी के दरवाज़े की चिटखनी को ढूँढ़ा, सारी अलमारी को बलपूर्वक खींच लिया और इस धोखे की दीवार को लाँघकर उस छोटे से कमरे में प्रवेश किया जहाँ एफ० बी० आई० के लिए मैं काम करता था। इस कमरे की खिड़की बाहर के एक बड़े वृक्ष से छिपी हुई थी, और कमरे में टाइप-राइटर, डिक्टेटिङ्ग मैशीन और फोटोग्राफ़ी का सब सामान सुसज्जित था। यहाँ बैठकर मैंने ब्यूरो के लिए अपनी रिपोर्ट लिखी।

यह छोटा-सा चौकोना कमरा घर का ऐसा गुप्त स्थान था जहाँ बैठकर मैं फुरसत पा सकता था। परन्तु यही कमरा मेरे लिए कैदखाना भी था, जहाँ कम्युनिस्टों की बैठकों के बाद मुझे कई रातों को घण्टों-भर बन्द रहना पड़ता था।

अगले कुछ महीनों में काम-काज की खूब गर्मी रही। वेकफील्ड के पार्टी की गोष्ठी के संगठन-कार्य के अलावा मुझे यह भी हिदायत थी कि मैं यंग कम्युनिस्ट लीग की गोष्ठी से यथानियम सम्बन्ध बनाए रखूँ। लीग के

संगठन में मैं तेजी से आगे बढ़ा; कैम्ब्रिज की गोष्ठी से निकलकर पहले बोस्टन-क्षेत्र की गोष्ठी में और फिर लीग की गोष्ठियों के राष्ट्रव्यापी जाल में शामिल हो गया।

पार्टी मुझे हमेशा बैप्टिस्ट धर्म का तरुण-नेता कहकर पुकारती थी, गिरजाघर-सम्बन्धी मेरी कार्यवाहियों में पार्टी-कामरेडों की दिलचस्पी का यही कारण था। मुझे कई व्यस्त संस्थाओं में रखा जाता था, विशेषकर विजय के लिए तरुण-समिति पर नियन्त्रण पाने की कोशिश में मेरा इस्तेमाल हो रहा था। मेरे धन्धे के कारण मेरी वाकफियत, जो कि हैरी ब्राउनिंग के साथ और एम० एण्ड पी० थियेटर्स में काम करने से काफ़ी अधिक थी, पार्टी को बहुत लाभजनक सिद्ध हुई। मेरा परिचय अधिकतर सिनेमा की फ़िल्मों के प्रचार-विभाग, विज्ञापन-विशेषज्ञों, जर्नलिस्टों सम्पादकों और रेडियो के अधिकारियों से था। मि० ब्राउनिंग का दफ्तर, देशोपयोगी आन्दोलनों का समर्थन पहुँचाने के मुख्य उद्देश्य से, न्यू इंग्लैण्ड के लोक-रंजन व्यवसाय का केन्द्र बन गया था। क्योंकि इन दिनों कम्युनिस्ट पार्टी का ध्येय भी युद्ध में विजय का ही था इसलिए पार्टी के लिए और एफ० बी० आई० के लिए मुझसे सम्बन्धित ये परिस्थितियाँ लाभकारी साबित हुईं।

बैठकों में इन दिनों विभिन्न सदस्यों की पिछले दो सप्ताहों के कार्यकलाप की रिपोर्टें ही पेश होती थीं, और काम-काज के नये उत्तरदायित्व बाँटे जाते थे। नई योजनाओं पर विचार करते हुए आत्म-समीक्षा के अवसर निकल आते थे जब कि हरेक सदस्य अपनी भूलों और गलतियों के लिए खुद अपनी भर्त्सना करता था, अथवा नेताओं की झिड़कियाँ सुनता था। मैं शीघ्र ही यह जान गया कि पार्टी-सम्बन्धित अपने 'पापों' को मान लेना नेताओं की डाँट-फटकार सुनने से कहीं श्रेयस्कर है। पार्टी द्वारा दिये गए किसी कर्तव्य से मैं आँख चुरा जाता था क्योंकि मैं ऐसे कर्तव्य को निभाना अपने बूते से बाहर की बात समझता था, अथवा ऐसे कर्तव्य से मेरी स्थिति को नुकसान पहुँचने का अन्देशा होता था। लेकिन जब कभी भी ऐसा होता था, मैं किसी दूसरे उत्तरदायित्व को बड़े जोशोखरोश के साथ पूरा करता था ताकि मैं अपने

कर्तव्य को न करने का कोई बहाना पेश कर सकूँ। समाज में अपने अच्छे सम्पर्कों के कारण गोष्ठी में तीखी टीका-टिप्पणी से मैं बचा रहता था।

वेकफ़ील्ड में पहले वर्ष के निवास के दिनों मुझे इतनी व्यस्तता रही कि मैं शायद ही कभी अपने गृहस्थ के लिए समय निकाल सका, अथवा अपनी तीसरी लड़की डेलसे, जिसका जन्म यहाँ आने के दो महीने बाद हुआ, प्यार बढ़ा सका। इधर एम० एण्ड पी० थियेटर्स में मेरा काम बढ़ रहा था और उसके साथ मेरे उत्तरदायित्व में भी वृद्धि हो रही थी। हैरी ब्राउनिंग ने मेरा भार कुछ हलका करने के लिए मेरे लिए एक सेक्रेटरी नियुक्त कर दिया, और मेरे सहायकों की संख्या एक से छः तक पहुँच गई। इसमें भी अधिक सहायता के लिए आंशिक रूप में दस अन्य व्यक्ति मेरे निर्देश में काम करते थे। यह सौभाग्य की बात थी कि कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा मुझ पर लादे गए कर्तव्य मेरे विज्ञापन और जन-सम्पर्क के व्यवसाय से अक्सर मेल खाते थे।

फिर भी, यह सब काम-काज इतने अधिक थे कि इन्हें निभाना कठिन होने लगा। बोस्टन में अक्सर मैं रात को देर तक पार्टी के कामों में व्यस्त रहने लगा, वेकफ़ील्ड को दूध ले जाने वाली गाड़ी पकड़कर घर लौटता था, एफ०बी०आई०को भेजने के लिए रिपोर्ट तैयार करता था और अगले दिन के काम-काज में फिर से जुट जाने के पहले मुश्किल से कुछ घण्टे सो पाता था। इस प्रकार की भारी व्यस्तता से मुझे छोटे-छोटे शारीरिक कष्ट रहने लगे। ईवा कई बार जबर्दस्ती मुझे घर से बाहर न जाने देती थी। वह इस बात की शिकायत करती थी कि मैं जरूरत से ज़्यादा काम कर रहा हूँ, अपना स्वास्थ्य बिगाड़ रहा हूँ और अपने घर और गृहस्थी की उपेक्षा कर रहा हूँ। इस सब काम-काज को तिलांजलि देने की वह अक्सर प्रेरणा देती रहती थी।

उसका प्रतिवाद करना मेरे लिए आसान न था, क्योंकि वह ठीक ही कहती थी। मैं अत्यधिक काम-काज अपने कन्धों पर ले रहा था, यद्यपि जितना मैं अनुभव करता था कि मुझे करना चाहिए, उससे अधिक नहीं। ईवा से बहस करने के बजाय मैंने हैल लियरी से खुलकर बातें कीं। सदा

की तरह, उसने सहानुभूति दरशाई। उसने एक बड़ा खतरा मोल लिया; और हमारा भेद प्रायः फूट ही गया था जब कि हैल स्वयं पहले अकेले में ईवा से, और बाद में हम दोनों से एक साथ बातचीत करने के लिए हमारे वेकफ़ील्ड के मकान में आया।

पहली बार आने पर उसने ईवा से खुद ही परिचय कर लिया और उसे बताया कि वह 'फेडरल ब्यूरो आफ़ इन्वेस्टिगेशन' का प्रतिनिधि है। ब्यूरो का वह पहला व्यक्ति था जिससे ईवा मिली, और मेरी जासूसी के उत्तरदायित्व के बारे में मेरे अलावा केवल उसी से ईवा ने बातचीत की।

हैल ने उसे समझाया कि जो कुछ मैं कर रहा था, वह ब्यूरो और देश के लिए बड़े महत्त्व का था, और शायद अतीव आवश्यक सिद्ध हो। उसने ईवा को बताया कि किस प्रकार वह हमारे गृहस्थ के उत्तरदायित्व के बोझ को यथासम्भव हल्का करने को इच्छुक है। उसने अपना फ़ोन नम्बर बताया और उससे कहा कि जब कभी वह अनुभव करे कि कोई मुश्किल आ पड़ी है, तो सीधा उसे बुलाए। उसने ईवा से इस बात का भी अनुरोध किया कि जिस काम को मैंने उठाया हुआ है, इसे शीघ्रता से निपटा देने में वह जहाँ तक हो सके, मेरा और ब्यूरो का हाथ बँटाए।

हैल उसका पूर्ण विश्वास पा लेने में सफल हुआ और इस भेंट के बाद ईवा, अपनी इच्छाओं का दमन करके भी, हमारे घर में होने वाली बैठकों में अधिक बार उपस्थित होने लगी और यंग कम्युनिस्ट लीग की सदस्य भी बन गई। मैंने उसकी ओर से चन्दा भर दिया।

इसके बाद केवल यह देखने के लिए कि हमारी घर-गृहस्थी में किस प्रकार निभ रही है, लियरी एक बार फिर आया। अभी पूरी सन्ध्या न उतरी थी और हम तीनों बैठक में बैठे हुए किसी भी विशेष विषय को न लेकर बातचीत कर रहे थे।

घर के दरवाजे पर इसी वक्त किसी ने दस्तक दी। मैंने हैल की ओर देखा और ईवा तेजी से खड़ी हो गई। मैंने जाकर दरवाजा खोला और देखा कि वहाँ कामरेड कॉलियर और जॉन्सन खड़े हैं। बड़े तपाक से और

ऊँचे स्वर में मैंने उनका स्वागत किया और जितनी देर सम्भव था, उनका रास्ता वहीं रोके रहा।

"आओ फ्रैंक, आओ गस," मैं जोर से बोला। "कैसे हैं आप दोनों? अन्दर आइए, अन्दर आइए।" ड्योढ़ी में रुककर मैं ऐसी बातें ही कहता रहा, मौसम की बात छेड़ी, गस से पूछा कि उसकी साइकिल कहाँ है, उनसे प्रार्थना की कि अपने हैट और कोट मुझे सौंप दें, जानना चाहा कि उनके मन में क्या है।

"सोचा कि एक मिनट के लिए तुम्हारे यहाँ रुकते चलें," कॉलियर ने कहा।

जब उनके अन्दर बढ़ने को मैं किसी प्रकार न रोक सका तो मैं बैठक की ओर उनके आगे-आगे चला; मेरे दिल की धड़कन बखूबी सुनी जा सकती थी।

बैठक खाली थी। हैल जिस कुरसी पर बैठा था उसके साथ की कुरसी पर उसकी हैट रखी थी; वह भी गायब थी। ईवा रसोई के तरफ़ के दरवाजे से एक अंगोछे से हाथ पोंछते हुए, भीतर आई, जिसको उसने अभी ही उठाया होगा। मैंने एक चिन्तापूर्ण दृष्टि उसकी ओर डाली और प्रत्युत्तर में जो दृष्टि उसने मेरी ओर घुमाई, उससे मुझे पता चल गया कि हैल सुरक्षित ढंग से खिसक गया है। फ्रैंक और गस के प्रति उस दिन ईवा का अत्यधिक दोस्ताना रवैया था, लेकिन वे दोनों अनुत्सुक मुद्रा में और क्रुद्ध जान पड़ते थे। "हरे, हरे," मैंने निश्चिन्तता की साँस लेकर कुरसी पर बैठते हुए कहा, "बच्चों को बिछौनों में लिटाकर और भोजन की पिर्च-प्लेटें धो-धाकर हम अभी निबटे हैं। यह काम कितना कड़ा है।"

हमारी बातचीत का रुख पार्टी से सम्बन्धित मामलों पर घूम गया, और विशेषकर यंग कम्युनिस्ट लीग को भंग करने के जिस प्रस्ताव पर इन दिनों विचार हो रहा था, हम उस पर बहस करने लगे।

जैसे कि प्रायः नृशंस एकदलीय शासन-तन्त्र के सभी आन्दोलनों में होता है, कम्युनिज़्म का मुख्य आश्रय भी नौजवानों के दलों पर ही था।

अमेरिका में इक्कीस वर्ष से यंग कम्युनिस्ट लीग संस्था ही कम्युनिस्ट नेतृत्व का शिक्षण-केन्द्र और समागमन का स्थान रही। और अब, १६४३ के ग्रीष्म और पतझड़ में, पार्टी एक नया कदम उठाने की बात सोच रही थी: यंग कम्युनिस्ट लीग को भंग करने की, और इसकी जगह पार्टी के शब्दों में 'नई संयुक्त फैसिस्ट विरोधी युवक-संस्था' नाम के एक संघ के आयोजन का प्रस्ताव रखा गया।

इस प्रश्न के मूल में युद्ध की चुनौती थी। इन वर्षों में कम्युनिस्ट पार्टी का उद्देश्य यथासम्भव अपने अस्तित्व को अमरीकी प्रजातन्त्रीय जीवन के ताने-बाने में बुन लेना और युद्ध को जीतना था। कम-से-कम सार्वजनिक रूप में इन्हीं उद्देश्यों को प्रचारित किया जाता था, यद्यपि परदे के पीछे पार्टी के इस दिशा में प्रयत्न सदा जारी रहे कि वह अपना प्रभाव और अपनी पकड़ न गँवा बैठे।

यंग कम्युनिस्ट लीग का विलयन एक प्रकार का तुष्टीकरण था। इसका ध्येय संस्था के नाम के साथ के 'कम्युनिस्ट' शब्द को हटा देने का था, ताकि यह आन्दोलन एक नये झण्डे और नारे के तले अमरीकी नौजवानों के पहले से बड़े अंश को अपने प्रभाव के अन्तर्गत ले सके। सार्वजनिक रूप में, विशेषकर लीग के प्रधान मैक्स वीस्स द्वारा लिखे गए और सितम्बर १६४३ के 'द कम्युनिस्ट' नाम के पत्र में प्रकाशित लेख में कहा गया कि लीग भंग कर दी जायगी और अपने-आपको फैसिज़्म के विरोध के विश्व-व्यापी लक्ष्य को लेकर अन्य गैर-कम्युनिस्ट युवक-संस्थाओं में मिला देगी, और 'एक नई संयुक्त फैसिस्ट-विरोधी युवक-संस्था' के निर्माण में 'सहायता' देगी—वीस्स ने 'सहायता' के शब्द पर ही जोर दिया।

हर स्थान पर लीग की बैठकों में इस प्रश्न पर बहस-मुबाहसा हुआ। जैसे कि पार्टी के संगठन में हर किसी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन के अवसर पर, वैसे ही अब भी सदस्यों को पहले ही इस समस्या से अवगत कर दिया गया ताकि उन्हें मालूम हो जाय कि एक अच्छे कम्युनिस्ट को क्या रास्ता अख्तियार करना चाहिए। इस प्रकार प्रकट रूप में जनतन्त्रीय साधनों को बरता

गया। एक बार वीस्स के लेख-जैसे साधन से दिशा का संकेत हो जाने के उपरान्त, प्रत्येक सदस्य को इस नई नीति को सफलता की चरमता तक बढ़ा ले जाने की पूरी 'आज़ादी' रहती थी।

१९४३ के अक्तूबर के मध्य में मुझे यंग कम्युनिस्ट लीग के मैसेच्यूसेट्स राज्य की प्रधान एलिस गॉर्डन का फ़ोन पर सन्देशा आया। उसने एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बातचीत के लिए मुझे मिलने का निमन्त्रण दिया। अपने दफ्तर के पास ही के स्कोले स्क्वेयर के वाल्डोर्फ़ रेस्टराँ में हमने एक साथ भोजन करने का निश्चय किया। एलिस न्यूयार्क में होने वाले राष्ट्रीय सम्मेलन में बोस्टन के प्रतिनिधियों की मुखिया थी। दो दिन बाद ही इस सम्मेलन में यंग कम्युनिस्ट लीग ने अपनी समाप्ति की घोषणा पर हस्ताक्षर करने थे। मैसेच्यूसेट्स में नई संस्था के संस्थापित होने के बाद तत्सम्बन्धित आरम्भ के कुछ काम-काज में मेरी सहायता की सम्भावना को जानने के लिए मुझसे वह पहले भी बातचीत कर चुकी थी।

लेकिन जो बातचीत निकली, उसके लिए तो मैं कतई तैयार न था।

"हमारी इच्छा है कि न्यूयार्क के राष्ट्रीय सम्मेलन में शामिल हों," ऐलिस ने भोजन के वक्त मुझसे कहा। "नई संस्था के आयोजन पर हमने आपके योग्य महत्त्वपूर्ण कर्तव्य सोचा हुआ है।"

"वह क्या ?"

"आप इसके राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष होंगे।" मैंने अपने आश्चर्य और प्रसन्नता को अव्यक्त नहीं रखा कि मैं मैसेच्यूसेट्स में इस नई संस्था के पाँच उच्चाधिकारियों में से एक हूँगा। लेकिन इस सूचना से, कि जिस संस्था का अभी नामकरण भी नहीं हुआ है, उसका नेतृत्व पहले ही कम्युनिस्टों के वश में आ चुका है, मुझे जो धक्का लगा, वह मैंने अपने भीतर ही दबा कर रखा।

"डॉन बोलन," उसने बताया, "इस राज्य में इस नई संस्था का प्रधान होगा।" बोलन यंग कम्युनिस्ट लीग का और बिजली के कारखानों के कामकरों के संघ का एक सक्रिय कार्यकर्ता था। तो यंग कम्युनिस्ट लीग

ने प्रकट रूप में जिस नई प्रजातन्त्रीय युवक संस्था के निर्माण में 'सहायता' देने का वचन दिया था, उसका यह तरीका था। कैम्ब्रिज तरुण-संघ के साथ क्या बीती थी, उसका अन्देशा यह भीतरी चाल-ढाल देखकर मुझे अब होने लगा।

"इस नये दल की बैठक में आप बैप्टिस्ट के रूप में शामिल होइएगा। इससे आपकी स्थिति मजबूत रहेगी।" एलिस ने मुझे बताया कि यंग कम्युनिस्ट लीग की अन्तिम, विसर्जन सभा शुक्रवार को न्यूयॉर्क के मेनहेप्टन सेण्टर में होगी, और नये आन्दोलन के संगठन का सूत्रपात शनिवार व रविवार को न्यूयॉर्क के 'मक्का टेम्पल आफ़ द स्राइन' में हो जायगा। एक बेप्टिस्ट के रूप में मुझे नये दल के सामने भाषण देना होगा और इसके बाद वहाँ की सभाओं में एलिस और डॉन बोलन के साथ विचार-परिवर्तन करना होगा। क्या मेरे लिए ऐसा करना सम्भव होगा?

मैंने शीघ्र ही इस पर विचार किया और अपनी अनुमति दे दी। हाँ, मुझे कई छुट्टियाँ मिलने वाली हैं, और मैं न्यूयॉर्क में कुछ दोस्तों से मिलने के लिए जाने का कार्यक्रम बना ही रहा था। वहाँ मैं रिश्ते में अपने एक भाई के घर ही ठहरूँगा।

मैंने ब्यूरो से बातचीत की। उन्होंने कहा कि प्रसंग का सारा भेद लेने के लिए अवश्य ही न्यूयॉर्क जाना चाहिए। बृहस्पतिवार की रात को मैंने गाड़ी पकड़ी और देर से न्यूयॉर्क पहुँचा।

अमरीका के सभी प्रदेशों से आये हुए पाँच सौ प्रतिनिधियों ने यंग कम्युनिस्ट लीग की अन्त्येष्टि क्रिया न्यूयॉर्क के मेनहेप्टन सेण्टर में एकत्रित एक सम्मेलन में की। अर्ल बौडर ने एक भाषण दिया, जिसमें इस लीग के विलयन के महत्त्व पर राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से जोर दिया गया। किसी ने अफसोस नहीं प्रकट किया क्योंकि हरेक को, कम-से-कम उच्चाधिकारियों के वर्ग में, यह मालूम था कि यह सब-कुछ नाम को बदलने का ढोंग ही था। अपनी स्थिति को नये दल के सामने क्षति से बचाने की खातिर मैंने यंग कम्युनिस्ट लीग के सम्मेलन में प्रतिनिधि की हैसियत से नहीं, वरन् एक दर्शक के

रूप में भाग लिया।

शनिवार और रविवार को उसी समूह ने 'अमेरिकन यूथ फार डिमाक्रेसी' (प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक) नाम की नई संस्था के जन्मोत्सव का नेतृत्व 'मक्का टेम्पल आफ़ द स्राइन' के बड़े मंच पर किया। इस नई संस्था में कम्युनिस्टों का प्रभुत्व स्पष्ट और निधड़क रूप में हो रहा था। गिनती के अनुसार इसमें यंग कम्युनिस्ट लीग के १५६ और दूसरी युवक सभाओं के कुल मिलाकर १७६ प्रतिनिधि शामिल हुए थे। वैसे भी इस संस्था का गहरा झुकाव कम्युनिस्टों के पक्ष में रहता, लेकिन इस झुकाव का अव्यक्त रूप से कहीं अधिक मात्रा में होने का कारण यह था कि बहुत-से प्रतिनिधि, जो प्रकट रूप में गैर-कम्युनिट दलों के प्रतिनिधि बनकर आये थे—जैसे मैं स्वयं बैप्टिस्टों के युवक-नेता के रूप में मौजूद था—वास्तव में छिपे हुए कम्युनिस्ट थे।

नये आन्दोलन के आदर्शों का उल्लेख मैक्स वीस्स के 'द कम्युनिस्ट' में प्रकाशित लेख से ही उठाकर अपना लिया गया; केवल उसमें से यंग कम्युनिस्ट लीग के प्रति सब वक्तव्य निकाल दिये गए। वीस्स ने बड़ी उदारता का प्रदर्शन करते हुए १०० सदस्यों की राष्ट्रीय समिति में अपना मनोनीत नहीं होने दिया। इससे पुरानी कम्युनिस्ट लीग के राष्ट्रीय अध्यक्ष को एक ओर हट जाने में सहायता मिली। 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' में पार्टी के प्रभुत्व के बारे में सब निश्चिन्त थे।

रॉबर्ट थाम्पसन, जो कि एक विख्यात फौजी वीर था और यंग कम्युनिस्ट लीग का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रह चुका था, और बाद में पार्टी के बड़े नेताओं में से एक था, 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' का राष्ट्रीय सहसभापति चुना गया। (बाद में 'द इलेवन' के कम्युनिस्ट षड्यन्त्रकारी होने के मुकदमे में सजा पा कर थाम्सन कानून की शिकस्त से बचता फिरा था) ली की न्यूयॉर्क राज्य की शाखा का भूतपूर्व प्रधान कार्ल रोस, प्रधान मन्त्री बना दिया गया। दूसरे अधिकारियों में मैं सभी को पहचानता था। इनमें कामरेड बॉब भी था जिसे मैं यंग कम्युनिस्ट लीग के केण्डल ग्रीन के सम्मेलन में पहली बार

मिला था। वह क्विन्सी के विलियम रॉबर्ट मेकार्थी के रूप में अब सामने आया और बोस्टन-स्थित जहाज बनाने वालों के संघ का, जिसका कि वह प्रधान भी था, प्रतिनिधित्व कर रहा था। उसे इस नई युवक-सभा का कोषाध्यक्ष चुन लिया गया।

'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' के यन्त्र से नये मोर्चों की तुरन्त ही माँगें पेश की गईं : मजदूर-वर्ग का संगठन, ब्रिटेन, अमेरिका और रूस में दोस्ती, फौजियों को सहायता, और जातीय भेदभाव का उन्मूलन।

सम्मेलन के खत्म होने पर, मैं प्रभुत्त्व जमाए रखने के कम्युनिस्ट तरीकों का आरम्भिक ज्ञान लेकर बोस्टन लौट आया, लेकिन असल दीक्षा तो बाद में मिलने वाली थी।

बड़ी धूमधाम के साथ यंग कम्युनिस्ट लीग के भंग होने के दृश्य को मैंने देखा था। इस धूमधाम से सभी समाचार-पत्र धोखे में नहीं आए। 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' नाम का राष्ट्रव्यापी संघ अब पुरानी लीग के सदस्यों के मजबूत कब्जे में था। अब बोस्टन में 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' की विशिष्ट प्रकृति पर अपनी इच्छा भीतर से लाद देने की हमारी बारी थी। बातचीत के लिए एलिस गॉर्डन ने इस नई संस्था के आयोजन के एक सप्ताह के अन्दर ही मुझे खाने पर निमन्त्रित किया।

"मुझे कहने की जरूरत नहीं," एलिस ने कहा, "कि काम के आने वाले दौर में सफलता पाना हमारे लिए कितना महत्त्वपूर्ण है!" मैंने स्वीकृतिसूचक ढंग से सिर हिलाया। "आप यह तो समझ गए होंगे कि इस संस्था में आप ग़ैर-कम्युनिस्ट बैप्टिस्ट-धर्म के एक नेता का रूप लिये रहेंगे।"

"और हाँ," उसने कहा, "आपके लिए अच्छी योजना रहेगी कि आप सार्वजनिक रूप में अपने को ग़ैर-कम्युनिस्ट होने की घोषणा के अवसर की तलाश में रहें। स्वाभाविक है कि यदि कोई आपसे पूछे, अथवा आप

पर आरोप लगाए कि आप यंग कम्युनिस्ट लीग के सदस्य थे, तो मौका पड़ने पर शपथ खाकर भी आपको कहना पड़ेगा कि आप कभी कम्युनिस्ट न थे, न हैं।"

"चिन्ता मत कीजिए," मैं फीकी हँसी हँसा, क्योंकि यह बात वास्तविक थी, "यदि मेरे मालिक अथवा अन्य विभागों के मुखिया यह जान जायँ कि मैं लीग से सम्बन्धित रहा हूँ, तो वह चौराहे के खम्भों से बाँधकर शाम से पहले ही मुझे फाँसी पर लटका देंगे।"

"अब योजना की मुख्य बातें इस प्रकार हैं,"—एलिस ने कहा। उसने मुझे बताया कि अक्तूबर की अन्तिम तारीख से पहले ही एक आयोजन-समिति (फॉमिंग कमेटी)—वही पुराना तरीका—बना ली जायगी। इस आयोजन-समिति का काम सारे राज्य में 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' की शाखाओं और क्लबों की स्थापना कर देना होगा। हम विशेष सदस्यों की नियुक्ति के लिए विशेष रूप से प्रयत्न करेंगे और १६४४ के प्रारम्भ तक हम राज्यवर्ती शाखा का एक सम्मेलन बुलाएँगे जहाँ कि स्थायी अधिकारियों को चुना जायगा।

एलिस से इस परिचयात्मक बैठक के बाद, इस सब काम-काज की विस्तृत योजना बनाने के लिए एक साथ खाने के बहाने, और कई अन्य बैठकें हुईं। इन बैठकों में हिस्सा लेने वालों को मैं अच्छी तरह जानता था, और 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' के ग़ैर-कम्युनिस्टों से सहयोग पर जोर देने के बावजूद इनमें कोई भी ग़ैर-कम्युनिस्ट नहीं था। उनकी बारी यदि आती भी तो बाद में आती। इन बैठकों में यह स्पष्ट था कि जिस स्तर पर हम काम कर रहे थे, निर्णय आदि उससे किसी ऊपरी स्तर पर लिये जाते थे। और यह ऊपरी स्तर न्यू इंग्लैण्ड के जिले की कम्युनिस्ट पार्टी का दफ़्तर ही हो सकता था।

हमारी पहली सभा यंग कम्युनिस्ट लीग के पिछले दफ़्तर में, जो कि अब उठाया जा रहा था, बोस्टन के ट्रेमाँट और बोलिस्टन स्ट्रीट्स की लिट्टल बिल्डिंग में हुई। एक संक्षिप्त परिपत्र तैयार किया गया जिसमें 'प्रजातन्त्रीय

अमेरिकन युवक' के उद्देश्यों की घोषणा थी और बोस्टन क्षेत्र के युवक-नेताओं से ७ नवम्बर को मैसेचूसेट्स में इस संस्था की शाखा की स्थापना के लिए संयोजन-सम्मेलन में भाग लेने का बुलावा दिया गया था।

युवक-सभाओं के नेताओं की एक बड़ी मिली-जुली सूची को यह पत्र भेज दिया गया। नैट मिल्ज़ ने मैसेचूसेट्स युवक-संघ के सदस्यों के पते दिये। बेवर्ली फ्रैंकलिन ने 'विजय के लिए युवक-संघ' के सदस्यों की कुल नामावली ला दी। फ्रैंसिज़ डेमन ने 'बोस्टन कौन्सिल ऑफ़ सोशल एजेंसीज़' की सूची प्राप्त की। कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्य दफ्तर के विदेशीय दलों में से कई नाम हमें दिये। लिफ़ाफ़ों पर पता लिखने और उन्हें डाक में २६ अक्तूबर तक छोड़ने के लिए हमें कितना ही अरसा कसकर काम करना पड़ा।

इसके बाद ७ नवम्बर, रविवार, की संयोजन-सभा की तैयारी के लिए हमारी अन्तिम बैठक हुई। लीग के पुराने नेता किसी ग़लत चाल के कारण अपने ध्येय में चूकना नहीं चाहते थे। हममें से जो सक्रिय भाग ले रहे थे, उन्होंने मिलकर एजेण्डा तैयार किया। कार्यक्रम में सबसे पहले राष्ट्रीय-गीत का गायन और झण्डे का अभिवादन रखा गया। एक लड़की को इस सम्मेलन को आरम्भ करने के लिए तैनात किया गया।

फिर हम कार्यवाही को विस्तारपूर्वक जाँचने लगे। "फिलाब्रिक," मुझे आदेश दिया गया, "आप उठेंगे और सुझाव रखेंगे कि हम एक अस्थायी प्रधान चुन लें, और आप डॉन बोलेन का नाम प्रस्तावित करेंगे। बोलेन, जब तुम प्रधान चुन लिये जाओगे तो तुम, बिलकुल स्वाभाविक रूप में दूसरे अस्थायी अधिकारियों को—उपप्रधान, मन्त्री, मत-गणना करने वाले—इत्यादि को मनोनीत कर लोगे।"

इस पर बोलेन को एक पुरजा पकड़ाया गया। "ये उन लोगों के नाम हैं जिन्हें विभिन्न स्थानों के लिए तुमने चुनना है," उससे कहा गया।

आगामी सम्मेलन का 'जनतन्त्रीय व्यवहार' इस प्रकार अपना रूप प्रकट करने लगा।

बॉब मेकार्थी ने, जो कि 'विशेष रूप से सम्मानित अतिथि' थे, मुख्य भाषण देना था। उसके भाषण के बाद बोलेन ने सदस्यों को खुले वाद-विवाद और प्रस्तावों को प्रस्तुत करने का निमन्त्रण देना था, केवल एलिस गार्डन ने उसे उन वक्ताओं और विषयों की सूची पकड़ा दी जिन पर और जिन्हें कि वह बोलने की इजाजत देगा। हर भाषणवक्ता ने अपने को किसी गैर-कम्युनिस्ट संस्था का प्रतिनिधि जतलाना था। हरेक ने वही भाषण देना था जो उसे कहा गया था, यद्यपि कोई विद्यार्थी, कोई मजदूर-संघ का सदस्य, कोई नीग्रो, कोई यहूदी, अथवा कैथोलिक मतावलम्बी जान पड़ेगा। मुझसे प्रोटेस्टेण्ट धर्मी युवकों के प्रतिनिधि के रूप में इस प्रकार भाषण देने के लिए कहा गया कि जिससे पहली की गई तैयारी का पता न लगे।

इसके बाद एलिस ने मेरे साथ मेरे भाषण पर विचार किया। उसने कहा कि यह बात अच्छी रहेगी यदि मैं इस नई संस्था के संगठन पर कुछ सन्देह प्रकट करूँ। मैं कहूँ कि मैं पहले इसके प्रति काफी अविश्वास रखता था, बाद में मैंने इसके विधान को बारीकी से देखा, राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और बहुत से युवक-प्रतिनिधियों से मिला, और बाद में इस निश्चय पर पहुँचा कि 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' नाम की यह संस्था ठीक वही है जैसा कि यह दावा करती है। बैप्टिस्ट के रूप में पहले मैं संस्था की कम्युनिस्टों के प्रति प्रवृत्तियों के विरुद्ध सन्देह का बीज डालूँ, फिर बाद में उसे स्वयं ही मसल दूँ।

"मैं समझ गया," मैंने कहा। "मैं कहूँगा कि अखबारों में 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' पर यह आरोप पढ़कर कि यह कम्युनिस्टों की संस्था है, बैप्टिस्ट होने के कारण मेरे लिए स्वाभाविक था कि यह पक्की तरह जान लूँ कि इसमें कम्युनिस्टों का प्रभुत्व नहीं है। ऐसी भूमिका बाँधकर आगे बढ़ूँगा।"

एलिस ने स्वीकृति में सिर हिलाया। मेरे भाषण का सार बोस्टन में पाई जाने वाली यहूदी-विरोधी भावना पर आक्रमण का था। जातीय भेद-भाव की प्रवृत्तियों पर हमला करने के लिए मुझे एक यहूदी-विरोधी पत्र

पढ़ने को दिया गया।

बड़ा सम्मेलन योजना के अनुसार सम्पन्न हुआ। लिटिल बिल्डिंग के हॉल में केवल सौ व्यक्तियों के बैठने की जगह थी, लेकिन यह खचाखच भरा हुआ था। दस-बारह कामरेड कमरे में यहाँ-वहाँ अलग-अलग बैठे थे, और युवकोचित उत्साह का स्पष्ट प्रदर्शन हो रहा था। कुछ ऐसे व्यक्ति भी मौजूद थे जो सार्वजनिक रूप में यंग कम्युनिस्ट लीग के नेता जाने जाते थे, लेकिन कार्यवाही में वे कोई सक्रिय भाग नहीं ले रहे थे। उन्होंने अपने चेहरों पर दूसरों को आश्वस्त करने वाली झेंप का भाव पोत रखा था।

सम्मेलन एक मोहक अव्यवस्था के वातावरण में आरम्भ हुआ, जैसे कि कोई निश्चित रूप से नहीं जानता था कि क्या करना चाहिए। इसके बाद अस्थायी प्रधान के रूप में नाम के प्रस्तावित होने के बाद डॉन बोलेन ने कुरसी सम्भाली और अपने सहायकों को 'चुना'। मैकार्थी ने, जो कि कुशल प्रवक्ता था, भावनापूर्ण व्याख्यान दिया। तदुपरान्त बोलेन ने उपस्थित लोगों को सुझावों और अपने विचारों को प्रकट करने का निमन्त्रण दिया, और अपने इस निमन्त्रण के साथ अपनी एक प्रर्थना जोड़ दी जो निष्कपटता का आवरण लिये हुए थी।

"मैं यहाँ आप सब लोगों को नहीं जानता हूँ," उसने अपनी मार्मिक मुस्कराहट का प्रयोग करते हुए कहा—बोलेन में आदर्श प्रधान के सब गुण विद्यमान थे—"इसलिए परिचय के उद्देश्य से जो कोई लोग भी कुछ बोलना चाहें, अपना नाम एक पुरजे पर लिखकर मेरे पास भेज दें।" उसने भाषण के लिए जिस व्यक्ति को सबसे पहले बुलाया, वह थे 'वेकफील्ड के बैप्टिस्ट सम्प्रदाय के प्रतिनिधि' श्री हर्बर्ट फिलब्रिक।

जब मैं सभा के मंच की ओर भीड़ में से रास्ता खोजता हुआ आगे बढ़ा तो मेरे मन में 'कैम्ब्रिज तरुण-संघ' और मैसेचूसेट्स के तरुण-संघ की बाधाहीन कार्यवाहियों की स्मृति एक धक्के के साथ ताजी हो आई। मेरे सामने दो किस्म के श्रोता और दो किस्म के भाषण थे; एक तो वह भाषण जो मैं भीड़ को काटता हुआ मन ही-मन, जहाँ तहाँ बैठे हुए अपने

कम्युनिस्ट साथियों के प्रति दे रहा था, और दूसरा वह पहले से तैयार किया गया भाषण जो भोले-भाले नये आये हुए लोगों के लिए दुहरा रहा था।

मेरे उस भाषण से, जो कि सम्मेलन में नवागुन्तकों के लिए दिया गया, मुझे आत्म-तुष्टि नहीं हुई। विशेष तौर से निर्मित उत्साह से मैंने एक अच्छे कम्युनिस्ट की तरह अपना भाषण उगलना शुरू किया और मेरे भाषण देने के ढंग में उन सब विद्रोहात्मक, दुरंगी चालाकियों का समावेश था जो पार्टी के दीक्षक मुझमें पैदा करने में सफल हुए थे।

"बॉब मेकार्थी से जो भाषण हमने अभी सुना है, वह बहुत आश्चर्य-जनक और प्रेरणात्मक था," मैंने अपने कर्तव्य की ओर शीघ्रता से उन्मुख होते हुए कहा। मैंने कामरेड बॉब की सरलता और उसके विचारों की प्रशंसा की, और कहा, "मैंने जब कुछ समाचार-पत्रों में इस प्रकार के आक्र-मणात्मक आरोप पढ़े कि 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' नाम की संस्था कम्युनिस्टों द्वारा ही आयोजित एक संस्था है तो इसे अपने बैप्टिस्ट सम्प्र-दाय का समर्थन और सहयोग देने में मुझे हिचकिचाहट और सन्देह हुआ। लेकिन मेकार्थी का भाषण सुनने के बाद यदि मैं यह कहूँ कि समाचार-पत्र जगत् का कुछ भाग अपने युद्ध में जीतने के उत्साह में इस प्रश्न को दूसरे प्रश्नों से व्यर्थ में उलझा बैठा है तो मुझे निश्चय है कि आप इसका अनुमोदन करेंगे। निश्चय ही आप यह तो स्वीकार करेंगे कि जो कुछ भी मेकार्थी ने कहा, उसमें कम्युनिज़्म की कहीं भी गन्ध नहीं थी और वह स्वयं भी हमारी राष्ट्रीय-समिति का सदस्य है। हमारे विधान में अथवा जिन उद्देश्यों को हमने अपने सम्मुख रखा है, उनमें कम्युनिज़्म जरा भी नहीं है।

"मुझे आशा थी कि समाचार-पत्रों के सब प्रतिनिधि आज यहाँ उपस्थित होंगे। उन्हें निमन्त्रण भेजे गए थे लेकिन स्पष्ट है कि उनमें से कुछ की दिलचस्पी सत्य को पहचानने की अपेक्षा कम्युनिस्टों को बदनाम करने व फाँसने में अधिक है।"

'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' के न्यूयॉर्क में होने वाले संस्थापन-सम्मेलन के लिए अपनी यात्रा का वर्णन मैंने सुनाया और बताया कि मैं वहाँ किन-किन व्यक्तियों से मिला। इसके बाद मैंने कहा कि देश में जो फासिज़्म-समर्थक लोग हैं, वह ऐसी संस्था को तोड़ने की हर मुमकिन कोशिश करेंगे—वह इस संस्था को 'कम्युनिस्ट' कहने में भी नहीं हिचकिचाएँगे—क्योंकि 'प्रजातन्त्रीय अमेरीकन युवक' की केवल युद्ध को सफलतापूर्वक जीतने में ही दिलचस्पी है, और फासिस्ट और दूसरे प्रतिगामियों की इस ओर कोई दिलचस्पी नहीं है। तदुपरान्त अपने भाषण का रुख मैंने बोस्टन के लोगों में यहूदी-विरोधी भावना के विरुद्ध घुमा दिया।

मेरे भाषण की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। दूसरे प्रवक्ताओं को अपने हाथ में पकड़े पुरजों से नाम पढ़कर बोलेन बुला रहा था। अन्त में प्रधान ने अपनी कलाई की घड़ी में वक्त देखा और कहा, "समय बढ़ रहा है, और इस हॉल को बहुत थोड़े अरसे के लिए ही किराये पर लिया गया है। हमें इसे एक निश्चित वक्त पर खाली कर देना है। इस सभा के खत्म होने से पहले बहुत से महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर सोच-विचार करना बाकी है। इसलिए अब भाषण के लिए उपस्थित लोगों में से और किसी को इजाजत न दी जा सकेगी।"

किसी ऐसे भाषण देने वाले को नहीं बोलने दिया गया, जिसे पहले नहीं चुन लिया गया था। सभा की कार्यवाही शान्तिपूर्वक चल रही थी—प्रस्ताव, तारों द्वारा समाचार, सुझाव, अस्थायी समिति का चुनाव। अन्त में जब यह स्पष्ट हो गया कि कार्यक्रम चुक गया है, तो बैठक को स्थगित करने का प्रस्ताव मैंने प्रस्तुत किया। मुझे निश्चय है कि ऐसा करके मैंने किसी दूसरे को अवश्य नाराज़ किया होगा—कोई दूसरा इस स्थगन प्रस्ताव के लिए अवश्य नियत हुआ होगा।

अगले तीन महीनों में केवल बोस्टन-क्षेत्र में ही 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' की सदस्यता हमने एक हजार से कहीं अधिक पहुँचा दी; हमने

कई प्रकार की दूसरी सक्रियताएँ भी—प्रचार-आन्दोलन, फौजियों के लिए खाने-पीने के स्थान और उनके लिए दूसरी सेवाएँ मुहैया करना आदि—जारी कीं। 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' के अधिकांश सदस्य ईमानदारी से इस ओर प्रवृत्त नवयुवक थे जो यह जानकर नितान्त दुखी होते कि मैं जो उनकी संस्था का कोषाध्यक्ष था, और संस्था के दूसरे अधिकारी, पहले की तरह अब भी कैम्ब्रिज बोस्टन में कम्युनिस्टों की गुप्त बैठकों में भाग ले रहे थे, यद्यपि यंग कम्युनिस्ट लीग भंग हो चुकी थी।

इस प्रकार हर दो सप्ताह बाद कम्युनिस्ट-बैठकें चलती रहीं। इनके व्यवहार में इसके सिवा कोई अन्तर न पड़ा कि बैठकों का समय व स्थान यदा-कदा बदल दिया जाता था। यह बैठकें विशेषतया गोपनीय थीं क्योंकि यह क्रान्तिकारी बैठकें थीं; इनमें पूँजीवाद के विरुद्ध हिंस्र क्रान्ति के मौलिक तरीकों का विशेष अध्ययन ही होता था। बार-बार हमारे सामने यह भावना प्रकट की गई कि कम्युनिस्ट पार्टी "मजदूर-वर्ग की सेना की अग्रगामी टुकड़ी है, सीमान्त की किलाबन्दी, फौज का नियन्ता अधिकारी-दल"। हमने क्रान्ति का निरीक्षण 'हिस्ट्री ऑफ़ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ सोवियत यूनियन', जो कि कम्युनिज़्म की बाइबल के समान पूज्य है, और रूस की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति द्वारा सम्पादित व प्रमाणित की गई है, की भारी जिल्दों का अध्ययन करके किया।

सबसे पहले मैंने "हिस्ट्री ऑफ़ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ द सोवियत यूनियन' को डेव बेनेट के घर (४५ अना स्टीट, कैम्ब्रिज) में एक कम्युनिस्ट गोष्टी के वक्त देखा था। डेव पार्टी के प्रचार और सांस्कृतिक मोर्चे में निपुण माना जाता था। कालेज में पढ़े-लिखे, छरहरे शरीर के और नाज़ुक डेव में आत्म-विश्वास, स्वनियन्त्रण और कम्युनिज्म के प्रति आत्म-समर्पण का एक ऐसा भाव था जो उसके सम्पर्क में आने वालों को प्रभावित करता था। उन दिनों उसका विशेष उद्देश्य नये कम्युनिस्टों की 'जानकारी के स्तर' को ऊँचा करना था। साथ ही-साथ वह उच्चतर दीक्षा-केन्द्र को चला रहा था जहाँ कि यंग कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों को समुचित शिक्षा

आदि देकर सीढ़ी के अगले कदम की ओर—खुद पार्टी की सदस्यता के लिए—तैयार किया जाता था।

कम्युनिस्ट इतिहास की मोटी-भारी, सादा कागज चढ़ी जिल्दें मेरे हाथों में कुछ सप्ताह पहले पहली बार उन दिनों रखी गई जब कि बौडरवाद का—यद्यपि थोड़े दिनों के लिए ही—बोलबाला रहा। यह डेव बेनेट की क्लास की एक बैठक के वक्त हुआ जब वह 'वैज्ञानिक और ऐतिहासिक भौतिकवाद' तथा बोल्शेविक क्रान्ति के आधारभूत तथ्य के भेद समझ रहा था। इस पाठ में यह पाठ्य-पुस्तक थी जो मार्क्स और एंजल्स के दर्शन की सहायता से यह सिखाती थी कि "क्षयशील और ह्रास-प्रवृत्त पूँजीवाद स्वाभाविकतया स्वयं ही समाजवाद और साम्यवाद की ओर बढ़ने का मार्ग है, और यह भी कि यद्यपि यह अग्रगामी विकास अवश्यम्भावी है, फिर भी इसे सफलता तभी मिल सकती है जब कि समाज के 'अन्तर्विरोधों' को हिंस्र क्रान्ति की ज्वाला प्रज्वलित करने के लिए भट्टी के रूप में काम में लाया जाय।

यहाँ मैंने कम्युनिस्टों का हिंसा और शक्ति में विश्वास देखा, व्यक्तिवादी सिद्धान्तों और सांसारिक नैतिकता का शान्त तर्क और इतिहास की शिक्षा से कहीं दूर लेकिन अचल और चिरस्थायी माने जा रहे नियमों द्वारा दमन की बात जानी। यह नियम मनुष्यों ने ही बनाये थे, जो कि महज मनुष्य के स्तर के ही थे लेकिन जो खुद को देवताओं से कम न मानते थे। यहाँ मुझे यह सिखाने की कोशिश की गई कि राजनीतिक मन्तव्य से सबकुछ जाना जा सकता है—आदि से अन्त तक—और कर्म का भी उसी पर आधार रखा जा सकता है। मुझे यह बताया गया कि "पूँजीवाद की समाजवाद की ओर संक्रान्ति और श्रमी-वर्ग की पूँजीवाद के जुए से उन्मुक्ति धीरे-धीरे होने वाले परिवर्तनों अथवा सुधारों से सम्भव नहीं, वरन् पूँजीवादी व्यवस्था में गुण-प्रधान परिवर्तन से, और क्रान्ति से ही सम्भव है।"

मुझे कम्युनिज़्म की विजय की अवश्यम्भाविता को स्वीकार करने के लिए कहा गया, और तब मुझे इस बात का एक महत्त्वपूर्ण सुराग मिला कि क्योंकर इतने नवयुवक मार्क्सवाद की राह की ओर खिंच आते हैं।

मार्क्सवाद उन्हें सामुदायिक भविष्य के प्रति समर्पण, अपनी वैयक्तिक नियति को गढ़ने की कोशिशों का त्याग, वर्ग-संघर्ष के तथाकथित अंचल नियमों की स्वीकृति और सर्वहारा-वर्ग की अन्ततः अवश्यम्भावी जीत में विश्वास सिखाता है। वह तो केवल अपने को अविरोध भावना से धारा में उस दिशा में बहने देते हैं जिससे वह समझते हैं कि निस्तार सम्भव नहीं। कमजोर व्यक्तियों के लिए, जो कठिनाइयों के समुद्र में गोते खा रहे हों, मार्क्स-लेनिन का विचार-दर्शन मजबूत पत्थर की चट्टान के समान जान पड़ता है, जिस पर वे अपने पाँव जमा सकते हैं—इस तथ्य को भूलकर कि लहर फिर उमड़ेगी और उन्हें बहा ले जायगी।

बहुत से असफल व्यक्ति जो जीवन के संघर्ष में अपने लिए स्थान नहीं बना पाते, जो अपने जीवन की जड़ों को उखड़ा हुआ पाते हैं, जो अपने को अनावश्यक, अमहत्त्व का देखते हैं, इस चट्टान का सहारा लेते हैं और इसी से चिपटे रहते हैं। वह अनुभव करते हैं कि इससे उन्हें शान्ति मिलती है। वह यह भी सोचते हैं कि इतिहास की अदम्य प्रगति में, जिसका नक्शा इतने गहरे सोच-विचार के बाद अंकित किया गया है कि उन्हें अपने लिए सोच-विचार की जरूरत नहीं पड़ती, वह महत्त्व का भाग ले रहे हैं।

चापलूसी और झूठी प्रशंसा को भी प्रयोग में लाया जाता है। उन्हें कहा जाता है कि वह एक विशिष्ट समुदाय के प्रतिनिधि हैं—इने गिने व्यक्ति, जनता के ध्यान से चुने गए अग्रणी। वे एक तगड़ी सेना के अगले दस्ते के सिपाही हैं, और उन्हें नेतृत्व की शान का धोखा बना रहता है। पार्टी हर व्यक्ति के गुणों से लाभ उठाती है, और अपने व्यक्तिगत सम्पर्कों में उपेक्षित कितने ही नवयुवक और युवतियाँ इसका शिकार बन जाते हैं।

लेकिन यह सब इतना सरल नहीं है; राजनीतिक शिक्षा के जन्म से साम्यवाद में दीक्षित होने की मृत्यु तक बढ़ना एक आसान कदम उठाने के समान नहीं है। यह प्रक्रिया बहुत धीरे-धीरे सम्पन्न होती है। मताधिकार की आयु हो जाने पर केवल पार्टी में नाम लिखा लेने से कोई कम्युनिस्ट नहीं बन जाता, जैसे कि 'रिपब्लिकन' अथवा 'डेमोक्रेट' बना जाता है।

इनमें से अधिकांश को अपने चंगुल में उन विभिन्न कम्युनिस्ट 'मोर्चों' की मदद से फाँसा जाता है जो चारों ओर बिखरे होते हैं। इन 'मोर्चों' से दो प्रकार के लाभ होते हैं : इससे कम्युनिस्ट प्रभाव बाहर फैलता है और नये सदस्य आकृष्ट होते हैं।

एक बार आकृष्ट होने पर कोई नवयुवक मोर्चों की राह से अधिक गहराई में उतरता है और आन्दोलन के घनिष्टतर सम्पर्क में आने लगता है—वह यंग कम्युनिस्ट लीग अथवा 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' का सदस्य बन जाता है। नये रंगरूटों को उनकी योग्यता और उनके उद्देश्य परखने के लिए पहले छोटे-छोटे कामों में लगाया जाता है, इसके बाद अधिक उत्तरदायी कर्तव्यों में। तदुपरान्त प्रकट रूप में बिना किसी अचानक परिवर्तन के ये लोग अपने-आपको कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य, और इसी प्रक्रिया के भाग-स्वरूप, षड्यन्त्रकारी पाते हैं। बहुत से व्यक्ति अधिक गहरे धँस जाने के पहले भी अपने को उबार लेते हैं। कुछ की दिलचस्पी खत्म हो जाती है और वह इस प्रवाह से बाहर निकल आते हैं। बहुत कम संख्या में कुछेक को उनकी प्रतिरोध की भावना को पूर्णतया विजित करके भीतरी केन्द्र में समाविष्ट कर लिया जाता है।

लीग में शामिल होने के दो वर्ष के लम्बे अरसे के बाद मैं पार्टी में शामिल हुआ और कम्युनिस्ट आन्दोलन के क्रान्तिकारी षड्यन्त्र से परिचित किए जाने में लगभग इतना ही अरसा और लगा। तब भी, डेव ब्रेनेट के प्रशिक्षण-केन्द्र में यह सब-कुछ—क्रान्ति के मौलिक शास्त्र का अध्ययन और ऐतिहासिक और व्यक्त रूप में हानिहीन आधार पर उसका अभ्यास—काफ़ी सरल और गुप्त भेदहीन जान पड़ता था।

यंग कम्युनिस्ट लीग से पार्टी में मेरा अपना अवतरण कपटतापूर्ण आसानी से हो गया। स्पष्ट है कि वर्षों से मेरे शिक्षक और निरीक्षक इसके लिए आश्वस्त हो गए थे कि मैं एक अच्छा शिष्य हूँ, पार्टी की विशिष्ट सदस्यता के लिए उपयुक्त व्यक्ति। फ़रवरी १९४४ में एलिस गॉर्डन ने पहली बार मुझे पार्टी में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया। उसने यह

प्रार्थना की कि इस सदस्यता के भेद को मैं अपने तक सीमित रखूँ, और यह भी कहा कि पार्टी भी ऐसा ही करेगी।

"यह तो मेरे लिए सौभाग्य और प्रसन्नता की बात होगी," मैंने कहा, "और इसका महत्त्व मेरे लिए ही नहीं, मेरी पत्नी के लिए भी होगा। परन्तु इस कदम को उठाने से पहले मैं ईवा से बात कर लेना चाहूँगा, और उसे भी पार्टी में शामिल होने को कहूँगा। मेरे विचार में हम दोनों का पार्टी का एक साथ सदस्य बनना ठीक होगा।"

"बहुत खूब!" एलिस ने कहा। "एक शाखा-गोष्ठी का भार आप पर डाला जा सकता है, जो कहीं आपके पड़ोस में ही हो।"

"वेकफील्ड में नहीं," मैंने प्रार्थना की। "मैंने उस क्षेत्र में बहुत काम किया है, जैसा कि आपको मालूम ही है, और सारी मेहनत निरर्थक साबित हुई है। यह गोष्ठी इतनी भयभीत है और इस सतर्कता से काम करती है कि वह प्रायः गतिहीन ही हो चुकी है।" अपने परिचय के व्यक्तियों में काम करके मैं भण्डाफोड़ का खतरा मोल नहीं लेना चाहता था। "और फिर, काफ़ी अरसे से मेरा उनसे कोई सम्पर्क भी नहीं रहा है।"

"माल्डन में कैसा रहेगा?" उसने पूछा।

"बिलकुल ठीक। बोस्टन से वेकफील्ड को घर लौटते वक्त यह स्थान रास्ते में ही है, और मेरे घर से बस द्वारा केवल आधे घण्टे के फ़ासले पर।"

हैरल्ड लियरी ने मेरे पार्टी में शामिल होने को अपनी पूर्ण स्वीकृति दी। ईवा भी मेरे साथ हर कदम उठाने को तैयार थी। अगली सुबह अपने दफ़्तर में मैंने अपनी सहायिका ग्लोरिया ग्रेडोन को बुलाया और कहा "ग्लोरिया, जरा फोन पर बेन रेडफील्ड को बुला दो।"

"वह कौन है?"

"वह जिन्दगी की किसी बीमा-कम्पनी का प्रतिनिधि है। उससे कहो कि मैं उससे तुरन्त बातचीत करना चाहता हूँ।"

जिस अधिक-से-अधिक रकम का अपने परिवार के लिए मैं बीमा करवा सकता था, करवाकर मैं कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गया।

१९४४ में सदस्यता का सूचक कार्ड लेकर जब मैं पार्टी का सदस्य बना तो अभागे अर्ल बौडर के आदेशानुसार कम्युनिस्ट पार्टी अमेरिका में जनतन्त्रीय पूँजीवाद से सहयोग के शान्त सागर पर अपनी दिशा खोकर बही जा रही थी। पार्टी के बाह्य रूप में यह बेहतरी, जो १९४१ में रूस के विरुद्ध हिटलर के आक्रमण की गड़बड़ी के दिनों से बड़े आवेग से शुरू हुई थी, अब निर्बाध सहयोग की नीति में, युद्ध के कारण जनता की दृष्टि को आकृष्ट किए बिना, स्थिर हो रही थी।

यह समय कम्युनिस्टों की असाधारण सक्रियता का था। पार्टी समझ-बूझकर और बड़े उत्साह के साथ वैधानिक अधिकारियों को अपना सहयोग दे रही थी, बाधा डालने वाले सब तरीकों से दूर रहती थी, और एकनिष्ठ होकर युद्ध को जीतने के उद्देश्य में सहायक हो रही थी। अर्ल बौडर की यही नीति थी; अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी का युद्ध के दिनों में वही राष्ट्रीय अध्यक्ष था। बौडर ने इस नीति को खूब अपनाया और निभाया। "विजय और उसके बाद" (विक्टरी एण्ड आफ्टर) नाम की अपनी कृति में जिसे स्वयं वह 'अरूढ़िवादी' कृति कहता था, बौडर ने राष्ट्रीय नीति को अंकित किया, और 'वैज्ञानिक समाजवाद' की प्रगति के लिए पूँजीवाद से सहयोग की सम्भावना की ओर इशारा किया किया, केवल युद्ध में ही नहीं परन्तु शान्तिकाल में भी।

कम्युनिस्ट पार्टी इन दिनों देश-भक्ति में सराबोर हो रही थी और युद्ध में विजय के लिए हार्दिक सहयोग पहुँचा रही थी। लेकिन इसके साथ-ही-साथ कैम्ब्रिज में होने वाली पार्टी की गुप्त बैठकों में कम्युनिस्टों की अपनी विजय के लिए मुझे हिंसक क्रान्ति की आवश्यकता का पाठ पढ़ाया जा रहा था। यह पाठ भी देर तक नहीं चला। बौडरवाद के पाँव इतनी मजबूती से जम गए थे कि नेताओं ने अन्त में एक प्रकार से अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्ति के सिद्धान्त की सार्वजनिक रूप से भर्त्सना का प्रस्ताव रखा; कम्युनिस्ट पार्टी का विलयन और इसके स्थान पर एक नये नाम—कम्युनिस्ट पोलिटिकल एसोसिएशन—के प्रयोग को प्रस्तावित किया गया। यह चाल

यंग कम्युनिस्ट लीग के 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' में परिवर्तन के ही समान थी। अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद का अपना नाम, चरित्र नहीं, कमिण्टर्न से कमिन्फ़ॉर्म में बदलने में भी इसकी समानता देखी जा सकती थी।

पार्टी की नीति की शान्तिमय गठबन्धन की ओर इतनी प्रवृत्ति मैंने पहले कभी नहीं जानी थी। इन कदमों को उठाने से पहले उचित वातावरण तैयार कर लिया जाता था ताकि सदस्यों में विरोध अथवा किसी प्रकार की भ्रान्ति न फैले। बाह्य रूप में इस परिवर्तन की एक साक्षी मुझे डेव बेनेट की मार्क्सवादी क्रान्ति के शिक्षण-केन्द्र के अचानक भंग होने में मिली। पार्टी के राष्ट्रीय अधिकारियों में विलियम जेड फॉस्टर ने गुप्त रूप से विरोध किया लेकिन साथ नहीं छोड़ा। केन्द्रीय समिति के एक सदस्य सैम डार्सी ने सार्वजनिक रूप से अपना विरोध व्यक्त किया, इस पर उसे पार्टी से निकाल दिया गया।

लगभग इसी समय मुझे जिला दफ्तर के प्रचार-विभाग में नियुक्त कर दिया गया; दफ्तर के बाहर नाम की पट्टी पर नया नाम 'कम्युनिस्ट पोलिटिकल एसोसिएशन' लिखा गया था। प्रचार, विज्ञापन और जन-सम्पर्क के मेरे अनुभव का लाभ उठाया गया और मैंने दफ्तर की पुरानी, बेरहमी से बरती गई साइक्लोस्टाइल की मशीन पर लगातार पार्टी-सम्बन्धी सूचनाएँ और खबरें निकालना शुरू कीं।

यह दिखाने का कि मेरे विचलन से मेरी काम में लगन और श्रद्धा पर कोई असर नहीं पड़ता, मुझे यह नया मौका मिला। साइक्लोस्टाइल की मशीन बहुत खराब हालत में थी और मैंने सुझाया कि इसकी सफ़ाई होनी चाहिए। लेकिन मशीन के निर्माता कारखाने के बोस्टन-स्थित प्रतिनिधि ने यह काम हाथ में लेने से इन्कार कर दिया। इस पर मैंने ही थोड़ी बेंज़ीन और कुछ चिथड़े मँगवा लिये और सफ़ाई पर खुद जुट गया। मैंने मशीन का पुर्जा-पुर्जा अलग कर दिया, झाड़ा-पोंछा, टूटे-घिसे हुए पुर्ज़ों के स्थान पर नये पुर्जे मँगवाए और मशीन को फिर से जोड़ दिया। अब यह बिलकुल नई मशीन की तरह चलने लगी, और सब इससे खुश हुए।

इसके बाद मैंने कुछ मेहनत और समय स्टेंन्सिलों पर टाइप करने में तथा प्रचार-सामग्री को लिखने के ढंग में खूबसूरती लाने में खर्च किए और पार्टी के बुलेटिनों को अधिक आकर्षक बनाया। दूसरों को खुश करने की मेरी इच्छा का विशेष तरीका था। धीरे-धीरे इससे इतना लाभ हुआ कि जब कभी कोई गुप्त अथवा साधारण महत्त्व की सामग्री वितरण के लिए साइक्लो-स्टाइल करनी होती तो इस सम्बन्ध में मेरे सहयोग और सहायता के लिए मुझे बुला लिया जाता था। इससे यह हुआ कि पार्टी के मामलों में महत्त्व के अथवा साधारण कोई भी ऐसे निश्चय नहीं होते थे जो मुझे मालूम न होते थे। और मेरे माध्यम से एफ० बी० आई० इन सब निश्चयों से परिचित रहता था।

न्यू इंग्लैण्ड में कम्युनिस्टों की कार्यवाही का मुख्य केन्द्र लिटल बिल्डिंग का यह छोटा सा दफ़्तर ही था, और इस कारण ब्यूरो के जासूस-एजेण्ट के रूप में मैं अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होने की स्थिति में था। फिर भी जिस हद तक मैं पार्टी का विश्वास पाना चाहता था, उतना न पा सका। इसलिए मुझे पहले से ज्यादा सतर्क रहना पड़ता था कि मैं कहीं एक ग़लत चाल वक्त से पहले न चल दूँ।

मुख्य केन्द्र के अधिकारियों ने खुद ही, अनजाने में, जनता और पुलिस की नजरों से मुझे बचाकर मेरी मदद की। जहाँ तक सम्भव था, पार्टी चाहती थी कि मैं प्रसन्न रहूँ। लिटल बिल्डिंग के विभिन्न दफ्तरों में आने-जाने के सम्बन्ध में मुझे विस्तृत आदेश दिये गए। मुझे कहा गया कि मैं अलग-अलग समय पर यहाँ आया करूँ, इस उद्देश्य से कि लिफ्ट-चालक मुझे अच्छी तरह पहचानने न लगें—विभिन्न लिफ्टें इस्तेमाल किया करूँ और जहाँ जाना हो, उससे एक मंजिल ऊपर अथवा नीचे उतरकर, फिर सीढ़ियों के रास्ते जाया करूँ। इस प्रकार की होशियारी ठीक थी। मेरे लिए अपने व्यावसायिक सम्बन्धों में कम्युनिस्टों के मुख्य दफ्तर में मेरे आने-जाने की बात का ज्ञात होना उतना ही अरुचिकर और अवांछित था जितना कि पार्टी में एफ० बी० आई० से मेरे सम्बन्धों का पर्दाफाश होना।

पार्टी का आफ़िस बिल्डिंग के ट्रेमाँट स्ट्रीट की तरफ़ के एक गलियारे के अन्त में चार कमरों में बसा था। अगले दरवाज़े पर मैजेस्टिक थियेटर पड़ता था और सड़क के पार होटल टूरें था। पीछे के एक छोटे कमरे में औपचारिका का डेस्क, टाइपराइटर और साइक्लोस्टाइल मशीन (जिसे मैंने फिर से नया बना दिया था) और कार्ड-फाइलों का अम्बार पड़ा था। इस छोटे कमरे से लगते कोने में दफ्तर और बैठक थी। दूसरे कोने में दो डेस्क और एक मेज रखे हुए थे। मेज पर पार्टी-सम्बन्धी साहित्य के ढेर टिका कर रखे गए थे। मेज़ के साथ की दीवार पर आवश्यक नोटिस चिपकाने के लिए नोटिस-बोर्ड लगाया गया था। इस कमरे को लाँघकर फैनी हार्टमैने के, जो कि जिला-पार्टी की संयोजक थी और इस क्षेत्र की वास्तविक नेता थी, कमरे में प्रवेश किया जा सकता था।

फैनी हार्टमैन सिमन्स कॉलेज की स्नातिका थी और पार्टी की एक उच्च अधिकारिणी एलिज़ाबेथ गर्ली फ्लिन्न का ही छोटा रूप थी, परन्तु उसकी तुलना में आकार और शक्ति में अपनी कमी को वह अधिक निपुणता और मुस्तैदी से पूरा कर लेती थी। न्यू इंग्लैण्ड की कम्युनिस्ट पार्टी के परिचालक मस्तिष्क की हैसियत से वह अपने क्षेत्र के हर सदस्य से असन्दिग्ध निष्ठा की माँग करती और प्राप्त थी। एक मौलिक कठोरता के कारण ही वह ऐसा व्यवहार करती थी, जिस पर कि आकर्षण की झीनी-सी परत चढ़ी हुई थी। अपनी बात को कहने के उसके ढंग में मधुरता थी लेकिन शक-शुबह की कोई बात वह बाकी न छोड़ती थी।

जैसा कि मुझे एक कामरेड ने कहा : "जब फैनी आपसे कुछ कहे, तो उचित यही है कि आप उस पर ध्यान दें, उसके आदेशों का पालन करें और सफलता हासिल करके दिखाएँ।"

वह बहुत कम बोलती थी और जिले के दूसरे अधिकारियों के निरर्थक वादविवाद को देर तक सुनती रहती थी, और फिर एकाएक गुत्थी को सुलझाने की सीधी राह सुझा देती थी। तर्क-वितर्क में से निरर्थक की उपेक्षा कर जाती थी। एक ही दिन में तीन आदमियों का काम करने की उसमें क्षमता

थी और इसके बाद भी उसकी शक्ति और धैर्य का भण्डार अक्षय रहता था। वह पौरुषमय स्त्री थी; इस नर-प्रधान संसार में बिना किसी हिच-किचाहट के बढ़ रही थी और इसके बावजूद दूसरी स्त्रियों का हार्दिक प्यार और वास्तविक मैत्री उसे मिलती थी। फैनी व्यापार में आदमियों के मुका-बिले में बखूबी अच्छी तनख्वाह माँग और ले सकती थी। यह सब-कुछ छोड़-कर वह जिला-केन्द्र के इस नीरस दफ़्तर में केवल नाम की तनख़्वाह लेकर काम कर रही थी।

सबसे पहले फैनी हार्टमैन से ही मुझे राजनीतिक षड्यन्त्र के गुह्यतम संगठन का संकेत मिला जो गोपनीयता के केन्द्र-स्थित वृत्तात्मक दायरों पर आधारित होता है। जिस गोष्ठी में मैं था, उसके सदस्य नीति-विषयक मेरे विचलन से—यद्यपि वह पूँजीवाद-विरोधी विचलन ही था—बहुत नाराज थे और उन्होंने १६४४ के बसन्त के अन्तिम दिनों में इस जिले की पार्टी-कन्वेन्शन में मुझे प्रतिनिधि चुनने से इन्कार कर दिया।

अन्तिम समय पर मुझे फैनी हार्टमैन का फोन पर सन्देशा मिला। "मेरे खयाल में यह अच्छा होगा कि आप कन्वेन्शन में शामिल होने के लिए चले आएँ," उसने कहा।

"क्या यह उचित होगा?" मैंने सन्दिग्ध स्वर में पूछा। "क्या आपके विचार में यह बात खतरनाक, खुले तौर पर होने वाली नहीं होगी?"

उसका जवाब 'न' में था। यह बैठक तो बन्द दरवाजों के पीछे होनी है और बिलकुल विश्वस्त सदस्यों के अतिरिक्त कोई दूसरा इसमें भाग नहीं ले सकता। समाचार-पत्रों का भी कोई प्रतिनिधि मौजूद न होगा। मैंने जाना स्वीकार कर लिया।

सभा में प्रवेश पाने के लिए तीन प्रकार के कार्ड थे—एक रंग के कार्ड प्रतिनिधियों के लिए थे, दूसरे रंग के वैकल्पिक प्रतिनिधियों के लिए और तीसरे रंग के महत्त्वपूर्ण और मान्य दर्शकों के लिए, जिनकी संख्या कम ही थी और जो या तो दूसरे जिलों से आये थे अथवा पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं में से थे।

हार्टीकल्चरल हॉल में सभा के दरवाजे को रोककर रखी हुई मेज के पास जब मैं पहुँचा, जहाँ परिचय-पत्रों की देखरेख हो रही थी, तो मैंने पाया कि मेरे पास तो प्रवेश के लिए कोई भी उपयुक्त कार्ड नहीं है। मैंने अपनी स्थिति वहाँ की प्रबन्धचालिका को बताई और उससे कहा कि फैनी हार्टमैन ने ही मुझे उपस्थित रहने का आदेश दिया था। उस लड़की ने मेरी इस बात की सचाई परखने के लिए सभा-स्थान से फैनी को बाहर बुलाया। फैनी ने उत्साह से मेरा अभिनन्दन किया और फिर परिचय-पत्र की देखरेख करने वाले अध्यक्ष से अलग से बातें कीं। अन्त में उन्होंने एक दर्शकों का कार्ड मेरे लिए तैयार किया जिस पर फैनी ने पहला नाम लिख दिया। कुछ देर सोच-विचार के बाद इस कार्ड पर कुछ और घसीटकर मुझे दे दिया। "यह लो," उसने कहा, "विभिन्न बैठकों में इसकी मदद से तुम आ-जा सकोगे।"

मैंने उसे और दरवाजे पर खड़ी लड़की को धन्यवाद दिया और लिखे हुए शब्दों को पढ़कर कार्ड को जेब में रख लिया।

कार्ड पर मेरा नाम 'हर्ब' लिखा हुआ था, और फिर नामोद्देशन : 'प्रो—४'।

कम्युनिस्टों से और उनकी विभिन्न मोर्चों वाली संस्थाओं से अब तक के मेरे सम्पर्क में इस प्रकार के विशेषण का प्रयोग मैंने नहीं देखा था। मुख्य केन्द्र में और दूसरे स्थानों पर पार्टी की गोष्ठियों के और दूसरे दलों के अनगिनत नाम, 'जैसे डॉर्चेस्टर डेम्स' अथवा 'जॉन रीड क्लब' आदि, मैंने सुन रखे थे। परन्तु यह नाम मेरे लिए बिलकुल नया था और बहुत अरसे तक—लगातार कई बरस—मैं 'प्रो-४' के बारे में हैरान रहा, और इसका अर्थ जानने की कोशिश में रहा।

अपने जीवन के इस अवसर पर एफ० बी० आई० के गुप्तचर के रूप में मैं खूब सध चुका था और यह जान गया कि उन्हें किस प्रकार की रिपोर्टों की आवश्यकता है। अब मैं पार्टी-सम्बन्धी खबरों के अर्थ लगाने की कोशिशें नहीं करता था। ब्यूरो को अपनी रिपोर्टों में मैं किसी प्रकार के

अपने विचार प्रकट नहीं करता था, केवल तथ्यों को छाँटकर अंकित कर देता था। उनमें से बहुत से शायद निरर्थक होते थे, लेकिन कुछ बहुत महत्त्व के सिद्ध होते थे।

जासूसी की मौलिक बातों को अब मैं समझने लगा था, कि गुप्तचर का काम करते हुए व्यक्ति के जिस भेद का सुराग पाने में वह व्यस्त है, आवश्यकता से अधिक उसके बारे में जानना हितकर नहीं है। हमेशा सम्भावना बनी रहेगी कि मुँह से निकले अचानक कोई शब्द किसी ऐसे भेद के उसके ज्ञान को व्यक्त कर देंगे जिसके बारे में उसके अपरिचित होने की अपेक्षा की जाती है। यदि सारे विवरण से वह परिचित न हो तो इस प्रकार भेद फूटने की आशंका कम होगी। गुप्तचर-विभाग की नौकरी का यह नियम विशेषतया कम्युनिस्ट पार्टी जैसी संस्थाओं के अन्दर काम करने वालों पर लागू है जहाँ कि प्रत्येक सदस्य को, चाहे वह कितना ही अधिक 'विश्वासपात्र' हो, सदा सन्दिग्ध दृष्टि से देखा जाता है और बार-बार परीक्षण और छानबीन की कसौटी पर चढ़ाया जाता है। जब भी मेरा गुप्तचर का काम जोरों पर होता था, मुझे अनुभव होता था कि मुझ पर भी लगातार जासूसी हो रही है।

घर में भी मैं इससे बच न पाता था। १६४४ की गरमियों के दिनों में वेकफील्ड वाले अपने मकान में मैंने 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' का एक जलसा किया। इस दल के अधिकतर लोग, जो नजदीक के समुद्रतट पर तैरने के लिए और हमारे बड़े गैरिज में सामाजिक मेल-मिलाप के उद्देश्य से एक दिन के लिए इकट्ठा हुए थे, दोपहर की गाड़ी से पहुँचे। लेकिन बिना किसी पूर्व सूचना के, दो गाड़ियों में भरकर नवयुवक सदस्य उनसे पहले मोटरों द्वारा आ पहुँचे।

छुट्टी के खुशी-भरे, सोल्लास भाव में वे घर में घुस गए। इससे पहले कि ईवा और मैं समझ सकें कि क्या हो रहा है, वे चारों ओर कमरों में फैल गए। लड़कियाँ घर को 'देखना' चाहती थीं। लड़के इस तलाश में थे कि कहाँ जाकर वे कपड़े बदल सकते हैं और नहाने के चोगे पहन सकते

हैं। वे सब सारे कमरों का मुआयना कर रहे थे, और यह सब इतना जल्दी हो गया कि ईवा और मैं, इस कोशिश में कि उन्हें एक ही कमरे में एकत्रित किया जा सके, वे कहाँ-कहाँ चले गए, इसका भी पता न रख सके। एक लड़के को मैंने ऊपर की सीढ़ियों से बीच के कमरे के अंधेरे कोनों की ओर झाँकते हुए देखा जहाँ कि एक बड़ी अलमारी दिखावटी दीवार के साथ लगी खड़ी थी। सौभाग्यवश हर ऐसी चीज, जिसकी वह तलाश में था, दीवार के पीछे ही पड़ी थी।

जब कि 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' के नई उम्र के सदस्य मेरे भेद को पाने की कोशिशों में लगे हुए थे, मैं एक विशेष कर्तव्य को करने में सफल हुआ। शौकिया रूप में सिनेमा की फ़िल्में खींचने की तरह मैंने इस जलसे की सारी फ़िल्म उतार ली जो एफ० बी० आई० के रिकार्ड में इसमें हिस्सा लेने वालों की बाद में पहचान के लिए सुरक्षित रख ली गई। लेकिन जलसे में हिस्सा लेने वालों में कुछेक बराबर केमरे की तरफ़ पीठ किये रहे।

'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' वाली घटना का एक व्यंग्यात्मक परिणाम भी हुआ। एम० एण्ड पी० थियेटर्स की बार्बरा कॉप्लैण्ड ने, जो इस संस्था में मेरी कार्यवाहियों से परिचित थी, मुझसे कहा कि मैं इस संस्था को कतई छोड़ दूँ क्योंकि शीघ्र ही 'फेडरल ब्यूरो ऑफ़ इन्वेस्टिगेशन' द्वारा इसकी जाँच-पड़ताल होने वाली है। मैंने उससे कहा कि कौन-कौन जाँच करने वाले हैं, वह मुझे यह बताए लेकिन उसने इन्कार कर दिया।

एम० एण्ड पी० थियेटर्स के दफ्तरों में काम करते वक्त भी मुझ पर निगरानी रखी जाती थी। पार्टी ने थियेटर्स में कुछ साथियों को मुझ पर निगाह रखने के उद्देश्य से नौकर करवा दिया था। उनमें से एक लड़की ने, जो अपनी सहानुभूति को छिपाने का ज़रा प्रयत्न नहीं करती थी, मेरी सेक्रेटरी ग्लोरिया गॉर्डन को काफ़ी नाराज कर दिया और हम तीनों के बीच अक्सर कम्युनिज़्म-विषयक वाद विवाद छेड़ देती थी। उसकी कोशिश ग्लोरिया को पार्टी का सदस्य बनाने की थी। ग्लोरिया इस बात से

क्षुब्ध थी कि बातचीत के इन मौकों पर उस कामरेड की उपस्थिति में मैं कम्युनिस्टों के निश्चित रूप से विरुद्ध प्रवृत्ति को व्यक्त नहीं कर पाता हूँ। मेरे प्रति उसकी निष्ठा उसे यह स्वीकार नहीं करने देती थी कि मैं भी उन्हीं में से एक हूँ, लेकिन इस प्रश्न पर मेरी ढुलमुल प्रवृत्ति से वह इतनी चिन्तित हुई कि उसने हैरी ब्राउनिङ्ग के पास जाकर मेरी तनख्वाह में तरक्की करने की उसे सलाह दी। उसने कहा कि आर्थिक कठिनाइयों के कारण मैं कम्युनिज़्म की ओर झुक रहा हूँ। स्पष्ट है कि अपनी अन्तर्भावनाओं के विभिन्न रहने पर भी मैं इस नकलन्दाज़ी में सफल हो रहा था।

दूसरी ओर भी मुझे इतना ही होशियार होना पड़ता था। मुझे चेतावनी मिल चुकी थी कि एफ० बी० आई० कभी सार्वजनिक रूप से यह स्वीकार न करेगा कि मैं उनके लिए गुप्त रूप में जासूस का काम करता रहा हूँ। कम्युनिस्टों से मेरे सम्बन्ध के प्रकट हो जाने पर एडवरटाइज़िङ्ग के क्षेत्र में मेरे धन्दे की ज़िन्दगी तबाह हो जाती।

१६४४ के मध्य तक मैं इस प्रतीक्षा में था कि मुझे फौजी सेवा के लिए बुला लिया जायगा। मेरा शारीरिक परीक्षण हो चुका था और अपनी जवानी के दिनों में आँखों पर आई एक चोट के कारण सीमित फौजी सेवा के लिए ही उपयुक्त होने का प्रमाण-पत्र मुझे दिया गया था। फौज में बुलाए जाने की इन्तज़ार करते हुए हम वेकफील्ड के बड़े मकान से मेलरोज़ के नज़दीक एक छोटे घर में चले गए, जिसकी ईवा अकेली भी अच्छी तरह से देखभाल कर सकती थी। लेकिन मुझे फौज का बुलावा कभी नहीं मिला। हम मेलरोज़ में बस गए और तब मालूम पड़ा कि सड़क पर बसने वाली गस जॉन्सन की वही पत्नी हमारी पड़ोसिन है जिसके चुगलची होने के विरुद्ध जैकग्रीन ने हमें होशियार किया था और जो कुछ वर्ष पहले वेकफील्ड में कम्युनिस्टों के विरुद्ध जहाद का कारण बनी थी।

मुझे वेकफील्ड के पार्टी-संगठन में प्रवेश करने का एक बार फिर से कर्तव्य सौंपा गया, क्योंकि इसे कम्युनिस्ट पार्टी के स्थान पर कम्युनिस्ट पोलिटिकल एसोसिएशन की एक शाखा में बदलना था। इस काम को करते

वक्त कुछ साथी, अथवा कुछ भाई और बहन, समय-समय पर मुझसे मिलने के लिए हमारे मेलरोज वाले घर में आया करते थे। इन अक्सर मिलने वालों में गस जॉन्सन भी था। गस अपनी पत्नी को छोड़ चुका था परन्तु रहता मेलरोज में ही था। कभी-कभी वह उसे भी मिलने चला जाता था। अपनी पत्नी की तेज निगाहों की लपेट में उसका मेरे यहाँ आना मुझे पसन्द नहीं था, और ऐसा मैंने उससे कह भी दिया।

गस को कठिनाई ही से समझाया जा सकता था। लुक-छिपकर की गई कम्युनिस्ट सक्रियता में उसे कोई यकीन नहीं था। उसका विचार था कि हरेक कम्युनिस्ट में सार्वजनिक रूप से अपने विश्वास को स्वीकार करने का और उसके लिए कष्ट झेलने का साहस होना चाहिए। लेकिन मैंने उसे यकीन दिला दिया कि मुझे प्रच्छन्न रूप से रहने के ही आदेश मिले हुए हैं।

१९४५ की सर्दियों के दिनों में फ्रांस के कम्युनिस्ट नेता याक्स ड्यूक्लोज के लिखे एक पत्र ने अमरीका के कम्युनिस्ट नेताओं के पावों के नीचे फटकर पार्टी की स्थिति को उसी गम्भीरता से हिला दिया जैसी कि १९४१ के अचानक नीति-परिवर्तन के दिनों में वह हिल गई थी। ड्यूक्लोज-सम्बन्धी घटना पूरी तौर से पार्टी के आन्तरिक विद्रोह की सूचक थी, यद्यपि इसे सार्वजनिक दृष्टि से छिपाकर रखने की पूरी कोशिश की गई थी।

इससे अर्ल बौडर के नीति-विचलन की और 'अमरीका के विशिष्ट अपवाद' की उसकी आशा की समाप्ति हो गई।

भविष्य में पूँजीवाद से कभी किसी स्तल पर सहयोग की सम्भावना पर भी इससे तुषारपात हो गया।

कम्युनिस्ट पार्टी एक धक्के से और भी वामपक्ष की ओर झुक गई और देश में कम्युनिस्टों से सम्बन्धित संकटकाल नजदीक आ गया।

पार्टी का प्रायः प्रत्येक सदस्य इससे प्रभावित हुआ। मुझे तो इसने षड्यन्त्र को बाह्य परिधि से केन्द्र की ओर ढकेल दिया जहाँ से एफ० बी० आई० के लिए घटनाओं की नज़दीक से जाँच-पड़ताल कर सकता था।

१६४४–४५ की ग्रीष्मान्त और सर्दियों में कम्युनिस्टों का वातावरण आने वाले ड्यू क्लोज-तूफान के संकेतों से परिपूर्ण था। यूरोप और शान्त महासागर में युद्ध की प्रगति करवट ले चुकी थी। युद्ध को जीतने के पार्टी के नारे के अनुसार कई घरेलू मोर्चे अभी थे जहाँ कि पार्टी अपना सहयोग दे सकती थी, लेकिन उत्तरोत्तर स्पष्ट हो रहा था कि यह ज्यादा देर तक न टिके रह सकेंगे। दूरदर्शी योजना के स्तर पर बौडर का दल अपने मुख्य आकर्षण-केन्द्र—युद्ध में विजय जो अब प्रायः हाथ में आ चुकी थी—के विलोपन का सामना कर रहा था। बौडर ने पूँजीवाद से जिस सहयोग की कल्पना की थी, उससे कम्युनिज्म जीवित नहीं रह सकता था। पार्टी और उसके विभिन्न मोर्चों की संस्थाओं की सदस्यता घट रही थी। इस स्थिति में कुछ करना आवश्यक हो गया।

कम्युनिस्टों की युवक-संस्थाओं में, जिनसे मैं पार्टी के 'संयोजक' के रूप में घनिष्टता से सम्बन्धित था, एक बार फिर नई हिदायतें निकाली गईं। ऊपर से आ से हुए आदेशों में कहा गया कि 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन नवयुवक में', मैसेच्यूसेट्स में मैं जिसका खजाञ्ची था, नीति और नियमों का फिर से कठोर शासन होना चाहिए। बोस्टन के क्षेत्र में जो १५०० चन्दा भरने वाले सदस्यों की अधिकतम संख्या थी, वह अब युद्ध को ही जीतने के कार्यक्रम पर लगातार घट रही थी। जर्मनी में मित्रराष्ट्रों की फ़ौजों के प्रवेश से और 'बैटल आफ़ बल्ज' में नाज़ियों की असफलता के बाद 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन नवयुवक' की सदस्यता और संस्था में दिलचस्पी कम हो गई।

डेव और बार्बरा बेनेट के घर पर इस युवक-दल की सदस्यता बढ़ाने के उद्देश्य से एक विशेष बैठक बुलाई गई। 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन नव-युवक' के उन्हीं नेताओं को बुलाया गया था जो कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य

थे। बार्बरा बेनेट ने हमें बताया कि यह संस्था विजय के बाद भी कम्युनिस्ट और गैर-कम्युनिस्ट युवकों के बीच संयुक्त संस्था के रूप में कार्य करती रहेगी। लेकिन, उसने कहा, इसके साथ ही संस्था के सदस्यों के प्रवरण में हमें पहले से अधिक सतर्क होने की जरूरत है और ट्राट्स्कीवादियों, मजदूर-विरोधियों और प्रतिगामी-अंशों को बाहर ही रखना चाहिए। मैंने सुझाव पेश किया कि यंग कम्युनिस्ट लीग को दुबारा जीवित कर देना चाहिए, लेकिन यह प्रताड़ना देकर कि मैं राष्ट्रीय नीति-निर्धारण में हस्तक्षेप कर रहा हूँ, मुझे बैठा दिया गया। यंग कम्युनिस्ट लीग का फिर से निर्माण न कर पाना पार्टी की भारी भूल थी। अमरीका के युवकों में तब से आज तक कम्युनिस्ट आन्दोलन पहले की तरह नहीं पनप सका।

इस प्रकार छोटे पैमाने पर सैद्धान्तिक परिष्करण शुरू हुआ; इसके साथ ही कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता के लिए 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन नवयुवक' के सदस्यों की छानबीन होने लगी। आदेश आया कि उन इने-गिने नवयुवकों के लिए, जिनसे इस ओर अच्छी आशाएँ बँध सकती हैं, 'नेतृत्व शिक्षण-केन्द्र' खोले जायँ। हमने लगभग पैंसठ नौजवानों को चुना और इस शिक्षण के लिए 'प्रजातन्त्रीय नवयुवक' संस्था में नेतृत्व का वायदा देकर उन्हें मना लिया। मकड़ी शिकार को फाँसने का अपना पुराना जाला बुन रही थी। उनमें अपने सिद्धान्तों को भरने के कार्यक्रम को पहले महत्त्व का स्थान दिया गया; पार्टी के राष्ट्रीय अधिकारियों में से एक, मार्सेला स्लोन, को बोस्टन में इस शिक्षण को चलाने के लिए व्यक्तिगत रूप से भेजा गया।

पर्यवेक्षक के रूप में मैं इस शिक्षण-केन्द्र में कई बार उपस्थित रहा और मैंने देखा कि पार्टी के कई पुराने सदस्य भी, कुछ तो पहले जो हमारी अपनी गोष्ठी के ही थे, आया करते थे। हमें इस बात की चेतावनी दी गई कि हम दूसरों की उपस्थिति में एक-दूसरे के प्रति घनिष्ठता का प्रदर्शन न करें और दूसरों के समान नये शिक्षार्थी होने का स्वाँग ही रचें।

आरम्भ में तो मैंने सोचा कि पार्टी के प्रतिष्ठित सदस्य नये विद्यार्थियों पर

नजर रखने के लिए और शिक्षकों को इस विद्यार्थी-समूह में से ऐसे व्यक्तियों को, जिनमें अच्छे कम्युनिस्ट बनने की सम्भावना नहीं प्रतीत होती, छाँटने में सहायक होने के लिए वहाँ आते हैं। लेकिन भेद इससे गहराई का था। धीरे-धीरे यह पार्टी के चमचे क्लास में चलने वाले वादविवाद के अगुवा के रूप में प्रकट हुए—ऐसे वादविवाद के जो नये मस्तिष्कों में कम्युनिस्ट कार्यक्रम के पहले सिद्धान्तों के बीज बोएँ जो अन्यथा स्थूल रूप में इन्हें समझने से इन्कार करते।

पार्टी के नेताओं को डर था कि बौडर की नीति के परित्याग से पार्टी की नई सदस्यता का एक बड़ा हिस्सा, यदि उनके विश्वास को कोई नया आधार न दिया और पार्टी के हित में उनके प्रभाव को वश में न रखा गया तो अनिश्चय की अवस्था में लटका रह जायगा। तदनुसार पार्टी के जिला-अफ़सर, कम्युनिस्ट नाम के प्रयोग के बिना प्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक कार्य करने वाले दल को खोजने के प्रश्न पर ध्यान देने लगे।

जिला के मुख्य दफ्तर ने मुझे मैसेच्यूसेट्स पोलिटिकल ऐक्शन कमेटी नाम के उदारवादी दल में प्रवेश पाकर, उसके संगठन को निरोक्षण करने का और यह निर्णय करने का आदेश दिया कि इस संस्था को पार्टी अपने मतलब के लिए अपने वश में ला सकती और राजनीतिक मोर्चे के रूप में इस्तेमाल कर सकती है अथवा नहीं। मैंने अपनी राय देते हुए कहा कि मेरे विचार में इसके सदस्य सही मानों में उदारपन्थी हैं और यह संस्था कम्युनिस्ट पार्टी के इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ठीक नहीं। बेहतर होगा कि हम खुद ही एक ऐसे दल का संयोजन कर लें। मेरे विचार से बहुत से सदस्य सहमत हुए। इस प्रकार अर्ल बौडर की भारी-भरकम पार्टी—कम्युनिस्ट पोलिटिकल एसोसिएशन—जो कि युद्ध के दिनों में निश्चयात्मक राजनीति से अपने को अछूता रखती रही थी, प्रगतिशील पार्टी के प्रारम्भ का और राजनीतिक क्षेत्र में एक बार से फिर उतरने का कारण बनी। यह आने वाली घटनाओं का पूर्वसूचक था।

हमारी चौथी लड़की ब्रेंडा मे का २७ अप्रैल १९४५ को जन्म हुआ

और एक सप्ताह की छुट्टी लेकर मैं घर में ही रहकर घर के काम करता रहा।

अप्रैल मास में ही ड्यूक्लोस का पत्र प्रत्यक्ष हुआ। इसके लिए पहले ही जमीन तैयार की जा चुकी थी और इसने शीघ्र ही जड़ें पकड़ लीं। शीघ्र ही इसने बौडर के विरुद्ध बग़ावत का रूप धारण कर लिया। फ्रांस की कम्युनिस्ट पार्टी के सिद्धान्त-पक्षी पत्र 'कैहियर्स डू कम्युनिज़्म' में यह छपा। निरर्थक वाक्यावली से भरपूर और बेमज़ा, भौतिकवादी तर्क-वितर्क से परिपूर्ण यह पत्र वास्तव में अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की ओर से इस बात का आदेश था कि अमरीका की पार्टी अपने देश में पार्टी को सुव्यवस्थित करे। यह कहा जाता था कि इसे कमिन्फ़ार्म और क्रेमलिन का अनुमोदन प्राप्त है। कानून की तरह इसे स्वीकार कर लिया गया।

पार्टी के बाहर के बहुत कम लोगों में ड्यूक्लोस के पत्र को पढ़ जाने का धैर्य था, परन्तु पार्टी के अन्दर आवश्यक रूप में पढ़ी जाने योग्य सामग्री के रूप में इसका प्रचार किया गया। पत्र में अभागे बौडर पर पार्टी को भंग करने और कम्युनिस्ट पोलिटिकल एसोसिएशन से सम्बन्धित प्रश्न को लेकर भयंकर आक्रमण किया गया था। अपने जिन विचारों से प्रेरित होकर उसने कनेक्टीकट के बृजपोर्ट नामक स्थान पर ये शब्द कहे थे कि यदि मॉर्गन इंग्लैण्ड, सोवियत और अमरीका की मैत्री का पक्ष और तहरान समझौते का समर्थन करें तो वह "जे० पी० मॉर्गन से हाथ मिलाने" को तैयार हैं। उनकी गहरी भर्त्सना की गई। सहयोग की प्रवृत्ति और नीति को ड्यूक्लोस के पत्र में अमान्य ठहराया गया, कम्युनिस्ट पोलिटिकल एसोसिएशन की समाप्ति की माँग की गई और अमरीका में शक्तिशाली और आक्रमणात्मक मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के पुनरायोजन का आह्वान किया गया।

चार-पेजी एक विशेष परिपत्र छापा गया जिसमें बौडर के पक्ष में सामग्री प्रकाशित की गई। इसका उद्देश्य पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष को उसके आसन से इस प्रकार नरमी से उतारना था कि पार्टी के नये सदस्य एकाएक धक्का खाकर अप्रतिभ न रह जायँ। जिले में किसी एक को बौडर का पक्ष लेना था और पूर्व योजना के अनुसार यह काम ओटिस-हुड पर, जो बौडर की

नीति के दिनों जिले का एक छोटा अफसर था, आ पड़ा। जिला नम्बर १ के अध्यक्ष होने के नाते बौडरवादी नीति को परिचालन करने के अभियोग में सब कटु आलोचना ऐन बुर्लाक को सहनी थी। पहले ही सोचे-विचारे कदमों के अनुसार हुड को बाद में अपने अपराध की स्वीकारोक्ति करके अपनी इस स्थिति से पलट जाने का मौका देना भी तय हुआ। इस प्रकार फौस्टर-बौडर के वादविवाद में 'प्रजातन्त्रीय पद्धति' की बड़े पैमाने पर बहानेबाजी इस उद्देश्य से की गई कि बौडरवाद के दिनों में बने पार्टी के सदस्य भ्रान्त न हो जायँ। बौडर की स्थिति को झूठे निशाने की तरह सामने रख लिया गया ताकि हम बड़ी-बड़ी बन्दूकों से गोलियों की बौछार करके उसमें छेद कर दें। कम्युनिस्ट चाल-ढाल ऐसे रूप भी लेती है।

लेकिन आक्रमणात्मक नीति की ओर प्रत्यावर्तन को रोका नहीं जा सकता था। जहाँ-तहाँ कुछ रियायतें करने के साथ ही पार्टी ने इस बात की ओर भी ध्यान रखा कि पार्टी में विद्रोह की सम्भावना न पैदा हो। ब्रौडर के वक्त की उदार नीति इस परिवर्तन से कहीं पहले समाप्त हो चुकी थी। सुरक्षा के लिए हरदम सतर्कता रहती थी; अनुशासन का कड़ाई से पालन होने लगा था। सदस्यों को पार्टी की नीति पर चलना पड़ता था अन्यथा पार्टी से बाहर निकाल दिए जाते थे। ब्रौडर की नीति पर आधारित वादविवाद पार्टी की गोष्ठियों में और शिक्षण-केन्द्रों में एकाएक बन्द कर दिये गए। तीन बड़े राष्ट्रों की अभिसन्धि की अब दुहाई न दी जाती थी। इनके परस्पर भेद को ही दरशाया जाता था। मार्क्सवाद पुनः पनप रहा था।

पार्टी के एक पहले विद्रोह में मुझे जिला के मुख्य केन्द्र और माल्डन-स्थित शाखा के बीच दूत का काम करना पड़ा।

"८ नम्बर बीच स्ट्रीट में प्रोग्रेसिव बुक शाप पर जाइए," राष्ट्रीय मन्त्री डेव बेनेट ने मुझे आदेश देते हुए कहा, "और कुछ प्रकाशित सामग्री वहाँ से लीजिए। उन्हें कह देना कि बिना दाम भरे इन्हें लेने के लिए आप अधिकृत हैं। हम बाद में हिसाब कर लेंगे। वहीं वह आपको बता

देंगे कि आपको कहाँ जाना है।"

बोस्टन में कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्य जन-प्रचार-केन्द्र में इस प्रकार मैं पहुँचा। प्रोग्रेसिव बुक शाप वाशिंग्टन स्ट्रीट से कुछ मकान आगे की ओर थी। वेकफ़ील्ड की गोष्टी के सदस्य पुराने फ्रैंक कॉलियर को वहाँ देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। उसकी भावभङ्गी उसी उदासीनता से ओतप्रोत थी जिसका मुझे स्मरण था। मुझे फिर से मिलकर उसने किसी प्रकार का भाव-परिवर्तन नहीं होने दिया। दुकान में लेनिन और स्तालिन द्वारा लिखित किताबों की पंक्तियाँ सजी हुई थीं; कम्युनिस्ट विचारधारा के पत्र-पत्रिकाएँ, 'डेली वर्कर' और 'वर्कर' के अंक भरपूर संख्या में रखे हुए थे। कुछ किताबें, जैसे कि 'हिस्ट्री ऑफ़ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ द सोवियत यूनियन', केवल विश्वस्त ग्राहकों को ही बेची जाती थीं।

कॉलियर ने कुछ परिपत्रों और पैम्फ़लेटों का एक पुलिन्दा बाँधा। मैंने गन्तव्य की बाबत पूछा। "इन्हें ३४ होलिओक स्ट्रीट पहुँचाना है," फ्रैंक ने कहा।

दूसरी मंज़िल के उस कमरे के बाहर, जिसका नम्बर मुझे दिया गया था, केवल 'मिल्ज़' नाम लिखा था—मेरी पुरानी मित्र एलिस मिल्ज़ जो अब माल्डन शाखा की नेतृ थी।

एलिस के स्थान पर विचार-परिवर्तन के उद्देश्य से हुई गोष्ठियों में हमने जुलाई में होने वाले पार्टी के सम्मेलन की तैयारी के लिए सदस्यों के सामने पार्टी की नई नीति का बयान किया। जिला के मुख्य केन्द्र द्वारा हमारे लिए तैयार की गई रूपरेखाओं के अनुसार हमने ब्रौडर की भर्त्सना की और पार्टी के पुनरायोजन की आवश्यकता पर बराबर जोर दिया। हमने सदस्यों के सम्मुख अमरीकन पूँजीवाद के आन्तरिक और बाह्य 'अन्त-विरोधों' को रखा, अपने देश में वर्ग-संघर्ष के कटुतर होने की कल्पना की, साम्राज्यवाद के शिकार देशों के लिए फिर से संग्राम छेड़ने की नीति बताई और विश्व में छाये हुए दो प्रकार के संगठनों—पूँजीवाद और समाजवाद—में परस्पर गहरे मतभेद होने का भेद खोला। शाखा के सब सदस्यों को

इन गोष्ठियों में घेर लिया जाता था और उन पर इस नई नीति के धारा-प्रवाह को घण्टों गिराया जाता था।

माल्डन शाखा को आदेश दिया गया कि वहाँ से जुलाई के बड़े सम्मेलन के लिए तीन प्रतिनिधियों और तीन वैकल्पिकों का चुनाव किया जाय। इन छः व्यक्तियों के प्रतिनिधि-मण्डल में घटना-वश एक वैकल्पिक के रूप में मैं भी चुन लिया गया। एफ़० बी० आई० के लिए यह सौभाग्य की बात थी, क्योंकि यदि वह चाहते कि मैं इस सम्मेलन में उपस्थित रहूँ तो यह अन्यथा असम्भव हो जाता। जिला में होने वाले सम्मेलनों में इसको सर्वाधिक गोपनीय और सुरक्षित रखा गया। एक तो जिला के मुख्य दफ्तर की भरपूर कोशिश थी कि जासूसों, अखबारी प्रतिनिधियों, पार्टी को भंग करने वालों और नीति-सम्बन्धी विचलन के अपराधियों को—ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को जो ध्यान से सोचे-विचारे कार्यक्रम को तोड़ दे—इस सम्मेलन से बाहर रखा जाय। और फिर, पार्टी यह दिखाने में भी तत्पर थी कि ब्रौडर के जमाने का अनुशासनहीन युग समाप्त हो चुका है, और नया, कठोर, 'श्रमी-वर्ग का अगला दस्ता' किसी प्रकार की ऊलजलूल बातों को सहन नहीं करेगा।

२१ जुलाई, १९४५ की भयंकर गरमी थी, उस चिपचिपी रात में जिला के एक कम्युनिस्ट पोलिटिकल एसोसिएशन के महत्त्वपूर्ण सम्मेलन में वैकल्पिक प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित रहने के लिए मैं एक पूर्णतया दीक्षित और दृढ़ 'कम्युनिस्ट' के रूप में पहुँचा।

मैंने माल्डन के प्रतिनिधि-मण्डल को सम्मेलन-भवन के बीचों-बीच बाईं तरफ़ को एक कैंचीनुमा टाँगों के सहारे टिके बड़े खाली मेज पर बैठे देखा। एलिस मिल्ज मुख्य प्रतिनिधि और इस दल की केन्द्रीय व्यक्ति थी, जिसमें फ्रैंक कॉलियर और माल्डन की एक दूसरी लड़की, जिसका पार्टी-नाम ग्रेस स्मिथ था और जिसे अधिकांश केवल कामरेड ग्रेस कहकर ही पुकारते

थे, शामिल थे। मैं दीवार के साथ एक कुरसी पर सम्मेलन-भवन की ओर मुख फेरकर बैठ गया ताकि सब एकत्रित लोगों को अच्छी तरह देख सकूँ। इस सभा के पहली सभाओं से भिन्न वातावरण को शीघ्र ही भाँपा जा सकता था। निपुणतापूर्ण सक्रियता की चहल-पहल थी परन्तु साधारण राजनीतिक सभाओं के समान शोर-शराबा नहीं था। कोनों में कहीं कानाफूसी नहीं हो रही थी; प्रतिनिधियों की मेज़ों के चारों ओर लोग जमा होकर अलग से सभाएँ नहीं लगाये हुए थे। न किसी का व्यवहार असंयत अथवा असभ्य था। हरेक वहाँ एक निश्चित ध्येय को लेकर आया था। मुझे यह सब देखकर किसी समाचार-पत्र के दफ्तर की याद हो आई जहाँ हरेक के पास करने को निश्चित काम होता है और जानता है कि उससे क्या अपेक्षित है।

सम्मेलन की कार्रवाई राष्ट्रीय गायन से शुरू हुई—ब्रौडरवाद का यह अवशेष जिसे अब तक मिटाया न जा सका था। राष्ट्रीय कम्युनिस्ट पोलिटिकल एसोसिएसन का अध्यक्ष होने के नाते ऐन बर्लार्क ने मुख्य रिपोर्ट पढ़ी। कम्युनिस्टों की आत्मालोचना की परम्परा में ही उसका अभिभाषण आत्म-ताड़ना का आदर्श नमूना था। ऐन इस तथ्य से अवश्य परिचित रही होगी कि उसके राजनीतिक प्रमुखता के दिन खत्म हो चुके हैं। ब्रौडरवाद को स्वीकार करके उसने भूल की थी जिसे अब जान रही थी, और उसने कहा कि पार्टी की नीति को विचलन की राह की ओर ले जाने के अपराध का परिणाम भुगतने के लिए वह तैयार है।

ऐन ने नेशनल कमेटी के प्रस्तावों के मसविदों को, जो कि ड्यूक्लोज के पत्र पर आश्रित थे, सम्मेलन के सामने रखा और उनकी पूर्ण स्वीकृति पर बल दिया। उसने कहा कि कामरेड ब्रौडर ने एकाधिकारी पूँजीवाद पर भरोसा करने की नीति को बरतकर, जिससे पार्टी के अग्रगामी अंशों का विनाश हुआ, भयंकर भूल का अपराध किया है। उसने कहा कि ड्यूक्लोज के पत्र से वह पूर्णतः सहमत है। उसने मार्क्स-लेनिन की नीतियों की ओर पुनरावर्तन की और पार्टी के पुनरायोजन की माँग की।

इसके बाद सम्मेलन अपने ज़ोर पर आ गया। काम-काज का तौर-तरीका वही था जो 'प्रजातन्त्रीय अमेरिकन युवक' के पहले अधिवेशन का था। जो लोग बोलना चाहते थे, अपने नाम दिये गए कार्डों पर लिखकर अध्यक्ष के पास भेज रहे थे। मंच पर अध्यक्ष—जो पदाधिकारी की विभिन्न बैठकों में बारी-बारी से बदला जा रहा था—गम्भीरतापूर्वक कार्डों को उथल-पुथलकर देखते थे और उसी गम्भीरता से पहले ही से निश्चित वक्ताओं को भाषण देने का 'निमन्त्रण' देते थे। परीक्षण करने के लिए यह जानते हुए कि मेरे भाषण के लिए पहले से कोई निश्चय नहीं हुआ है, मैंने अपना नाम लिख भेजा। मुझे बोलने के लिए नहीं बुलाया गया। एलिस मिल्ज़ ने भी अपना नाम भेजा था। मुझे पहले ही से मालूम था कि वह क्या कहने जा रही है और एफ० बी० आई० के पास पूँजीवाद के विरुद्ध उसकी भड़भड़ाहट की रूपरेखा तथा यह माँग कि नई पार्टी सर्वहारा वर्ग और सन्तुष्ट (बूर्जुवाज़ी) वर्ग के बीच की खाई को अधिक गहरा और उनके संघर्ष को तीव्रतर करे और ब्रौडर की तरह उनके अन्तर्गत विरोधों को छिपाने की कोशिश न करे, पहले ही पहुँच चुकी थी।

एक के बाद दूसरे प्रवक्ताओं ने ब्रौडर की नीति की भर्त्सना की और कभी-कभी यह भाषण व्यवहार के लिए पूर्व-निश्चित शब्दावली की सीमा को भी लांघ रहे थे। सम्मेलन की मनःस्थिति इतनी अधिक वाम पक्ष की ओर झुक गई कि सभा काबू से बाहर जाने लगी। भाषण देने के लिए निमन्त्रण देने की कार्ड-प्रणाली ने ही अनुशासन को स्थिर रखने में सहायता पहुँचाई।

अन्ततः जब थकावट और शोर के वातावरण में सम्मेलन की बैठक उठ गई तो सभी लोग घरों को नहीं लौट गए। विशेष चुने हुए नेताओं को लिटिल बिल्डिंग के दफ्तर में आधी रात की एक गुप्त सभा में अगले दिन की कार्यवाही पर सोच-विचार करने के लिए इकट्ठा किया गया। मुझे इस सभा में निमन्त्रित नहीं किया गया, लेकिन नीति-विषयक इस सभा का सुराग मैंने पा ही लिया। पार्टी में जिस प्रकार फूट का अन्देशा पड़ रहा था,

उसके बारे में मैंने जल्दी में ब्यूरो को टेलिफ़ोन पर समाचार दिया। इसके बाद अपने कमरे में बैठकर हैल लियरी को सम्मेलन की संक्षिप्त खबरें टाइप करके भेजने के उद्देश्य से मैं घर लौटा।

रविवार प्रातःकाल की बैठक इस घोषणा से शुरू हुई, जो स्पष्टतः पिछली रात की नीति-विषयक गुप्त सभा के परिणामस्वरूप थी, कि कार्यक्रम में कुछ परिवर्तन किया जा रहा है और जो दलीय वादविवाद होने वाला था, वह अब न होगा। जब सम्मेलन की बैठक फिर दुबारा शुरू हुई तो प्रत्यक्ष हो गया कि घृणा का जो प्रवाह खोल दिया गया था, उसमें रोक लगा दी गई है और नेताओं द्वारा पूँजीवाद के विरुद्ध प्रबल भावनाओं पर अंकुश रखा जायगा। ब्रौडरवाद के विरुद्ध जिस विद्रोह की नेताओं ने ही प्रेरणा दी थी, वह प्रायः उनके वश से आगे निकल गया था और अब भी वातावरण में तेजी बाकी थी। सुबह की बैठक बड़ी पेचीदा हो गई और दोपहर में खत्म होने के निश्चित वक्त से कहीं अधिक देर तक चलती रही। अध्यक्ष के रूप में डेव बेनेट ब्रौडरवाद और मार्क्सवादी दृष्टिकोण से दूसरे सब विचलनों को लेकर लगाए जा रहे आरोपों-प्रत्यारोपों में समझौता कराने में सफल सिद्ध हुआ। परन्तु इस समझौते से तीव्र वामपक्षी को पूर्ण सन्तोष नहीं हुआ।

बहुत कोशिशों के बाद रविवार की अन्तिम बैठक में जाकर ही डॉन टॉर्मे सब विरोधों को लाँघकर भाषण-मंच तक पहुँचने में सफल हो गया। एक बार वहाँ पहुँचने पर उसे टोकना कठिन हो गया। उसने बरबादी, अन्धेरगर्दी और गृह-युद्ध के खतरों के नारे लगाए और कहा कि मार्क्सवादी सिद्धान्तों के अनुसार यही वक्त इस साम्राज्यवादी युद्ध को गृह-युद्ध में परिवर्तन करने का और क्रान्ति की राह को आसान करने का है। पार्टी के प्रस्तावित कार्य-क्रम में हड़ताल-विरोधी आश्वासनों को उसने रद्द करने को उकसाया और इस प्रकार राष्ट्रीय समिति के कार्य-क्रम की निर्बाध स्वीकृति में अड़ंगा डालने के लिए काफ़ी समर्थन इकट्ठा कर लिया। सम्मेलन की समिति को आशा थी कि सर्वसम्मति से अधिवेशन समाप्त किया जा सकेगा

लेकिन टॉर्मे ने प्रस्ताव के प्रत्येक पाठ को, प्रत्येक धारा को अलग-अलग प्रस्तुत करने पर मजबूर किया। उसने ब्रौडरवाद से चिमटे रहने का अभियोग लगाकर जिला और प्रादेशिक नेताओं की खूब निन्दा की। टॉर्मे द्वारा प्रस्तुत इस विद्रोह ने नेतृत्व का सैद्धान्तिक कचूमर निकालकर रख दिया था। उन्हें अपने बचाव की जरूरत महसूस होने लगी और सौभाग्यवश इसके लिए एलिस गॉर्डन उठी।

"पहली बात तो यह है," वह चिल्लाई, "कि हम जिस नीति का अनुसरण करते रहे हैं वह बिलकुल उचित और ठीक थी, और मार्क्सवाद और लेनिनवाद के अनुसार थी। वह युद्ध को जीतने के लिए आवश्यक थी और यदि ब्रौडर पार्टी का नेता न भी होता तो भी उसी नीति का अनुसरण किया जाता।

"केवल यही नहीं परन्तु कामरेड टॉर्मे—सम्मेलन की स्थिति के अनुसार 'कामरेड' शब्द से सम्बोधन की आवश्यकता पड़ चुकी थी—ने जो कुल सदस्यता की निन्दा की है, वह गलत है। मुझे मालूम है कि कुछ सदस्य ब्रौडर के विचारों की ओर सरलता से नहीं झुक गए थे। स्मरण होगा कि माल्डन के कामरेड हर्ब ने अन्त तक अपने विचारों को नहीं बदला और अन्त में केवल पार्टी के मतैक्य को बनाए रखने के लिए ब्रौडर के कार्य-क्रम को स्वीकार किया।"

शर्म से मेरा मुँह ललिया गया और मैंने कोट के कालरों में उसे छिपा लेना चाहा। सौभाग्यवश भाषण करते वक्त एलिस ने मुझे निर्दिष्ट करने के लिए मेरी ओर इशारा नहीं किया था और इस प्रकार अपने बारे में मैं जिस गोपनीयता को बनाए रखना चाहता था, उसे क्षति नहीं पहुँची। माल्डन के प्रतिनिधियों ने अब मुझे नये आदर से देखा। एक वर्ष से अधिक पूर्व बीकन हिल में पार्टी की गोष्ठी में मेरे व्यवहार का यह परिणाम था। मैंने सोचा कि पार्टी में मेरे भविष्य के लिए और एफ० बी० आई० के लिए इसका अच्छा नतीजा निकलेगा।

प्रस्ताव के मसविदे के एक-एक अंश को सम्मेलन के सामने प्रस्तुत किया

गया और धीरे-धीरे नेताओं ने इस वामपक्षीय विद्रोह पर काबू पा लिया। परन्तु इस उद्देश्य से उन्हें समझौता भी करना पड़ा। विरोध के कुछ भाग को हड़ताल-विरोधी प्रस्ताव में यह वाक्य जोड़कर स्थायी रूप से शान्त किया गया कि मजदूरों के झगड़ों को उकसाने वाली मालिकों की हरकतें बन्द होनी चाहिएँ। फैनी हार्टमैन ने कहा कि जिन प्रश्नों पर पूरा समझौता अभी तक नहीं हो सका है उन पर अधिक सोच-विचार होना चाहिए। इस विषय में पार्टी के नेतृत्व की बहुत कठिनाई से विजय हुई। वामपक्ष की ओर झुकाव इतना तीव्र था कि सदस्यों को मत न देने की स्वतन्त्रता देनी पड़ी'''पार्टी में ऐसी इजाजत दिया जाना असाधारण बात थी। इससे पहले ऐसा कभी न हुआ था। काफ़ी सदस्यों ने मत नहीं दिये।

अन्त में थकावट की, और राष्ट्रीय समिति के कार्यक्रम की, विजय हुई। बहुत देर में शाम को, बी० जे० जेरोम ने, जो कि राष्ट्रीय समिति का सदस्य था, सम्मेलन के श्रोताओं को अपने लम्बे और उतार-चढ़ाव-भरे भाषण से इस प्रकार चित कर दिया कि न तो उसे किसी ने सुना, और न याद ही रखा। उसका उद्देश्य पूरा हो गया। प्रतिनिधि एक-एक करके बाहर जाने लगे; सम्मेलन न्यूयार्क के अधिवेशन के लिए ११ और १२ अगस्त को फिर से इकट्ठा होने की घोषणा करके भंग कर दिया गया।

एफ० बी० आई० के लिए मेरी बीस पृष्ठ की रिपोर्ट में कई सन्ध्याओं का समय खर्च हुआ। मुझे स्वयं यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मैंने नामों की जो सूची भेजी उसमें सम्मेलन में हिस्सा लेने वाले तीन सौ सदस्यों में से लगभग सौ सदस्यों के नामों का उल्लेख था। यह समझने की कोशिश में कि पार्टी किस मार्ग पर बढ़ रही है और किस हद तक बढ़ेगी, मैंने सम्मेलन में वितरित किये गए साहित्य, पैम्फलेट आदि, पक्ष-विपक्ष के मतदाताओं की सूचियाँ और सम्मेलन की कुल कार्यवाहियों की संक्षिप्त रिपोर्ट भेजी। सम्मेलन में उपस्थित रहकर और वहाँ के विचार-वितर्क को सुनकर मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि यदि रूस जापान के विरुद्ध लड़ाई में कूद पड़े तो पार्टी राष्ट्र के युद्ध-प्रयत्नों में हाथ बँटाती रहेगी। परन्तु यदि रूस सुदूर-पूर्व

में किसी प्रकार की फ़ौजी कार्यवाही न करना चाहे अथवा यदि प्रशान्त सागर का युद्ध शीघ्र ही समाप्त हो जाय तो पार्टी के रुख में मौलिक परिवर्तन हो जायगा और घरेलू मोर्चे पर दस्तन्दाजी करने के उद्देश्य से 'अमरीकन साम्राज्यवाद' के विरुद्ध एक नया युद्ध शुरू कर दिया जायगा।

एटम बम्ब की ईजाद और अस्थायी सन्धि के पूर्व जापान के विरुद्ध रूस के उतावली से प्रवेश ने कामरेडों की समस्याओं को उलझने से बचा लिया। यदि जापान के विरुद्ध रूस के हस्तक्षेप के बिना लड़ाई जारी रहती तो मुझे निश्चय था कि पार्टी की मुख्य मोर्चेबन्दी जापानी फ़ासिज़्म के विरुद्ध न होकर 'अमरीकन साम्राज्यवाद' के विरुद्ध होती।

सम्मेलन के बाद अगस्त के अधिवेशन की तैयारी के लिए पार्टी के बड़े दफ़्तर में होने वाली कई बैठकों में मैंने भाग लिया। मैंने ऐन बुर्लाक से पूछा—"सोच-विचार के लिए अब हम किस प्रश्न को हाथ में लेंगे?"

"पहली बात तो यह," उसने एक आवेशपूर्ण नजर चारों ओर दौड़ाते हुए कहा, "कि निश्चय ही पार्टी में अनुशासन की बात उठाई जायगी।" मुझे इससे कुछ बेचैनी हुई; सोचने लगा कि वह डॉन टॉर्मे के बारे में कह रही थी अथवा मेरे बारे में। "हमें यह जानना जरूरी है कि नये कार्यक्रम के प्रति हमारे सदस्यों की स्थिति क्या है।"

"ठीक", ऐसे समयों में मेरे चेहरे पर जो लाली फैल जाती थी, उसे रोकने की कोशिश करते हुए मैंने मन-ही-मन कहा। मैं हमेशा चेहरे के ललिया जाने की इसी कमजोरी से डरता था कि यह किसी वक्त मेरा भेद खोल देगी। "सदस्यों की वास्तविकता जान ही लेनी चाहिए।"

अगस्त का सम्मेलन शुरू होने से पहले डॉन टॉर्मे की उसके वामपक्षीय विद्रोह के लिए भर्त्सना की गई। दुर्वृत्त सूची में उसका नाम लिख लिया गया, जिसका अर्थ केवल यही था कि उसे कोई नया कर्तव्य नहीं सौंपा जायगा। टॉर्मे के प्रसंग की इस घटना से पार्टी में अनुशासन की आवश्यकता को ही तूल दिया गया; अब किसी को, किसी अत्यधिक प्रगतिवादी क्रान्तिकारी को, भी राष्ट्रीय समिति द्वारा निर्धारित नीति से विचलित

होने का अधिकार नहीं दिया गया।

जिला के नेताओं के सम्मुख मेरी अपनी स्थिति में एलिस गॉर्डन के इस वक्तव्य के कारण कि मैं आरम्भ से ही ब्रौडरवाद को सहयोग देने में हिचकिचाता रहा हूँ, उन्नति हुई। अगस्त के सम्मेलन के कुछ दिन पहले एलिस के साथ मिलकर माल्डन की शाखा को नई नीति पर चलाने और सम्मेलन की कार्यवाही के लिए रास्ता साफ़ करने का कर्तव्य मुझे दिया गया। इस शाखा की कुछ विशेष बैठकें की गईं और इनमें वादविवाद की शुरूआत करने के लिए मुझे निर्दिष्ट किया गया। फ्रैंक कॉलियर सभा-सम्बन्धी सूचनाएँ भेजा करता था। उसने मुझसे कहा कि मैं आश्वस्त होकर उपस्थित सदस्यों के सामने बिना किसी हिचकिचाहट के, खुले ढंग से मन-चाही बात कर सकता हूँ, क्योंकि सभा-सम्बन्धी सूचनाएँ पार्टी के केवल विश्वस्त सदस्यों को ही भेजी जा रही थीं।

अनुशासन-सम्बन्धी धारणाओं के कारण नई पार्टी अपनी सुरक्षा के बारे में उत्तरोतर चिन्तित होती जा रही थी। ऊपर से लगाकर निचली सतह तक आपसी सन्देह का बोलबाला था। अगस्त मास में जिला नम्बर १ की सभा के फिर से आयोजित अधिवेशन पुराने स्थान पर पुराने प्रतिनिधियों और वैकल्पिक प्रतिनिधियों की उपस्थिति में फिर से इकट्ठे हुए। उनके परिचय-पत्रों की जाँच दो-दो बार और बड़ी बारीकी से की गई; दरवाजों पर कड़ा पहरा लगा था। परन्तु इस बार तो मैं स्वयं इस अधिवेशन का एक अंग था, और बे-रोक-टोक अन्दर-बाहर आ-जा रहा था। अधिवेशन की कार्रवाई निस्तेजित ढंग से लेखे के अनुसार चल रही थी और पार्टी के न्यूयार्क में पुनरायोजन पर अपनी स्वीकृति की हामी भर रही थी। बृहद्काय, प्रसन्न-वदन, शक्तिशाली पार्टी की सचेतक एलिजाबेथ गर्ले फ्लिन का चातुर्यपूर्ण प्रेरक भाषण हुआ। अधिवेशन को मिस फ्लिन के भाषण की ही आवश्यकता थी। समय को पहचानने की उसकी महान् क्षमता, श्रोताओं की मनःस्थिति और प्रत्युत्तर को ठीक-ठीक जान लेने की योग्यता ने उन्हें इस दो दिवस के अधिवेशन के प्रति उत्साह से भर दिया। ब्रौडरवाद

का अन्त हो गया। फौस्टर की गुड्डी चढ़ गई।

पुनरायोजित कम्युनिस्ट पार्टी की पहली बैठक से ही गम्भीर सैनिक-वादिता प्रत्यक्ष हो रही थी। सब नेताओं को आरम्भ से ही स्पष्ट आदेश मिल गए : "पार्टी की गोष्ठियों और क्लबों के जाल को कसकर फैला दिया जाय। प्रत्येक नेता जिला के कार्यवाहक के लिए उत्तरदायी होगा और उसीसे आदेश पाएगा। सब स्तरों पर लौह-अनुशासन बरता जायगा।"

जिला पार्टी के मुख्य दफ्तर से मुझे पता चला कि पार्टी-सम्बन्धी शिक्षण में प्रवीणता के उद्देश्य से ध्यान से चुने गए लगभग एक दर्जन सदस्यों की एक सूची तैयार की जा रही थी जिनके बारे में पार्टी के हर माध्यम से ग़ौर किया जा रहा था। मेरा नाम इस सूची में था। इन व्यक्तियों का लक्ष्य ऐसे शिक्षकों को दीक्षित करने का था जो गोष्ठियों के जाल में घुसकर पार्टी की नई नीति का विश्लेषण करेंगे और सदस्यों को नया कार्य-क्रम समझाएँगे। मुझे यह भी मालूम हुआ कि मुख्य दफ्तर और जिला के नेताओं से घने सम्पर्क के बावजूद जाँच-कमीशन द्वारा मेरे बारे में भी फिर से जाँच हो रही थी। कमीशन किसी व्यक्ति को भी सन्देह से परे नहीं समझती थी, चाहे पार्टी का सदस्य सबसे निचली सतह का सदस्य हो अथवा ऊपर के नेताओं में से हो। स्पष्ट है कि कमीशन इन दिनों कितनी व्यस्त थी।

पार्टी की सुरक्षितता के प्रति इस सचेतता को १० अक्टूबर १९४५ को लुई बुडेन्ज द्वारा 'डेली वर्कर' के प्रबन्ध-सम्पादकत्व से एकाएक स्तीफ़ा दे देने से, कम्युनिज़्म के परित्याग से और कैथोलिक चर्च में पुनर्प्रवेश से गहरा धक्का लगा। सदस्यों की बेचैनी ने आक्रोश का रूप ले लिया। यह तो उच्चाधिकारियों में बग़ावत की घटना थी। साधारण सदस्यों को इससे पहले ब्रौडर के अभिद्रोह की बातें बताई गई थीं। शायद पार्टी के इतिहास में यह पहला अवसर था जब कि साधारण सदस्य नेताओं को सन्देह की दृष्टि से देखने लगे। आशंका और अविश्वास फैल गया। यदि राष्ट्रीय संस्था का एक उच्चतम अधिकारी इस प्रकार से गद्दारी कर सकता है तो जिला

संस्था का अथवा किसी शाखा का नेता भी ऐसा कर सकता है। इस धक्के से डॉन टॉमें के इस तर्क को बल मिला कि ब्रौडरवाद का दुष्प्रभाव अभी पार्टी के कुछ अधिकारियों के मन पर बना हुआ है।

इस समस्या को आत्म-समीक्षा द्वारा नहीं सुलझाया जा सकता था। एक निर्मम और कठोर प्रत्याक्रमण का आदेश जारी किया गया। पार्टी के अन्दर राष्ट्रीय और स्थानीय नेताओं की किसी प्रकार की टीका-टिप्पणी को बन्द करने के नये प्रयत्न किये गए। बुडेन्ज के प्रसंग में मैं भी एक गुप्त बैठक में उपस्थित था। मुख्य वक्ता से हम अपरचित थे। केवल 'कामरेड सैम' कहकर उसे पुकारा गया। स्पष्ट ही वह हिंस्र मनोदशा में था।

"बुडेन्ज की गद्दारी को छिपाने की कोई वजह नहीं है," उसने हमें कहा। हम एक छोटे, अंधेरे कमरे की गर्मी में सटकर बैठे हुए थे; ऊपर की एक बत्ती की रोशनी हम पर फैल रही थी। "बुडेन्ज कौन था? आरम्भ से ही उसकी पृष्ठभूमि दुष्कृत्यों और अभिद्रोहों से पटी हुई थी। उस कीड़े ने अपने लाभ के लिए ही नेतृत्व की स्थिति तक रेंग-रेंगकर अपने को बढ़ा लिया। बुडेन्ज," कामरेड सैम ने अपनी आवाज में बड़ी चेतावनी की गूँज लाते हुए कहा, "भूल से ही बिना उचित परीक्षा किए आगे बढ़ा दिया गया था।

"इससे हमने जो मुख्य पाठ पढ़ा है, वह यह है कि हम केवल अपने वर्ग के शत्रुओं से ही नहीं घिरे हुए हैं। शत्रु के दूत हमारी पंक्तियों में भी घुसे हुए हैं। हम उन्हें खोज निकालेंगे।"

उसका सबल मौन इस अभंग चुप्पी के क्षण पर आ गिरा। कामरेड सैम के चेहरे पर उस अकेले लैम्प की तिरछी रोशनी क्रूर भाव का अंकन कर रही थी। इस मौन में कमरे के बीस पुरुष और स्त्रियों के साँस-उसास की आवाज भर गई।

प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी दृष्टि प्रवक्ता पर अथवा उसके पीछे की दीवार पर टिका दी, अपने साथ बैठे हुए साथी की ओर देखने का किसी को साहस नहीं हुआ। मुझे भारी बेचैनी का अहसास हो रहा था; ऐसा

जान पड़ता था कि मेरे पीछे बैठे हुए व्यक्ति की आँखें पीछे से मेरे सिर में घुसी जा रही हैं। लेकिन मुझे मालूम था कि मैं इस परिस्थिति में अकेला नहीं हूँ। इस कमरे का प्रत्येक व्यक्ति, पार्टी में चाहे उसकी स्थिति कुछ भी हो और पार्टी में होने के उसके कुछ भी कारण हों, इस समय अशान्त था। प्रवक्ता की नजर कमरे में चारों ओर दौड़ने लगी।

"पार्टी को अब निर्ममता और कठोरता से बरतना होगा", उसने धीरे-धीरे, प्रायः प्रत्येक शब्द पर रुकते हुए कहा। "पार्टी की सदस्यता को ऊपर से नीचे तक परखकर जाँच कमीशन शत्रु के सब दुश्मनों को उखाड़ फेंकेगी जो हमारे अन्दर घुस आए हैं। हम इस जाँच में जरा भी भूल-चूक न करेंगे।

"पार्टी में बुडेन्ज की भाँति बहुत से सदस्य हैं जो निरपराध नहीं हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि कामरेडों पर हमारे वर्ग के शत्रुओं से पुराने सम्पर्कों के अपराध पर कड़ाई बरती जायगी लेकिन यह जरूरी है कि उन पुराने सम्पर्कों का अब परित्याग कर दिया जा चुका हो और कामरेडों ने संघर्ष द्वारा अपने को प्रमाणित कर लिया हो। इसका यह अर्थ अवश्य है कि सब कामरेड अपने पिछले वक्त के प्रति अधिक सतर्कता से जागरूक हों।"

प्रवक्ता ने अनुशासन, भीरुता, व्यक्तियों को निकालने, और किसी भी प्रकार के संघर्ष के लिए बलवान और शक्तिशाली पार्टी के संगठन के सम्बन्ध में अपना भाषण जारी रखा। जब तक उसने अपना भाषण समाप्त किया, हम अपेक्षातर शान्त हो चुके थे। जब सभा भंग हुई, तो आपस में एक-दूसरे से किसी ने अधिक बातचीत नहीं की। तब से बुडेन्ज का नाम पार्टी में फिर नहीं लिया गया।

हर गैर-कम्युनिस्ट देश में, जिनमें अमरीका भी शामिल है, गुप्त भूमिगत छापेखाने कम्युनिस्ट पार्टी के लिए आवश्यक उपादेय हैं। प्रचार और प्रशिक्षण के साधनों से ही जनता और उसकी सरकार की जड़ें उखाड़ी

जा सकती हैं। छपे हुए शब्दों की सहायता से, पैम्फलेटों, अखबारों, इश्तहारों और अखबारों की मदद से आपसी सम्बन्ध और आन्दोलन को जारी रखा जाता है और अशान्ति फैलाने में इनका आश्रय लिया जाता है।

कम्युनिस्ट सक्रियता की वैध कार्यवाहियों के दौरान में प्रकाशन-सम्बन्धी हरकतें कानूनी तौर पर आम छापेखानों द्वारा की जाती हैं। परन्तु पार्टी के प्रत्येक सदस्य को यह समझाया जाता है कि प्रत्येक देश में, कम्युनिज़्म की ताकत बढ़ने के साथ-साथ और किसी भी देश में वास्तविक खतरा बन जाने के बाद, कानूनी सत्ताधारी भयंकरता से इसका दमन करने में नहीं चूकेंगे। दमन का पहला कदम उन छापेखानों को बन्द कर देने की ओर उठाया जायगा जहाँ प्रचार और आन्दोलन-सम्बन्धी सामग्री ढेर-की-ढेर प्रतिदिन छपती है। यदि वास्तव में ही ये छापेखाने बन्द हो जायँ तो पार्टी पर करारी चोट पड़ेगी। परन्तु सत्य है कि ये छापेखाने बन्द नहीं किए जा सकते।

जैसे-जैसे पार्टी अधिक-से-अधिक भूमिगत होती जाती है, ये छापेखाने भी गुप्त से गुप्ततर हो जाते हैं और इनकी सक्रियताएँ पहले से ज़्यादा बढ़ जाती हैं। अमरीका के कम्युनिस्ट अन्ततः अपने छापेखानों के अवैध घोषित किये जाने के लिए तैयार हैं। १६४५ में ही, जब मैं मैसेच्युसेट्स की कम्युनिस्ट पार्टी के ६ सदस्यों वाली एजुकेशनल कमीशन का सदस्य बना, मुझे प्रतिदिन उन्नत होते हुए भूमिगत छापेखानों के फैले हुए बड़े जाल का सूराग मिला।

पार्टी के कुछ आपत्कालीन छापेखाने और उनका सामान बिना किसी व्यवहार में लाए उस दिन के लिए तैयार रखा जाता है जब कि उन्हें बरतने की जरूरत पड़ेगी। कठिनाई से प्राप्त कागज के बड़े अम्बार और स्याही के ढोल भी सुरक्षित पड़े रहते हैं। लेकिन अधिकतर ये भूमिगत छापेखाने किसी क्षण भी काम को हाथ में लेने की स्थिति के लिए तैयारी में रहते हैं। इन्हें गुप्त कोठरियों में तालों में बन्द करके नहीं रखा जाता। वैध और सम्मानित व्यापारिक संस्थाओं के परदे के पीछे ये खुलकर काम किया करते हैं,

हैं, और अपनी सहायता के लिए खुद पैसे बनाया करते हैं। कुछ छापेखाने तो प्रसिद्ध मुद्रण व प्रकाशन-संस्थाओं के रूप में काम करते हैं। परन्तु इनका संचालन पार्टी के विश्वस्त सदस्यों द्वारा होता है जो कि आदेश पाने पर इन्हें भूमिगत करने के लिए तैयार रहते हैं। इसी बीच, पार्टी के लिए यह ऐसी विद्रोहात्मक सामग्री भी छापते रहते हैं जो इस संस्था के सार्वजनिक रूप से ज्ञात छापेखानों में नहीं छापी जा सकती।

बोस्टन के एम० एण्ड पी० थियेटर्स में प्रचार-अधिकारी के रूप में काम करते हुए मैं मुद्रण व प्रकाशन-व्यवसाय के घनिष्ठ सम्पर्क में आया; इसके अलावा कम्युनिस्टों के भूमिगत छापेखानों का भी मुझे पता लगा। पहले तो पार्टी ने मेरा लाभ उठाया और इसकी सार्वजनिक कार्यवाहियों के लिए प्रकाशन-सम्बन्धी अपनी जरूरतें मेरी नियमित व्यापारिक जरूरतों के साथ ही पूरी करवाती रही। तभी मुझे मालूम हुआ कि कौन-कौनसे मुद्रक पार्टी के सम्पर्क में थे। मुझे यह आदेश दिया गया कि अपनी छपाई को मैं अधिक-से-अधिक छापेखानों में दूँ, और एक ही मुद्रणालय को छपाई के काम से न पाट दूँ। मैं छपाई के बिलों को नक़द चुकाता था और पार्टी का दफ्तर मुझे पैसे चुका देता था।

पार्टी के प्रचार-विभाग का सदस्य होने के नाते मैं इसके बहुत से विशेषज्ञों को, जिनमें छापेखाने के माहिर भी थे, जानने लगा था। व्यावसायिक छापेखानों से अपने घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण मुझे बोस्टन में पार्टी के नवीनतम गुप्त छापेखाने को देखने का निमन्त्रण मिला—यह छापाखाना ऑफसेट प्रणाली से छपाई करने की नई-से-नई मशीनों से सुसज्जित था। पार्टी ने मुझे हिदायत दी कि मैं मशीनरी आदि का मुआइना करके इसके सुसंचालन के बारे में सम्भव हो तो कोई सुझाव भी पेश करूँ। ऑफसेट प्रणाली का यह लाभ होता है कि टाइप से बिना कम्पोज किये ही यह छपाई की पुनरावृत्ति कर सकती है और जरूरत पड़ने पर लिनोटाइप की मदद लिये बिना टाइप हुई पाण्डुलिपियों से ही बड़ी तादाद में छपाई कर सकती है।

मैंने पार्टी के लिए मुस्तैदी से काम किया। फिर इससे भी एक कदम आगे बढ़ा। "अपनी छपाई के काम के एक-दो नमूने मुझे बाहर दिखाने के लिए दीजिए," मैंने कहा, "शायद मैं आपके लिए छपाई का कुछ काम ला सकूँ।" मुझे छपाई के हर किस्म के नमूने दिये गए। यह पार्टी की मेहरबानी थी। इन्हें मैंने सीधा एफ० बी० आई० को पहुँचा दिया जहाँ कि यह अब भी उनकी फाइलों में होंगे। इनकी तुलनात्मक जाँच से इस छापेखाने में की जाने वाली हर छपाई को पहचाना जा सकेगा।

पार्टी के एक अच्छे सदस्य की सहायता से छापेखाने की कार्यवाहियों पर परदा डाले रहने में मैंने सहायक होकर अक्लमन्दी की। एक दिन मेरा एक गहरा—गैर-कम्युनिस्ट—दोस्त सैम बेकर, जो कि लिथोमैट कम्पनी का सेल्जमैन था, अपनी एक कठिनाई लेकर मेरे पास आया। उसे मदद देकर मुझे प्रसन्नता हुई।

"हर्ब," उसने कहा, "मालूम पड़ा है कि जल्दी में करने का एक छपाई का काम है। ऑफ़सेट पर, लगभग तीन सौ पृष्ठों का। लेकिन क्योंकि इसकी प्रतियाँ कम छपनी हैं, छापेखाने वाला इसे हाथ में नहीं ले रहा। जब तक मशीनें अपना साधारण वेग पकड़ेंगी, छपाई हो चुकी होगी। कोई रास्ता बतला सकते हो?"

"जरूर, मैं मदद कर सकता हूँ," मैंने कहा, और इस वक्त पार्टी के उस छापेखाने के बारे में सोच रहा था जिसे फिलहाल ही देखा था। "मैं एक अच्छे छापेखाने को जानता हूँ जो अभी काम शुरू ही कर रहा है। मुझे विश्वास है कि वह काम हाथ में ले लेगा, और उसे अच्छी तरह निभा सकेगा।" मैंने सैम को छापेखाने का नाम व पता लिखवा दिया।

कुछ दिनों बाद एक दूसरे उद्देश्य से मैं छापेखाने पर पहुँचा। काम के बाद वहाँ के मुद्रक ने कहा—"आपके दोस्त सैम बेकर ने जो छपाई का काम करवाया, वह मजेदार था—अमरीका की सरकार का काम।"

"सरकारी काम!"

मैंने भी उत्साह प्रदर्शित करने की कोशिश की, लेकिन मेरे चेहरे पर

अवश्य पीलापन पुत गया होगा। शायद मुझसे भयंकर भूल हो गई है। सैम बेकर ने काम के सरकारी होने के बारे में कुछ नहीं कहा था और स्वाभाविकतया उसे यह भी नहीं मालूम था कि उसका वास्ता किसी कम्युनिस्ट छापेखाने से पड़ा है। मेरे विचार पहले जासूसी की सम्भावना पर गए। लेकिन पार्टी से भी एक भूल हो गई थी।

"हाँ," मुद्रक ने कहा, "उस काम को लौटा देना अच्छा नहीं हुआ।"

"काम लौटा दिया!" मैंने हैरानी से कहा, "ऐसा तुमने क्यों किया?"

"सुरक्षितता के विचार से। कोई काम हाथ में लेने से पहले अपने को रजिस्टर करवाना भी आवश्यक है। हम अपनी जाँच-पड़ताल एफ० बी० आई० के जासूसी कुत्तों से करवाने की स्थिति में नहीं हैं। यह नहीं कि हमारी व्यवस्था में वे कोई ग़लती निकाल सकते, लेकिन मुख्य दफ़्तर का आदेश मिला कि इसका खतरा वे अभी मोल नहीं लेना चाहते।"

"ओह," मैंने चैन की साँस लेते हुए सहानुभूतिपूर्ण स्वर में कहा, "बुरा हुआ। तुमने सैम से क्या कहा?"

"यही कि हम अभी तक अपने को इतनी अच्छी तरह नहीं जमा सके हैं कि इतनी अधिक प्लेटों का काम इतनी जल्दी कर सकें।"

जब कि छपाई के बड़े कामों के लिए पार्टी के अपने छापेखाने थे, फिर भी अधिकांश गोपनीय कागजात दफ़्तर की उसी मिमियोग्राफ़ मशीन पर छापे जाते थे जिसे मैंने सुधारा था और जिसका मैं अक्सर प्रयोग करता था। १९४५ के हेमान्त में पार्टी ने मार्क्सवाद-विषयक एक अत्यन्त गुप्त शिक्षण-केन्द्र में शामिल होने के उद्देश्य से बोस्टन-क्षेत्र के १५०० कम्युनिस्टों की अच्छी तरह जाँच-पड़ताल की। १६ उम्मीदवारों में मेरा नाम भी आ गया। पाठ्य-क्रम की रूप-रेखा पार्टी के राष्ट्रीय दफ़्तर से प्राप्त हुई मूल लिपि से तैयार की गई। इस शिक्षण-केन्द्र के पाठ्य-क्रम की यह रूप-रेखा बाहर के किसी कामरेड के हाथ में न पड़ जाय, ऐसी चेतावनी दी गई। मिमियो-

ग्राफ़ पर कुछ प्रतियाँ ही, जो कि १६ विद्यार्थियों और संचालक शिक्षकों के लिए पर्याप्त होतीं, निकाल ली गईं।

पाठ्य-क्रम की यह रूप-रेखा बड़े महत्त्व की थी। इससे पता चलता था कि बोस्टन में और दूसरे स्थानों पर अपने देश पर और अपने समय में ही प्रभावपूर्ण होने के लिए, एक प्राणवान और संघर्षशील शक्ति के रूप में मार्क्सवाद की शिक्षा किस प्रकार दी जायगी। इसे ब्यूरो के हाथों में पहुँचा देना आसान बात थी। हर स्टेन्सिल को टाइप करने के बाद इसके नीचे के मोमी कागज को निकालकर मैं जेब में रखता जाता था। बाद में मैंने इन्हें एफ० बी० आई० को भेज दिया। इससे पहले कि विद्यार्थी इसे देखते, सरकार के पास यह सम्पूर्ण-पाठ्य-क्रम पहुँच चुका था।

शिक्षकों की शिक्षा का यह गुप्त केन्द्र अक्तूबर और नवम्बर १९४५ में बोस्टन में स्कॉली स्क्वायर की समीपवर्ती वेस्ट एण्ड कम्युनिस्ट क्लब में सप्ताह में एक रात की बैठक के हिसाब से होना था। पहली रात बड़ी ठण्डी और अंधियारी थी। मैं अपने दफ़्तर में देर तक काम करता रहा, फिर जो और नीमो के होटल में थोड़ा खा-पी लेने को निकला जो कि मंच के आम नेताओं के खाने-पाने के स्थान के रूप में प्रसिद्ध अथवा (अपने-अपने मन्तव्यों के अनुसार) बदनाम था। वहाँ से, पार्टी के इस आदेश को ध्यान में रखते हुए कि अपने पहचाने जाने के खतरे से हमेशा बचना चाहिए, मैं बीकन हिल की तंग और अंधेरी गलियों में बढ़ा, फिर हैनकाक स्ट्रीट के ऊपरी हिस्से की ओर गया, और एक बार फिर स्क्वायर की ओर उतरा। स्कॉली और बौडोइन स्क्वायरों में यहाँ शाम की भीड़ के मुकाबले में अब यह स्थान सुनसान पड़ा था। हैनकाक स्ट्रीट की ईंटों से पटी सड़क को पार करते हुए मैंने अपनी चाल को धीमा किया और चारों ओर नजर दौड़ाई। बाजार के निचले छोर के अलावा, जहाँ कि कभी-कभी कोई गुजर जाता था, कोई नजर नहीं आया। कोने की एक अकेली बत्ती बीकन हिल के पुराने मकानों के दरवाजों में गहरी छाया डाल रही थी। चौराहे पर भी कोई व्यक्ति नहीं था। मैं किसी एफ़० बी० आई० के जासूस को देखने की

आशा में था—कहीं कार खड़ी होगी, कोई ट्रक वाला अपने फटे हुए टायर को ठीक करता होगा, कोई शराबी ऊधम मचाता होगा, किसी-न-किसी रूप में कोई जासूस—लेकिन मैं ऐसे किसी भी चिह्न को देखने में असफल रहा।

बाजार से कोने की दुमंजिली ईंटों के मकान की ओर घूमते हुए मैं ३ नम्बर के हैन्काक स्ट्रीट के दरवाजे के अन्दर घुस गया। जाहिरा तौर पर यह राज-मजूरों के संघ का दफ़्तर था लेकिन वास्तव में यह धोखे की ही टट्टी वेस्ट एण्ड कम्युनिस्ट क्लब और गुप्त शिक्षण के केन्द्र को छिपाने के लिए थी। मद्धम रोशनी के चबूतरे पर मैं खड़ा था, सामने ही ऊपर चढ़ने के लिए चौड़ा, लकड़ी का जीना था। पहले तो कोई आवाज़ सुनाई नहीं पड़ी। फिर ऊपर की छत से दबी हुई आवाजों की भनक आई। सीढ़ियाँ पार करके मैं ऊपर गया; एक गलियारे में बढ़ा जिसमें दफ़्तर के एक कमरे की शीशे की खिड़कियों से छनकर रोशनी फैल रही थी। दरवाज़ा खोलकर मैंने एक छोटा-सा कमरा पाया जिसमें केवल एक बत्ती जल रही थी। एक मेज पर ओवरकोट, हैट और मफ़लरों का ढेर पड़ा था। बाईं ओर एक और मेज़ पड़ी थी, और तीन कुरसियाँ। इस मेज के सामने सिमटने वाली कुरसियों की चार या पाँच कतारें लगी हुई थीं।

मेज पर फैनी हार्टमैन एक ऐसी स्त्री से फुसफुसाती हुई बात कर रही थी जिसकी पीठ मेरी ओर थी लेकिन जिसके बाल, उस धुंधली रोशनी में भी, स्पष्टतया लाल दीख रहे थे। मैंने अपनी दृष्टि टिकाए अथवा पहचानने का भाव लाए बिना विद्यार्थियों के चेहरों पर घुमाई। इस दल में थोड़े ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें मैं नाम अथवा शक्ल से पहचानता था। अपने कोट को दूसरे के कोटों पर मैंने फेंका, क्लास की एक पिछली सीट पर बैठ गया और दीवार के गर्म चूल्हे के पास अपनी कुरसी को सरकाने लगा। मेरे प्रति अभिवादन का एक शब्द भी किसी ने नहीं कहा था। क्लास का एक विद्यार्थी एक तरफ को घूमा और उसने अभिवादन में उंगली से इशारा किया। प्रत्युत्तर में मैं मुसकरा दिया, और फिर अपना ध्यान दीवार

से लटके हुए रोशनी के पीले लट्टू को लांघकर शिक्षक की ओर मोड़ दिया। इस पर मैं अपनी तिरछी की हुई कुरसी से लगभग उलट ही पड़ा।

लाल बालों वाली स्त्री डॉ० हल्डा मैक्गार्वे थी। 'सैम ऐडम्स स्कूल फ़ार सोशल स्टडीज़' के सम्बन्ध में एक बार पहले मैं हल्डा से मिला था और उसे भी ऐसे गुमराह सुधारवादियों में से एक मानता था जो कम्युनिस्टों के विभिन्न मोर्चों के शिक्षणालयों में शिक्षा देने के पद की ओर आकृष्ट कर लिए जाते हैं। परन्तु उसे यहाँ, कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दरूनी दायरे में देखकर मैं हैरान रह गया। स्मिथ कालेज और कोलम्बिया यूनिवर्सिटी की ग्रेजुएट, मौण्ट होलिओक कालेज की भूतपूर्व शिक्षिका और स्मिथ में मनोविज्ञान की सहायक प्रोफ़ेसर हल्डा को विद्वत्-मण्डली में माननीय और कम्युनिस्ट पार्टी से किसी प्रकार गहरे तौर से असम्बन्धित माना जाता था।

फैनी हार्टमैन ने कमरे में चारों ओर देखा और यह देखकर कि सारी क्लास एकत्रित हो चुकी है, पाठ्यक्रम की प्रकाशित रूप-रेखा बाँट दी। फिर, जिला पार्टी के अध्यक्ष होने के नाते, वह काम में जुट गई।

"साथियो," इस निःस्वर कमरे में उसकी कोमल आवाज उस्तरे की धार को तेज़ करने के समान सुनाई दे रही थी। "आप इसे भली भाँति समझते हैं कि यह जमात मार्क्सवाद-लेनिनवाद-सम्बन्धी शिक्षा देने वाली एक साधारण जमात नहीं है। मेरा विश्वास है कि आप सब अनुभव-प्राप्त व्यक्ति हैं और मार्क्स व लेनिन के सैद्धान्तिक सत्यों से परिचित हैं। यदि ऐसा न होता तो आप यहाँ न बुलाए जाते। इस शिक्षण-केन्द्र का काम आपको इस बात की शिक्षा देना है कि आप दूसरों को कैसे शिक्षा दें, अपने साथियों को कैसे शिक्षित करें। पार्टी में नवागन्तुकों को शिक्षा देने का उत्तरदायित्व आप पर पड़ेगा ताकि फिर वे स्वयं संसार के फासिस्ट साम्राज्यवादियों के विरुद्ध, विशेषतया अमरीका के विरुद्ध, हमारे समाजवादी संघर्ष के लिए मजदूर-वर्ग को अपने पक्ष की ओर जीत सकें।

"यह कार्यक्रम पार्टी की प्रत्येक इकाई को ब्रौडरवाद के अन्तिम अंशों से उन्मुक्त करने के संयोजित आन्दोलन का, मार्क्स-लेनिनवादी सिद्धान्तों

की समझ को गहरा करने के लम्बे कार्यक्रम का भाग है।" अपनी बातों पर बल देने के प्रयोजन से वह आगे की ओर झुक गई। "विशेषकर, आज के अमरीका पर मार्क्स और लेनिन के सिद्धान्तों के प्रभाव का आप अध्ययन करेंगे। आपके उत्तरदायित्वों में प्रत्येक शहर में और पार्टी की शाखा में ऐसी जमातों को खोलना शामिल होगा और आप हरेक गोष्ठी में मार्क्सवादी अध्ययन को उचित तरीकों से परख लेंगे। शिक्षा-सम्बन्धी कुछ जमातों को आप स्वयं आयोजित करेंगे, और दूसरों को भी ऐसी जमातें जोड़ने की हिदायत करेंगे।"

जमात के सदस्य अपनी कुरसियों पर लम्बी बैठक के लिए जम गए। मैंने नोट लेने शुरू किए। फैनी ने शिक्षण-प्रविधि में उचित तरीकों का महत्त्व बतलाया। उसने कहा कि कोई भी अच्छा शिक्षक कम्युनिस्ट विचारधारा द्वारा हरेक व्यक्ति को, चाहे वह किसी भी जीवन-स्तर का हो, प्रभावित कर सकता है।

विभिन्न श्रेणियों में समाजवादी और साम्यवादी साहित्य के प्रयोजन के विषय में विचार करके उसने अपना भाषण समाप्त किया। हर नये रंगरूट के 'स्तर' को सही तौर पर मापने की आवश्यकता पर उसने बल दिया, और कहा कि आरम्भ में ही क्रान्ति की अवश्यम्भाविता की शिक्षा देना असम्भव है। ऐसा करने से तो आगन्तुक भयभीत होकर भाग ही खड़ा होगा। उसे उचित तरीके से सहलाना होगा, और उस पर अपने वश को छोड़े बिना उसे कदम-कदम करके आगे बढ़ाना होगा।

प्रश्नोत्तर के लिए भी कुछ समय रखा गया था, लेकिन बहुत थोड़े, साधारण प्रश्न ही पूछे गए। बैठक भंग हुई, हमने अपने कोट पहने और एक-एक करके अथवा छोटे-छोटे दलों में बाहर चले गए। एक बार फिर बाजार में आकर मैंने चारों ओर देखा और बीकन हिल की ओर बढ़ते हुए इस मकान के आसपास किसी भी सन्दिग्ध व्यक्ति को नहीं पाया।

यह विशेष जमात, हर सप्ताह में एक रात, दो घण्टे अथवा कुछ अधिक समय के लिए जुटती थी। इसके पाठ्यक्रम की पूँजीवाद-विरोधी

और क्रान्ति-प्रेरक भावनाओं की तीव्रता प्रत्येक बैठक में बढ़ती जाती थी। पच्चीस से अधिक पाठ्य-पुस्तकों का प्रयोग किया गया, जिनमें लियोंटीव की 'पोलिटिकल इकॉनॉमी', मार्क्स की 'वैल्यू, प्राइस एण्ड प्रॉफ़िट', एंजल्स की 'सोशलिज़्म, यूरोपियन एण्ड साइण्टिफ़िक', लेनिन की 'इम्पीरियलिज़्म' और विटलमैन की 'माइल्स्टोन्स इन द हिस्ट्री ऑफ़ द कम्युनिस्ट पार्टी' शामिल थीं। 'माइल्स्टोन्स' को बाद में ठुकरा दिया गया था।

प्रत्यक्ष रूप से तो यह केवल क्लासिक पुस्तकों का अध्ययन ही दीख पड़ता था और पूछने पर यही जवाब यहाँ के उपस्थित सदस्य देते। परन्तु निश्चय ही इसका सम्बन्ध केवल सांस्कृतिक अध्ययन से नहीं था। क्लास-रूम का कठोर वातावरण, विद्यार्थियों का लुक-छिपकर निश्चित समय पर समाजवादी और कम्युनिस्ट क्रान्ति-आन्दोलनों के इतिहास को पढ़ने के लिए जमा होना, किसी भी किस्म के हास-परिहास का अभाव, क्लास में कड़ा अनुशासन, शिक्षकों की गम्भीरता—जिसमें कि कमरे की छत से टंगी अकेली बत्ती की रोशनी उनके चेहरों को अजीब ढंग से काटकर वृद्धि करती थी—ये सब रंग-ढंग गहरे षड्यन्त्र के ही सूचक थे।

उनका बात को घुमा-फिराकर कहना और कम्युनिस्ट मन्तव्यों को कहानियों का पर्दा डालकर पेश करना तो समझ में आता था। कम्युनिस्ट पार्टी उन दिनों भी स्मिथ-एक्ट की छाया में काम कर रही थी, जिसके अनुसार हिंस्र क्रान्ति की शिक्षा अमरीका में अपराध माना जाता था। यह कानून बिना किसी प्रदर्शन के १६४० में स्वीकृत किया गया था और उन दिनों कम्युनिस्टों की अपेक्षा फ़ासिस्ट संस्थाओं के विरुद्ध ही लागू किया जाता था। कम्युनिस्ट अब इस कानून को अपनी शिक्षाओं के विरुद्ध समझने लगे थे और इसलिए इन्हें फैलाने में बहुत गोपनीयता का प्रयोग करते थे। फिर भी गोपनीयता का यह आवरण इतना झीना था कि मुझे अचम्भा होता था।

फैनी हार्टमैन, डॉ० मैकगर्वे और कामरेड सैम, इन तीनों शिक्षकों ने अपनी शिक्षाओं में इन क्रान्तिकारी क्लासिक किताबों का उद्धरण देते हुए

और इन्हें समझाते हुए मामूली जान पड़ने वाले ऐतिहासिक उदाहरण दिये। बार-बार हमें यह ध्यान में रखने को कहा गया कि "हम यह बातें समझते ही हैं। परन्तु आप जिन लोगों को शिक्षा देंगे, वे इन बात को नहीं समझते हैं। निश्चय ही एक नये सदस्य से पार्टी की रीति-नीति और दाव-पेचों के पूर्ण ज्ञान की अपेक्षा नहीं की जाती। उसे धीरे-धीरे ही इन बातों के सत्य को समझने के लिए समझ-बूझ के बेहतर स्तर की ओर ले जाना होगा। उनके इस स्तर को ही ऊँचा करना होगा।"

विद्यार्थियों के रूप में हम जानते थे कि जब हम शिक्षक-समाज में भौतिकवादी, निरन्तर और अवश्यम्भावी परिवर्तनों को बात करते थे, तो वे आज की, अब की बात करते थे; १७८९ के फ्रान्स की नहीं, और न १९१४ के रूस की।

हम जानते थे कि जब वह मानव को नियति पर उन घटनाओं और परिस्थितियों की ओर इशारा करते थे जिन पर कि उसका अपना वश नहीं होता, तो वे आज के मनुष्य की बात करते थे, किसी पुराने जमाने के विद्रोह की आँधी में फँस गए मनुष्य की बात नहीं।

हम जानते थे कि जब वे हिंस्र क्रान्ति की परिभाषा प्रकृति के अनायास परिवर्तन के रूप में करते थे, तो वह इतिहास की बात नहीं, वरन् बात घुमाकर आगे की घटनाओं को गढ़ने की कोशिश ही करते थे।

इस शिक्षा को ग़लत समझ लेने की गुञ्जाइश नहीं थी। कोई वैकल्पिक, राजनीतिक अथवा सामाजिक प्रबन्ध नहीं पेश किये गए। शिक्षा का एक-मात्र उद्देश्य मार्क्सवादी क्रान्ति का पाठ पढ़ाना था। हम यह सुनकर किसी भ्रान्ति में नहीं पड़ सकते थे कि शान्त और गुप्त मतदान के तरीके पर्याप्त नहीं हैं; कि कानूनी तरीकों से सुधारों में मनुष्य की सहानुभूति नहीं रहती; कि केवल सशस्त्र शक्ति ही एकमात्र साधन है।

वर्षों के मार्क्सवादी प्रशिक्षण से हम यह सब-कुछ अच्छी तरह जानते थे। मैं जानता था। और फिर भी, जब फैनी हार्टमैन ने भेद का परदा उतारकर स्पष्ट भाषा में यह सब-कुछ कहा तो यह एक ऐसा धक्का-सा मुझे

लगा कि मेरी उँगलियों से पेन्सिल खिसक गई और मैं नोट लिखना भी भूल गया।

"एक बार जब हम यह शिक्षा दे लें कि यह सब-कुछ नितान्त स्वाभाविक है," फैनी बोली, "कि यही सब-कुछ अपेक्षित है, तो हम अपनी स्थिति स्पष्ट करने की स्थिति में हो जाते हैं। लेकिन 'क्रान्ति' की क्या व्याख्या करनी होगी? क्या इसका अभिप्राय कुछ-कुछ औद्योगिक क्रान्ति-सा है? नहीं। हमारा मतलब उस हिंस्र क्रान्ति से है जो मज़दूरों के सशस्त्र जत्थे, मजदूर-वर्ग की अगुआ कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में करेंगे। केवल ऐसी क्रान्ति के माध्यम से ही समाजवाद की स्थापना हो सकती है। ऐसी क्रान्ति तभी सफल हो सकती है जब कि कम्युसिस्ट पार्टी ने इसका नेतृत्व किया हो।"

जब उसने बोलना बन्द किया, तो कमरे में सन्नाटा छा गया। किसी का पाँव तक न हिला। यह तो प्रत्यक्ष रूप में राजद्रोह था; मैंने पार्टी की मन्त्रणाओं में इससे पहले इतनी स्पष्टता से इसके विषय में कभी नहीं सुना था। ब्यूरो के लिए अपनी रिपोर्ट लिखते वक्त और उसके शब्दों को कागज पर लिखते वक्त मुझमें उत्तेजना की लहर दौड़ गई। इस रिपोर्ट में केवल तथ्यों की सूचना देते हुए जो बात मैंने कभी नहीं की वह अपनी इस व्याख्या का उल्लेख करके की—"अब किसी प्रकार की छिपावट नहीं रही।" मैंने लिखा, "आज बिना किसी छल-बल के बोल्शेविकों की नीति का अनुसरण होने लगा है।"

एक रात को शिक्षक की कुरसी पर एक कृष्ण वर्ण का अपरिचित व्यक्ति आकर बैठा। जमात का उससे परिचय नहीं कराया गया। वह थोड़ी ही देर वहाँ रहा और जमात के सामने उसने थोड़े शब्द ही कहे। परन्तु शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि उसकी कोमल आवाज के पीछे राष्ट्रीय पोलितब्यूरो (केन्द्रीय समिति) की शक्ति थी। उसने पार्टी के पुनरायोजन, पार्टी के प्रत्येक अंश में कड़ी मार्क्सवादी नीति के पुनर्स्थापन और बूर्जुआ प्रभावों के विरुद्ध फिर से संघर्ष छेड़ने के सम्बन्ध में बातें कीं।

"साथियो," उसने अन्त में कहा, "युद्ध के परिणामस्वरूप विश्वव्यापी दो समाज-प्रणालियों के बीच के समाजवाद और पूँजीवाद के अन्तर्विरोध स्पष्टतर और तीव्रतर हो गए हैं। इस देश में फासिज़्म की तीव्र प्रगति और वर्ग-संघर्ष की स्थापना शीघ्र ही हो जायगी जो अन्ततः समाजवाद की स्थापना में सहायक होगी। कार्यक्रम के तात्कालीन नारे के रूप में क्रान्ति के प्रश्न को उठाने की बात पार्टी अभी नहीं सोच रही। हमें पहले अमरीकन सर्व-हारावर्ग के अगुआ और नेतृत्व के पद को सुसंगठित करना होगा।

"ब्रौडर की संशोधनवादी नीति के कारण आज हममें कोमलता आ गई है। इससे विशेष जाँच-पड़ताल और आन्तरिक-बाह्य जागरूकता की जरूरत बन आई है। बाह्य रूप में 'लालवाद' पर हो रहे आक्रमणों से लड़ने की आवश्यकता है। आन्तरिक रूप में पार्टी के संगठन और सदस्यों की रक्षा के लिए विशेष कदम उठाने होंगे। शत्रु के एजेण्टों के साथ हमें निर्ममता से बरतना है। आपको," उसने कहा, और उसकी आँखें कमरे में चारों ओर घूमीं और हर किसी पर पड़ीं, "इस कर्तव्य में विशेष उत्तर-दायित्व उठाना है।"

मेरा 'विशेष उत्तरदायित्व' मुझे शीघ्र ही स्पष्ट हो गया। जमात की बैठक ख़त्म होने पर एक दिन फैनी हार्टमैन ने मुझे दरवाजे पर रोका और एक तरफ़ ले गई।

"एक नये दल की विशेष बैठक शनिवार की दोपहर को दफ्तर में होगी", उसने मुझे इतने धीमे से कहा कि दूसरे न सुन सकें। "दो बजे वहाँ उपस्थित रहना, भूलना नहीं।"

इस शनिवार की सुबह मैंने पिछला काम समाप्त करते हुए एम० एण्ड पी० थियेटर्स के दफ्तर में गुजारी। फिर खाना खाकर मैं जिला के मुख्य दफ्तर की ओर गया; लिफ्ट से छठी मंजिल पर उतरा, सीढ़ियों से पैदल पाँचवी मंजिल की ओर उतरा और कम्युनिस्ट पार्टी के दफ्तर में घुस गया।

यह बैठक फैनी हार्टमैन के व्यक्तिगत कमरे में हुई। लेकिन यह देख कर मुझे हैरानी हुई कि वहाँ फैनी हार्टमैन उपस्थित नहीं थी। कमरे में

जस्टिन ओ'कॉनर और ओटिस हुड—एक बौने कद का और दूसरा भारी-भरकम बदन का क्रूर-दरशी व्यक्ति—जिन दोनों से ही मैं परिचित नहीं था, मौजूद थे। कुछ दिन बाद इस दल में छरहरे शरीर का और तीक्ष्ण-बुद्धि डेनियल बून शर्मर भी शामिल हुआ। परन्तु इस पहली बैठक में किसीका किसी से किसी कद्र परिचय नहीं कराया गया। भारी जिस्म का व्यक्ति फैनी हार्टमैन की कुरसी पर बैठा था और उसके काम को भी खुद ही सँभाल रहा था। वह फैनी की अपेक्षा स्पष्ट शब्दों में, और ऊँची, निश्चयात्मक आवाज में बातें कर रहा था। वह एकाएक रुखाई से आदेश भी देता चलता था। अपने कई वक्तव्य उसने ऐसे प्रश्नों के रूप में रखे जिनके उत्तर देने की जरूरत नहीं थी।

छः कम्युनिस्टों का यह दल आपस में न्यू इंग्लैंड का 'जैकस्टेकल का दल' नाम से पुकारा जाता था। वैसे इसका औपचारिक नाम कम्युनिस्ट पार्टी का जिला एजुकेशन कमीशन (शिक्षा-समिति) था जो कि राष्ट्रीय शिक्षा-संचालक जैक स्टेकल के व्यक्तिगत नियन्त्रण में काम कर रहा था। लेकिन उससे हमारी भेंट कम ही होती थी।

जैक स्टेकल के नाम से हरेक व्यक्ति परिचित था और उसके प्रति भय-मिश्रित सम्मान के भाव रखता था। पार्टी के प्रमुख कार्यकर्ताओं के बारे में जो अर्द्ध स्पष्ट परिचय दिया जाता था, उसकी दृष्टि में वह प्रत्यक्ष की बजाय परोक्ष रूप में ही अपने अधिकार का प्रयोग करता था। मेरा यह अनुमान था कि बहुत कम कामरेड उससे भेंट कर सकते थे। स्टेकल, जो उस समय लगभग ४५ वर्ष का था, जिसके उपनाम जेंकल, नेकब, जुंसर और मोजिज ब्रौन भी थे, अपनी वयस्कावस्था में सदा से व्यावसायिक क्रान्तिकारी रहा था। कुछ ही समय पहले उसे राष्ट्रीय शिक्षा-संचालक बना दिया गया था और १९४९ में उस पर कम्युनिस्ट पार्टी का, कम्युनिस्टों के १२ उच्चतम अधिकारियों में से एक होने का अभियोग लगाया गया था।

स्थूलकाय जिस व्यक्ति ने इस दल का संचालन आरम्भ में किया, उसका नाम इमैन्युअल अथवा 'मैत्री' ब्लम था; न्यूयार्क में शिक्षित इस

कम्युनिस्ट को राष्ट्र के केन्द्रीय दफ्तर ने जिला-संगठक के रूप में फैनी हार्टमैन की जगह लेने के लिए न्यू इंग्लैण्ड भेजा था। फैनी और राष्ट्रीय समिति के बीच नीति-विषयक भेद थे जिनका कभी स्पष्टीकरण नहीं किया गया। न्यू इंग्लैण्ड की पार्टी के लिए दुर्भाग्य का दिन था जब कि दर्पपूर्ण और ऐंठीले मैत्री ब्लम को तीव्र-बुद्धि और पटु फैनी हार्टमैन का स्थान लेने के लिए भेजा गया। परन्तु वह उसकी जगह पर आ ही गया; और जैक स्टेकल के दल का संयोजन और प्रशिक्षण जिला की सत्ता से फैनी हार्टमैन को धकेलने की ओर पहला कदम था।

दल के सदस्यों का एक-दूसरे से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था, इसके अलावा कि जब वे सामयिक रिपोर्टों के लिए एकत्रित होते थे। पार्टी राजनीतिक कार्य-कलाप-सम्बन्धी जिन विभागों में बँटी हुई थी, उनमें हमें नियुक्त किया गया। मैसेच्यूसेट्स का आठवाँ समितिक जिले का प्रदेश मेरे अधिकार में था। हमें अपने प्रदेश की सब शाखाओं और गोष्ठियों में शिक्षण और साहित्यिक संचालकों के रूप में उनका चक्कर लगाने में, बातचीत करने में, समझाने में, निरन्तर घूमने में और जाँच करने में व्यस्त रहना पड़ता था। जाँच-सम्बन्धी नीति का निर्देशन हमें मैत्री ब्लम करता था।

"बुडेंज़-जैसे व्यक्तियों की हमें चिन्ता नहीं है। क्या अपनी ग़द्दारी से वह खुद ही बदनाम नहीं हो चुका है? बुडेंज़ अब किस अर्थ का रहा है? शायद हम अब भी कितने ही बुडेंजों को पार्टी में ले रहे हों। हमें इस प्रश्न पर अक्ल से सोच-विचार करना चाहिए।"

"हरेक ग़द्दार", मैत्री ने अपना कहना जारी रखा, "अपनी योजना में सफल नहीं हो पाता। आखिरकार यह काम है भी तो बहुत कठिन। स्वाभाविक है कि अपनी पार्टी और सदस्यों की रक्षा के लिए हम उनकी नाक में दम कर दें। इन परिस्थितियों में क्या यह असम्भव होगा कि वे आत्मघात कर लें? अथवा क्या ऐसी अन्य परिस्थितियाँ नहीं पैदा की जा सकतीं जिनसे अपनी स्थिति पर पुनर्विचार के लिए उन्हें मजबूर किया जा

सके ? हमें इस तथ्य से अवगत रहना चाहिए कि कुछ लोगों को बूर्जुआ प्रभाव कमजोर कर देते हैं। यह हमारा....आपका....कर्तव्य है कि इन लोगों को ढूँढ़ निकालें, इन्हें पहचानें, उखाड़ फेंकें, बाहर कर दें और उनका नाश कर दें।"

स्पष्ट शब्दों में मैत्री हमें पार्टी-सदस्यों पर जासूसी करने का काम सौंप रहा था। इस नये कर्तव्य के विषय में मैं देर तक सोचता रहा। मेरे लिए जिन्दगी भारी उलझन बनती जा रही थी। एक ओर तो मैं रूढ़ि-पंथी व्यवसायी था, नियमित रूप से गिरजाघर जाने वाला, उदारवादी रिपब्लिकन, नागरिक कर्तव्यों में हाथ बँटाने वाला। दूसरे, मैं न्यू इंग्लैण्ड की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य, इसके विभिन्न षड्यन्त्रों में हिस्सा ले रहा था। इन दो रूपों के अलावा मैं फेडरल ब्यूरो आफ़ इनवस्टिगेशन का विश्वस्त एजेंट, राष्ट्रीय सेवा करने को उत्सुक एक व्यक्ति था। इन तीन मुख्य भेदों में मेरी जिन्दगी के कितने ही उपभेद थे जिनकी थाह मैं स्वयं न रख पा रहा था।

"एन्थनी एम० रोचे हमारा प्रतिनिधि होगा।"

१९४५ के अन्तिम दिनों में मैसेच्यूसेट्स की माल्डन शाखा की कम्युनिस्ट गोष्ठी में गहरी गोपनीयता में कहे गए ये शब्द मेरे प्रति इस बात की मौखिक साक्षी के बराबर थे कि कम्युनिस्ट पार्टी ने राजनीतिक नैतिकता का सम्पूर्ण परित्याग कर दिया है और इसके स्थान पर राजनीतिक प्रवंचना की ओढ़नी ले रखी है।

१९४६ के एक उपचुनाव में एंथनी रोचे मैसेच्यूसेट्स के आठवें समितिक जिले की ओर से कांग्रेस की सदस्यता के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी का प्रतिनिधि था। रोचे-सम्बन्धी आन्दोलन इस बात का उदाहरण है कि स्थानीय स्तर पर एक कम्युनिस्ट उम्मीदवार से, एक कम्युनिस्ट-विरोधी समाज में क्या-कुछ किया जा सकता है जब कि कुछ इने-गिने पक्के

कम्युनिस्ट उसे कम्युनिस्ट-पक्षी प्रचार का साधन बनाने के इच्छुक हों। जब मैसेच्यूसेट्स की माल्डन-स्थित कम्युनिस्ट पार्टी की शाखा उसका समर्थन करने के लिए आन्दोलन में उतर आई तो उसकी स्वीकृति की अपेक्षा नहीं की गई। उसे इस समर्थन की खबर भी नहीं दी गई। उसे यह भी मालूम नहीं पड़ा कि 'अन्तर्विरोधों को तीव्रतर' करने के लिए आज से बहुत पहले सोच-विचार के बाद उसे चुन लिया गया था। कम्युनिस्टों के प्रति रोचे को ज़रा भी सहानुभूति नहीं थी। वह संगठित श्रमी-वर्ग का उदारवादी प्रतिनिधि, पक्का कम्युनिस्ट-विरोधी, पार्टी के जाल से बचने के लिए बहुत चालाक और होशियार था। उसकी होशियारी और कम्युनिस्टों के प्रति शत्रुता के भावों के बावजूद भी वह उन चालाकियों से उनका साधन-सा बन गया जो अमरीका में राजनीतिक उमीदवारों पर बरती जा सकती हैं, और बरती गईं। रोचे डेमोक्रेटिक उम्मीदवार था। परन्तु ब्रौडर-युग से पहले और बाद के राजनीतिक क्षेत्र में कम्युनिस्टों के लक्ष्यों की दृष्टि में रिपब्लिकन पार्टी का भी कोई उम्मीदवार कम्युनिस्टों की धोखादेही का इसी प्रकार शिकार हो सकता था। राजनीतिक नैतिकता का इनके लिए कोई अस्तित्व नहीं है। कम्युनिस्ट पार्टी कई रंग बदल सकती है।

१९४६ के रोचे से सम्बन्धित आन्दोलन में मैं भी माल्डन के उन पाँच कम्युनिस्टों में से एक था जिसने आरम्भ से ही उसमें भाग लिया। जिला के अन्य कम्युनिस्टों के साथ कमरों में छिपकर हमने इस षड्यन्त्र की योजना बनाई जिससे रोचे और उसके सलाहकारों के लिए उनकी कम्युनिस्ट-विरोधी भावनाओं के विरुद्ध इस आन्दोलन को अपने हाथों में ले लेना कठिन हो गया। कुछ मौलिक धारणाओं को छोड़कर हमें इसकी परवाह न थी कि रोचे के राजनीतिक मतामत क्या हैं। उसका समर्थन हम उसके कम्युनिस्ट-विरोधी विचारों के बावजूद, बल्कि उन्हीं के कारण कर रहे थे। हमें इसकी चिन्ता नहीं थी कि वह जीतेगा या नहीं; हमें तो उसके हारने की ही आशा थी। हमें तो उसके पक्ष के प्रचार-आन्दोलन में पार्टी का पाँव जमाना था।

योजना-समिति ने रोचे-प्रसंग का उत्साह से स्वागत नहीं किया, लेकिन अब तो विकल्प की गुंजाइश न थी। जिला दफ़्तर की स्वीकृति लेकर हम ने आन्दोलन में जूझे रहने का निश्चय किया। एंथनी रोचे को इसका पता न था, लेकिन उसके कुछ ऐसे दोस्त पैदा हो गए थे जिनके बारे में कुछ पहले के लोगों के समान वह भी कह सकता था—"खुदा मुझे मेरे दोस्तों से बचाए; मैं दुश्मनों से तो स्वयं निपट लूँगा।"

लेकिन इस बारे में यदि हमें स्वयं ही सन्देह थे तो रोचे को तो कहीं अधिक अनिश्चय था। पहले तो वह अलग, कटा-सा रहा। मिसाल के तौर पर संगठित श्रमीवर्ग के एक हिस्से का वह तब तक समर्थन न चाहता था जब तक कि उसे दूसरे हिस्सों का समर्थन न मिले। इस पर इस विचार से कि हम समस्त श्रमीवर्ग को इस प्रश्न पर एकसूत्र में बाँध सकेंगे; हमने 'रोचे के लिए स्वतन्त्र मतदाता' नाम की एक काल्पनिक संस्था कायम कर दी। जिन लोगों ने सार्वजनिक रूप से उसका समर्थन किया, उनमें पार्टी की योजना की अनुमति से सी० आई० ओ० युनाइटिड इलेक्ट्रिकल वर्कर्स का सदस्य नैट मिल्ज, ए० एफ० एल० का पाल आर० इमर्सन, जो तरखानी के पेशे का था, यूनियन का एक स्वतन्त्र सदस्य नथान स्मिथ, और फेयर एम्प्लायमेंट प्रैक्टिसिज लेजिस्लेशन की मेलरोज समिति का सदस्य फ्रैंकलिन पी० कॉलियर प्रमुख थे। हमने इस स्थिति को स्पष्ट करने पर विशेष जोर दिया कि इन संस्थाओं का नाम केवल समर्थकों के परिचय के लिए दिया जा रहा है; इसका अर्थ यह नहीं है कि ये व्यक्ति इन संस्थाओं के प्रतिनिधियों के रूप में समर्थन दे रहे हैं।

उसके साथ अपने सम्पर्क को घनिष्ठतर करने का पहला अवसर चुनाव के आरम्भिक दिनों में हमें मिला। पार्टी के सदस्यों और हितैषियों को हमने जिले में सैकड़ों पत्र भेजे जिन्होंने इस पर 'रोचे को वोट दो' का भारी आन्दोलन चला दिया। अपने विरोधी से एक के अनुपात में दो मतों के फ़र्क से उस ने डेमोक्रेटिक पार्टी का प्रतिनिधित्व जीत लिया।

इस आरम्भिक जीत के कारण कुछ सीमा तक रोचे का विश्वास पाकर

हम कम्युनिस्टों की प्रचार की मशीन में तेज़ी ले आए। मेरा लक्ष्य अपने काम से रोचे का प्रचार-प्रतिनिधि बन जाने का और उसके पक्ष में प्रसार के साहित्य और सूचनाओं को तैयार करने का था यद्यपि उसे नहीं पता चलना था, मैंने ही उसके लिए उसकी नीतियों का निर्देश करना था और उन्हें उसके नाम से जनता में फैलाना था; आवश्यकता होने पर उसकी पीठ पीछे भी। लेकिन जब तक उचित समय न हुआ, मुझे पीछे रखा गया। हमने हर उस कदम की पूर्व योजना बनाई जिससे मैं उसके दफ़्तर में घुस सकूँ। मैंने पहले दो पृष्ठ इस प्रचार-सम्बन्धी सुझावों के टाइप किये। इनमें प्रमुख सुझाव यह था कि रोचे को अपने साथ एक ऐसा व्यक्ति अवश्य रखना चाहिए जो प्रचार-कार्य में, जन-सम्पर्क अथवा समाचार-पत्रों के कार्य में सुशिक्षित हो ताकि चुनाव-आन्दोलन का भार उस पर डाला जा सके। यह सुझाव-पत्र, बिना किसी के हस्ताक्षरों के उसकी पार्टी के प्रतिनिधियों तक पहुँचा दिया गया और उन्होंने इसे रोचे को दे दिया और उसे ऐसा जान पड़ा कि उसके ही प्रतिनिधियों ने ये सुझाव प्रस्तुत किये हैं।

हमने उसे इस सुझाव-पत्र पर सोचने का समय तो दिया लेकिन इस बारे में कोई स्वतन्त्र कदम उठाने का नहीं। यही मेरी चाल थी। परन्तु इसके पहले कि मैं रोचे के पास जाऊँ, मुझे फैनी हार्टमैन से एक आदेश बड़ी शुष्कता से मिला।

"क्या पार्टी की सदस्यता का कार्ड अब भी आपके पास है?" उसने पूछा।

"हाँ, नया ही कार्ड है।"

"इस बात का खतरा नमोल लीजिए कि वह इसे देख ले। इसे नष्ट कर दीजिए। इसे फाड़ फेंकिए, अथवा बेहतर है कि इसे जला ही दीजिए।"

मैंने इसे सुरक्षित रखने के लिए एफ० बी० आई० के पास पहुँचा दिया।

रोचे को मेरा नाम और योग्यताओं के विषय में कहा गया और पाल इमर्सन तथा नैट मिल्ज मुझे उसके दफ़्तर में लिवा ले गए।

"हर्ब फिल्ब्रिक को मिलिए," पाल ने कहा। "आपके चुनाव-आन्दोलन

२५—१०

में इन्हें दिलचस्पी है।"

"तो आप ही प्रचार-व्यवसाय में हैं," रोचे ने अपनी भूरी आँखें मेरी ओर घुमाते हुए कहा। मंझले कद के उस व्यक्ति का चेहरा आकर्षक और खुरदरा-सा था; उसके व्यक्तित्व से ट्वीड, पाइप और बीयर के मग की-सी झलक मिलती थी—जैसे आरामकुरसी पर एक मेहनती इन्सान झुका हुआ हो। मैंने स्वीकृति में सिर हिलाया। "बहुत खूब। आप जैसे व्यक्ति की ही हम तलाश कर रहे थे। बैठिए।"

मैंने बैठने के लिए एक कुरसी उसकी जीर्ण-शीर्ण मेज़ के पास खींच ली। "आपके चुनाव-आन्दोलन के मञ्च को मैं पसन्द करता हूँ," मैंने कहा। "आपके जिले के जैसे प्रतिनिधि का मैं खयाल करता रहा हूँ, यह उसी प्रकार का है।" मेरे साथ ही मेज़ के सामने बैठे फ्रैंक कॉलियर की तरफ़ मैंने देखा जिसकी भावहीन आँखें मुझ पर टिकी हुई थीं। सविशेष ढंग से नैट मिल्ज़ पिछले दरवाज़े पर झुका हुआ खड़ा था। फ्रैंक और नैट मुझ से पार्टी के प्रति अपना कर्तव्य निभाने की अपेक्षा कर रहे थे। यह एंथनी रोचे के प्रति अन्याय था और मैं इसमें हिस्सा नहीं लेना चाहता था। लेकिन मेरे मन में रोचे के प्रति जो आकर्षण पहली भेंट में ही पैदा हो गया था, उसके बावजूद अब पीछे हटने का अथवा लड़खड़ाने का अवसर न था। हैल लियरी ने मुझे बल देकर कहा था "एंथनी रोचे के विषय में हमें किसी जानकारी में दिलचस्पी नहीं है। परन्तु ब्यूरो को इस विषय में बहुत दिलचस्पी है कि कम्युनिस्ट पार्टी रोचे के चुनाव को किस प्रकार बरत रही है।"

रोचे ने मुझसे जानना चाहा कि उसके चुनाव-आन्दोलन का कौनसा पहलू मुझे विशेष प्रिय है। मैंने उत्तर दिया, "मेरा विचार है कि आपकी सर्वसाधारण में सच्ची दिलचस्पी और सहानुभूति है।" मैंने उसके पक्ष में बँटे हुए एक परचे को उठाया। "इसी वाक्य को देखिए, 'कर-सम्बन्धी अधिक न्यायपूर्ण कानून'। इससे आपका अभिप्राय मैं यह समझता हूँ कि कम आमदनी वाले व्यक्ति के लिए करों का भारी बोझ कम कर दिया जाना चाहिए, और मोटी आमदनी के बड़े-बड़े व्यापार-धन्धों पर लगा देना

चाहिए। मैं पूर्णतया इसके पक्ष में हूँ, और समझता हूँ कि मतदाता भी सब इसके पक्ष में होंगे। युद्ध का असीम खर्चा बड़ी-बड़ी औद्योगिक इकाइयों, एकाधिकारों और अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी के स्वामियों से, जिन्होंने युद्ध में मोटे-मोटे मुनाफ़े जमा किये हैं, लेना चाहिए। मजदूर-वर्ग की छोटी तनख्वाहों पर टैक्स लगाकर पाँच-पाँच, दस-दस डालर जमा करके यह इकट्ठा नहीं किया जा सकता।"

"एक प्रकार से, मेरा यही अभिप्राय है," रोचे ने बीच में ही बोलते हुए कहा, लेकिन उसकी बाधा को हटाने की कोशिश करते हुए मैंने फिर कहा।

"आवश्यक यह है कि यह बात आपको स्पष्टता से घोषित करनी चाहिए। लोग यह जानने को उत्सुक रहते हैं कि आपका वास्तविक अभिप्राय क्या है। नौकरी-सम्बन्धी विविध प्रश्नों पर आप अपना मत स्थिर कीजिए। केवल यह कहना ही पर्याप्त नहीं है कि आप एफ़० ई० पी० सी० का समर्थन करते हैं। जाति, वर्ण अथवा धर्म पर आश्रित भेदों की रोकथाम के लिए सख्त कानून के पक्ष में आप आवाज़ उठाइये। हब्शियों की सार्वजनिक नृशंस हत्या के विरुद्ध कानून बनाने पर बल दीजिये। निश्चित दृढ़ मतों का समर्थन ही आपके लिए लाभप्रद होगा।"

जान पड़ा कि रोचे कुछ हिचकिचा रहा है; मैंने परिस्थिति को आसान करने के उद्देश्य से अब कहा, "मैं स्वयं एक व्यापारी हूँ, और कोई बात ऐसी नहीं चाहता जिससे व्यापार का गला घुटे। वास्तव में रिपब्लिकन समर्थक के रूप में मेरा नाम अंकित है—एक सुधारवादी रिपब्लिकन, परन्तु अपने जिले में मुझे डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर झुकना पड़ रहा है।"

"अच्छा," रोचे ने कहा, "आप प्रचार-कार्य में निपुण हैं और जानते हैं कि इन कामों को किस प्रकार किया जाता है। मैं आपका कृतज्ञ हूँगा यदि आप इन बातों को मेरे प्रचार-कार्य के लिए लिख दें। मेरे पास तो सारे काम को खुद करने का समय नहीं है।"

यही कुछ सुनने की हम प्रतीक्षा कर रहे थे : हमारे पार्टी के कामरेड इससे बहुत प्रसन्न हुए। तब से रोचे के चुनाव-आन्दोलन में स्वच्छन्दता से

अपना कार्य करने का अधिकार मैंने पा लिया।

१९४६ और १९४८ के बीच कम्युनिस्ट पार्टी के सामने सबसे बड़ा राजनीतिक प्रश्न अमरीका के आर्थिक संकट से सम्बन्धित था, जो कि पार्टी का विचार था कि अवश्य प्रस्तुत होगा और जिसे हर सम्भव तरीके से वह बढ़ाना चाहती थी। इस आर्थिक संकट का मुख्य लक्षण मुद्रा की स्फीति से प्रकट होना था और वृद्धि व्यापक मन्दी में, जब कि राष्ट्र युद्ध-काल की अर्थ-व्यवस्था से शांति-काल की अर्थ-व्यवस्था को लौटने के लिए संघर्षरत होगा। पार्टी प्रतीक्षा कर रही थी कि यह मन्दी १९४८ के अन्तिम तीन महीनों तक अवश्य पैदा हो जायगी। १९२९ के अनायास उथल-पुथल से यह कहीं भयकर होगी और इस प्रकार पार्टी के लक्ष्यों को आगे बढाएगी। समाजवादी क्रान्ति के लिए इससे बेहतर अवसर प्राप्त न हो सकेगा। कम्युनिस्ट इस ओर विश्वस्त थे कि इस क्रान्ति का अगला क़दम ताकत का उनके हाथों में आ जाने का होगा।

एन्थनी रोचे सुधारवादी व्यक्ति था और ओ०पी०ए० के मूल्य-निर्धारण के प्रयत्नों का पक्षपाती। मूल्य-निर्धारण की आवश्यकता को वह समझता था परन्तु वह इनकी अवधि और इनके प्रभाव पर निरन्तर अंकुश रखना चाहता था। वह इस प्रकार के अस्थायी कण्ट्रोल के पक्ष में था जिसे स्थिति सुधरने के साथ ही ढीला कर दिया जाय। इस बात पर अपनी पार्टी की स्पष्ट नीति से उसका खुला मतभेद था जो स्थायी और बहुविध कण्ट्रोलों का समर्थन कर रही थी।

इस प्रश्न पर रोचे की स्थिति को हमने मजबूत करने की कोशिश की। डालर को कमाने वाले और डालर को खर्चने वाले के बीच इस प्रकार भेद की खाई खोदी जा रही थी। इस प्रकार के प्रश्नों को जनता खूब समझ सकती थी। परन्तु रोचे अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहा, और कुछ समय के लिए हमारे दरशाये हुए रास्ते पर नहीं बढ़ा।

तब एक दिन धरना देने वालों की एक क्रुद्ध पंक्ति, जिसमें छपे हुए नारों के पोस्टर उठाये हुए गृहिणियाँ, जिनमें से बहुत-सी बच्चा-गाड़ियाँ भी

धकेल रही थीं, माल्डन स्क्वेयर में आ जमा हुईं और परेड करने लगीं। वे ऊँचे स्वर से नारे लगा रही थीं। कीमतों को और किरायों को निश्चित करने के कठोर कानूनों की वे माँग कर रही थीं। 'लालची मालिक मकानों' के विरुद्ध वे अवहेलनापूर्ण फब्तियाँ कस रही थीं और बड़े-बड़े व्यवसायियों के 'बढ़े हुए मुनाफ़ों' के विरुद्ध चीख-पुकार कर रही थीं। उनका जुलूस ठीक रोचे के दफ़्तर के नीचे से गुज़रा। चुनाव में खड़े हुए प्रतिनिधि ने जब जनता की इस भावना का यह प्रदर्शन देखा, तो उसे स्वीकार कर लिया।

"इस प्रश्न पर जनता सच ही उत्तेजित है, है न?" उसने सोचा।

उसके पास के सलाहकारों ने—जो छिपे हुए कम्युनिस्ट थे—इस अवसर को तुरन्त हथिया लिया। "कितनी बुरी बात है कि ये 'रोचे को कांग्रेस में भेजो' की तख्तियों को नहीं उठाये हुए हैं," किसी ने कहा।

"यदि हम उन्हें यह स्पष्ट शब्दों में जानने दें कि मूल्य-निर्धारण की नीति के विषय में रोचे का पक्ष क्या है, तो शायद वे इन तख्तियों को भी उठा लें," दूसरे ने कहा।

ओ०पी०ए०-विषयक एक दृढ़तर वक्तव्य रोचे के स्फीति-विरोधी पक्ष में निकाला गया, और उसके दफ़्तर में पार्टी के प्रचारक मतभेद को गहरा करने में जुट गए।

रोचे को यह नहीं मालूम था कि धरना देने वालों के जुलूस की योजना पार्टी की योजना-समिति ने ही बनाई थी। पार्टी की स्त्री-सदस्यों को आदेश मिला था कि वे माल्डन की गृहिणियों को इकट्ठा कर लाएँ और खरीदारों की हड़ताल का प्रबन्ध करें। इस गुप्त समिति में हमने उठाए जाने वाले नारों को तैयार किया और तख्तियों पर छापा। इस प्रदर्शन के समय और जुलूस के रास्ते का हमीं ने निश्चय किया, ताकि रोचे के दफ़्तर के आसपास और सामने ठीक वक्त पर प्रदर्शनकारी जमा हों, और रोचे के दफ्तर में पार्टी के कार्यकर्ता इस घटना से लाभ उठाने के लिए तैयार खड़े हों।

आधी दर्जन के करीब कम्युनिस्टों ने, जो अब तक रोचे के दफ्तर और

विश्वास में घुस आ चुके थे, मूल्य-निर्धारण के प्रश्न का टेलीफ़ोन, डाक और व्यक्तिगत सम्पर्क के माध्यम से लाभ उठाना शुरू किया। इस आन्दोलन ने एक निश्चित रूप धारण कर लिया। रोचे के दफ्तर में पार्टी के कार्यकर्त्ता लाभ के किसी छोटे-से अवसर को भी हाथ से न जाने देते थे। रोचे के चुनाव-सम्बन्धी आन्दोलन की बहुत-सी समस्याएँ कम्युनिस्टों का अथवा कम्युनिस्टों के वश की दूसरी संस्थाओं का साधन-मात्र बन गईं। उसके आन्दोलन का अपना मुखिया कई अवसरों पर सफलता से उपेक्षित किया जाने लगा। नागरिकों की राजनीतिक सक्रियता-समिति का समर्थन उसके समर्थन में निर्दिष्ट कर दिया गया, और इस उद्देश्य से कि इस प्रकार के कई गहरे सम्बन्ध उसमें किसी प्रकार का सन्देह न जगा सकें, उसके आन्दोलन के दो प्रमुख समर्थकों—फ्रैंक कॉलियर और पॉल इमर्सन—को राजनीतिक सक्रियता-समिति से स्तीफ़ा देने का आदेश दिया गया। रोचे के आन्दोलन में इस समिति द्वारा प्रचारित साहित्य को, जो बहुत-सी दशाओं में शुद्ध कम्युनिस्ट प्रचार ही था, फैलाने का हमें नया माध्यम मिला। मैंने स्वयं बड़ी संख्या में इस साहित्य को रोचे के दफ्तर में पहुँचाया, और प्रसङ्गवश इस सब साहित्य को कम्युनिस्ट पार्टी के प्रचार-माध्यम, प्रोग्रेसिव बुकशॉप से लिया गया, यद्यपि इस साहित्य पर प्रकाशक के नाते नागरिकों की राजनीतिक सक्रियता-समिति की छाप छपी हुई थी।

इस आन्दोलन के प्रचार का जिन लोगों पर प्रभाव पड़ा, उनमें से कुछेक अन्ततः कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता की ओर झुक आए, और इस चुनाव का एक महत्त्वपूर्ण यह पहलू भी था। हमने रोचे के चुनाव-आन्दोलन को नये-नये सदस्य फँसाने का, 'डेली वर्कर' के ग्राहक बनाने का और पार्टी की नीति और व्यवहार में सक्रिय शिक्षा पाने का साधन बनाया। एक नये सदस्य ने तो यह प्रस्ताव तक रखा कि यह घोषणा सार्वजनिक रूप से कर देनी चाहिए कि कम्युनिस्ट पार्टी रोचे का समर्थन कर रही है।

"परन्तु कम्युनिस्ट पार्टी रोचे को समर्थन नहीं दे रही है", उसे झिड़ककर कहा गया, लेकिन उस रंगरूट को यह भेद समझने में बहुत

कठिनाई हुई !

जब रोचे से कोई और लाभ उठाना सम्भव न रहा, तो हमने उससे उसी निर्भाव से सम्बन्ध तोड़ लिया जिस निर्भाव से सम्बन्ध जोड़ा था। चुनाव के दिन से भी पहले हमने अपना बोरिया-बिस्तर उठाना शुरू कर दिया। चुनाव की रात को उसके दफ़्तर का प्रायः हर कम्युनिस्ट सदस्य वहाँ से जा चुका था और जब भारी मत-संख्या से उसकी हार की खबर आई तो हममें से उसे सान्त्वना देने वाला कोई भी वहाँ मौजूद न था। चुनाव के अड्डों पर भी हममें से कोई हाज़िर नहीं था। कांग्रेस के सम्भावित सदस्य के रूप में एन्थनी रोचे में हमें कोई स्थायी दिलचस्पी न थी। हम जानते थे कि हम उसे कभी अपने वश में न रख सकेंगे। स्पष्ट था कि कम्युनिस्ट पार्टी के हस्तक्षेप से रोचे को लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक हुई थी। उसे केवल ४२,००० मत ही मिले। अगली बार वह 'प्रगतिवादियों' के समर्थन के बिना चुनाव लड़ा और कम्युनिस्ट पार्टी की दस्तन्दाज़ी के न होने से उसने ७०,००० से अधिक मत प्राप्त किये और बहुत थोड़े मतों के भेद से हारा।

एक दिन, जब कि पार्टी के दफ़्तर में मेरे और शर्मर के अतिरिक्त कोई दूसरा उपस्थित न था, उसने जेब से एक हाथ का लिखा, मसला हुआ कागज निकाला।

"मुझे इस फ़ार्म की पचास प्रतियाँ चाहिएँ," उसने कहा। "एक स्टेंसिल निकालो और अभी यह काम कर दो। मैं भी तुम्हारी मदद करूँगा।"

मैंने टाइपराइटर पर एक स्टेंसिल चढ़ाया और काम में जुट गया। फ़ार्म पर कोई शीर्षक नहीं दिया हुआ था। जान पड़ता था कि पार्टी के सदस्यों के बारे में व्यक्तिगत पूछताछ के सम्बन्ध का यह फ़ार्म था, और इसमें लिखा था: "नाम····पता····शाखा अथवा गोष्ठी····पार्टी की सदस्यता कब से है····शिक्षा····विशेष ट्रेनिंग····यूनियन का सदस्य है ?····किस यूनियन का········?" लेकिन जैसे-जैसे मेरी आँख इस फ़ार्म की सामग्री को आगे

पढ़ती गई, मुझे जान पड़ने लगा कि साधारण पूछताछ से इसमें कुछ अधिक भेद भरा है। क्रमशः इसके प्रश्नों की गहराई बढ़ने लगी। "यूनियन के सदस्यों की संख्या····कारखाने में काम करने वालों की संख्या····यूनियन के अफ़सरों के नाम····कारखाने में कितना प्रभाव है····कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों की संख्या····।" इसके बाद जाँच-पड़ताल की भेद-भरी गहराई बढ़ गई। उत्पादन के क्या साधन मौजूद हैं····कारखाने की मशीनें किस प्रकार की हैं····क्या-क्या बनता है····कितना बनता है····।"

प्रत्यक्ष रूप में इस फ़ार्म का व्यक्तिगत पूछताछ से कहीं अधिक क्षेत्र था। निर्माण और उत्पादन में लगे कारखानों की सुविधाएँ और उनके उत्पादन के बारे में यह एक औद्योगिक अध्ययन था। मैंने जब स्टेंसिल को टाइप किया और उसे पढ़ा, तो मुझे यह हैरानी हुई कि शमर को इसकी केवल पचास प्रतियाँ ही क्यों चाहिएँ—सम्भव है कि केवल पचास महत्त्वपूर्ण कारखानों की पड़ताल ही अपेक्षित हो। जब मैं काम में लगा हुआ था तो बून मेरे कन्धों पर झुककर मुझे ग़ौर से देख रहा था। एफ० बी० आई० की रिपोर्ट के लिए पतली मोमी कापी को निकाल लेना मेरे लिए असम्भव हो गया। जब स्टेंसिल टाइप हो गया तो मैं रिसेप्शन के कमरे की ओर गया; स्टेंसिल मेरे साथ-साथ वहाँ आया। मैंने स्टेंसिल को मशीन पर चढ़ाया और नमूने की कुछ पहली प्रतियाँ निकालीं। मशीन में ज़्यादा स्याही लगी हुई थी, परिणामस्वरूप इन प्रतियों में बड़े-बड़े धब्बे पड़ गए। इन्हें मैंने रद्दी की टोकरी में इस विचार से फेंकना शुरू किया कि बाद में एक प्रति अपने लिए निकाल लूँगा।

"इन्हें फेंको मत," शमर ने चिल्लाकर कहा।

"लेकिन ये ठीक जो नहीं आईं," मैंने जवाब दिया।

"इसकी चिन्ता नहीं। मैं ये भी ले लूँगा। अब पचास अच्छी प्रतियाँ निकाल दो।" उसके सामने ही मैंने पचास प्रतियाँ निकालीं। "ठीक। अब मुझे स्टेंसिल दे दो। शायद मुझे और प्रतियाँ निकलवाने की जरूरत पड़े।"

मोमी काग़ज में स्याही से लथपथ स्टेंसिल मैंने उसे दे दिया। "मुझे कुछ जरूरी काम करना है," उसने इस ढंग से कहा कि अब मुझे वहाँ से चल देना चाहिए। "सहायता के लिए धन्यवाद।" अगले दिन किसी दूसरे काम के लिए मिलने का हमने नियत किया। इस फ़ार्म की छपाई के बारे में चुप रहने के लिए आदेश देने की उसे कोई जरूरत न थी। मैं भाँप सकता था कि पार्टी में किसी महत्त्वपूर्ण कार्य की ओर कदम उठाया जा रहा है।

दफ़्तर से निकलते ही मैं हैल लियरी से जा मिला; जो अजीब फ़ार्म मैंने टाइप किया था, उसकी याद अभी ताजा थी। पार्टी को मजदूरों के क्षेत्र में बढ़ती हुई सक्रियता और शमर के पूछताछ-सम्बन्धी फ़ार्म की मैंने उससे बात की।

"इन फ़ार्मों का इस्तेमाल कब किया जायगा?" उसने मुझसे पूछा।

"निश्चित रूप से तो मैं नहीं कह सकता, परन्तु कुछ ही दिनों में पार्टी के वास्तविक निर्माताओं की एक सभा होने वाली है, और मेरे अनुमान में यह तभी बरता जायगा।"

"क्या आप इसमें हाजिर रहेंगे?"

"कह नहीं सकता। इस सभा की कड़ी निगरानी हो रही है, दूसरी सब सभाओं से अधिक। केवल बुलावे पर ही कोई उपस्थित हो सकता है। सारे जिले में से लोगों को विशेष तौर से चुनकर बुलाया जा रहा है—फॉल रिवर से जो फिगरिडो, वार्सेस्टर से ओर्का, स्प्रिंगफ़ील्ड से सिड, और न्यू हैम्पशायर से चेज। इन सबका सम्बन्ध उद्योगों से और बड़े-बड़े कारखनों से है।

"सम्भव हो वहाँ उपस्थित रहने का प्रयत्न कीजिएगा," हैल ने कहा।

बोस्टन के हटिंग्टन एवेन्यू में लकड़ी का एक पुराना जीना चढ़कर रिट्ज़, प्लाजा हॉल के घुटे हुए कमरे में न्यू इंग्लैण्ड जिले के कम्युनिस्टों

ने २ फरवरी १६४७ को 'पार्टी के महत्त्वपूर्ण निर्माताओं' की एक सभा की। माल्डन शाखा की कार्यकारिणी में अपनी सदस्यता के नाते, मुझे इस अघोषित, गुप्त सभा में उपस्थित रहने का निमन्त्रण मिल ही गया। यह केवल कार्यकर्ताओं की सभा थी जिसमें लगभग १०० सदस्य हाजिर थे। लेकिन यह लोग पार्टी के विचारकों में से नहीं थे— मार्क्सवादी सिद्धान्त-शास्त्र की बाल की खाल निकालने वाले वे बुद्धिवादी जिनसे पार्टी में मेरा अब तक सम्पर्क रहा था। ये कठोर मुद्रा वाले, कारखानों, औद्योगिक शाखाओं और गोष्ठियों में काम करने वाले सर्वहारा वर्ग के निर्मम, उत्साही व्यक्ति थे जिनमें सैद्धान्तिक समझ-बूझ का अभाव था, लेकिन काम करने के लिए मजबूत बाजू और चीखो-पुकार के लिए ऊँची आवाज करने वाले गले थे। जिले और शाखा के सर्वोच्च नेतृत्व के अतिरिक्त जो कोई व्यक्ति भी यहाँ बुलाये गए थे, वे बड़े-बड़े कारखानों की गोष्ठियों में पार्टी के प्रतिनिधि थे। अपने कम्युनिस्ट व गैर-कम्युनिस्ट मज़दूर साथियों में अपने प्रभाव के कारण ही इन्हें निमन्त्रित किया गया था। इनके अलावा यहाँ ऐसे भी व्यक्ति मौजूद थे जो पार्टी के विभाषी दल के सदस्य थे; तरह-तरह की बोलियों की गूँज इस उदासी-भरे हॉल में बराबर सुनाई देती रही।

इस बैठक की कार्रवाई मैनी ब्लम ने बड़ी सुबह अपने भाषण द्वारा की, जिसमें मुख्य अपील इस बात के लिए थी कि पार्टी की सदस्यता बढ़ानी आवश्यक है। सभा के लिए यही प्रश्न विशेष विचारणीय बन गया। मैनी ने कहा कि संख्या से भी अधिक इस बात का महत्त्व है कि पार्टी का प्रभाव मुख्य उद्योगों में फैले। सारे दिन यही बात दुहराई जाती रही.... 'मुख्य' उद्योग, 'मौलिक' उद्योग, 'आधारभूत' औद्योगिक मशीनरी, और 'फ़ैसलाकुन' मजदूर-वर्ग! सभा के लिए जो कार्यक्रम प्रकाशित किया गया था, उसमें भी इस ओर इशारा था। "नये सदस्य भरती करने के इस मोर्चे का हम उत्साह से अभिनन्दन करते हैं," इसमें कहा गया था, "यह जानते हुए कि इससे हमारा ध्यान और सक्रियताएँ न्यू इंग्लैण्ड के फैसला-कुन मज़दूरों में धँस जाने की ओर निर्दिष्ट होंगी।" कार्यक्रम में कारखानों

में कम्युनिस्ट कार्रवाइयों की एक विशेष रिपोर्ट की आवश्यकता पर भी ज़ोर दिया गया था जिसे जो फिगरिडो ने, जो मैसेच्यूसेट्स के फाल-रिवर बेडफोर्ड क्षेत्र के भारी औद्योगिक क्षेत्र में पार्टी की एक शाखा का संयोजक था, तैयार करना था। प्रत्यक्ष रूप में तो इस सभा का प्रयोजन नये सदस्य भरती करने की तहरीक चलाना था। लेकिन १९४७ में, जब कि दुनिया में नई किस्म की उलझनें पैदा हो रही थीं और कम्युनिस्ट पार्टी मज़दूरों में अपने कार्य पर बल देने लगी थी, इन 'मौलिक', 'आधारभूत' उद्योग-धन्धों को इस प्रकार महत्त्व दिया जाना विशेष अर्थ रखता था।

इसके बाद फैनी हार्टमैन की रिपोर्ट पेश हुई। अपने भाषण की पृष्ठ-भूमि के रूप में उसने अमरीका और रूस के बीच युद्ध की सम्भावना की बात कही, यद्यपि पार्टी का सरकारी मन्तव्य यह था कि ऐसा युद्ध अवश्य-म्भावी नहीं है। उसने कहा कि अमरीकन साम्राज्यवादी सोवियत यूनियन के विरुद्ध युद्ध का षड्यन्त्र रच रहे हैं और इसे सिद्ध करने के लिए अनुत्तर-दायी नागरिकों के वक्तव्य पेश किये जो उस पर पहले ही एटम-बमों की बरसा करके रूसी आक्रमण की रोकथाम करने के पक्षपाती थे। उसने कहा कि इन्हीं षड्यन्त्रकारियों के हाथों में युद्ध-सामग्री के निर्माण के साधन हैं और अमरीका की युद्ध-सम्बन्धी सामर्थ्य पर इन्हीं का स्वामित्व है। इनके हाथों में जो मुख्य साधन है वह आधारभूत उद्योगों की मिलकियत का है, और इन्हीं फ़ैसलाकुन कारखानों और मशीनों के गिर्द राष्ट्र के युद्धोचित साजोसामान का ताना-बाना बुना जाता है।

यद्यपि यहाँ की बातों के मुख्य उद्देश्य पर दूसरे तर्क का आवरण डाल दिया गया था, फिर भी सम्मेलन का उद्देश्य स्पष्ट होने लगा था, और मैं सावधान होकर बैठ गया। अपनी गुप्त अथवा अर्धगुप्त सभाओं में कम्युनिस्ट पार्टी हमेशा उस उद्देश्य का साफ़-साफ़ बयान नहीं करती जिसे सुनने वालों को समझा देना उसका ध्येय होता है। इन्हें मुख्य बात को घुमा-फिराकर कहने की आदत है, धीरे-धीरे बाहरी बातों को काट दिया जाता है ताकि एक सुदीक्षित कम्युनिस्ट के मन में मुख्य बात के विषय में किसी

प्रकार का कोई सन्देह न रहे।

"यह मौलिक उद्योग क्या हैं?" फैनी ने कहा, और मार्क्सवादियों के ऐसे प्रश्न पूछने के तरीके को अपनाया जिनके घड़े-घड़ाए उत्तर प्रस्तुत किये जा सकें। उसने कहा कि एक तो लिन्न, मैसेच्यूसेट्स में स्थित जनरल इलेक्ट्रिक कम्पनी का बड़ा कारखाना है, जहाँ कि आजकल सरकार (यह खबर मुझे आज ही मिली) हवाईजहाज़ों के लिए जेट इंजिन बनवाने में लगी है। दूसरे उद्योग रेलगाड़ियों से सम्बन्धित कारखाने हैं, यातायात के साधन—जिनमें रेडियो, तार, फोन और अखबार तक शामिल हैं; लौह-निर्माण का उद्योग; समुद्री जहाज बनाने के कारखाने; कपड़ा बुनने का धन्धा; रसायन-निर्माण का उद्योग और सब कारखाने व धन्धे जो देश की रक्षा के लिए सामान बनाने में जुटे हैं। फैनी और दूसरे प्रवक्ताओं ने सम्मेलन में कहा कि इन उद्योगों में कम्युनिस्टों के लिए अपनी ताकत बढ़ाना आवश्यक है ताकि साम्राज्यवादी युद्ध की ओर जिस तेज़ी से कदम बढ़ाए जा रहे हैं, उसका प्रतिकार किया जा सके। उन्होंने यह नहीं कहा कि पार्टी के सदस्य इस ध्येय की पूर्ति किस प्रकार करेंगे। इसे प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुमान के लिए ही छोड़ दिया गया।

इसके बाद ओटिस हुड मंच पर आया और बात के सिलसिले को जहाँ फैनी हार्टमैन ने छोड़ा था, उसने आगे बढ़ाया। उसने एक नये शब्द का प्रयोग किया जिसे पार्टी-सम्बन्धी अपनी सक्रियताओं में मैंने पहले नहीं सुना था—'प्रवेशक' (कालोनाइज़र)। उसने कहा कि पार्टी का प्रवेशक उस श्रद्धालु सदस्य को कहेंगे जिसे कि किसी महत्त्वपूर्ण कारखाने में पार्टी-सम्बन्धी कर्तव्य सौंपे जाते हैं, अथवा यदि वह किसी ऐसे कारखाने या धन्धे में काम कर रहा हो जिसे युद्धकालीन दृष्टिकोण से महत्त्व का नहीं कहा जा सकता तो वह वहाँ की नौकरी छोड़कर किसी महत्त्व के उद्योग-धन्धे में नौकरी करने के लिए तैयार हो। यहाँ इसका मुख्य कर्तव्य यह होगा कि अपने चारों ओर दृढ़निष्ठ कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों को जमाकर ले और उसके माध्यम से मार्क्सवाद के सन्देश को फैलाए और कम्युनिस्ट तथा गैर-कम्युनिस्ट

मजदूरों में आर्थिक और सामाजिक संघर्ष को एक समान वेगवान करे।

"प्रवेशक को," हुड ने जो कुछ कहा, वह मुझे याद है, "कम्युनिस्ट पार्टी में उच्चतम स्तर का मान दिया जायगा।"

यद्यपि इसे पार्टी के मुख्य आधारों का सम्मेलन कहा गया था, फिर भी दिनके लम्बे कार्यक्रम में, इस औद्योगिक क्षेत्र में नये प्रवेश की विस्तृत योजना, पार्टी की सदस्यता को बढ़ाने के सामान्य तरीकों की उपेक्षा करके बनाई गई। मेरे पुराने मित्र नैट मिल्ज को लिन्न के जनरल इलेक्ट्रिक के कारखाने में डॉन टॉर्मे, जो कि वहाँ मजदूरों के संगठक के रूप में पहले से ही प्रसिद्ध था, और डॉन बोलन व बॉब गॉडविन के साथ एक प्रवेशक बनाया गया। कुछ ही समय बाद नैट ने अपना माल्डन वाला घर छोड़ दिया और अपने कार्य-क्षेत्र के अधिक नजदीक होने के उद्देश्य से लिन्न में रहने लगा। डेव वेनेट को मैसेच्यूसेट्स के लोहे के कारखाने में तैनात किया गया। गस जॉन्सन, जिसका व्यवसाय तरखान का था, अपने औजार और धन्धे-सहित बोस्टन और मेन के रेल-सम्बन्धी कारखाने में चला गया। युनाइटिड ऑफ़िस और सी० आई० ओ० के प्रोफ़ेशनल वर्कर्स यूनियन का एक प्रतिनिधि यहाँ उपस्थित था जिसे सूचित किया गया कि उसका कार्य-क्षेत्र आर्थिक जगत् में है और उसे मुख्यतया जिन्दगी की बड़ी-बड़ी बीमा कम्पनियों में जुटकर काम करना चाहिए, विशेषतः बोस्टन की जॉन हैन्कॉक लाइफ़ इन्श्युरेन्स कम्पनी में।

मौलिक उद्योगों को इस प्रकार दिये जा रहे महत्त्व में और बून शर्मर के लिए कुछ ही दिन पहले जो प्रश्नावली मैंने टाइप की थी और जिसकी प्रतिलिपियाँ निकाली थीं, इनके परस्पर सम्बन्ध को लेकर मैं हैरान ही हो रहा था कि बीच के अवकाश के वक्त मैंने बून को देखा। वह एक प्रतिनिधि से बातचीत कर रहा था, जिससे मैं अपरिचित था, और हाथों में कागजों का एक पुलिन्दा लिये हुए था। उनके पास रुकने और बातचीत करने का साहस लाए बिना मैं जितना सम्भव था, उनके पास से गुजरा। उन दोनों में से किसी ने भी मुझे नहीं देखा।

"मैं इन तीनों को वापस चाहता हूँ," मैंने बून को कहते सुना। "इन्हें डाक में मत छोड़ना। मेरे पास स्वयं ही पहुँचाना।" तब तक मैं इतनी दूर जा चुका था कि आगे की बात न सुन सकता था।

बून के नेतृत्व में न्यू इंग्लैण्ड के जिले में प्रभाव-विस्तार की योजना को सर्वाधिक जनरल इलेक्ट्रिक के कारखाने में कार्यान्वित किया गया; यही कारखाना इस क्षेत्र में फौजी सुरक्षा के हथियार बनाने वाला सबसे बड़ा कारखाना था। मैंने तुरन्त ही इस प्रवेशक-योजना की एफ० बी० आई० में हाल लियरी को रिपोर्ट दे दी, मैं जो-जो नाम पता चला सका, उनकी खबर और यह सूचना भी उसे पहुँचा दी कि पार्टी के निर्माताओं के इस सम्मेलन के निर्णयों के अनुसार शीघ्र ही उद्योगों के अनुसार, छोटी-छोटी दूसरी सभाएँ भी बुलाई जायँगी।

फ़रवरी के इस सम्मेलन के बाद जिला दफ़्तर में मैं मैन्नी ब्लम, और बून शर्मर के साथ कई अनौपचारिक विचार-विमर्श में बैठा। वहाँ मुझे मालूम हुआ कि पार्टी को सदस्यता बढ़ाने की दिशा में किस सीमा तक जाने की आशा है। मैन्नी का विचार था कि पार्टी को किसी भी स्तर पर अपनी ध्येय-पूर्ति के लिए बहुत लोगों की न तो आवश्यकता ही है और इसके अलावा न वह ऐसा चाहती ही है। इस बात में मुझे तब तक अन्तर्विरोध जान पड़ा जब तक कि मैन्नी ने इसे खोलकर नहीं समझाया।

"कम्युनिस्ट पार्टी को मजदूर-वर्ग का नेता, अग्रणी रहना है," उसने कहा। "उन्हें मजदूरों के सबसे अधिक प्रगतिशील अंश का प्रतिनिधित्व करना है, और यह कोशिश नहीं करनी है कि वह सारे मजदूर-वर्ग को अपने संगठन में ले ले। ऐसा करने का अर्थ केवल अपनी शक्ति का अपव्यय करना होगा। मार्क्सवाद हमें यह सिखाता है कि हम श्रमीवर्ग के संघर्ष को किस प्रकार समाजवाद की ओर घुमा दें। कामरेड स्टालिन ने ठीक ही कहा है कि वही पार्टी विश्वास के साथ हमारे ध्येय की तरफ़ बढ़ सकती है जिसने मार्क्स व लेनिन की शिक्षा को गहराई से अपना लिया हो। हम पार्टी की सदस्यता को ऐसे अनुशासनहीन लोगों से नहीं भर सकते जो

मार्क्स को समझने-अपनाने की भरसक कोशिश नहीं करेंगे। ऐसा करने से पार्टी कमज़ोर होगी और व्यर्थ ही नेतृत्व को अपने हाथों से गँवा बैठेगी।"

मैं इस बात को भली भाँति समझ लेना चाहता था। इसलिए मैंने बात का सार दुहराते हुए कहा, "कम्युनिस्ट पार्टी सदा अल्पमत में ही रहेगी?" मेरे मन में अधिकांश अमरीकनों के कम्युनिस्ट आन्दोलन के प्रयास के प्रति उपेक्षा और घृणा की उस प्रतिक्रिया का प्रश्न उठ रहा था जो कि इनके बहुत कम प्रतिनिधित्व के कारण पैदा होती है।

"बिलकुल सही," मैन्नी ने उस विश्वासपूर्ण स्वरावेश से उत्तर दिया जिसमें मार्क्स-विज्ञान को समझने के विषय में कहीं भी कोई सुविधा न शेष हो। "आपने कभी ऐसे प्रभावपूर्ण दल की बात भी सुनी है जिसमें नेता अधिक हों और अनुयायी कम? 'पीपल्ज़ डिमाक्रेसीज़' में, सोवियत यूनियन में, सब जगह संघर्ष के अतिरेक के दिनों में कम्युनिस्ट पार्टी केवल अल्पमत का ही प्रतिनिधित्व करती थी।"

१६४७ के वसन्त के दिनों में मेरा कार्य राजनीतिक क्षेत्र में सीमित रहा और उदासीनता तथा अपेक्षातर अकर्मण्यता का एक दौर गुज़रा। पुरानी 'पोलिटिकल एक्शन कमेटी' के साथ कम्युनिस्ट पार्टी अमरीका के तृतीय-दलीय आन्दोलन का प्रतिनिधित्व करने वाली 'प्रोग्रेसिव सिटिज़न्स ऑफ़ अमेरिका' नाम के संयुक्त दल में प्रवेश कर गई। इस दल के, जिसने अन्ततः प्रोग्रेसिव पार्टी का रूप लिया, हार्वर्ड के डॉक्टर हार्लो शेपले अवैतनिक प्रधान चुने गए। उन दिनों लिटल, ब्राऊन एण्ड कम्पनी के मुख्य सम्पादक, एंगस कामरोन इसके अध्यक्ष थे, रूथ एमरी मन्त्री और मार्जोरी लैंसिंग कार्यवाहक डायरेक्टर थे।

मैंने प्रोग्रेसिव सिटिज़न्स ऑफ़ अमेरिका में अपना काम जारी रखा; हेनरी वैलेस शान्ति और बाहुल्य की जिस नीति का देश-भर में अपनी सभाओं से प्रतिपादन कर रहे थे, उसकी प्रशंसा में इश्तहारबाजी में मैं जुटा रहता था। अपने सम्पर्क के रोज़ के साथियों से अपनी तृतीय-दलीय सक्रियताओं को छिपाना अब ठीक नहीं जँचता था; उन्हें स्वीकार करना ही उचित था,

अन्यथा सम्भव था कि मैं कहीं धोखा खा जाता। अभी तक 'प्रोग्रेसिव सिटिज़न्स' को कम्युनिस्टों के नये मोर्चे के रूप में नहीं देखा जाता था। एम० एण्ड०पी० थियेटर्स के दफ्तरों में इसलिए मुझे अब वैलेस का समर्थक समझा जाने लगा और मैं इस दल का समर्थन करने वाला प्रचार-साहित्य खुले तौर पर अपने डेस्क पर रखने लगा। फिर भी, मैं यह एहतियात बरतता रहा कि मैं जरूरत से ज़्यादा नहीं बोलूँ, और दफ़्तर में वैलेस के समर्थक व विरोधी दूसरे कर्मचारियों से बातचीत में तो किसी भी हालत में राजनीतिक वादविवाद में न कूद पड़ूँ।

गरमियों की समाप्ति के दिनों में एक सुबह, जब कि सितम्बर के अन्त में बोस्टन वैलेस के आने से सम्बन्धित प्रचारादि की हम योजना बना रहे थे, एक पत्रवाहक 'प्रोग्रेसिव सिटिज़न्स ऑफ़ अमेरिका' के छपे हुए फ़ार्म पर लिखा हुआ एक खत लेकर आया। यह खत रोजमर्रा के काम के विषय में ही एक टाइप किया हुआ नोट निकला, लेकिन इसके नीचे ऐसे हस्ताक्षरों में एक आदेश लिखा हुआ था जिन्हें मैं पहचानता था।

यहाँ केवल इतना ही लिखा था—"एफ़० एच० को मिलो।" फैनी हार्टमैन! काफी अरसे के बाद कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं से मुझे यह सन्देश मिला था। उस सुबह मैं काफी व्यस्त था, और इससे पहले कि मैं इस सन्देश को कार्यान्वित करने की ओर कोई कदम उठाता, जिसका मतलब था कि मैं दफ़्तर छोड़कर कहीं दूसरे स्थान से फोन करने के लिए जाऊँ, मेरे लिए ही टेलीफोन की घंटी बजी। फोन पर 'प्रोग्रेसिव सिटिज़न्स ऑफ़ अमेरिका' के एक बड़े अधिकारी की आवाज़ सुनाई पड़ी कि वैलेस के आगमन के विषय में व्यवस्था पर बातचीत करने के लिए मैं 'मार्लियाव्ज' नामक होटल पर खाने पर उससे मिलूँ। यह व्यक्ति, जिसे मैं 'हैरी' कहकर पुकारूँगा, मेरे विचार में अत्यधिक शिक्षित और असत्य व्यक्तित्व का था; पैसे इसके पास थे और यदा-कदा यह लिखता रहता था और ऐसे व्यापारों में हाथ मारता रहता था जो इसके भरण-पोषण के लिए आवश्यक न थे। उसके रहने-सहने के ढंग से भी ऐश्वर्य झलकता था। उस जैसे मिश्रित

चरित्र के व्यक्ति बहुतायत से दिखाई पड़ते थे—एक दम्भी व्यक्ति जो उदार होने का दावा करता था। उसके भाषणों में आडम्बरपूर्ण पाण्डित्य ठूँसा रहता था। प्रोग्रेसिव सिटिज़न्स के आपने काम के दिनों में उसे देखने के बाद मैं निश्चय कर चुका कि इस प्रकार का लवड़धोंधों व्यक्ति कभी कम्युनिस्ट नहीं हो सकता, एक अच्छा कम्युनिस्ट तो किसी भी दशा में नहीं हो सकता। उसके कम्युनिस्ट न होने की स्थिति में भी मैं उसे बेहद नापसन्द करता था।

इसके बावजूद हैरी इस तृतीय-दलीय आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व के पद पर था, और अपनी कर्तव्य-रक्षा की भावना में मैंने उसे मिलना स्वीकार कर लिया। मैंने सोचा कि मेरा काम तो किसी रूप में इस क्षेत्र में टिके रहना है, और सम्भव है कि एक राह से दूसरी राह निकल आए। ऐसा हमेशा ही होता आया है। इसलिए निश्चित समय पर पार्कर हाउस से बढ़कर बॉस्वर्थ स्ट्रीट के साथ की गली से मैं गुज़रा और हैरी को 'मालियाब्ज़' में मिला।

जब तक होटल का वेटर हमारे लिए खाना ला रहा था, हम इधर-उधर की बातें करते रहे, लेकिन जैसे ही खाना परोस कर वह चला गया, हैरी मेज पर आगे झुका और बहुत धीरे से बोला—"क्या आपको फैनी का कोई समाचार मिला?"

एक क्षण के लिए मैं इस सवाल को ही न समझ सका। छुरी-काँटे को नीचे करके मैंने कोई इशारा पाने के लिए उसके भावुक चेहरे पर नज़र जमाई। मैंने सोचा कि वह अवश्य ही किसी दूसरे के विषय में बात कर रहा है, निश्चय ही फैनी हार्टमैन के बारे में नहीं। हमारे दल के कर्मचारियों में एक लड़की का नाम फ्रांसिस था जिसे कभी-कभी फैनी कहकर पुकारते थे। फिर भी, फैनी हार्टमैन से सन्देशा पाए अभी दो घण्टे भी न बीते थे कि इस नाम को दुहराया गया। मुझे यह विश्वास ही न होता था कि हैरी कम्युनिस्ट पार्टी की उच्चाधिकारिणी से इतने घने सम्पर्क में हो सकता है कि उसका पहला नाम लेकर पुकारे अथवा यह ही जान सके कि पार्टी के

२५—११

अधिकारी हैं कौन लोग। हैरी ने अपनी दृष्टि मुझ पर टिका दी।

"किससे?" मैंने पूछा। मैं मन-ही-मन यह अनुमान लगा लेना चाहता था कि यह आदमी कहाँ तक क्या-क्या जानता है।

"फैनी से," उसने फिर कहा, और इस बार भी आवाज़ में वही षड्यन्त्रकारिता की-सी गूँज थी। लेकिन उसने पूरा नाम नहीं लिया। अपनी प्लेट पर नजरें रखते हुए मैंने तय किया कि मैं स्थिति को स्पष्ट और साफ़ ही रखूँ और दाव-पेंच की बातें उसे ही करने दूँ।

"नहीं," मैंने कहा, "इधर तो मैं उससे नहीं मिला हूँ। वह आजकल भी दफ्तर ही में है न?"

अब स्वयं हैरी ही चक्कर में पड़ा, मानो उसके कदम कच्ची ज़मीन पर पड़ रहे थे। उसने एकाएक बातचीत का रुख़ बदल दिया। तब अनायास ही उसने अपनी घड़ी की ओर देखा और मुझसे यह कहकर उठा कि उसे एक टेलीफोन करना है। कुछ मिनटों के अन्दर ही वह लौट आया। अब उसकी बेचैनी जा चुकी थी और पहले की तरह स्थिर-चित्त था। वह अपनी लम्बी और नरम अँगुलियों से काँटे को डुलाता रहा।

"फैनी कहती है कि उसने तुम्हें मिलने को बुलाया है," उसने कहा, और अब मैंने निश्चयपूर्वक जान लिया कि वह क्या बात करना चाहता है। मैंने अनुमान लगाया कि बाहर जाकर उसने फैनी को ही टेलीफ़ोन करके पूछा था कि कोई ग़लती तो नहीं हो गई। कुछ देर के लिए जब वह खाने में लीन था तो मैंने इस भेद को ठीक तरह से समझ लेने की कोशिश की कि यह अजीब, दौलतमन्द, प्रभावहीन लेकिन बोस्टन का पर्याप्त रूप में सम्मानित नागरिक, जो शहर के उच्चतम नागरिक, सामाजिक और व्यापारिक स्तर पर घूमता था, एक कम्युनिस्ट था। स्पष्ट था कि वह पार्टी का सदस्य था लेकिन उससे घनिष्ठ व्यक्ति भी इस भेद से परिचित न हो सकते थे। पार्टी में उसे इतना महत्त्व दिया जाता था कि उसका सन्देश-वाहक के रूप में प्रयोग हो। वह कह रहा था—"प्रो-४ में एक नया दल बनाया जायगा, और फैनी कहती है...."

जैसे मुझे धक्का-सा लगा। "आपने क्या कहा?"

"मैंने कहा," उसकी सुसंस्कृत आवाज़ धीमे से मुझ तक पहुँची, "प्रो-४ में एक नया दल बनाया जायगा, और फैनी कहती है कि आपको अब कोई नया कर्त्तव्य सौंपा जायगा।"

"कोई नया कर्त्तव्य?" मुसकराहट का अभिनय करते हुए मैंने कहा। "प्रो-४" के रहस्यमय शब्दों से मेरा मन तीन वर्ष पहले के प्रादेशिक सम्मेलन की ओर खिंच गया। यही रहस्यमय शब्द मुझे सम्मेलन-भवन में प्रवेश की अनुमति के कार्ड पर फैनी हार्टमैन ने मेरे परिचय में लिखे थे। पार्टी-जीवन में मेरे लिए इन शब्दों का सामना करने का दूसरा अवसर था। इनका रहस्य मुझ पर अभी तक न खुला था।

"यह प्रो-४ क्या है?" मैंने पूछा। "कहाँ इसकी बैठक होगी?" मैं अभी तक इस सचाई को पूरी तरह अपना लेने की कोशिश में था कि इस व्यक्ति की कम्युनिस्टों से गहरी गठ-जोड़ है। इस बात को सोचकर मुझे अत्यधिक दुख हुआ कि प्रोग्रेसिव सिटिज़न्स ऑफ़ अमेरिका के नये राजनीतिक दल की रीति-नीति और उसके संचालन में इस व्यक्ति का महत्त्वपूर्ण हाथ है। मैं समझता था कि पार्टी से हमदर्दी रखने वाले प्रोग्रेसिव सिटिज़न्स के छोटे-मोटे सब सदस्यों को जानता हूँ। लेकिन यहाँ तो पुराना ढँग ही फिर से स्पष्ट हो रहा था—एक सम्पन्न सुशिक्षित व्यक्ति जिससे सामान्यतः समाज के विरुद्ध किसी शिकायत की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। शायद किशोरावस्था के उसके आदर्शवाद से कम्युनिस्टों ने फ़ायदा उठाया था।

"आपको शीघ्र ही इसके विषय में पता चल जायगा," हैरी कह रहा था। "शायद हमारी सभा कैम्ब्रिज में हो, अथवा बोस्टन में हो। मेरे अनुमान में आप सदस्यों के साधारण....स्तर....को पसन्द करेंगे। और काम भी उपयोगी है, और महत्त्वपूर्ण, बहुत ही महत्त्वपूर्ण।"

"मेलरोज़ में मेरे वर्तमान दल का क्या होगा?"

"आप उसे छोड़ देंगे। अलग हट जायँगे।"

"कोई बहाना बनाना पड़ेगा?"

"कोई आवश्यकता नहीं।" मैंने उसे बताया कि उसी शाम को हमारी गोष्टी होगी और उस शाम की चर्चा का मैं ही नेतृत्व करूंगा है। उसका सुझाव था कि इसमें तो मैं शामिल होऊँ। "इसके बाद," इस सन्देश-वाहक ने इस स्वर में कहा जैसे कि कोई आदेश दिया जा रहा हो, "आप उस गोष्ठी के प्रति उदासीन (फ़्लोटर) नजर आइए। आपको नये सन्देश समय-समय पर मिलते रहेंगे। इस बीच, मुख्य कार्यालय के नजदीक भी न फटकिएगा। मेलरोज़ से और दूसरे दलों से सब सम्बन्ध तोड़ लीजिए। कुछ भी कहिए मत; केवल दूर हट जाइए। सदस्यों से अधिकारवश अर्थात् सामाजिक स्तर पर क़तई न मिलेंगे-जुलेंगे।"

"पार्टी के प्रति उदासीन" (फ़्लोटर), मैं जानता था, उस सदस्य को कहते थे जिसे सुरक्षा के कारणों से पार्टी की सामान्य गोष्ठियों से और संगठन से दूर कर दिया जाता था। वह पार्टी का ऐसा सतही-सा एजेण्ट बन जाता था जिससे पार्टी के कुछेक नेताओं, सन्देश-वाहक, डाक के हरकारे और टेली-फ़ोन के माध्यम का ही सम्बन्ध स्थापित हो सकता था। कोई ऐसा काम उसे न सौंपा जाता था जो उसे पार्टी के दूसरे सदस्य-दलों के सम्पर्क में लाए। इस 'फ़्लोटर' का 'स्लीपर' से इतना ही भेद था कि 'स्लीपर' को समूची कम्युनिस्ट तर्ज की जिन्दगी और सम्बन्धों को तिलाञ्जलि देनी पड़ती थी, पार्टी और उसके नेतृत्व से किनारा करना पड़ता था। शायद बरसों बाद किसी खास अवसर पर उसे किसी विशेष उद्देश्य से फिर नियुक्त किया जाता था। इस बीच वह साधारण जीवन बिताता है जिसमें किसी प्रकार के भी भीतरी या बाहरी कम्युनिस्ट-सम्बन्धों की झलक नहीं दिखाई पड़ती। पार्टी में जान-बूझकर यह अफ़वाह भी उड़ाई जा सकती है कि ऐसे सदस्य के विरुद्ध अनुशासन का कदम उठाया गया है अथवा उसे अब 'अवांछित' मान लिया गया है। लेकिन कई वर्षों से 'फ़्लोटरों' और 'स्लीपरों' को सब देशों में कम्युनिस्टों के जासूस के रूप में और गुप्त कार्यों के लिए अपनी कार्यवाहियों पर परदा डाले रखने के उद्देश्य से बरता गया है। इन अनायास मिले

आदेशों को पाकर और फिर से प्रो-४ का सामना करके मैं हैरानी से सोचने लगा कि मेरे भविष्य में क्या बदा है।

खाना खाने के बाद दफ्तर लौटकर बाकी सारा दिन मैं काम में और इस भेद के खुलने में बुरी तरह उलझा रहा कि आखिरकार हैरी भी पार्टी का एक महत्त्वपूर्ण सदस्य है। मैं इतना आश्चर्यान्वित हो गया था कि मैं काम में दिल न लगा सका। ऑफिस का समय बीता और मैं अपने डेक्स को साफ़ करने के लिए रुक गया। छः बजे के बाद, जब कि फोन पर बातचीत बिना किसी दूसरे के सुने की जा सकती थी, मैंने एफ० बी० आई० में अपने नये मित्र डॉन रिचर्डस को बुलाया।

"मैं समझता था कि मेरा इन बातों से अधिक सम्पर्क नहीं रहा है, लेकिन ऐसा नहीं है," मैंने कहा।

"सच?"

"बात यह है कि एक महत्त्व के व्यक्ति के साथ ही मैं इतने दिन काम करता रहा हूँ लेकिन यह मुझे मालूम न था। अब मैं उसकी फाइल बना लूँगा। क्या तुमने कभी प्रो-४ के बारे में सुना है?"

उसने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। बदले में पूछा—"आपको इसके विषय में क्या मालूम है?"

"मुझे एक नये दल में भरती होने को कहा गया है।"

"अच्छा हुआ। ज़्यादा उतावली न दिखाइएगा। क्या उन्होंने कोई निश्चित वक्त दिया है?"

"अभी नहीं। पुराने झमेले अभी काटने हैं। मुझे वह स्वयं समय बतायेंगे। मुझे अभी यह भी नहीं मालूम कि कहाँ मिलना है।"

"बहुत ठीक। अपने नये मित्र के विषय में पूरी तहकीकात भेजना।"

हैरी का टेलीफोन कुछ हफ़्तों के बाद मुझे मिला।

"कल रात को हम कुछ लोग मिल रहे हैं," उसने प्रसन्नता-भरे स्वर में कहा, "क्या आप मुझे रिवीयर और चार्ल्स स्ट्रीट में आठ बजे मिल सकेंगे?" मैंने मिलना स्वीकार कर लिया। "और हाँ, क्या दुकान से कुछ

सामान ले आएंगे ? उन्हें मालूम है कि क्या देना होगा। वक्त के पहले ही इसे ले लेना। दुकान से सीधा ही वहाँ न चले आना शायद....बेहतर.... और अधिक आसान होगा।" मैं खूब समझ गया था उसका इशारा सुरक्षा के लिए सतर्क रहने की ओर था।

प्रोग्रेसिव बुकशॉप से उस दोपहर मैं अपना नाम आर्थर ट्रोबरिज बतलाकर प्रचार-सम्बन्धी प्रकाशन ले आया। इसके बाद मैंने डॉन रिचर्ड्ज़ को फोन से सूचना दे दी कि मीटिंग रिवीयर और चार्ल्स स्ट्रीट के आसपास कहीं होने वाली है लेकिन मुझे ठीक पता नहीं बतलाया गया।

मैं अगली शाम को शीत-भरे अन्धकार में हैरी की प्रतीक्षा में रिवीयर और चार्ल्स के दुराहे पर खड़ा रहा। उसने अपनी कार को वहीं ठहराया, और हम दोनों एक साथ इस चौक के कुछ ही कदम दूर ६ नम्बर के मकान के आगे रुके। पार्टी-सम्बन्धी साहित्य से भरे हुए अपने थैले को सँभालते हुए मैं दो मंजिलों की संकरी लकड़ी की बनी सीढ़ियाँ मुश्किल से पार कर पाया। ऊपर पहुँचकर हैरी ने दरवाजे पर थपथपाया। दरवाजे को एक हृष्ट-पुष्ट शरीर की, गोल-गाल और भूरे बालों वाली उत्साह-भरी लड़की ने खोला जो हार्दिक स्वागत का साकार रूप जान पड़ती थी। उसका 'नोर्मा' नाम से मुझसे परिचय कराया गया। हम एक आकर्षक ढंग से सजाये गए गलियारे को पार करके अन्दर के कमरे के दरवाजे की ओर बढ़े।

"भीतर आइए," नोर्मा ने एक बार फिर कहा।

लेकिन जैसे मेरे पैर एकाएक जकड़ गए। कमरे में सोफ़ा पर, कुछ अंधेरे में पीछे की ओर झुका हुआ, अब तक साफ़ न दीख रहा एक व्यक्ति, एक पुराना मित्र, एक ऐसा आदमी जिसे कम्युनिस्ट पार्टी की किसी गोष्ठी में देखने की बात मैं कभी सोच भी न सकता था, बैठा हुआ था।

सिलवटें पड़े सूट को पहने उस भरकम शरीर के व्यक्ति ने मुझे पैनी नज़रों से देखा। मेरे दाहिने हाथ में थैला जैसे एकदम भारी हो उठा। नोर्मा के हाथों की हल्की पकड़ को रोकने के लिए मेरी बाईं बाज़ू जैसे अकड़ गई। एक अविश्वास मुझ पर छा गया। अपनी गरदन पर मुझे

सुरसुराहट-सी उठती जान पड़ी मानो मेरे सिर के बाल खड़े हो रहे हों।

यहाँ था बोस्टन का एक प्रमुख, सम्मानित व्यापारी न्यू इंग्लैण्ड में अपनी ही किस्म की सबसे बड़ी व्यापार-संस्था का उपाध्यक्ष, अपनी व्यापार-दक्षता के लिए जिसने अपने प्रदेश में, वरन् देश-भर में ख्याति पाई थी। मैं इससे कई बार व्यापारियों की क्लबों में मिला था जिनके भोजन-उत्सवों पर उसे हमेशा पहली कुरसी दी जाती थी। भरकम शरीर का, ढीला-ढाला संवरने-सजने से दूर, मिलने में प्यारा, धीमी हरकतों का, वास्तविकतावादी प्रकृति का यह था। इसकी स्त्री धार्मिक और नागरिक क्षेत्र में बढ़कर हिस्सा लेती थी। इसके लड़के कालेज में विद्यार्थी थे। अपनी व्यापार-संस्था में इसे जो पद प्राप्त था, उसके कारण इसे स्टेट स्ट्रीट में काफी आदर मिलता था। उसके धन्धे को न्यूइंग्लैण्ड की कारोबारी और औद्योगिक जिन्दगी के लिए परम उपयोगी समझा जाता था। अपने क्षेत्र से सम्बन्धित व्यापार-पत्रिकाओं में उसके अग्रलेख प्रायः छपा करते थे। कुछ-कुछ फितूरी अन्दाज का वह था, ढीले-ढाले कपड़े पहनने का आदी और 'प्रगतिशील' आन्दोलनों का उत्साही समर्थक, बोस्टन के अनुदारवादी लोग उसकी इस प्रवृत्ति को उसके मिलनसार व्यक्तित्व, उसकी हार्दिक सामाजिकता और उसके प्राकृतिक सीधेपन के कारण नजर-अन्दाज कर दिया करते थे। हेनरी वैलेस का और प्रोग्रेसिव सिटिजन्स का वह जोशखरोश से अनुमोदन करता था। प्रोग्रेसिव सिटिजन्स के सदस्य बनाने और संगठन-सम्बन्धी कार्यवाहियों के दिनों में मैंने उसके साथ काम किया था। उसके कुछ दोस्त उसकी राज-नीतिक कार्यवाहियों को कुछ अजीब-सा मानते थे, लेकिन उसके बारे में कहते यही थे—"उसका उद्देश्य सही है—और यह है कितना अच्छा आदमी!"

और अब, यहाँ यह कम्युनिस्टों की एक गुप्त सभा में बैठा था।

मुझे पसीना छूट गया। कमरे में हो रही बातचीत बन्द हो गई, और इस सन्नाटे में मुझे लगा कि जैसे सब आँखें मेरी ओर उठी हुई थीं। अना-

यास का आश्चर्य, एक तीखी झुंझलाहट और इस भेद के खुलने से मेरी भारी घबराहट कि यह व्यक्ति भी कम्युनिस्टों के घनिष्ठ सम्पर्क में है—इन सबने मिलकर मुझमें एक भय पैदा कर दिया—यह भय कि मुझे अचानक ही कम्युनिस्ट पार्टी के किसी गहरे भेद का सूराग मिल गया है, और किसी कारण एफ० बी० आई० का एजेण्ट होने का मेरा भण्डा फूटने वाला है। मेरे माथे पर पसीने की बूँदें उभर आईं और मेरी पीठ पर पसीने की लकीर खिच गई। सोफे पर बैठे हुए भारी लथपथ व्यक्ति से मैंने अपनी आँखें हटाईं, एक बार जल्दी से कमरे में चारों ओर देखा, और मुस्कराने की कोशिश की।

"अन्दर आइए न," नोर्मा ने मेरी बाजू को छूते हुए कहा। मैं इस कोशिश में था कि चेहरे पर जो हैरानी के भाव खिच आए थे, उन्हें स्पष्ट विचार की सहायता से पोंछ दूँ। दरवाज़े के पास ही मैंने किताबों और पैम्फलेटों से भरा हुआ थैला हाथ से गिरा दिया और जेब से रूमाल निकाला। मैंने मुँह से और कालर के चारों ओर का पसीना साफ किया और जैसे शान्ति के साँस लेने लगा।

"राम, राम," मैंने एक लम्बा साँस छोड़ते हुए अपनी स्पष्ट हैरानी का जैसे कारण बताने की कोशिश में नोर्मा से कहा, "निश्चय है कि इन दुर्गम सीढ़ियों पर चढ़ने-उतरने में तुम्हारी अच्छी कसरत हो जाती होगी। तुम भला घर का सामान कैसे ऊपर लाती होगी?" अपनी मेज़बान के साथ इस शिष्ट हँसी ने वातावरण की तनावट को ढीला कर दिया। "तौबा," मैंने दिली भावना से कहा। लेकिन अभी सब कठिनाई हल नहीं हो चुकी थी। उस व्यक्ति से भेंट की समस्या बाकी थी। मैं अभी भी दरवाजे के चौखटे में ही रुका हुआ था, मानो वहीं जड़ा गया हूँ। 'जब कभी मुश्किल में हो, मुसकराओ,' मैंने स्वयं से कहा, और अपने भरे असमंजस के बीच मैं मुसकराया। फिर मैंने परिस्थिति के अन्तर्विरोध को समझा, मज़ाक मुझ पर ही था; इस व्यक्ति को मैं बरसों से जानता था लेकिन इसका मुझे कभी लेशमात्र भी अन्देशा न था कि यह कम्युनिस्ट है। बहुत कोशिश से जो

मुसकराहट चेहरे पर लाया था, वह असली मुसकराहट में बदल गई, और कमरे में उस व्यक्ति की ओर बढ़ते हुए मैं वास्तव में हँस रहा था।

"हेलो," अभिवादन में उसके बढ़े हुए हाथ को थामते हुए मैंने कहा, "आपको यहाँ देखकर मैं सच ही प्रसन्न हुआ हूँ, कामरेड! लेकिन साथ में मुझे आश्चर्य भी हुआ है।"

"मैं पहले ही सोचती थी कि आप एक-दूसरे से परिचित होंगे," नोर्मा ने कहा। अब तक मैंने अपने पर काबू पा लिया था। "अब दूसरों से परिचय कीजिए। टेड्डी, जैकी, फ़ेथ, बुच, पेग, हेलन'''यह हैं हर्ब।" इन सबमें केवल एक व्यक्ति को ही मैं पहले जानता था। कामरेड टेड्डी, जो चालाक और सुन्दर थी, प्रोग्रेसिव सिटिज़न्स के एक ग़ैर-कम्युनिस्ट उच्च-पदाधिकारी की सहायिका थी। इस स्थिति में प्रोग्रेसिव सिटिज़न्स ऑफ़ अमेरिका के उच्चतम हलकों की बातचीत को कम्युनिस्ट पार्टी तक पहुँचाने का वह सुगम माध्यम थी। प्रोग्रेसिव सिटिज़न्स की योजनाओं, सभाओं और निर्णयों का उसे सदस्यों से पहले पता रहता था। संस्था को कहाँ से पैसे की मदद मिलती है और उसके राजनीतिक सम्पर्क क्या हैं, इसे वह खूब जानती थी। इस वक्त जरा ज़्यादा शान से हल्के-से मुसकराकर उसने मेरा अभिवादन किया।

दूसरों से मेरा परिचय कम्युनिस्टों के दूसरे मोर्चों पर काम करते हुए था और बहुत कम था। परिचय हो जाने के बाद मैं कमरे के दूसरे कोने की एक कुरसी में जा धँसा।

आज की गोष्ठी के नेता ने अपना भाषण शुरू किया—"हमें दुख है कि जब हमने 'द स्टेट एण्ड रेवोल्यूशन' का गम्भीर अध्ययन शुरू किया था तो आप न आ सके थे," उसने किताब को हाथों में ऊपर उठाकर कहा। मुझे मालूम हुआ कि वह मुझे सम्बोधन करके यह कह रहा था। "आप लेनिन की इस कृति से परिचित होंगे, हैं न?"

"जी हाँ," मैंने उत्तर दिया। "मैं इसे पढ़ चुका हूँ। इसे अच्छी तरह जानता हूँ।"

'द स्टेट एण्ड रेवोल्यूशन' द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त, शासन की शक्ति की इसकी राजनीतिक और दार्शनिक विवेचना, सफल क्रान्ति के लिए आवश्यक परिस्थितियों पर इसके विचार मुझे भी, जो कम्युनिस्टों की शिक्षाओं का अरसे से विद्यार्थी था, तीव्र उत्तेजना देते थे। परन्तु यहाँ के भद्रता के वातावरण में, खूब बने हुए पेशेवर लोगों के बीच में, जिनमें बैठा बोस्टन का एक बड़ा व्यापारी भी ध्यानपूर्वक सुन रहा था, मुझे यह अविश्वसनीय लगा।

वादविवाद के बाद प्रश्न पूछने का समय दिया गया। नोर्मा, जिसके आज हम सब अतिथि थे, मुझे पता लगा कि इस दल में नई-नई आई थी और उसके घर में ऐसी गोष्ठी पहली बार ही जुटी थी, इस बात से अशान्त हो रही थी कि क्रान्ति के बाद लोकतन्त्र का लोप हो जायगा। उसे समझाया गया कि पूँजीवाद में लोकतन्त्र बूर्जुआ शासन का ही दूसरा नाम है, और इसका नाश ही करना चाहिए।

यदि वह संशय शेष रह गया था कि दल ने आज के पाठ को समझा नहीं था, तो इसे वादविवाद के नेता ने पाठ के सार को दुबारा कहकर दूर कर दिया—"बूर्जुआ शासन के स्थान पर सर्वहारा-वर्ग को पदारूढ़ करना हिंस्र क्रान्ति के बिना सम्भव नहीं है। अपनी बारी में सर्वहारा-वर्ग का शासन, परिस्थितियों पर काबू रखने की आवश्यकता न रहने पर, स्वयं ही झड़ जाता है।"

गोष्ठी के समाप्त होने पर, आज की शाम के अचम्भों से थककर मैं जितनी जल्दी हो सका बाहर आ गया। महान् निराशा के मनोभाव में मैं घर लौटा, और इस विचार को अपने मन से न निकाल सका कि जो दुनिया इस प्रकार भेदमयी हो सकती है वहाँ मेरा भण्डा फूटने का हर वक्त डर बना रहेगा। पार्टी का प्रत्येक सदस्य पर और जिस छोटे-से चुने हुए विशेष दल में मैं अब लिया गया था, उसको हरेक सदस्य पर तो अवश्य ही, शक की निगाह और पार्टी के निरीक्षकों का सतत पर्यवेक्षण हमेशा बना रहता होगा। एक बार भी गुमराह होने के और ज़रा-सी भी भूल के बुरे

परिणाम निकल सकते हैं।

मुझे अपने बचाव के लिए कुछ खास कोशिशें करनी होंगी। पहली बात तो यह थी कि मुझे अपने मार्क्सवाद के ज्ञान को ज़्यादा मज़बूत बना लेना चाहिए और अपनी मनोवृत्तियों को मार्क्सवादी क्रान्तिकारी के समान अधिकाधिक गढ़ लेना चाहिए। हर गोष्ठी में जाने के पहले, किसी दोस्त को मिलने के वक्त, अजनबी से बात करते हुए अथवा टेलीफ़ोन का जवाब देते हुए मुझे अपने मन को पहले से ही स्वस्थ कर लेने की आवश्यकता की ओर अधिक सतर्क रहना होगा।

अगली प्रातः ही मैंने डॉन रिचर्ड्स को फ़ोन पर बुलाया। "कैसा रहा ?" उसने पूछा।

"बिलकुल ठीक," मैंने उत्तर में कहा। "सारी कार्यवाही बड़ी दिलचस्प थी। एक छोटी-सी सफल सभा हुई। खूब गरम खबरें हैं। वास्तव में ही भण्डाफोड़ खबरें हैं।" जब हम बातचीत करने के लिए मिले तो डॉन ने कोई टीका-टिप्पणी नहीं की लेकिन स्पष्ट रूप से वह उत्साहित दीख रहा था। "अब आप तरक्की पर हैं," बस इतना ही कहकर वह चुप रह गया। "इसमें से और बहुत-कुछ निकलेगा।" डॉन की अक्सर चुप रहने की आदत ने उसके उत्साह की अभिव्यक्ति को काफ़ी फीका कर दिया था।

इस प्रो-ग्रुप की गोष्ठियाँ चलती रहीं। अगले डेढ़ बरस की कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बन्धित मेरी कार्यवाहियाँ प्रायः प्रो-४ के चुस्त षड्यन्त्र में ही केन्द्रित रहीं। धीरे-धीरे जैसे मुझे इस दल की सदस्यता का पता चलता गया, मैं अधिक-से-अधिक आश्चर्य में पड़ता गया। ऐसे-ऐसे अनपेक्षित व्यक्ति इसके सदस्य थे जो इसकी गोष्ठियों में सम्मिलित होने के लिए महीने में दो बार अपने बोस्टन और कैम्ब्रिज के घरों को जाया करते थे। मुझे यह मालूम हो गया कि इस प्रो-ग्रुप का संगठन किस प्रकार किया गया है, इसकी सुआयोजित इकाइयों में लगभग सदस्य कितने हैं, शेष पार्टी में इसका क्या स्थान है और कार्ल मार्क्स, लेनिन और विशेषतः जोसफ़ स्टालिन की ओर से यह अपने सशक्त प्रभाव का कहाँ-कहाँ और किस हद

तक प्रयोग करता है।

शुरू-शुरू में तो मुझे ऐसा जान पड़ा कि जिन नौजवानों को मैं मिल रहा हूँ, वह सफेदपोश जमात के, क्लर्की के पद से कुछ ऊपरी तबके के लोग हैं। मैं आशा करता था कि इस ओर उलझ जाना उन्हें गुमराह किये जाने का परिणाम होगा। हैरी ऐसे लोगों में नहीं था, और मेरे एक दूसरे व्यापारी दोस्त की बात भी अलग थी।

दल की एक फ़ैशनेबल, आकर्षक सदस्या, जिसका नाम हेलन था, हमारे बीच सन्देशवाहक का काम करती थी। वह नितान्त मौन धारे रहती थी और अपनी बहुकीमती पोशाक को व्यवसायी 'मॉडलों' की तरह पहनती थी। अभी एक शब्द से भी उसने यह नहीं प्रकट होने दिया कि ग्रुप में उसका विशेष काम क्या था, लेकिन उसके अक्सर न्यूयार्क और यूरोप में आने-जाने से—जब कि गुजारे के लिए उसके धन्धे का कोई पता न चलता था—हम इस सही नतीजे पर पहुँच गए कि वह न केवल पार्टी के सदस्यों की सन्देशवाहक थी वरन् अन्तर्राष्ट्रीय सन्देशवाहक थी। बाद में मुझे रूसी और अमरीकन कम्युनिस्ट पार्टियों के सम्पर्क के विषय में भी पता चला लेकिन इस सम्पर्क की रूप-रेखा को छोड़कर मैं कभी विस्तारपूर्वक कुछ न जान सका। कुल मिलाकर अमरीका में रूस की तरफ़ से जासूसी के लिए चार जाल बिछे हुए हैं और इनमें से प्रत्येक एक-दूसरे से स्वतन्त्र रहकर काम करता है। अमरीका के प्रो-ग्रुप के २००० सदस्य इनमें से एक जाल में जानकारी हासिल करने का साधन हैं—और यह मोहिनी, मौन रहने वाली हेलन मेरे अपने प्रो-४ में उनकी ओर से हमसे सम्पर्क बनाए रखती थी।

यह सब मैंने बहुत ही धीमी रफ़्तार से अपनी गोष्ठियों के सप्ताहों और महीनों के बाद ही जान पाया। अधिक सम्भव यही था कि एक गोष्ठी के बाद दूसरी गोष्टी में आप किसी सदस्य के साथ दर्जनों बार बैठे रहिए लेकिन उसके पार्टी के नाम के सिवाय आपको और कुछ पता न चलेगा।

हमारी सभाएँ इन अथवा प्रो-ग्रुप के दूसरे सदस्यों के घरों में हुआ

करती थीं और आरम्भ में यह सोचकर कभी-कभी मुझे हैरानी हुआ करती थी कि शायद ये लोग कम्युनिस्ट ही न हों, बल्कि कार्ल मार्क्स और क्रान्तिकारी आन्दोलनों के इतिहास के बारे में बौद्धिक वादविवाद के झाँसे में यहाँ आ फँसे हों।

लेकिन सभाओं का क्रम जैसे बढ़ता गया और वह हाज़िर होते गए, यह आशा जाती रही। अपनी सभाओं में कम्युनिस्ट पार्टी को हम चन्दा दिया करते थे। पार्टी के खज़ाने के लिए एक विशेष 'पोषक कोष' के रूप में प्रो-ग्रुप के सदस्यों से पैसे वसूल किये जाते थे। हम कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में, इसके आदेशों और सदस्यों के विषय में और पार्टी की नीति के सम्बन्ध में खुलकर बातचीत किया करते थे। पार्टी की सब गोष्ठियों की तरह हमारी सभाओं का भी कार्यक्रम चलता था—पहले तो गोष्ठी के कर्तव्य और कार्यवाहियों पर बहस, इसके बाद चन्दा जमा करना और पार्टी-साहित्य की बिक्री, और अन्त में मार्क्सीय साहित्य पर आधारित कोई 'शैक्षिक' वाद-विवाद।

१६४७ के ग्रीष्मान्त और १६४८ के वसन्त के बीच, जिस दल का मैं सदस्य था, उसकी सदस्यता काफ़ी संख्या में बढ़ी और बदली, नये नये चेहरे देखने को आए।

हैरी विन्नर, जो माल्डन की खबर कमरनी का हाज़िर-जवाब और मिलनसार अध्यक्ष था और सेम्युअल एडम्स स्कूल में अध्यापक था, इनमें से एक था। यद्यपि मैं विन्नर को पहले भी कुछ बार मिल चुका था और हम दोनों ने एक बार एक ही मञ्च से भाषण भी दिया था, उसके इन सभाओं में हिस्सा लेने से पहले मैं उसे अच्छी तरह नहीं जानता था। पार्टी के भाँति-भाँति के सदस्यों में वह डेनियल बून शार्मर और जैक स्टेकल जैसे भीषण षड्यन्त्रकारियों से कहीं भिन्न था। वह प्रकृति से उदार और हँसमुख था, दूसरों से अपने मानवीय सम्बन्धों में बड़ी दिलचस्पी और आनन्द लेता था और हर किसी प्रकार के दल में खप जाता था। कुछ वर्ष पहले जब माल्डन के नगर ने अपना १००-वर्षीय उत्सव मनाया तो शहर के सर्वाधिक

लोकप्रिय हैरी विन्नर को इस अवसर के लिए बनाई गई समिति का प्रधान चुना गया था।

हमारे इस प्रो-ग्रुप में पैसा जमा करने के मसले ने पहले मुझे हैरान किया। अपनी शुरू-शुरू की एक सभा में मैंने देखा कि बिना किसी विशेष हलचल के ७५) और १२५) तक खजान्ची को दे दिए जाते थे; शीघ्र ही मालूम हो गया कि प्रो-४ के पास पैसे की कोई कमी नहीं है। सदस्यों से चन्दे, 'विशेष शुल्क' और कितने ही दूसरी राशियों, उद्देश्यों और कारणों के लिए रुपया इकट्ठा किया जाता था। केवल एक बार में ही हमारे ८० सदस्यों से १७,५०० से अधिक नकद रुपया इकट्ठा हो गया था। हमारी उम्र में बड़ी और एक सम्पन्न सदस्या मिसेज़ सारा गॉर्डन, जो एक धनी सर्राफ़ की पत्नी थी, पार्टी के पॉल रोब्सन और एलिज़ाबेथ गर्ली फ्लिन-जैसे बड़े-बड़े नामी नेताओं के सम्मान में अपने शानदार होटल के निवास-स्थान पर, जहाँ से कि चार्ल्स दरिया की मनोरम विस्तृत दृष्यावली आँखों के सामने खुलती थी, पार्टियाँ दिया करती थी। इस प्रकार की पार्टियों में पैसा इकट्ठा करना, जो कि बड़े ढंग से किया जाता था, कार्यक्रम का एक आवश्यक अङ्ग था।

यह सब लोग बोस्टन क्षेत्र के जाने-पहचाने और मान्य व्यक्ति थे। इनमें से कुछ पर साधारणतया सन्देह होता था कि इनकी प्रवृत्तियाँ वामपन्थी हैं, लेकिन किसी के बारे में यह नहीं कहा जाता था कि इनमें से कोई भी कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य होगा। इनमें से बहुत से लोग तो अपने-अपने धन्धों में सबसे अधिक समादृत और चतुर व्यक्ति थे; कई-एक खूब पैसे वाले भी थे।

१६४७ के वर्षान्त में जब मैं प्रो-ग्रुप में शामिल हुआ तो कुल मिलाकर ऐसे १५ गोष्ठी-दल काम कर रहे थे। हरेक गोष्ठी-दल में से १२ अथवा १५ तक सदस्य हुआ करते थे; हमारा दल अधिक सदस्यता के दलों में से एक था। समय-समय पर सदस्यों का पुनरायोजन किया जाता था क्योंकि कुछ सदस्य गोष्ठी के क्षेत्र से बाहर चले जाते थे, कुछ नये सदस्य

भरती किये जाते थे, अथवा जब कुछ सदस्यों की नौकरी, पद-स्तर या पार्टी द्वारा सौंपे गए कर्तव्यों में परिवर्तन होता था।

प्रो-ग्रुप द्वारा लोगों को आकर्षित करने के लिए किये गए कई कृत्य काफ़ी नाटकीय होते थे। १६४८ के प्रधान-पद के आन्दोलन के दिनों में हेनरी ए० वैलेस को बोस्टन गार्डन में एक बड़े राजनीतिक जलसे के लिए बोस्टन में लाया गया। उसके भाषण का कुछ अंश रेडियो से भी प्रसारित किया गया। उसके भाषण की एक प्रतिलिपि एक दिन पहले ही प्रोग्रेसिव पार्टी के बीकन हिल वाले दफ्तर में पहुँच गई और वहाँ से होकर प्रो-ग्रुप के मेरे व्यापारी मित्र के हाथों में आई। उसके विचार में भाषण की सामग्री अपर्याप्त, बोझिल और उलझी हुई थी। मेरा मित्र मेरे दफ्तर में आया और मेरे उठने की जल्दी की। मैं दो घण्टों से अधिक उसके साथ इस भाषण से माथापच्ची करते हुए बैठा रहा और हम दोनों वैलेस के शब्दों और वाक्यों को सुधारते रहे। मेरे दोस्त ने रात-भर में इस भाषण को फिर से लिख डाला और अगली दोपहर तक साइक्लोस्टाइल द्वारा इसकी कापियाँ छाप ली गई थीं। भाषण से पहले इसे पढ़ लेने का वैलेस के पास वक्त था या नहीं, यह मुझे नहीं मालूम। जो भी हो, प्रो-ग्रुप के साथी लोग, अब जो भाषण प्रसारित हुआ, उससे खूब खुश थे।

प्रो-ग्रुप का यह संगठन काफी सुरक्षित दिखाई पड़ता था, लेकिन इस पर किसी ओर से हमला ही न हो सकता हो, यह बात नहीं थी। नवम्बर १६४७ में हममें एकाएक घबराहट फैली। नोर्मा के स्थान पर होने वाली गोष्ठी में एक रात फौजी-सा दिखाई पड़ने वाला पीट नाम का नवयुवक सन्देशवाहक पहुँचा। वह ज़िला-पार्टी के मुख्य दफ्तर और हमारे बीच मेल-जोल रखता था। वह पार्टी के नेताओं से कोई महत्त्वपूर्ण सन्देश लेकर आया था। पीट तो देखने से भी सन्देशवाहक ही जान पड़ता था; उसके सिर के बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे जो उसे जर्मनों का-सा रूप दे रहे थे और यह असर कमर की पेटी लगे, पहने हुए भरकम कोट से बढ़ रहा था। उसका आना और रुकना हमेशा थोड़े समय के लिए होता था। वह

गोष्ठी के किसी सदस्य को उसका नाम लेकर नहीं पुकारता था, न बात करता था। उसके द्वारा दिये गए सुझावों को हम पार्टी के आदर्शों के समान मानते थे। आज इस रात को उसने हमारे सामने सुरक्षितता के प्रश्न पर भाषण दिया और अपनी सुरक्षा के लिए हमें किन-किन बातों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए, यह बताया।

उसने कहा कि मुख्य बात तो सामूहिक रूप से प्रो-ग्रुप की सुरक्षा की है, चाहे इसके लिए किसी व्यक्तिगत सदस्य का बलिदान ही क्यों न करना पड़े। उसने पार्टी के इस आदेश को दुहराया कि ग्रुप का कोई सदस्य किसी भी कारण-वश ज़िला-दफ्तर में न जाय। हमें प्रादेशिक दफ्तर में फ़ोन भी न करना चाहिए, लेकिन यदि कोई सन्देश आदि पहुँचाने हों तो उन्हें गोष्ठी के प्रधान की राह से भेजना चाहिए। बाद में मुझे मालूम पड़ा कि अन्ततः यह सन्देश महान् शक्तिशाली प्रो-कौंसिल के अध्यक्ष जैन के द्वारा आगे पहुँचाए जाते थे।

गोष्ठी की बैठकों के बाहर एक-दूसरे से मिलने-जुलने में भी हमें होशियारी बरतनी आवश्यक थी। उसने कहा कि एक-दूसरे के घरों में गुप्त रूप से मिलना ठीक न होगा, बल्कि होटल, रेस्तराँ जैसे सार्वजनिक स्थान इसके लिए उपयुक्त हैं। पीट ने हमें चेतावनी दी कि हम किसी प्रकार की नामावलियाँ अथवा रिकार्ड न रखें। उसने आदेश दिया कि इस गोष्ठी की बैठकें एक सदस्य के घर से हटकर बारी-बारी किसी दूसरे सदस्य के घर पर हुआ करें, और इसका विशेष ध्यान रखा जाय कि यह बैठकें बार-बार सप्ताह के उसी दिन न रखी जायँ। सुरक्षा के लिए आवश्यक ताने-बाने में परिवर्तनशील नक्शे की ज़रूरत है। यदि हम किसी सप्ताह एक स्थान पर बुधवार की शाम को इकट्ठा होते थे तो अगले सप्ताह शुक्रवार को कहीं दूसरी जगह। बैठक के जुटने के समय में भी कार्यक्रम की दृढ़ता से बचे रहने के लिए रद्दोबदल होता रहता था।

पीट के सुरक्षा-सम्बन्धी इस भाषण के कुछ ही दिनों बाद, पार्टी अण्डर ग्राउण्ड चली गई। पिछले सहायक एटॉर्नी-जनरल ओ० जॉन रॉग्गी

द्वारा दी गई एक चेतावनी इस घबराहट का कारण थी। उसने कहा था कि उनके भूत-पूर्व अफ़सर एटॉर्नी-जनरल टॉम क्लार्क न्यू यॉर्क में एक अदालत द्वारा विद्रोहात्मक कार्यवाहियों की जो छानबीन हो रही है उसे कम्युनिस्ट पार्टी के विरुद्ध तलाशियों और हमलों का कारण बनाने वाले हैं। रॉग्गी ने कहा कि इनसे १६२० की मशहूर 'पामर रेड्स' की याद ताज़ा हो जायगी और सरकार का यह 'अन्धाधुन्ध' हमला आधी रात के वक्त पार्टी के लीडरों, पार्टी-सम्बन्धी साहित्य तथा रजिस्टरों को पकड़ने के लिए, और हिटलर द्वारा सुआयोजित 'राइश्टाग फ़ायर' की तरह कम्युनिस्ट पार्टी के विरुद्ध इल्ज़ाम व आरोप को गढ़ने के लिए होगा।

पार्टी के बड़े-बड़े नेता छिपने के लिए उतावले हो उठे। जिला के नेता 'लिटन बिल्डिंग' के दफ़्तर से भागे और पार्टी के महत्त्वपूर्ण काग़ज़ात अपने साथ ले गए। सुना गया था कि यह हमले १५ नवम्बर को होंगे; इस तारीख के कई रोज़ बाद ही पार्टी की सुरक्षा-सम्बन्धी सतर्कता दूर हुई और वह डरी हुई भेड़ों की तरह झाड़-झंखाड़ों के पीछे से निकले। इस प्रत्याशित हमले का तथ्य कभी भी ठीक से नहीं पता लगा। पार्टी में तो अपनी सुरक्षा-सम्बन्धी तैयारियों की चर्चा रहने लगी और कहा गया कि सरकारी योजनाओं को व्यर्थ कर देने का श्रेय उन्हें है। मुझे कभी यह विश्वास नहीं हुआ कि किसी ऐसे हमले की तैयारी भी हुई थी।

'पामर रेड' के डर ने पार्टी में एक नई तनावट पैदा कर दी। हम लोग टेलीफ़ोन से हटकर रहने लगे। गोष्ठी की बैठकों की सूचना ने दोस्ताना निमन्त्रण का रूप ले लिया, जैसे—"प्रिय एच०, बुधवार की शाम को सी बजे मैं कुछ मित्रों को बुला रहा हूँ। आशा है कि तुम आओगे। एन०।" न कोई पता रहता था, और न पूरे नाम ही लिखे रहते थे।

नियमों का उल्लंघन करके भी मेरे लिए समय-समय पर पार्टी के जिला-दफ़्तर में काम करना ज़रूरी होता था, क्योंकि मैं जिला एजुकेशनल कमीशन के लिए प्रचार-पत्रादि की तैयारी में निपुण माना जाता था। मेरे लिए नियम हटा दिये गए परन्तु सारी कार्यवाही बहुत ही गुप्त ढंग से पूरी की जाती थी।

यदि मुझे कोई चीज देनी जरूरी होती तो किसी रेस्तराँ में मिलने का समय नियत किया जाता। मैं बोस्टन के 'ग्लोब' नामक अखबार की एक प्रति खरीदता था, दुकान के भीतर घुसता और पार्टी के सन्देशवाहक से अगली सीट पर बैठ जाता। पार्टी के इस सन्देशवाहक के पास भी 'ग्लोब' की एक प्रति रहती थी जो उसने सामने मेज पर रखी होती थी। मैं अपना अख-बार उसके अखबार के पास ही रख देता था, और कुछ देर बाद वह मेरा अखबार उठाकर चल देता था। कॉफ़ी का अपना प्याला पीकर मैं 'ग्लोब' की वह प्रति उठा लेता था जो पड़ी रह गई थी और जिसकी तहों में पार्टी का कोई सन्देश अथवा प्रचार-पत्र सम्बन्धित आदेशों के साथ मिल जाता था।

जब पूरी सामग्री को पार्टी के मुख्य कार्यालय में ले जाने का सवाल आता तो किसी विशेष माध्यम की जरूरत न होती थी। इस सामग्री को बॉयल्स्टन स्ट्रीट के रेलवे स्टेशन पर ले जाकर मैं इसे किसी पार्सल के डिब्बे में बन्द कर देता था। फिर चाबी को लिफ़ाफ़े में डालकर मुख्य कार्यालय के पते पर भेज देता था। मुख्य कार्यालय के कर्मचारी इस चाबी को लेकर बॉयल्स्टन स्ट्रीट तक जाने वाली एक सुरंग को पार करके उस सामग्री को निकाल लाते थे। इसके लिए उन्हें खुले रूप में बाहर न आना पड़ता था।

पार्टी में पामर रेड की आशंका से अभी घबराहट फैली हुई थी; अब उसे यह चिन्ता भी सताने लगी कि कमिन्फॉर्म तथा पार्टी की राष्ट्रीय समिति ने अमरीका में जिस बड़ी आर्थिक दुर्व्यवस्था का अनुमान लगाया हुआ है, वह जल्दी ही घटकर रहेगी अथवा नहीं। राजनीतिक क्षेत्र में युद्ध का भय तथा चुनावों की सम्भावना उभर रही थी और पार्टी इन दोनों के लिए तैयारी में लगी थी।

एक सम्भावना कांग्रेस में प्रस्तुत मुंड्ट-निक्सन बिल के पास होने की भी थी जिसके अनुसार कम्युनिस्ट पार्टी अवैध घोषित हो जाती। सन्देश-वाहक पीट सुरक्षा-सम्बन्धी कड़े आदेश लेकर फिर एक बार हमारी गोष्ठी में आया। उसने समझाया कि संगठन के दृष्टिकोण से हम पाँच-पाँच

व्यक्तियों की इकाइयों में बाँट दिए जायँगे। प्रत्येक गोष्ठी के चारों ओर सुरक्षा की दीवार खड़ी कर दी जायगी। हम अपनी गोष्ठी में दूसरी गोष्ठी के किसी सदस्य का कभी नाम भी न लेंगे। दूसरी गोष्ठी के सदस्यों से बातचीत के लिए हम कभी व्यापारिक अथवा व्यक्तिगत टेलीफ़ोनों का प्रयोग न करेंगे। जहाँ से पैसे भरकर टेलीफ़ोन मिलाया जा सकता है, उन टेलीफ़ोनों का इस्तेमाल हो सकता है, लेकिन सम्भव है कि सुनने वाले का टेलीफ़ोन पुलिस की निगरानी में हो। बैठकों के बारे में लिखित सूचनाएँ निकालने की प्रथा बन्द कर दी गई। पहली बैठक में ही अगली बैठक के स्थान व समय का निश्चय कर लिया जाने लगा।

पार्टी के इस प्रकार के विघटन ने प्रो-ग्रुप को नुक़सान पहुँचाया और ख़बरें इकट्ठी करने की मेरी कोशिशों में कठिनाइयाँ पैदा कर दीं। हम छोटे-छोटे दलों में विभाजित कर दिये गए जिनमें अब पाँच से अधिक सदस्य नहीं होते थे। पार्टी की सामान्य सदस्यता का संगठन भी इसी प्रकार पुनरायोजित किया गया लेकिन उसे कुछ अरसे के बाद ही कार्यान्वित किया गया। हमारी दलीय इकाइयाँ बोस्टन के कुल क्षेत्र में बिखरी हुई थीं; एक नई प्रबन्ध-व्यवस्था के माध्यम के अतिरिक्त इनमें कोई आपसी सम्पर्क न था। प्रो-ग्रुप की हर गोष्ठी का प्रधान प्रो-सब-कौंसिल का सदस्य था लेकिन इस सब-कौंसिल में केवल पाँच गोष्ठियों का ही प्रतिनिधित्व होता था। सब-कौंसिल प्रो-ग्रुप की व्यवस्थापिनी संस्था—प्रो-कौंसिल—में केवल एक प्रतिनिधि भेजती थी। यही कौंसिल पार्टी के न्यूयॉर्क-स्थित मुख्य कार्यालय से तथा जिला कार्यालय से सीधे सम्बन्ध बनाए रखती थी।

मुंड्ट-निक्सन के सुझावों का उद्देश्य चाहे कितना ही भला रहा हो, पार्टी में उनका स्वागत व्यंग्य और घृणा की उसी हुल्लड़बाजी से हुआ जो कांग्रेस के कम्युनिस्ट-विरोधी हर क़दम पर प्रदर्शित की जाती थी। बून शर्मर ने कहा, "यह अच्छा ही है। हम वास्तव में जितने शक्तिशाली हैं, उससे अधिक हमें दिखाया जा रहा है।" हम जो लोग पार्टी के अन्दर रहकर कम्युनिज़्म का विरोध करने में प्रयत्नशील थे, हमारे लिए कम्यु-

निज़्म के प्रति देश का सार्वजनिक उन्मादपूर्ण रोष बड़ी बाधा बन गया। सरकार की ओर से काफ़ी कड़ा नियन्त्रण पहले भी था, तो भी घूम-फिरकर सब ख़बरें पा लेना अपेक्षातर अधिक आसान था। लेकिन नियन्त्रण के नये कानूनों के बनने के बाद पार्टी का जो विघटन हुआ उससे ख़बरें पाने की मेरी क्षमता को भारी धक्का पहुँचा। सौभाग्य की बात है कि प्रो-ग्रुप और इसकी सदस्यता की अच्छी-खासी तस्वीर मैं एफ़० बी० आई० के लिए पहले ही खींच चुका था। विघटन के बाद इस खाके को पूरा करना प्रायः असम्भव होता। बडी गोष्ठी में मैं काफ़ी पक्के कम्युनिस्टों के करीब था लेकिन टुकड़ों में इसके बँट जाने के बाद उनकी खोज-खबर रखना असम्भव हो गया। मुझे इसकी खबर न रही कि वे अब क्या कर रहे हैं। ऐसे ही कारणों से एफ़० बी० आई० और इसके डायरेक्टर जे० एडगर हूवर ने कम्युनिस्ट पार्टी को अवैध घोषित करने का सार्वजनिक रूप से विरोध किया। बहुत से लोगों को अन्देशा था कि इससे पार्टी अण्डर ग्राउण्ड चली जायगी और ज़्यादा खतरनाक और पकड़ से बाहर हो जायगी। सम्भव था कि इस प्रकार के नियन्त्रणात्मक क़दम से कुछ वाचाल राजनीतिज्ञों की आकांक्षाएँ पूरी हों परन्तु इससे पार्टी को नुक्सान पहुँचाना सम्भव न था।

सुरक्षात्मक नियन्त्रण की सक्रियताओं के इस दौरान में पार्टी को भारी चोट पहुँचाई गई। २० जुलाई १६४८ को न्यूयॉर्क में फेडरल ग्राउण्ड ज्यूरी ने कम्युनिस्ट पार्टी के बारह बड़े नेताओं पर, जिनमें पार्टी का प्रधान विलियम जेड फॉस्टर भी था, षड्यन्त्र का अभियोग लगा दिया। पार्टी के साधारण सदस्यों में इससे आश्चर्य और ग्लानि फैल गई, लेकिन कुछ ही समय में पार्टी ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए अपनी परेशानी को दूर किया और फिर से आत्मविश्वास संजो लिया। स्मिथ ऐक्ट की, जिसके अनुसार बारह नेताओं को अभियुक्त ठहराया गया था, निन्दा करने के लिए जगह-जगह जलसे किये गए। पैम्फलेट, प्रचार-पत्र, अखबारों व पत्रिकाओं में छपने वाले लेखादि, जिन्हें पार्टी के उत्कृष्ट कानूनी व्यक्तियों की सहायता से तैयार किया जा रहा था, अमरीका की जनता को इन व्यक्तियों की निर्दो-

षिता को प्रमाणित करने का प्रयत्न कर रहे थे। इन लेखों का स्वर तीखा तथा चुनौती-भरा था। कानून, अदालतों तथा न्याय-विभाग का ये मजाक उड़ाते थे। इन बारह व्यक्तियों की पैरवी के लिए इन्होंने होशियारी तथा तत्परता से चन्दा इकट्ठा करने का आन्दोलन उठाया। पार्टी की सब शक्तियाँ इस मुकदमे की ओर निर्दिष्ट हो गईं।

इसी बीच इस सम्भावना को ध्यान में रखते हुए कि पार्टी को अण्डर ग्राउण्ड जाना पड़ सकता है, संकटकालीन योजनाएँ बना ली गईं। बोस्टन में इस योजना को प्रो ग्रुप तथा पार्टी की साधारण गोष्ठियों में दो बार परखा गया। इसके अनुसार किसी भी क्षण पहले से ही निश्चित स्थानों पर पार्टी के सब सदस्यों को इकट्ठा किया जा सकता था। पामर रेड के वक्त फैली हुई घबराहट के दिनों में जिन कमियों का पार्टी को पता चला था, कि ऐसी स्थिति में नेतृत्व किन हाथों में चला जाय, छिपने के स्थान कहाँ हों और परस्पर सूचना आदि कैसे पहुँचे, उन्हें भी अब ठीक करने की कोशिश की गई।

योजना को परखने के लिए इन्हें दो बार जुलाई तथा अगस्त १९४८ में कार्यान्वित किया गया। इनसे पार्टी में अनुशासन-सम्बन्धी व्यवस्था की मुस्तैदी साफ़-साफ़ प्रकट हो गई। उदाहरण के तौर पर मुख्य कार्यालय से प्रो-कौंसिल के अध्यक्ष को चेतावनी की खबर पहुँचा दी गई और अध्यक्ष ने ग्रुप के अन्य सदस्यों को चौकन्ना कर दिया। यह चेतावनी, जो सन्देशवाहक द्वारा अथवा टेलीफोन से भेजे गए गुप्त सन्देशों द्वारा दी गई, इस प्रकार के साधारण वाक्यों का रूप लेती थी : "मार्था चाची बीमार हैं, क्या आप आ सकेंगे ?" प्रो-कौंसिल के प्रत्येक सदस्य ने इस सन्देश को अपनी सब-कौंसिल तक और इस दल के पाँचों सदस्यों ने इसे अपनी गोष्ठी तक पहुँचा दिया। संगठन के इस नये प्रबन्ध के अनुसार प्रत्येक स्तर पर प्रत्येक नेता केवल पाँच अन्य सदस्यों के लिए ही उत्तरदायी होता था और इस प्रकार चेतावनी शीघ्र ही साधारण सदस्यों तक पहुँच जाती थी। उस समय से पार्टी की हरेक गोष्ठी में इस प्रकार की सुविचारित योजना, पूर्व-निश्चित एकत्रित

होने की जगह, चेतावनी के गुप्त सन्देश की शब्दावली और एक-दूसरे तक समाचार पहुँचाने की व्यवस्था बाँध ली गई थी। इस प्रकार एक अण्डर-ग्राउण्ड संस्था का प्रारम्भ हुआ जिसकी व्यवस्था में तब से लगातार सुधार और उन्नति होती रही है।

मुकदमे में अभियोग लगने के कुछ ही दिनों बाद एक दिन दफ़्तर में मुझे डॉन रिचर्ड्स का फोन आया—"क्या एक-दो मिनट के लिए आ सकेंगे ?" उसने पूछा।

"हाँ, जरूर।" मैंने अपना टोप उठाया और एड्डी अल्फानो से कहा कि मैं जरा बैंक तक जा रहा हूँ।

"क्या मेरा एक चेक भुनवाते लाएँगे ?" उसने पूछा, "मेरा स्वयं वहाँ जाना बच जायगा।"

मैंने स्वीकृति जतलाई और चेक पर उसके हस्ताक्षर होने तक इन्तजार किया। फिर दफ़्तर से भाग चला। पन्द्रह मिनट बाद मैं डॉन की दो-सीटर मोटर पर बैठा था। इस मोटर का बाह्य रूप बड़ी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था और उससे इसके तेज रफ्तार के इंजन और बढ़िया अन्दरूनी सामान का कुछ अन्दाजा न हो सकता था। हैच मेमोरियल शेल के पास चार्ल्स रिवर के किनारे एस्प्लेनेड पर हमने मोटर को खड़ा कर दिया।

"आजकल क्या हो रहा है ?" रिचर्ड्स ने पूछा।

"विशेष कुछ नहीं।"

"कोई नई बात नहीं। वही रोजमर्रा की बातें—मुकदमे, नागरिक अधिकार आदि। उन बारह लोगों के बारे में कामरेड चिल्ल-पों मचा रहे हैं।"

"तुम्हें अभियोग और उन बारह लोगों के सम्बन्ध में क्या मालूम है ?" रिचर्ड्स ने पूछा।

"बहुत-कुछ। सिर्फ इसी बारे में तो हम लोग बातें करते रहे हैं।"

रिचर्ड्स की दृष्टि मोटरगाड़ी के शीशे के बाहर किसी सुदूर स्थल पर टिकी थी। वह कुछ क्षण तक मौन रहा।

"मुझे तुम्हारे बारे में तफतीश करने की हिदायत मिली है," डॉन ने कहा। किसी विषय को आरम्भ करने का यह उसका हमेशा का तरीक़ा न था।

"जो-कुछ मैं कर सकता हूँ, तुम जानते हो...."

"यह इतना आसान नहीं है। न्याय-विभाग जानना चाहता है कि क्या तुम अपनी मरजी से उन बारह लोगों के मुकदमे में सरकारी गवाह के रूप में पेश होना पसन्द करोगे? वे चाहते हैं कि तुम अपनी सारी कहानी कह सुनाओ।"

हवा के एक तेज़ झोंके ने मोटर को झकझोर दिया और मेरे मुँह से अनायास एक लम्बी सीटी निकलकर रह गई। यह उस सड़क का अन्तिम अजीब मोड़ था—सबसे अधिक अप्रत्याशित मोड़—जिसने कि प्रायः नौ वर्ष पहले सर्वप्रथम एक मोड़ लिया था।

"लो सुनो कहानी," रिचर्ड्स ने धीरे से कहा, "मैं तुम्हें इस या उस तरफ झुकाना नहीं चाहता। इस मामले में मुझे अपने मत और अपने हितों से अपने-आपको दूर रखना होगा। मैं तुम्हें सिर्फ इस मामले की पृष्ठभूमि और सरकारी मत बताऊँगा, किन्तु यह तो तुम जानते ही हो कि निर्णय तुम्हारा ही होगा—कम-से-कम आंशिक निर्णय तो होगा ही।" उसने बाद में सोचे हुए इन शब्दों के साथ अपना कथन समाप्त किया।

"इस मुकदमे में न्याय-विभाग को गवाहों की ज़रूरत है—जानदार गवाहों की, जिन्हें कटघर में खड़ा होना पड़ेगा। न्यायालय में पेश किये जाने वाले इस मामले में हम सिर्फ जूरी के समक्ष कागज़ात पेशकर या यह कहकर काम नहीं चला सकते कि अमुक गुप्तचर ने अमुक कार्रवाइयों में भाग लिया है और उसने सब बातें हमें बताई हैं, या कि अमुक व्यक्ति ने उस गुप्तचर को कुछ क्रान्तिकारी बातें बताई हैं। इस मामले में गवाह को प्रत्यक्ष रूप से शहादत देनी होगी और प्रतिरक्षा के पक्ष को उससे सवाल पूछने का अधिकार प्राप्त होगा। किन्तु यह तो एक असाधारण मामला है जिसके अभियोजन में हमें उस चीज़ को बहुत-कुछ ध्वंस कर देना पड़ेगा

जिसे अभी तक हम बनाते आए हैं। यदि तुम्हें कठघर में खड़ा होना होगा तो यह निश्चय है कि पार्टी में तुम हमेशा के लिए खतम हो जाओगे, हमारे लिए तुम्हारी उपयोगिता सदा के लिए समाप्त हो जायगी।"

मैं रिचर्ड्स से और कुछ ज्यादा सुनने के लिए चुपचाप प्रतीक्षा करता रहा। "बस, यही करना है," कहकर उसने अपना कथन समाप्त किया।

कुछ क्षणों तक चुप रहकर मैं इस बारे में सोचता रहा। मैं जानता था कि गवाहों के कठघर में मुझे देखकर पार्टी को कितना बड़ा धक्का लगेगा। मैं यह भी जानता था कि यदि पहले से ही यह मालूम हो गया कि कम्युनिस्ट पार्टी में अपने जीवन की कहानी के बारे में मैं कहने जा रहा हूँ तो मेरे परिवार के लिए एक बड़ा खतरा था। साथ ही, मैंने यह भी सोचा कि अपने जीवन की कहानी कहकर उस बोझ को मैं हल्का कर लूँगा जो कि मेरे लिए अधिकाधिक भारी बनता जा रहा था। मैं अपने काम और अपने परिवार से सम्बन्धित अन्य महत्त्वपूर्ण बातों की अभी तक उपेक्षा करता रहा था। मेरा अपना घरेलू जीवन प्रायः समाप्त ही हो चुका था। अपने व्यापार-सम्बन्धी परिचयों के क्षेत्र को बढ़ाने के लिए विज्ञापन-सम्बन्धी बैठकों में जाने की अपेक्षा मैं शाम को और शनिवारों को कम्युनिस्ट पार्टी की मीटिंगों में अधिकाधिक जाता रहा था। औसतन एक हफ़्ते में मैं तीन मीटिंगों में भाग लेता—सैल की मीटिंगों में, विशेष योजनाओं से सम्बन्धित सम्मेलनों में और विभिन्न पार्टी के नेताओं तथा पार्टी का पक्ष लेनेवाले दलों के भोजों में।

"ठीक है डॉन," मैंने कहा, "यदि मैं इस भार से मुक्त हो सकूँ और साथ ही सरकार की सेवा कर सकूँ तो अच्छा ही होगा। इसमें तो कोई शक नहीं। सचमुच, ईवा और मैं इस बारे में बहुत चिन्तित थे। हम यह न सोच पाते थे कि किस प्रकार सम्बन्ध-विच्छेद किया जा सकता है। हमें कोई सीधा, साफ रास्ता नहीं दिखाई देता था। अब यह एक सुखद समाधान प्रतीत होता है। मेरी चारों पुत्रियाँ अब इतनी बड़ी हो चुकी हैं कि वे पढ़कर समझ सकती हैं कि यह सब क्या मामला है। मैं नहीं चाहता

कि वे अपने पिता के सम्बन्ध में गलत धारणा लेकर बड़ी हों। इसके अलावा ईवा भी इन सब तफतीशों और बदनामी के प्रचारों से बहुत चिन्तित हो चुकी है। यदि मुझ पर कम्युनिस्ट होने का अभियोग लगाया गया तो बोस्टन में मेरा क्या हाल होगा ? हमें सब बातों से ज्यादा इस बात की फिक्र है।"

"तो तुम्हारा उत्तर 'हाँ' है ?" रिचर्ड्स ने अधीर होकर पूछा।

मैं कुछ क्षणों तक विचार करता रहा। निर्णय करना आसान न था। "नहीं," मैंने कहा, "मेरा उत्तर 'नहीं' है।"

रिचर्ड्स एक क्षण के लिए चुप रहकर बोला—"क्या सचमुच तुम यही कहना चाहते हो ?"

"हाँ। और भी कई बातों पर ग़ौर करना है। मैं खूब अच्छी तरह जानता हूँ कि इसका असर क्या होगा। तुमने ठीक ही कहा है कि मैं हमेशा के लिए पार्टी से खतम हो जाऊँगा। इन लोगों की हालत सुधरने से पहले अभी इन्हें और नीचे गिरना है। इस समय पार्टी बारूद के उस बण्डल की तरह है जो काफी उठा-पटक बरदाश्त कर सकता है, पर दियासलाई दिखाते ही भड़क उठेगा। शीघ्र ही पार्टी अज्ञात रूप धारण करने वाली है। वह अधिकाधिक सख्त बनती जा रही है और जितनी ज्यादा सख्त बनेगी उतना ही किसी दूसरे को उसमें दाखिल करना मुश्किल हो जायगा। पार्टी के बाहर रहकर यह पता लगाना कि उसके अन्दर क्या हो रहा है प्रायः असम्भव ही हो जायगा। लेकिन अभी तक तो मैं पार्टी में हूँ और मैं समझता हूँ कि मुझे उसके अन्दर ही रहना चाहिए।"

"मैं तुम्हारा मतलब समझ रहा हूँ," रिचर्ड्स ने कहा।

"मुझे अभी हाल में बहुत-कुछ ऐसी बातें मालूम होने वाली हैं जो तुम्हारे लिए बहुमूल्य सिद्ध हो सकती हैं। कम्युनिस्टों के पक्ष के एक दल में मेरा स्थान बन चुका है। मुझे हर रोज इधर-उधर से कुछ ऐसी खबरें मिलती हैं, जिन्हें मिलाकर एक पूरी तस्वीर बनाई जा सकती है। मैं नित्यप्रति नये लोगों से मिलता हूँ। कार्यकरण के स्तर पर, गिरोह

के सबसे तगड़े आदमी बून शिरमर से मेरा निकट सम्पर्क है। इसके अलावा अभी तक मैं यह निश्चय नहीं कर पाया हूँ कि क्या एक साथ इन सब लोगों पर मुकदमा चलवा देना अच्छा रहेगा ? हो सकता है यही ठीक हो, पर मैं कुछ नहीं कह सकता। लेकिन मैं यह जरूर जानता हूँ कि इससे कम्युनिस्ट पार्टी बन्द न होगी, चाहे वे दस-बीस आदमियों को जेल में डालने में ही क्यों न सफल हों।''

''यह तो तुम जानते ही हो, हर्ब,'' डॉन ने बीच में बोलते हुए कहा, ''कि इस प्रकार तुम्हें अदालत में गवाही देने के लिए जबर्दस्ती बुलाया जा सकता है। वे तुम्हें शहादत देने के लिए बाध्य कर सकते हैं।''

''मैं चुपचाप चला जाऊँगा, जनाब, आप फिक्र न करें,'' डॉन ने अपनी एक अनूठी मुसकान प्रदर्शित करते हुए कहा।

''इस काम को करने का यही बेहतर तरीका है,'' मैंने कहा, ''आखिर मैं तो एक बहुत छोटे दायरे में काम करने वाला आदमी हूँ और मेरा दृष्टिकोण सीमित है। मेरे लिए पूरी तस्वीर देख सकना सम्भव नहीं है। तो फिर, मैं कैसे तय कर सकता हूँ कि मुझे गवाही देनी चाहिए या नहीं। यह निर्णय मैं नहीं कर सकता। निर्णय करने का मुझे अधिकार नहीं है। अतः मैं कुछ न करूँगा। मैं स्वतः गवाही देने न जाऊँगा। मेरा अपना निजी ख़याल यही है कि मैं जहाँ भी हूँ वहीं मुझे रहना चाहिए। किन्तु यदि न्याय-विभाग चाहता है कि मैं कटघर में खड़ा होऊँ तो वे गवाही देने के लिए मुझे बुला सकते हैं, और तब मुझे जाना ही होगा। क्या तुम नहीं समझते कि यही सबसे अच्छा तरीका है ?''

''ठीक है,'' डॉन ने अपने हाथ थपथपाते और एक साथ फुर्ती दिखाते हुए कहा, ''विश्वास रखो कि मैं तुम्हारे उत्तर को ज्यों-का-त्यों पहुँचा दूँगा।'' डॉन ने मेरे निर्णय पर कोई प्रत्यक्ष टिप्पणी न की थी किन्तु वह उससे खुश नजर आया। कोई भी गुप्तचर यह पसन्द न करेगा कि सूचनाओं के जिस जाल को बनाने में उसने वर्षों लगाए हों वह उसकी नजरों के सामने तोड़ा जा रहा हो।

अपनी जाकेट की अन्दर की जेब में हाथ डालते हुए उसने कहा, "मुझे तुमसे सिर्फ यही सवाल पूछना था। मैं तुम्हें यह बता देना चाहता हूँ कि यह निश्चित नहीं कि अदालत से तुम्हें गवाही देने के लिए बुलवाया ही जाय, और अगर बुलवाया भी गया तो भी इसमें बहुत वक्त लगेगा। लेकिन इस बीच केस को बनाने में अभी बहुत काम करना है। न्यायवादी गण तुम्हारी कहानी की शुरू से जाँच करना चाहते हैं।"

मेरे कुछ कहे बिना ही डॉन ने मेरी आशंका को समझ लिया। "फिक्र मत करो। तुम्हें कोई नुकसान न होगा। हम इस बात को गुप्त बनाए रखने की भरसक कोशिश करेंगे और हर तरह से तुम्हारा बचाव करेंगे। अच्छा होगा अगर कुछ दिन के लिए तुम बाहर चले जाओ, हालाँकि मुझे इस बात का दुख है कि मैं तुम्हें इतनी जल्दी चले जाने के लिए कह रहा हूँ।"

"कब जाना होगा?"

"आज रात को।" उसने अपनी जेब से हवाई जहाज का एक टिकिट निकालकर मुझे दे दिया। "बोस्टन से न्यु यॉर्क," उसमें लिखा था। "शाम को जाने वाला हवाई जहाज है," डॉन ने कहा, "आधी रात से पहले तुम लौट आओगे।"

"आज रात को मुझे गिरजाघर में एक दम्पति से मिलना है," मैंने कहा, "लेकिन इस मुलाकात से मैं छुट्टी पा सकता हूँ।"

"तुम्हारी बीवी तो सब समझ लेगी न? मेरा खयाल है कि इस बारे में तुम अभी उससे कुछ न कहो।"

"मैं तुमसे सहमत हूँ। अनावश्यक चिन्ता पैदा करने में, या जब तक यह निश्चित न हो जाय कि मुझे बुलाया जायगा, झूठी आशाएँ खड़ी करने में कोई अर्थ नहीं। ईवा आजकल हर प्रकार की सम्भावना के लिए तैयार रहती है। मैं उससे सिर्फ यही कहूँगा कि आज रात को मुझे देर तक काम करना है। प्रायः हर शाम को ही देर हो जाती है इसलिए आज ही कोई खास फर्क न पड़ेगा।"

"ठीक," डॉन ने कहा। "अच्छा, अब सुनो। तुम ह्यूवर्ट ब्रुक्स के नाम से सफर करोगे। यही नाम टिकिट पर है और यही नाम सरकारी न्यायवादियों के कागजातों में दर्ज है। न्यूयार्क में हवाई अड्डे पर कुछ लोग तुमसे मिलने आयेंगे। लेकिन यह न भूलना कि तुम्हारा नाम ह्यूवर्ट ब्रुक्स ही है। तुम इन्तजार करना, मिलने वाले खुद तुमसे मिलने आ जायँगे। दो गुप्तचर होंगे और उनके साथ शैपीरो नामक एक व्यक्ति होगा। वे तुम्हारा असली नाम न जानना चाहेंगे इसलिए उन्हें अपना असली परिचय बताना तुम्हारे लिए जरूरी नहीं। तुम्हारा क्या काम है, या तुम कहाँ रहते हो, या पार्टी के बाहर तुम किन लोगों को जानते हो आदि बातों के बारे में तुम न बोलोगे। सबसे अच्छा यही है कि तुम सवालों का जवाब देने के अतिरिक्त कुछ न बोलो। लेकिन सवालों का तुम पूरा जवाब दे सकते हो।"

हमने एक-दूसरे की ओर देखा। मैं हर्षोल्लसित हो उठा।

"सब समझ गए न?" डॉन ने पूछा। मैंने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

"एक बात पर मैं और जोर देना चाहता हूँ। जाते और आते समय हवाई जहाज पर किसीसे भी न बोलना। हवाई अड्डे पर भी जो लोग तुमसे मिलने आएँ उनके अतिरिक्त किसीसे न बोलना। अजनबी लोगों से कोई सवाल न पूछना। और सबसे ज्यादा जरूरी यह है," उसने मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा, "कि चिन्ता मत करना।"

मैं तुरन्त दफ्तर लौट आया। लिफ्ट में चढ़ते समय मुझे अचानक खयाल आया कि मैं एडी एलफैनी का चेक भुनाना भूल गया था। मैंने सोचा कि इस एक जरा-सी चीज के कारण मैं आसानी से फँस सकता था। मैं नीचे उतर आया और यूनाइटेड स्टेट्स ट्रस्ट कम्पनी में जाकर मैंने चेक भुना लिया।

लौटकर दफ्तर आने पर एडी ने पूछा—"इतनी देर कहाँ लग गई?"

"रास्ते में एक दोस्त मिल गया और उसके साथ खाना खाने बैठ गया। मुझे मालूम न था कि तुम्हें जल्दी थी। माफ करना।"

"कोई बात नहीं," एडी ने कहा।

मेज पर रखे अपने काम को पूरा करके मैंने शाम को देर से लौटने की सूचना ईवा को टेलीफोन द्वारा दी। वह जानती थी कि टेलीफोन पर ज्यादा पूछताछ नहीं की जानी चाहिए थी, और उसने मेरी बात चुपचाप स्वीकार कर ली। फिर मैं एक गाड़ी में बैठकर हवाई अड्डे पहुँच गया।

शाम को ला गार्डिया हवाई अड्डे पर मैं उतरा। हवाई अड्डे के दरवाजे से निकलकर एक आदमी मेरी ओर बढ़ा और उसने सरकारी पूछ-ताछ करने के लिए अपना कार्ड दिखाया।

"ह्यूबर्ट ब्रुक्स!" हमने हाथ मिलाए, कुछ देर बातचीत की और फिर हवाई अड्डे के बाहर खड़ी मोटरगाड़ियों के पास हम आ गए। एक बड़ी, काली, शानदार मोटर के पास एक दूसरा गुप्तचर और एक तीसरा आदमी खड़ा था, जो कि न्याय-विभाग का एक न्यायवादी था और जिसका नाम मुझे शैपीरो बताया गया। दोनों गुप्तचर उस बड़ी मोटर की अगली सीट पर बैठ गए और पिछली सीट पर श्री शैपीरो मेरे साथ थे। लॉंग आइलैंड से होती हुई हमारी गाड़ी शहर से दूर जाने लगी। मैं तुरन्त समझ गया कि हम लोग कहीं रुकेंगे नहीं और सारी बातचीत गाड़ी में ही हो जायगी।

श्री शैपीरो मुझसे एक के बाद एक सवाल पूछते रहे। वह लाइनदार पीले कागज के एक बड़े पैड पर गाड़ी की मन्दी रोशनी में नोट्स लिखते रहे।

"क्या आप कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं?"

"जी हाँ।"

"आप कब सदस्य बने?"

"१९४४ में।"

"ए० वाई० डी० क्या चीज थी? क्या आपने उसके आरम्भिक सम्मेलन में भाग लिया था? कहाँ और कब? आप न्यू इंग्लैण्ड के कोषा-ध्यक्ष कब बने? कैसे बने? कम्युनिस्ट राजनीतिक संघ क्या था?" इस

प्रकार के असम्बद्ध प्रश्नों और उत्तरों द्वारा मैंने अपने पार्टी-जीवन की संक्षिप्त रूप-रेखा बता दी और तब श्री शैपीरो की पूछताछ ने एक दूसरा रुख पकड़ा।

"प्रोलेतेरियत (सर्वहारा) का क्या अर्थ है ? बूर्जुआजी (धनिक वर्ग का) क्या अर्थ है ? ब्रौडरवाद क्या था ? जनतन्त्री केन्द्रीयवाद क्या है ?" दो घंटों से भी अधिक की उस बातचीत में हमने कोई भी मैत्रीपूर्ण एवं अनौपचारिक बात न की। श्री शैपीरो ने शायद ही इस बीच कभी मेरी ओर देखा हो। किन्तु हवाई अड्डे को लौटते समय, अन्त में उन्होंने कहा, "मालूम होता है आपने सारी प्रविधियों को अच्छी तरह जान लिया है।"

"यह तो मेरे लिए जरूरी ही था," मैं हँस पड़ा। "मुझे पार्टी में सबसे अच्छी शिक्षा मिली है, और वह भी मुफ्त।"

आगामी दो शनिवारों को भी मुझे न्यू यॉर्क का इसी प्रकार का दौरा करना पड़ा। डॉन रिचर्ड्स ने इन दोनों मौकों पर कुछ पहले ही मुझे सूचना दे दी थी। हवाई जहाज़ के टिकिट एक खाली लिफाफे में रखकर मुझे भेजे गए थे, जिन पर मेरा असली नाम लिखा था, पर न्यू यॉर्क की यात्रा मैंने ह्यूबर्ट ब्रुक्स के नाम से ही की। लौंग आइलैण्ड और वैस्टचैस्टर काउण्टी के अंधेरे रास्ते में श्री शैपीरो लगातार नोट्स लेते रहे। इस प्रकार मैं बोस्टन और न्यू यॉर्क के बीच में लगातार आता-जाता रहा।

और फिर अचानक सब बन्द हो गया, मौन छा गया और इस बारे में मैंने किसीसे कोई बात न सुनी। मैंने इन सब बातों को भूल जाने की और अपने दिमाग से पूरी तरह निकाल देने की पूरी कोशिश की, पर ऐसा करना आसान न था। हालांकि अभी तक मेरा यही खयाल था कि सरकारी गवाह की बजाय एफ० बी० आई० के गुप्तचर के रूप में मैं सरकार के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता हूँ, किन्तु मैं यह भी समझता था कि इस मुकदमे द्वारा मैं पार्टी से छुटकारा पाकर एक सुखी सामान्य जीवन व्यतीत कर सकूँगा। लेकिन जब मुझे न्यू यॉर्क से कोई खबर न मिली, तो मैं अपनी पुरानी दिनचर्या में व्यस्त रहने लगा।

१६४८ की सर्दियों के आरम्भ में सरकार ने अपना मौन भंग करके मुझे सूचित किया कि सम्भवतः मुझे अदालत द्वारा गवाही देने के लिए बुलाया जाय। फेडरल न्यायवादियों के साथ बातचीत करने के लिए मुझे न्यू यॉर्क और वाशिंगटन बुलाया गया।

डॉन रिचर्ड्स ने मुझे अपनी कार्रवाई गुप्त रखने की आवश्यकता समझाई। ऐसे किसी आदमी से रास्ते में भेंट हो जाना सम्भव ही था जो कि मेरे कामों में दिलचस्पी लेने लगे। मेरे लिए हमेशा कोई जवाब तैयार रखना जरूरी था और एक ऐसी सामयिक घटना हो चुकी थी जिसने मुझे एक सत्याभासक उत्तर प्रदान कर दिया था।

कुछ सरकारी वकीलों ने, जिनमें फ्रैंक गार्डन नामक एक वकील भी था, पाँच बड़ी फिल्म-कम्पनियों के खिलाफ एक मुकदमा जीता था। सरकार की इस जीत के फलस्वरूप एम० एण्ड पी० थियेटर्स कम्पनी भंग हो चुकी थी। इसी कम्पनी से अमरीकन थियेटर्स नामक एक दूसरी कम्पनी बनाई गई, जिसमें मैं विज्ञापन-सम्बन्धी सहकारी डायरेक्टर नियुक्त किया गया था। लेकिन मैंने यह जता दिया था कि इस नये काम से मैं खुश नहीं हूँ, और कम्युनिस्टों का समर्थन करने वाले जिस दल में मैं काम करता था, वहाँ भी मैंने यह बता रखा था कि प्रगतिशील दल में मेरी कार्रवाइयों तथा हालीवुड में कम्युनिस्टों की धर-पकड़ से होने वाले उत्पात के कारण कम्पनी भी मुझसे नाखुश है। पार्टी में खबर फैल गई कि मेरे-जैसे प्रत्यक्ष गैर-कम्युनिस्ट को राजनीतिक कार्रवाई के कारण अपनी नौकरी से हाथ धोने पड़ रहे हैं। इस बात ने न केवल मेरे लिए सहानुभूति ही पैदा की बल्कि मुझे अपने-आपको छिपाने के लिए एक आवरण भी प्रदान किया। यदि कोई मुझसे पूछता कि मैं क्यों बार-बार न्यू यॉर्क आता-जाता हूँ तो मैं कह सकता था कि मैं नौकरी की तलाश में हूँ।

उन ग्यारह लोगों का मुकदमा—अब ग्यारह ही रह गए थे क्योंकि प्रधान फोस्टर बीमारी के कारण छोड़ दिये गए थे—जनवरी में आरम्भ हुआ, किन्तु मार्च में जाकर ही 'डेली वर्कर' के भूतपूर्व प्रधान और एक

सुधारे हुए भूतपूर्व कम्युनिस्ट लुई बुडेन्ज़ ने सरकारी गवाह के रूप में स्थान ग्रहण किया। मैं इस मुकदमे से सम्बन्धित वकीलों से सलाह-मशविरा करने न्यू यॉर्क की सरकारी अदालत में दो बार सीधा पहुँचा।

मेरी यात्राएँ अभी तक गुप्त रखी जाती थीं, किन्तु प्रक्रिया बदल चुकी थी। न्यू यॉर्क पहुँचने पर मैं एक बताये हुए नम्बर को टेलीफोन कर कहता, "मैं ह्यूबर्ट ब्रुक्स बोल रहा हूँ।" और टेलीफोन सुनने वाला व्यक्ति मुझे बताता कि मुझे कहाँ और कब जाना है। सरकार ने मेरा परिचय सर्वोच्च वकीलों तक से अभी तक छिपा रखा था। सरकार चाहती थी कि यदि किसी कारण मुझे मुकदमे में न बुलाया जाय तो मैं कम्युनिस्ट पार्टी में अपनी सदस्यता जारी रख सकूँ।

सरकारी वकील जॉन एफ० एस० मैकगोहे से एक रोज़ सारे दिन मेरी बातचीत चलती रही। श्री मैकगोहे बारीकियों की अपनी तलाश में पूरी तरह सचेत रहते थे। उन्होंने अपने अध्ययन के दौरान में मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अत्यधिक ज्ञान प्राप्त कर रखा था और वह उसके कुटिल पथ को खूब अच्छी तरह समझते थे।

यह अधिकाधिक स्पष्ट होने लगा कि सरकार मेरे साक्ष्य के आधार पर अधिकांशतः अपना मुकदमा बना रही है, और इसलिए उन्हें मुझे गवाही देने के लिए बुलाना ही पड़ेगा। किन्तु बोस्टन में एक दिन डेनियल बून शिरमर मुझसे मिलने आया और उसने वाशिंगटन स्ट्रीट में स्थित वालडोर्फ रेस्तरां में अपने साथ भोजन करने के लिए मुझे आमन्त्रित किया। कॉफी पीते समय उसने मुझसे सवाल पूछना आरम्भ किया—

"तुम्हारा नया काम कैसा चल रहा है?"

"ठीक ही है। मुझे एक साथ और भी कई काम करने पड़ रहे हैं।"

"क्या तुम्हें बहुत ज्यादा बाहर आना-जाना पड़ेगा?"

"हाँ, कभी-कभी।"

"कहाँ?"

"सारे न्यू इंग्लैण्ड में।"

"क्या तुम अपनी मोटर काम में लाओगे या कम्पनी की?"

"शायद अपनी ही काम में लाऊँ।"

"क्या तुम्हें रविवारों की छुट्टी रहेगी?"

"हाँ।"

और फिर उसने अपने आसपास नज़र डालकर मेरी ओर झुककर कहा : "हमें एक विशेष कार्य के लिए कुछ विश्वसनीय लोग चाहिएँ। हमें इस शहरी जिले से बाहर जाने-आने वाले कुछ संदेशवाहक चाहिएँ। तुम्हारे पड़ोसी कैसे हैं? क्या वे तुम पर शक करते हैं?"

"कभी किसी ने अपना शक जाहिर नहीं किया।"

"क्या तुम्हारे घर में किसी के लिए कुछ समय तक छिपकर रहने के लिए जगह हो सकती है?" मैंने बताया कि मेरे छोटे से घर में इतनी जगह नहीं है। "हमें सप्लाई डिपो चाहिए। क्या तुम्हारे घर में सामान रखने की जगह है?"

"आजकल मैं अपने घर में एक गैरिज बना रहा हूँ। मैं उसके पीछे आसानी से थोड़ी जगह और निकाल सकता हूँ।" बून को मेरा यह विचार बहुत पसन्द आया। हमने कागज के तौलिये पर उस निर्दोष प्रतीत होने वाले स्थान का नक़शा बनाया, जिसमें एक ऊँचा चबूतरा भी था जिस पर लॉरी से सामान उतारा जा सके। मैंने अपने बनाये हुए नक़शे के अनुसार वास्तव में काम भी शुरू कर दिया था किन्तु सामान ढोने का वह चबूतरा जिस लिए बनाया गया था कभी काम में न लाया गया। मेरे बच्चों ने उसे अपने पड़ोस के दोस्तों से एक पैसा टिकिट लेकर तमाशा दिखाने के काम में लिया।

बून के साथ हुए गूढ़ार्थक वार्तालाप के पश्चात् मैंने तुरन्त एफ० बी० आई० को सब-कुछ बता दिया। बून की बातें बता देने के बाद मैंने यह विचार प्रकट किया कि संदेशवाहक का काम बहुत महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। "मेरा अभी भी यह खयाल है कि मैं इसी चीज में रहूँ ताकि देख सकूँ कि क्या कुछ हो रहा है," मैंने कहा। डॉन रिचर्ड्स ने इस बारे में

भरसक कोशिश करने का मुझे आश्वासन दिया।

किन्तु सरकार इस मामले में अपना रास्ता तय कर चुकी थी। रिचर्ड्स ने मुझे सूचना दी कि बहुत सम्भव है कि बूडेन्ज की साक्षी के पश्चात् ही मुझे गवाही देने बुलाया जाय। "अपना सन्दूक तैयार रखो," रिचर्ड्स ने मुझसे कहा। हम दोनों ने मिलकर कार्यकरण की एक योजना बनाई। सरकार और ईवा के साथ टेलीफोन पर बातचीत करने की एक सांकेतिक भाषा बनाई गई। तय किया गया कि गवाही देने की इत्तला पाते ही ईवा और बच्चों को बाहर भेज दिया जायगा ताकि बदला लेने वालों से बचा जा सके और शहादत की समाप्ति तक, जिसमें बहुत दिन लगने वाले थे, समाचारपत्रों के संवाददाताओं से भी दूर रहा जा सके। ईवा ने निकट-स्थित लिनफील्ड में रहने वाली अपनी देवरानी से बातों-ही-बातों में कहा कि क्योंकि मैं बाहर जाने वाला हूँ इसलिए वह अपने दोनों बच्चों को कुछ दिनों के लिए उसके यहाँ छोड़ना चाहती है। ईवा ने सोमिरविल में अपनी माँ को भी खबर भेजी कि वह अपने दोनों छोटे बच्चों को उसके पास एक-दो दिन के लिए छोड़ना चाहती है। ईवा अपने सम्बन्धियों को इस सबका कारण न बता सकती थी। तलाश करने वालों से बचने के लिए हमने बच्चों से कह रखा था कि हम लोग कुछ दिन के लिए राई बीच, न्यू हैम्पशायर जा सकते हैं, जहाँ कि मेरे माता-पिता रहते थे। इस खबर से खुश होकर बच्चों ने अपने साथियों से यह बात कह दी और इस प्रकार सारे पड़ोस में यह खबर फैल गई।

मैंने अपने आधे दर्जन सम्बन्धियों और मित्रों को पत्र लिखे—सैम पिनैन्स्की को, जो कि एम० एण्ड पी० और अमेरिकन थियेटर्स दोनों में मेरा मालिक था; रेवरेण्ड रैतफ बरथोर्फ को, जो कि वेकफील्ड की बैपटिस्ट चर्च का धर्म-प्रचारक था; और अपने माता-पिता तथा परिवार के अन्य व्यक्तियों को। पत्रों को लिफाफों में बन्द करके डाक में छोड़ने के लिए तैयार कर लिया गया। कुछ पत्र एफ० बी० आई० के बोस्टन कार्यालय में काम करने वाले विशेष प्रतिनिधि, एडवर्ड सोसी को और कुछ ईवा को दे दिये गए। वह

डाक में उसी समय छोड़े जाने थे जब कि मैं गवाही दे रहा हूँ।

मंगलवार, ५ अप्रैल १९४९ को मेरे टेलीफोन की घण्टी बजी।

"हैलो।" मैं डॉन रिचर्ड्स के अनुनासिक स्वर को पहचान गया। "तुम्हारा दिया हुआ छपाई का काम पूरा हो चुका है। क्या पाँच बजे तुम उसे उठा सकते हो?"

"हाँ, मैं पहुँच जाऊँगा," मैंने कहा। डॉन ने सांकेतिक भाषा में कहा था कि वह मेरे घर पाँच बजे आयेगा और मुझे बाहर जाने के लिए तैयार रहना चाहिए। शायद मुझे अगले दिन ही गवाहों के कठघर में खड़ा होना पड़े। किन्तु निश्चित कुछ भी नहीं कहा जा सकता था। मुकदमा जिस तरह कभी न खतम होने वाली दलीलों और आपत्तियों के साथ आगे बढ़ रहा था, मुझे हफ्ते-दो हफ्ते चुपचाप बैठा रहना पड़ सकता था। डॉन ने मुझे पहले से ही समझा रखा था कि कि अपने काम से कुछ दिनों की छुट्टी लेने के लिए मेरे पास एक अच्छा बहाना होना चाहिए। मैंने जुकाम का बहाना कर एडी एलफैनो को सूचित किया कि मेरी तबियत खराब है।

रिचर्ड्स मुझे मोटर में बिठाकर सीधा हवाई अड्डे ले गया। "तुम्हें अभी भी अज्ञात बने रहकर यात्रा करनी होगी," उसने मुझसे रास्ते में कहा। "होशियार रहना। लेकिन जैसे ही तुम श्री० मिकगोहे के पास पहुँचो सुरक्षा की चिन्ता भूल जाओ। उनसे तुम कह सकते हो कि तुम कौन हो। यह तो तुम्हें कहना ही होगा।"

मैं न्यूयॉर्क जाने वाले हवाई जहाज में बैठ गया। गार्डिया हवाई अड्डे पर मैंने उसी व्यक्ति को टेलीफोन किया जिससे मेरा प्रत्यक्ष परिचय न था, और उसके कहे अनुसार ग्राण्ड सैण्ट्रल टर्मिनल के पूछताछ के दफ्तर में पहुँचा। वहाँ मुझे एफ० बी० आई० का एक प्रतिनिधि मिला जिसका नाम मैं न जानता था पर जिसके साथ मेरी दोस्ती हो चुकी थी। वह मुझे एक सड़क पर खड़ी हुई मोटर के पास ले गया। वहाँ एक दूसरा प्रतिनिधि मोटर चलाने की जगह बैठा हुआ था। हम शाम की भीड़ में से होते

हुए फोली स्कायर पहुँचे और तुरन्त ही संयुक्त राज्य अमरीका के न्यायालय में दाखिल हो गए। सरकारी लोगों के आने-जाने वाले एक दरवाजे पर सशस्त्र पहरेदार मौजूद थे। हम एक लिफ्ट द्वारा चुपचाप ऊपर पहुँचाये गए। लिफ्ट के ऊपर पहुँचने पर एक प्रतिनिधि मोटर में मेरे साथ बैठा रहा और दूसरा यह देखने चला गया कि रास्ता साफ़ है या नहीं। दालान से होते हुए मैं एक दरवाजे के सामने पहुँचा जिसे एक प्रतिनिधि ने मेरे लिए खोला और उसके अन्दर घुसते ही एक स्प्रिंग के ताले से वह अपने-आप बन्द हो गया। हम कई दफ्तरों में से होकर गुजरने लगे जिनकी सब मेजें खाली थीं। मुझे अभी तक किसी ने न देखा था। अन्त में, मैं एक ऐसे छोटे कमरे में दाखिल हुआ जिसमें कुछ कुरसियाँ थीं, एक खिड़की पर पर्दा पड़ा हुआ था और एक मेज पर बहुत से कागजों का ढेर था। दरवाजा खुला और श्री शैपीरो अन्दर आये। हमने एक-दूसरे का अभिवादन किया।

"ये सब तुम्हारे कागजात हैं," शैपीरो ने मेज पर रखे हुए कागजों को दिखाते हुए कहा।

"बहुत बड़ी फाइल है। मेरा खयाल न था कि इतने ज़्यादा कागजात होंगे।"

श्री मिकगोहे फ्रैंक गॉर्डन के साथ कमरे में आये—उसी गॉर्डन के साथ जिसने पैरामाउण्ट कम्पनी के खिलाफ मुकदमा जीता था। "यह भी खूब है," मैंने उसका अभिवादन करते हुए कहा। "पहले आपने मुझे एक नौकरी से छुड़ा दिया और अब आप इस काम पर तुले हैं।"

मेरा खयाल था कि श्री मिकगोहे और उनके सहकारी दुबारा मेरी शहादत सुनना चाहेंगे और इस खयाल ने मुझमें उत्तेजना पैदा कर दी। किन्तु श्री मिकगोहे ने शान्ति के साथ अनौपचारिक रूप से एक घण्टे तक मुझसे बातचीत की। उन्होंने मुकदमे के बारे में बहुत कम सवाल पूछे, केवल मेरा परिचय जानना चाहा कि मेरा असली नाम क्या है, मैं कहाँ रहता हूँ, मैंने कितनी शिक्षा पाई है और क्या व्यापार किया है।

उन्होंने केवल वही बातें पूछीं जो कि आरम्भिक साक्ष के लिए आवश्यक थीं। मेरे साथ आये हुए एफ० बी० आई० के दोनों प्रतिनिधि इस बैठक के दौरान में हमारे साथ ही रहे—एक हमारे कमरे में और एक कमरे के ठीक बाहर।

बाद में, दोनों मुझे एक गाड़ी में बिठाकर खाना खिलाने एक होटल में ले गए। एफ० बी० आई० के उन दोनों आदमियों का नाम मुझे जिम जॉन्स और जैफ पार्सन्स बताया गया। उन दोनों आदमियों के साथ हम शान्त सड़क पर स्थित एक छोटे से होटल में पहुँचे। मैं उस होटल का नाम कभी न जान पाया। होटल के दालान में वे दोनों अलग खड़े रहे और मैंने होटल के रजिस्टर में अपना नाम ह्यूबर्ट ब्रुक्स और अपना पता एस एडवर्टाइजिंग कम्पनी, बोस्टन लिखा।

ऊपर की मंजिल के एक अकेले कमरे में जैफ ने मुझसे कहा : "मैं नहीं चाहता कि जब तक कल सुबह हम न आएँ आप दरवाज़ा खोलें या टेलीफ़ोन करें। दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लीजिए और बन्द ही रहने दीजिए। और सब ठीक है," उसने मुस्कराकर कहा, "परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं।"

मैं कमरे के बीच में अकेला खड़ा रह गया और वे दोनों चले गए। मैंने दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लिया और बिस्तर पर लेटकर मैं निद्रारहित रात बिताने की तैयारी करने लगा।

अगले दिन मेरे दोनों अंगरक्षक सुबह का नाश्ता कराने मौजूद थे। मुझे एक गाड़ी में बिठाकर फेडरल बिल्डिंग की ऊपरी मंजिल के एक अकेले कमरे में प्रतीक्षा करने के लिए छोड़ दिया गया। ग्यारह बजे के करीब जैफ ने मुझे इशारे से बुलाया। हल्के कदमों और धड़कते दिल के साथ एक छोटी लिफ्ट द्वारा मैं अदालत के कमरे में पहुँचा। करीब एक घण्टे तक मैं अँधेरी लिफ्ट में खड़ा रहा। खुले दरवाजे से मुझे अदालत का एक कोना और सहकारी अमीन की मेज़ की एक झलक दिखाई दे रही थी। मेरा गला सूखा हुआ था। दोपहर को बुलावा आया पर वह मेरे लिए

न था। अदालत खाने की छुट्टी पर उठ गई, और मुझे ऊपर की मंजिल के अपने कमरे में पहुँचा दिया गया। मेरे लिए खाना लाया गया। दो बजे से कुछ पहले ही मुझे पुनः अदालत के कमरे में ले जाया गया।

इस बार मुझे ज्यादा देर तक इन्तजार न करना पड़ा। कचहरी में कुछ शुरू की दलीलें चल रही थीं। मैंने अपनी घड़ी में समय देखा। उस समय दो बजकर पाँच मिनट हुए थे। मैंने ईवा के बारे में सोचा। मुझे विश्वास था कि जैसे ही मैं कठघर में दाखिल होऊँगा डॉन रिचर्ड्स उसे इस बात की सूचना दे देगा। हमने एफ० बी० आई० के संचार-साधनों द्वारा इस प्रकार का प्रबन्ध कर रखा था ताकि ईवा बच्चों को साथ लेकर घर छोड़ सके। मैं सोचने लगा कि इन सब बातों की बोस्टन में क्या प्रतिक्रिया होगी। मैं अपने विचार में मग्न था कि मैंने श्री मिकगोहे की आवाज सुनी।

"अमीन साहब, क्या आप श्री हरबर्ट ए० फिलब्रिक को बुलाएँगे?"

यह मेरी परेशानियों का अन्त था। लेकिन उन ग्यारह लोगों की परेशानी का मैं कारण बन गया। भेद खुल जाने के बाद शेष मेरे लिए ऐसा चरमावरोह था कि जब मैं सरकार की ओर से पहले न बताये गए गवाह के रूप में शहादत देने लगा तो मैं अन्दाज न लगा सका कि लोगों के दिल पर क्या बीत रही है। अगले दिन 'न्यूयार्क हैराल्ड ट्रिब्यून' में वाल्टर आर्म ने लिखा था:

"उसकी उपस्थिति प्रतिरक्षा के पक्ष के लिए पूर्णतः विस्मयकारी थी। प्रतिरक्षा पक्ष के लोगों ने इस मृदुभाषी व्यक्ति को पहले अविश्वास और फिर प्रत्यक्ष घृणा के साथ देखा। वे सिर हिला-हिलाकर आपस में कानाफूसी करने लगे। प्रतिरक्षा पक्ष का एक सदस्य चुपचाप अदालत से बाहर जाकर टेलीफ़ोन करने चला गया।"

श्री आर्म ने लिखा था कि एफ० बी० आई० की कार्रवाइयों पर मेरे प्रथम वक्तव्यों को सुनकर "दर्शकों की बेंचों की बाईं ओर बैठने वाले लोगों के मुँह से स्पष्ट आह निकलकर रह गई—यहाँ सामान्यतः प्रतिरक्षा पक्ष के

सम्बन्धी, मित्र व हमराही लोग ही बैठते हैं। मेरी समूची गवाही के दौरान में प्रतिरक्षा पक्ष के लोग अपनी कुरसियों में गढ़े चुपचाप बैठे रहे······ किन्तु प्रतिरक्षा पक्ष के पाँचों वकील चुप न थे······वे बार-बार खड़े होकर मेरी शहादत को 'पूर्वधारणायुक्त' और 'अनुचित आश्चर्य' बताकर आपत्ति प्रकट करते थे। न्यायाधीश हैरॉल्ड आर० मैडीना उनकी आपत्ति को अवैध करार करने में व्यस्त थे।"

मेरी गवाही के, जैसा कि हम मुकदमे से पहले की बैठकों में तय कर चुके थे, दो मुख्य उद्देश्य थे। प्रथम, मुझे अपने अनुभव के आधार पर अभियोग के षड्यन्त्रकारी पहलू को पुष्ट करना था; यह बताना था कि पार्टी गुप्त रूप से कार्य करती है और लोगों के निजी घरों में बन्द दरवाजों के पीछे अपने को एक प्रच्छन्न संगठन के रूप में बनाये हुए है। उसके सिद्धान्तों का प्रचार खुल्लमखुल्ला नहीं बल्कि सुगठित कपट द्वारा किया जाता है।

दूसरी बात, जो कि कम महत्त्वपूर्ण न थी, वह यह थी कि मुझे अपनी गवाही द्वारा उस प्रमाण को पुष्ट करना था जिसके द्वारा कम्युनिस्टों के शिक्षा और प्रचार के तरीके मालूम होते थे और जो स्वयं मैंने उनकी मीटिंगों में देखे थे। हमें वे पुस्तकें और पुस्तिकाएँ अदालत में पेश करनी थीं जिन्हें मैं गुप्त शिक्षालयों में अन्य कम्युनिस्ट कामरेडों के साथ काम में ला चुका था और जिन्हें मैं पिछले कई वर्षों में एफ० बी० आई० को भेजता रहा था। मुझे उन कम्युनिस्ट पाठ्य-पुस्तकों के उपदेशों की विवेचना करनी थी, और यह बताना था कि किस प्रकार उन पुस्तकों में दिये गए अति आवश्यक और क्रान्तिकारी विचारों की पार्टी-शिक्षकों द्वारा व्याख्या की जाती है।

पहले दिन की गवाही दे चुकने के बाद एफ० बी० आई० के अंग-रक्षकों की निगरानी में मैं उसी तरह समाचार-पत्रों के संवाददाताओं से बचाकर बाहर निकाला गया जिस प्रकार कि अन्दर आया था, और सारी रात मुझ पर निगरानी रखी गई। बोस्टन में मुझे बाद में सब घटनाओं

का विवरण बताया गया। मेरे गैर-कम्युनिस्ट कुछ व्यग्र हो गए थे। अदालत से पहले यह खबर मिली कि मैं केवल कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य था, पर शीघ्र ही बोस्टन में खबर फैल गई कि मैं साथ ही इतने दिनों से एफ० बी० आई० का काम भी कर रहा था।

मुझे मालूम हुआ कि एफ० बी० आई० के प्रतिनिधियों ने ईवा को २ बज कर ५ मिनट पर खबर दी थी और २ बज कर १० मिनट पर वह अपनी देवरानी के यहाँ रहने के लिए लिनफील्ल्ड को रवाना हो चुकी थी। उसके चले जाने के दस मिनट बाद ही पत्रकारों और फोटोग्राफरों ने हमारा घर घेर लिया था। मुझे उस समय कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से अपने परिवार के प्रति लिये जाने वाले सम्भावित प्रतिकार की चिन्ता न थी, यद्यपि डॉन रिचर्ड्स से बात करते समय हम इस सम्भावना पर ग़ौर करना न भूले थे कि कोई गरम दिमाग वाला कम्युनिस्ट बल का प्रयोग भी कर सकता है। ऐसी किसी सम्भावना से ईवा और बच्चों को बचाने तथा पत्रकारों के उन प्रश्नों से बचने के लिए, जो मेरी गवाही के लिए हानिकर सिद्ध हो सकते थे, हमने ईवा और बच्चों को छिपकर रहने के लिए भेज दिया था।

अन्त में, शुक्रवार की सुबह, जब कि मैं चार दिन तक गवाही दे चुका था, मुझसे पूछे जाने वाले सवाल खतम हो गए और साथ ही मार्था फ्लैचर द्वारा सरकारी अवज्ञा की कटु आलोचना भी हो गई और जूरी को यह समझा दिया गया कि जब मार्था और उसके साथी नागरिक असन्तोष की बातें करते थे तो वे वास्तव में संयुक्त राज्य अमरीका में सरकारी अवज्ञा का प्रचार कर रहे थे।

"अब आप सवाल पूछ सकते हैं," श्री गॉर्डन ने कहा।

प्रतिरक्षा पक्ष यह देखकर आश्चर्यचकित था कि केवल कुछ मुख्य बातों पर जोर देकर ही सरकार सन्तुष्ट हो गई है और उसने एकाएक प्रश्न पूछना बन्द कर दिया है। प्रतिरक्षा पक्ष में कानाफूसी होने लगी और फिर उनकी ओर से प्रश्न पूछे जाने लगे। उनके प्रश्नों के तीन मुख्य उद्देश्य

मालूम होते थे—एफ० बी० आई० की कार्यविधि जानना और उनकी फाइलों की जाँच करना, मेरी शहादत में गलतियाँ निकालना और मुझे सरकार का 'सवैतनिक' मुखबिर करार करना।

उन्होंने मेरे काम की खोज-पड़तालकर यह साबित करना चाहा कि मैं बड़े व्यापारियों का पिट्ठू हूँ। एफ० बी० आई० से मेरे सम्बन्धों को लेकर उन्होंने बहुत से सवाल पूछे, और अन्त में उन्होंने उन रिपोर्टों को देखना चाहा जो कि मैंने एफ० बी० आई० को पेश की थीं। सरकार की फाइलों को देखने की कोशिश को न्यायाधीश मैडीना ने नामंजूर कर दिया।

प्रतिरक्षा दल मेरी साक्षी को झूठ करार करने में असमर्थ रहा, और वास्तव में उन्होंने मेरी कही हुई बातों का खण्डन करने का बहुत थोड़ा प्रयास किया। जब मैं साढ़े चार दिन कठघर में खड़ा रहकर और ५८२ पृष्ठ की गवाही देकर मंगलवार को छूटा, तो प्रतिरक्षा दल ने मेरी सारी गवाही और अदालत में पेश किए जाने वाले सारे कागजातों को निरर्थक सिद्ध करने का प्रयास किया। उनकी दलील थी कि वे सूचनाएँ, जो कि मेरी शहादत और अदालत में पेश किये हुए कागजात की बुनियाद हैं, गवाह ने एफ० बी० आई० के सहयोग से, जो कि संयुक्त राज्य अमरीका का एक अंग है, अनुचित तरीक़े से पाई हैं, और गवाह की इन कार्रवाइयों में एफ० बी० आई० ने आर्थिक सहायता दी है। श्री ईसरमैन ने प्रतिक्षा पक्ष की ओर से कहा कि यह कार्रवाई "अवैधानिक जनतन्त्रवाद विरोधी और पुलिस-राज्य जैसी हैं।" और भी ऐसी बहुत सी बातें कही गईं पर न्यायाधीश मैडीना ने उन्हें नामंजूर कर दिया।

मेरा काम पूरा हो चुका था।

जैसे ही मेरी गवाही पूरी हुई मैं उस दिन शाम को बोस्टन के लिए रवाना हो गया। वहाँ मेरा परिवार था। ईवा और मैंने न्यू इंग्लैण्ड के रास्ते में ही एक सप्ताह की छुट्टी मनाई, ताकि हमें शान्ति मिल सके।

तदुपरान्त हम मैल रोज हाऊस वापस लौट आये। मैं अमरीकन थियेटर कारपोरेशन में अपने काम पर जाने लगा।

पड़ोसियों और साथियों ने मेरे वापस आने का स्वागत किया। घट-नाओं के रुख पलटने का सबको अति हर्ष था।

समाचार-पत्र, पत्रिकाओं और रेडियो की ओर से मेरे लिए अनेक प्रस्ताव आए। मेरे ऊपर कोई दबाव न डाला गया था, पर न्याय-विभाग ने यह स्पष्ट कर दिया था कि जब तक मुकदमा चल रहा हो मुझे अपनी शहादत पर विशेष न बोलना चाहिए। मैंने इन सब प्रस्तावों को ठुकरा दिया।

एफ़० बी० आई० के प्रति मेरी सेवाएँ समाप्त हो चुकी थीं। मुकदमे के बाद कुछ समय के लिए स्थानीय पुलिस ने मेरे परिवार की सुरक्षा की। उस समय तक कम्युनिस्टों के खिलाफ मेरी गवाही एक लिखित तथ्य हो चुकी थी। अब उसका कोई प्रतिकार नहीं दिया जा सकता था।

सुरक्षा अनावश्यक साबित हुई। कुछ दिनों बाद हम अपनी पुरानी दिनचर्या पर आ गए और अपने तरीके से रहने लगे।

पार्टी के कॉमरेड मुझसे घृणा करने लगे। उनमें से कुछ से बोस्टन की गलियों में मेरी मुलाकात हुई। अधिकतर मुझसे मुँह फेरकर चले जाते थे। एक बार ब्रून शिरमर से मेरी भेंट हुई। वह मुझे देखकर गुर्राया और फिर उसने अपना मुँह फेर लिया।

कुछ पुराने मित्रों ने जिनसे मैं फिर मिलना चाहता था, मेरा साथ छोड़ दिया, क्योंकि उन्हें मेरे बहुत से वे कार्य पसन्द न थे। उनमें सबसे पहला व्यक्ति गॉर्डन केस था। कैम्ब्रिज युवक-मण्डल के प्रारम्भ से मेरा पुराना सहपाठी और साथी रह चुका था। १६४१ में जब हम टौरेन होटल में मिले थे, जर्मनी ने रूस पर हमला कर दिया था। मैंने कम्युनिस्टों की नई नीति मंजूर की थी और इसी बात पर गॉर्डन मुझसे अलग हो गया था। तब से मैं उससे नहीं मिला था। अब उसने मुझे एक लम्बा पत्र लिखा। पत्र में कम्युनिस्टों से मेरे सम्बन्धों की सत्यता को जानकर उसने प्रसन्नता प्रकट की

थी और उसने लिखा था कि उसका भय निर्मूल था।

मुझे दूसरे अनेक पत्र मिले। कुछ तो असन्तुष्ट और खब्ती लोगों के थे, लेकिन अधिकांश पत्रों में मेरे काम की सराहना की गई थी। उनमें समूचे देश के सब तरह के लोग थे।

उन ग्यारह लोगों को सजा हो गई। संयुक्त राज्य अमरीका के सर्वोच्च न्यायालय ने सजा की पुष्टि कर दी। लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी और उसके षड्यन्त्रकारी अभी भी खुले घूम रहे हैं। कम्युनिस्ट पार्टी और उसकी हिंसात्मक क्रान्तिकारी विचारधारा राष्ट्रीय नीति का एक सबसे बड़ा सवाल है।

षड्यन्त्र के विवरण में मैंने पार्टी-सम्बन्धी सामान्य रूप से अज्ञात बातों के विषय में यथातथ्य होने का प्रयास किया है और कुछ कारणों को स्पष्ट किया है जिनसे मालूम होता है कि कम्युनिस्ट इस प्रकार क्यों काम करते हैं। पार्टी, उसका दर्शन और अमरीका के लिए उसके भय का मूल्यांकन करने में मैंने शान्तिप्रिय और ईसाई धर्मानुयायी अमरीकन दृष्टिकोण रखने का प्रयास किया है। यह मेरी उत्कट अभिलाषा है कि मेरा निजी इतिहास बेहतर जानकारी के लिए एक निश्चित योगदान सिद्ध हो चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो। यह मेरी कतई इच्छा नहीं कि मैं ज़्यादा ग़लतफहमी, अधिक घृणा या अधिक भय पैदा करूँ।

कम्युनिस्ट क्या हैं ?

जिसे मोटे रूप में हम समस्त पार्टी कह सकते हैं उसमें कम्युनिस्टों के बहुत से प्रकारान्तर हैं, जैसे सत्ता के भूखे नेता, भेड़ों-जैसे अनुयायी, अत्यन्त ग़रीब लोग, समाज से बहिष्कृत लोग, लोकशत्रु, भटके हुए बुद्धिजीवी आदि। नया कम्युनिस्ट मुल्ला जब नई दुनिया के उस स्वप्न के निर्लज्ज सत्य की घोषणा करता है जिसमें युद्ध, ग़रीबी और भुखमरी न होगी तो सम्भवतः वह अपनी मनोकामना ही व्यक्त करता है। शायद कार्ल मार्क्स का भी यही स्वप्न था।

लेकिन मार्क्सवाद के बीज से विषाक्त फल उपजे हैं। लेनिन और स्तालिन के शिष्यों के नीच तरीके हैं। कम्युनिस्टों की नये जगत् की सृष्टि

एक कुस्वप्न है न कि एक सुस्वप्न।

'पेशेवर' कम्युनिस्टों की और एक नस्ल है। वह न तो भेड़ ही हैं और न मूर्ख ही। ऐसा कम्युनिस्ट क्या कर रहा है उसे वही ठीक तरह से और विधिवत् रूप से जानता है। भावना और आदर्शों में विश्वास रखने की बजाय वह विज्ञान और भौतिकवाद में विश्वास रखता है। भावना और आदर्श तो दूसरे लोगों से लाभ उठाने के लिए उपकरण-मात्र हैं। वह इन उपकरणों का बड़ी चतुराई से उपयोग करता है।

हर तरह के लोगों के लिए हर तरह का रूप धरने की उसे विशेष शिक्षा मिली। अधिकतम सफलता-प्राप्ति के लिए उसने प्रयोजन और समुचित अभिप्रायों को छिपाने का एक पुरफरेब तरीका अपना लिया हैं। अतः अत्यधिक कुशल कम्युनिस्ट अक्सर प्रिय, हाजिर-जवाबी और शासकीय योग्यता, चतुरता और सफलताओं वाला व्यक्ति होता है। अवश्य ही, वह खुल्लमखुल्ला छुरा लेकर नहीं चलेगा, न लम्बा काला कोट पहनेगा और न षड्यन्त्र की थोड़ी भी बू आने देगा। अतः वह पकड़े जाने से बचने की योजना ही नहीं बनाता अपितु वह आशा करता है कि बहकाये जाने योग्य अमरीकन एक निरपेक्ष सत्य का सामना करते हुए भी यही कहेंगे, "वह कम्युनिस्ट नहीं हो सकता—वह तो इतना भला, (या चतुर, या सुन्दर) आदमी है।" यही एक कारण है कि स्वभाव से देश-भक्त नागरिक कम्युनिस्टों और उनके हमराहियों के साथ सहानुभूति करने में बहक जाते हैं। ये लोग प्रत्यक्षतः किसी आदमी को बुरा मानने के लिए तैयार नहीं हैं।

कम्युनिस्ट अपनी पार्टी के ध्येयों को क्रियान्वित करने की अपनी अत्यन्त विकसित योग्यता पर मुग्ध है, जब कि वह कम्युनिस्ट-विरोधियों के बीच ग़ैर-कम्युनिस्ट बना रहकर आचरण करता है। वह किन्हीं अवसरों पर कम्युनिस्ट होने पर एक रोमांच अनुभव करता है। पार्टी के प्रति उसका पूर्ण समर्पण उसकी अद्भुत लगन के अनुरूप ही है। वह बहुत देर तक काम करेगा, अपने परिवार से दिनों अथवा महीनों तक बाहर रहेगा : अपने मित्रों को छोड़ देगा, यहाँ तक कि जेल भी चला जायगा, जब कि कम्यु-

निस्ट इन बातों में आनन्द अनुभव करते थे, मैंने इनमें कभी कोई आनन्द नहीं पाया।

अतः दीक्षित, पक्का अनुशासित और समर्पित कम्युनिस्ट पूँजीवादी समाज के विरुद्ध अपना संघर्ष सोच-समझकर और ठण्डे तरीके से करता है। नौसिखिये कम्युनिस्ट-शत्रु, महत्त्वाकांक्षी राजनेता, पाखण्डी नेता और हुल्लड़बाज उनका मुकाबला नहीं कर सकते। पेशेवर कम्युनिस्ट नेता के विरुद्ध झण्डा दिखाने और गाली-गलौज करने से संघर्ष नहीं जीता जा सकता। देशभक्त अथवा भावी देशभक्तों का कम्युनिस्टों के विरुद्ध वाक्-युद्ध और उनकी दोहरी घूँसेबाजी उन्हें किसी ठोस किनारे पर नहीं ले जायगी, अपितु क्रुद्ध वादविवाद के मँझधार में ही छोड़ देगी।

कुछ भी हो, कम्युनिस्ट और गैर-कम्युनिस्टों में जीतोड़ लड़ाई चल रही है। यह प्रच्छन्न लड़ाई तो बहुत लम्बी और कठोर है। एफ० बी० आई० से अच्छी तरह इसे और कोई नहीं समझता। कानून, जनमत और उन सरकारी क्षेत्रों द्वारा सतत और कठोर जासूसी जाल बनाया जाना आवश्यक है, जो कि इसके लिए उत्तरदायी हैं। विशेषज्ञों से लड़ने के लिए विशेषज्ञ ही चाहिए। अगर एक अनुभवशून्य कम्युनिस्ट शत्रु कम्युनिस्ट और भोले उदारवादी का अन्तर नहीं पहचान सकता तो वह असल कम्युनिस्ट और सरकारी भेदियों के भेदियों को भी नहीं पहचान सकता। कम्युनिस्ट पार्टी को अवैधानिक बनाने वाली कार्रवाई गुप्त पार्टी को गहरा नुकसान पहुँचाने के बजाय सरकार के जासूसी जाल को नष्ट कर देगी। अन्त में ऐसी कार्रवाइयों से केवल कम्युनिस्टों के हाथ ही मजबूत होते हैं। पार्टी में भेदियों का रखना आज मुश्किल काम हो गया है। उसके प्रति अवैधानिक नीति बरतने पर तो यह और भी मुश्किल हो जायगा।

कम्युनिस्ट-विरोधी संग्राम में एक सामान्य नागरिक कौनसा हिस्सा अदा कर सकता है?

एकमात्र महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम उस आचरण का बहिष्कार करें जिसे कम्युनिस्ट पूँजीवादी समाज में व्यक्ति के लिए जरूरी समझता है।

अगर कम्युनिस्ट की बन पड़े तो वह सब ग़ैर-कम्युनिस्टों को घोर दक्षिण-पन्थ-फासिज़्म और राज्य-नियन्त्रण की ओर धकेल देगा। कम्युनिस्ट हमारे समाज में फूट डालने के सब उपाय करता है; वह वर्ग-द्वेष और उत्कट् संघर्ष के बीज बोना चाहता है। कम्युनिस्टों को सिखाया जाता है कि समस्त पूँजीवादी सरकारें अवश्यम्भावी फासिस्ट आक्रमणकारी राज्य बन जायँगी जिसका एकमात्र इलाज हिंसात्मक क्रान्ति ही होगी।

किन्तु, यदि हम इस तरह से आचरण नहीं करते हैं तो हम कम्युनिज़्म के पतन में योगदान देते हैं। अगर हम स्वतन्त्र समाज के परम्परागत अमरीकन स्वप्न का अनुवर्तन करें, राजकीय उत्तरदायित्व की अपेक्षा निजी उत्तरदायित्व निभायें; कठोर नागरिक नियन्त्रण की अपेक्षा नागरिक अधिकारों को निभायें तो हम अवश्यम्भावी पूँजीवादी पतन के कम्युनिस्ट सिद्धान्त को ग़लत करार कर देंगे।

समय-समय पर पार्टी के अपने अनुभवों से मुझे ज्ञात हुआ है कि कम्युनिस्ट-आन्दोलन असल में फासिस्ट-विरोधी नहीं है। वह ऐसा ही है जैसा कि उसके नेता नागरिक अधिकारों, अच्छे मकानों और शान्ति के पक्ष में अपने को बतलाते हैं। अगर आज कम्युनिस्ट असन्तोष को एकाएक खतम कर दिया जाय, उनकी हर माँग पूरी कर दी जाय तो कल कम्युनिस्ट पार्टी के पेशेवर नेता असन्तोष के नये कारण खोज निकालेंगे और नई मांगों की सूची बना लेंगे। फासिज़्म की ओर झुकाव के किसी नये सुझाव का कम्युनिस्ट-पत्र स्वागत करेंगे। चाहे वे दिखाने के लिए कितना ही न्यायपरायणता का क्षोभ क्यों न प्रदर्शित करें समाज के दोष कम्युनिस्टों के लिए ईंधन का काम देते हैं। हमारी पूँजीवादी व्यवस्था के स्वतन्त्र व्यवसाय के दोषों को हमें शीघ्र ही मंजूर कर लेना चाहिए। हमें एक सकारात्मक राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन व्यतीत करना चाहिए न कि एक नकारात्मक कटु अथवा निन्दनीय जीवन।

कम्युनिस्ट घृणा, अनिश्चितता और भय पर आधारित हैं। कार्ल मार्क्स ने लिखा था, "शासक-वर्ग को भय से काँपने दो।" इसका सर्वोत्तम उत्तर